MARJ-03

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

ईसरदास बारहठ

राजस्थानी साहित्य रो इतिहास

MARJ-03 ISBN - 13/978-81-8496-145-8

MARJ-03

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

राजस्थानी साहित्य रो इतिहास

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

अध्यक्ष

प्रोफेसर (डॉ.) नरेश दाधीच
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक/समन्वयक एवं सदस्य

प्रो. कल्याणसिंह शेखावत
परामर्शदाता, राजस्थानी कार्यक्रम
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सदस्य

1. **डॉ. हीरालाल माहेश्वरी**
   पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
2. **डॉ. रघुराजसिंह हाडा**
   पूर्व प्रधानाचार्य, उच्च माध्यमिक विद्यालय (राजस्थान सरकार)
   झालावाड़ (राजस्थान)
3. **डॉ. गोरधनसिंह शेखावत**
   निदेशक, श्री कृष्ण सत्संग बालिका महाविद्यालय
   सीकर (राजस्थान)
4. **डॉ. अर्जुनदेव चारण**
   अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
   जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

सम्पादन एवं पाठ्यक्रम–लेखन

सम्पादक

प्रो. कल्याणसिंह शेखावत
परामर्शदाता, राजस्थानी कार्यक्रम
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

लेखक

प्रो. (डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत — **इकाई 10**
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

प्रो. (डॉ.) एस. डी. चारण — **इकाई 8,9**
पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

डॉ. मनमोहन स्वरूप माथुर — **इकाई 1,2,3,4 5, 6, 7**
पूर्व सह आचार्य
राजस्थानी विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

डॉ. उषाकंवर राठौड़ — **इकाई 11,12**
राजस्थानी शोध संस्थान
चौपासनी
जोधपुर (राज)

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. (डॉ.) नरेश दाधीच	**प्रो. (डॉ.) अनाम जेटली**	**योगेन्द्र गोयल**
कुलपति	निदेशक	प्रभारी अधिकारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**संकाय विभाग**	**पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन : नवम्बर 2009 ISBN - 13/978–81–8496–145–8

सर्वाधिकार सुरक्षित : इस सामग्री के किसी भी अंश की वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में 'मिमियाग्राफी' (चक्रमुद्रण) के द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

कुलसचिव, व.म.खु.विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के लिये मुद्रित एवं प्रकाशित।
दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, जयपुर द्वारा 500 प्रतियां मुद्रित।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

राजस्थानी साहित्य रो इतिहास

इकाई सं.	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
	खण्ड – I	
1.	वैदिक, संस्कृत अर अपभ्रंस भासावां रो सामान्य परिचै	1–13
2.	राजस्थानी भासा – उतपत अर विकास	14–29
	खण्ड– II	
3.	भासा अर लिपि	30–40
4.	नागरी लिपि – आखरां अर अंकां रो विकास	41–52
5.	मुड़िया लिपि – सामान्य जाणकारी	53–63
	खण्ड– III	
6.	राजस्थानी भासा री बोलियां–उपबोलियां	64–76
7.	डिंगल अप पिंगल	77–88
	खण्ड– IV	
8.	राजस्थानी भासा री व्याकरणगत विसेसतावां–सबद भण्डार	89–99
9.	राजस्थानी भासा री व्याकरणगत विसेसतावां–ध्वनि अर सबद रूप	100–121
	खण्ड– V	
10.	राजस्थानी साहित्य रो काल विभाजन	122–130
11.	राजस्थानी भासा रो जूनो साहित्य	131–145
12.	आधुनिक राजस्थानी साहित्य	146–154

राजस्थानी भासा अर साहित्य रो इतिहास

सम्पादन–खण्ड परिचय

खण्ड – I **इकाई 1.**

ई इकाई में वैदिक अर संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंस भासावां री सामान्य जाणकारी दी गई है। राजस्थानी भासा रा उद्‌भव अर विकास नै समझण सारू संस्कृति, प्राकृत अर अपभ्रंस भासावां री जाणकारी जरूरी है। संस्कृत भासा रा दो रूप लौकिक संस्कृत अर वैदिक संस्कृत, आज री भारतीय भासावां रा आधार है जिणमें राजस्थानी भासा भी एक है।

इकाई 2.

इण इकाई में राजस्थानी भासा री उतपत अर उणरै विकास री जाणकारी कराई गई है। राजस्थानी भासा री उद्‌भव अर विकास जातरा में संस्कृत, पालि–प्राकृत अर अपभ्रंस भासावां रो योगदान रियौ है। संस्कृत सूं पालि, प्राकृत अर अपभ्रंस भासावां रो जलम हुयौ अर 'अपभ्रंश' सूं राजस्थानी भासा री उतपत हुई। अपभ्रंस रा तीन भेद है – एक 'नागर अपभ्रंश', दूजी 'शौरसेनी अपभ्रंश' अर तीजी 'मरू गुजरी अपभ्रंश'।

खण्ड – II **इकाई 3.**

इण इकाई में लिपि अर भासा रो फरक दरसायौ गयौ है। लिपि भासा रो आधार है। लिपि सूं ही आखर अर अंकां रो रूप सामी आवै। एक–एक वरण रा मेळ सूं आखर अर आखरां रा समूह नै वाक्य कयौ जावै। लिपि में आखरां साथ एक सूं सौ तक रा आंक भी सामिल है।

इकाई 4.

आ इकाई नागरी अंक, लिपि अर भासा रा विकास नै समझावै। किण तरै आंक अर लिपि आज रा रूपतक पूगी अर उणरो पैली काईं रूप हो अर आज कांई है – आ विगत् इण इकाई सूं सामी आवै।

इकाई 5.

राजस्थानी भासा री खुद री एक जूनी लिपि ही जकी आज भी काम में लिरीजै उणरौ नाम है मुड़िया। मुड़िया लिपि कई तरै सूं दूजी लिपियां सूं न्यारी है। उणरा कई वरण निरवाळा है – वांरो उच्चारण खास तरै रो है। मुड़िया घसीट में लिखीजै, उणरा आखर मुड़यौड़ा अर एक लीक में लिखीजै। आखरां नै अलग कर वाक्य बणावण खातर विवेक अर ग्यान री जरूरत व्है। 'मुड़िया' लिपि रा वरण अर आंक दोनूं है।

खण्ड – III **इकाई 6.**

इण इकाई में राजस्थानी भासा रा भौगोलिक खेतर रै साथ–साथ उणरी प्रमुख बोलियां अर उपबोलयां री विगत मंडी है। इणसूं राजस्थानी भासा रा परिवार ने विधार्थी आसानी सूं समझ सकैला। जकी भासा जित्ती जूनी अर विसाळ हुवै उणरो भू खेतर भी बित्तो ही फैलयौड़ो व्है अर उणरी बोलयां–उपबोलियां भी ज्यादा व्है।

इकाई 7.

आ इकाई राजस्थानी भासा रा उण काव्य रूप री जाणकारी करावै जको मध्यकाल में जगचावो हुयौ। काव्य री बे दो धारावां डिंगळ अर पिंगल रै रूप में जाणीजै। डिंगळ अर पिंगल री सामान्य जाणकारी रै साथै ही बां विसेसतावां रो लेखो भी ई इकाई रो आधार बण्यौ है।

खण्ड – IV इकाई 8.

राजस्थानी भासा री व्याकारण गत विसेसतावां नै दसावणौ इण इकाई लेखन रो ध्येय रियौ है। राजस्थानी भासा री वरणा री व्यवस्था, छंदां अर अलंकारा रौ परिचै अर तद्भव सबदां री विगत ई इकाई रो आधार है।

इकाई 9.

इण इकाई में भी राजस्थानी भासा री व्याकरणगत विसेसतावां में ध्वनि अर सबद रूपां पर विचार हुयौ है।

खण्ड – V इकाई 10.

इण इकाई में राजस्थानी साहित्य रो समैवार बंटवारो कर्‌यौ गयौ है। विक्रम री नोवीं सदी सूं अजै तांई लगटगै बारह सो बरसां में राजस्थानी भासा में अणपार अर विध–विध रा साहित्य रौ सिरजण हुयौ है। सबसूं पैली काव्य री सिरजणा हुई अर आधुनिक जुग में गद्य रो विगसाव हुयौ। न्यारा–न्यारा विद्वान खुद रै ढंग अर मानता मुजब सगळा राजस्थानी साहित्य नै आदिकाल, मध्यकाल अर आधुनिक काल खण्डा में बांट्‌यौ है।

इकाई 11.

आ इकाई राजस्थानी भासा रा जूनीं साहित्य परम्परा री जाणकारी करावै। विक्रमी संवत 850 रै लगैटगै आखरां ढळ्‌यौ राजस्थानी साहित्य आदिकाल रौ बाजै। आदिकाल नै कैई विद्वानां 'वीरगाथाकाल' रो भी नाम दियौ है। इण जुग में वीरता, भगती, नीति अर सिणगार नै आधार बणा'र साहित्य लेखन हुयौ है। इण इकाई में ई मध्यकाल री कालगत प्रवृतियां, काव्य धारावां, विधावां प्रमुख रचनावां अर रचनाकारां री जाणकारी दी गई है।

इकाई 12.

सन् 1850 रै पछै अर आज लग जको साहित्य सामी आयौ है उणनै आधुनिक राजस्थानी साहित्य नाम दियौ गयौ है। ओ साहित्य गद्य अर पद्य दो भागां में बंटयौड़ौ है। आं दोनुवां री विधावां न्यारी है– सिल्प, भासा, सैली अर कथ न्यारो है। जूनी विधावां मोळी पड़गी अर नई विधावां में इधको अर गिणावणजोग सिरजण हूवण लाग्यौ। इण इकाई में आधुनिक काल री समीक्षा हुई है।

इकाई–1

वैदिकी, संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंस भासावां रौ सामान्य परिचै

इकाई रौ मंडाण

1.1 उद्देस्य

1.2 प्रस्तावना : भारतीय आर्य भासावां– अरथ अर विकास

1.3. वैदिकी (वैदिक संस्कृत) : सामान्य परिचै

1.4. संस्कृत : सामान्य परिचै

1.5 प्राकृत : सामान्य परिचै

1.6 अपभ्रंस : सामान्य परिचै

1.7 सार

1.8 अभ्यास सारू सवाल

1.9 संदर्भ–ग्रंथां री पानड़ी

1.1. उद्देस्य

इण इकाई रौ खास उद्देस्य विद्यार्थियां नैं राजस्थानी रै पैला री भासावां री जाणकारी देय'र औ बतावणौ है कै किण भांत वैदिकी सूं राजस्थानी तांणी भासावां रौ विकास हुयौ। आं भासांवां रा घणा ई सबद अजै ई राजस्थानी में मिळै।

1.2 प्रस्तावना : भारतीय आर्य–भासावां– अरथ अर विकास

भारत रा मूल निवासी आर्य हा। उणां द्वारा बोलीजण वाळी भासा ई आर्य भासा है। कुछ विद्वान मानै कै अै आर्य बारै (दिखणी–ऊगमणै यूरोप या कै मध्य ऐशिया) सूं आया। हार्नलै, ग्रियर्सन अर डॉ. धीरेन्द्र वर्मा जेड़ा विद्वान मानै कै अै आर्य कम सूं कम दो बार भारत में आया। इण धारणा सूं अठै आर्यां री भासा बाबत औ खुलासौ हुवै कै आर्यां रै दो बार भारत में आय'र बसण सूं वां री भासा में अेकरूपता थिर कोनी रैय सकी। उणमें समै मुजब बदळाव आया हुवैला। इण बाबत उण वगत री सगळी सामग्री अेक जागै नहीं मिळै, पण रिगवेद में उणां री भासा रा सब रूप अेक सागै संग्रहीत है। इण रचना नैं वै ई लोग लिखियौ है। अतः आर्य भासावां रौ औ पुख्ता प्रमाण है।

इण भांत भारत में आर्यां द्वारा बरतीजण वाळी भासा (कै भासावां) आर्य भासा कैईजै। भारत में आर्य भासा री सरुआत नैं किणी ठावै समै में तौ बांधणौ दौरो है, पण औ कैयौ जा सकै कै 1500 ई.पू. रै आखती–पाखती इणरी सरुआत व्ही। तद सूं अजै लग भारतीय आर्य भासा री उमर लगैटगै साढै तीन हजार बरसां री हुवै। भासिक विसेसतावां मुजब इण लांबी उमर रै समै नैं विद्वान आं तीन कालां में बाटै–

1. प्राचीन भारतीय आर्य भासा (प्रा.मा.आ.) 1500 ई. पू.–500 ई.पू.
2. मध्य कालीन भारतीय आर्य भासा (म.भा.आ.) 500 ई.पू.–1000 ई.
3. आधुनिक भारतीय आर्य भासा (आ.भा.आ.) 1000 ई. –अजैलग।

जूनी भारतीय आर्य–भासावां में वैदिकी अर, संस्कृत खास है। मध्यकालीन भारतीय आर्य भासावां में पालि, प्राक्रत, अपभ्रंस रौ अध्ययन करीजै। आ.भा.आ.भा. में जुदी–जुदी अपभ्रंसां सूं विकसित भारत री आधुनिक भासावां–आथूणी हिन्दी–ब्रज, खड़ीबोली, बांगरू, कन्नौजी, बुंदेली, राजस्थानी, गुजराती (सौरसेनी); पूर्वी हिन्दी (अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी); अरध–मागधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही, बंगला, असमी, उड़िया

(मागधी); पहाड़ी (खस–सौरसैनी सूं प्रभावित); पंजाबी, सिंधी (ब्राचड़–सौरसेनी सूं प्रभावित); मराठी (महाराष्ट्री) मानीजै। अबै अठै महताऊ भारतीय आर्य भासावां जिकां रा राजस्थानी भासा रै विकास में महताऊ भूमिका रैयी है, रा सामान्य परिचै री औळखांण करो –

1.3 वैदिकी (वैदिक–संस्कृत)

भारतीय आर्य भासा–समूह में सबसूं जूनौ रूप रिगवेद में मिळै। इणरी विसयवस्तु अर भासा सूं लखावै कै इणरी रचना न तौ अेक समै में व्ही अर न ही किणी अेक ठौड़ बैठ'र। रिगवेद कैई सदियां अर कई जागांवां में बैठ'र लिखीजी रचना है। इण आंतरै सूं ई उण री भासा में फरक आयगौ है। विद्वान इण बात सूं अेकमत है कै औ फरक देस अर काल रै कारण आयौ है।

वैदिक काल री वैदिक संस्कृत (वैदिकी) री रचनावां में संहिता, ब्राह्मणां, आरण्यकां अर उपनिसदां नैं सामिल करीजै। संहिता सूं उपनिसद तांणी रौ विकास भावधारा री दीठ सूं ई नीं, भासा री दीठ सूं ई महताऊ है। औ फरक सदियां में ई संभव हूय सकै। ज्यूं –

(i) उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त ए मसि।।

– रिगवेद–1–1–7

(ii) यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।
आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन।।

–तैत्तिकीयोपनिषद्– नवम् अनुवाक

रिगवेद री तुलना में उपनिसदां री भासा सरल है। भासा रै इण विकास नैं समझ'र रिसिसर वेदां रै मूळ नैं बणायो राखबा सारू पद–पाठ अर संहिता–पाठ रा नेम ठावा कर्‌या जिणसूं प्रातिसाख्य सिरजिजिया। वेदां रै मूल अरथ री रक्षा खातर निरुक्त ग्रंथां री रचना करीजी। आं सगळा जतनां सूं अजै ई वेद आपरै मूल रूप में उच्चरित हुवै। वेदां री आ भासा ई वैदिकी, वैदिक–संस्कृत अर छान्दस नांव सूं औळखीजै। इण भासा रै अध्ययन सूं इणरी नीचै लिखी विसेसतावां रौ खुलासौ हुवै–

1. वैदिकी में 9 मूल स्वर (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ अर संयुक्त स्वर (ए, ऐ, ओ, औ) है। इण भांत कुल 13 स्वर है।
2. वैदिकी में पांच वर्गां (क, च, ट, त, प) रै अलावा य्, र्, ल्, व् च्यार अरध सुर; दो ळ् अर ळ्ह् व्यंजन; श्, ष्, स्, शिन ध्वनियां सागै कुल 392 व्यंजन ध्वनियां है।
3. वैदिकी में गीतात्मक स्वराघात री खास ठौड़ है। सुर बदळाव सूं अरथ बदळीज जावतौ हौ। सुर रा अै तीन भेद प्रचलित हा– उदात्त, अनुदात्त अर स्वरित।
4. वैदिकी री रूप रचना घणी जटिल ही। आ अेक संजोगात्मक भासा ही जिणमें विभक्तियां अर प्रत्ययां रै जोग सूं धातु अर प्रातिपादिकां नैं बरतीजण जोग बणावता हा।
5. वैदिकी में उपसर्ग रौ प्रयोग मूल सबद सूं हट'र ई होय सकतौ हौ, ज्यांन –1. परिद्यावापृथिवीयन्ति सद्यः 2. अभि यज्ञं गृणिहि नः।
6. इण में तीन लिंग अर तीन वचन बरतीजै पण आं रौ बोध करावण सारू अनेकरुपता मिळै।
7. सरवनामां में ई अनेकरूपता लाधै। अै जटिल पण है। उत्तम पुरुस अर मध्यम पुरुस रै अलावा बीजा सरवनामां में ई लिंग भेद मिळै।
8. धातुवां आत्मनेपद अर परस्मैपद दोई रूपां में बरतीजै। 'लेट' लकार रौ प्रयोग ई अठै मिळै। आं लकारां री संख्या दस है।

9. वैदिकी रा अलेखूं सबदां रौ अरथ लौकिक संस्कृत सूं न्यारौ है, ज्यांन–यंत्र= रस्सी, वराह= मेघ, इन्द्र= सूरज, आद।

10. संधियां लौकिक संस्कृत री तुलना में कम लाधै अर वां में नियमानुकूलता रौ अभाव लखावै।

1.4 संस्कृत (लौकिक–संस्कृत)

प्राचीन भारतीय आर्य भासा रौ छैकड़लौ काल संस्कृत भासा–रूप में मिळै। वैदिक काल में आ जन–सामान्य री भासा ही। इण वास्तै ई आ लौकिक संस्कृत कैइजै। पांचवीं सदी ई.पू. लग औ रूप चालतौ रैयौ। कैवण रौ मतळब औ कै समै यास्क अर पाणिनी रै पूठै रौ है जिणमें संस्कृत रै भासा अर नाट्य– रचनावां रौ सिरजण सरू हुयौ। आ उण वगत रै अभिजात्य समाज री बोलचाल री भासा बणगी। बोलचाल री लौकिक संस्कृत भासा पाणिनी जैड़ा व्याकरण पंडितां सूं संस्कारीजी, जिकी 'शिष्ट' समाज अर साहित्य री भासा बणी। रामायण अर महाभारत इण भासा री चावी रचनावां है। महाकवि कालिदास अर बाणभट्ट जैड़ा जग चावा साहित्यकार ईं संस्कृत भासा सूं जुड्यौड़ा है। लौकिक संस्कृत री निम्नलिखित विसेसतावां हैं–

1. वैदिकी री तुलना में संस्कृत भासा में सुरां री संख्या कम व्ही। ऌ रौ सागौ लोप होयगौ अर ऋ, ऐ, अर औ रा उच्चारण ई बदळीजिया।

2. वैदिकी रा संजुक्त स्वर ए अर औ संस्कृत में मूल स्वर बणग्या।

3. वैदिकी रौ संगीतात्मक सुराघात खतम होयगौ अर बलात्मक सुराघात नैं अठै ठावी जागां मिळी।

4. ळ्, ळ्ह् व्यंजनां रै लोप सागै ई संस्कृत में व्यंजन ध्वनियां में कमी आई।

5. विभक्तियां तौ आठूं ई रैयी पण आं रै रूपां री संख्या घटी, जिणसूं संस्कृत वैदिकी री तुलना में सरल व्ही। सरवनावां री दीठ सूं ई संस्कृत सरल व्ही।

6. प्रत्यय अर उपसरगां रा स्वतंत्र प्रयोग लौकिक संस्कृत में कोनी मिळै। उणां सूं बण्यौड़ा सबदां रै अरथां में अेक व्यवस्था दीखण लागी।

7. संस्कृत में व्याकरण पंडितां रौ प्रभाव ज्यादा लखावै। व्याकरण री करड़ाई सूं नुवां सबद तौ बण्या पण उणां रौ सहज विकास रुकग्यौ।

8. लिंग अर वचन अठै ई तीन–तीन रैया पण द्विवचन रै प्रयोग में सहज युग्मता री जागां फगत द्वि वाचकता आयगी।

9. अलेखूं सबद अठै वैदिकी सूं न्यारै अरथां में बरतीजण लागा, ज्यान–

   अरि = दुसमी, क्षिति = पृथवी, वध= हत्या, पत्= पड़णौ

वैदिकी अर लौकिक संस्कृत रौ अन्तर

1. वैदिक भासा में लौकिक संस्कृत जैड़ौ परिनिष्ठिकरण नहीं लखावै। इणी वास्तै लौकिक संस्कृत जितरी मानक अर साहित्यिक है, उतरी वैदिकी कोनी।

2. वैदिकी आपरै साहित्यिक रूप में ई संस्कृत री तुलना में जन भासा कैलावण जोग है।

3. वैदिकी में जठै मानकीकरण रै अभाव में रूप री जटिलतावां, अनेकरूपतावां अर अपवादां री बोहोळता है, उठै ई लौकिक संस्कृत में अै जटिलतावां आद है ई कोनी जे है तौ वै वैदिकी री तुलनां में घणी कम।

4. वैदिकी आपरै बरतीजण वाळा री भांत स्वच्छन्द है पण लौकिक संस्कृत नेमबद्ध समाज री तरियां सांवठी अर अेक सारिखी है। औई कारण है कै वैदिकी कठिन भासा है, जद कै लौकिक संस्कृत सरल भासा है।

5. वैदिकी सहज जनभासा हुवण सूं उणमें बड़ा समासां रौ प्रचलन कोनी हौ पण संस्कृत में बणावट रै विगसाव सूं बड़ा–बड़ा समस्त पद बणन लाग्या। वैदिकी में समास बणावण मुजब नेमां रौ अभाव हौ, पण लौकिक संस्कृत में इण बाबत नेमां रौ पालण करड़ाई सूं हूवतौ हौ। वैदिकी में फगत च्यार समास– तत्पुरुष, करमधारय बहुब्रीही अर द्वन्द्व– बरतीजता हा। लौकिक–संस्कृत में आं समस्त पदां रै अलावा द्विगु अर अव्ययी भाव समासां रौ ई प्रयोग हुवण लागौ। इण भांत लौकिक संस्कृत में छव समास बरतीजण लागा।

6. घणखरा वैदिक सबदां रा प्रयोग लौकिक संस्कृत में आय'र अप्रचलित हुयगा, ज्यांन– चक्षस, अत्क, ऊष, पेच आद अर घणाई सबद संस्कृत में नुवै रूप में बरतीजण में आया, जिका वैदिकी में नहीं हा, ज्यांन– विपुल, कर्तव्य (वैदिकी में इण सारू कर्त्व बरतीजतौ हौ)। इण रै अलावा वैदिकी रा कुछ सबद संस्कृत में ई प्रचलित रैया पण वै अठै बिलकुल अलग अरथ देवण लागा, ज्यांन–

   मूळीक= दया (वैदिकी), महादेव (लौकिक)

   क्षिति= बस्ती, निवास स्थान (वैदिकी), पृथ्वी (लौकिक)

   असुर = सुर, राक्षस (वैदिकी), राक्षस (लौकिक)

   व्रत= सासन (वैदिकी), प्रण, उपवास आदि (लौकिक)

7. वैदिकी में अनुसार (ं) शुद्ध अनुनासिक ध्वनि ही, जिणनैं कोई विद्वान व्यंजन मानता हा तौ कुछ विद्वान सुर, पण लौकिक संस्कृत में अनुस्वार लारलै सुर सूं मिळा'र बोळीजण लागौ।

1.5 प्राकृत भासा

म.का.आ. भासावां री आ खास भासा है। इण री प्रमुखता रै कारण ई विद्वान इण काल नैं प्राकृत काल नाम ई दिरायौ। लौकिक संस्कृत जद व्याकरणिक रूप धार'र थिर हुयगी तद उणरै सागै जन समाज में लोकभासा विकसित हुय री ही। इण लोकभासा रै विकास सूं ई प्राकृत नीपजी। इणी भासा में भगवान बुद्ध अर महावीर स्वामी आपरै अनुयायियां नैं उपदेस दिराया अर धरम–प्रचार वास्तै ई इणी भासा नैं बरती।

1. प्राकृत भासा री उत्पत बाबत विद्वान अेकमत कोनी दीखै। अै मत तीन तरियां रा है, जिकां में सूं कुछे'क अठै प्रस्तुत करा हा। इण बाबत पैलो मत वां विद्वानां रौ है जिका में प्राकृत अर संस्कृत सूं नीपजी मानै। हेमचंद्र इण बाबत लिख्यौ है ''प्रकृतिः संस्कृतम। तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम'' अर्थात् संस्कृत मूल है अर उण सूं जिकी नीपजी उणनैं प्राकृत कैवै। इण मत मुजब संस्कृत में रूप बदळाव सूं प्राकृत नीपजी है।

2. दूजैड़ै मत मुजब प्राकृत रै संस्कार सूं ई संस्कृत बणी। ''प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धम् प्राकृतम्'' अर्थात् जिकी स्वभाव सिद्ध व्है, वाई प्राकृत है। मतळब, स्वाभाविक, सहज या साधारण भासा प्राकृत है। तुलसीदास जी री औळी ''कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना'' रौ प्रयोग इण अरथ में हुयौ है।

3. तीजैड़ै मत रै मुजब न तौ संस्कृत सूं प्राकृत नीपजी अर न ई प्राक्रत सूं संस्कृत। दोयां रौ विकास आपौ आप स्वतंत्र रूप सूं हुयौ। संस्कृत रै सागै जिकी जन भासावां प्रचलित ही, उणा रौ ई विकसित रूप प्राक्रत कैईजी। नमि साधु रै सबदां में ''प्राकृतेति सकल जगज्जन्तूनां व्याकरण– दिमिरनादृत संस्कार..... प्रकृति, तत्र भव, सेव वा प्राकृतम।'' अर्थात् प्राकृत मूल भासा है, इणी वास्तै वा प्राकृत कैईजी। आं सगळां मतां रो सार में कैय सकां कै लोकसमाज संस्कृत रै सागै ई प्राकृत भासा बरतीज रैयौ हौ। प्राकृत वैयाकरणां जद इणनैं ई व्याकरण में बांध दिरायौ, तद वा ई अभिजात्य भासा बणगी अर जन साधारण री भासा आपरौ स्वतंत्र विकास

करती रैयी।

प्राकृत भासा रै इण काल नैं विद्वान तीन हिस्सां में बांटै–

1. पैलौ प्राकृत काल या कै पालि काल (पैली प्राकृत= पालि) (500 ई. पू. सूं 1 ई. लग)
2. दूजौ प्राकृत काल या कै प्राकृत काल– 1 ई. सूं 500 ई. लग (दूजी प्राकृत= प्राकृत)
3. तीजौ प्राकृत काल या कै अपभ्रंश काल– 500 ई. सूं 1000 ई. लग (तीजी प्राकृत= अपभ्रंश)।

इण भांत जिण प्राकृत भासा रौ अठै परिचै दिये जाय रैयो है, वा दूजै प्राकृतकाल री खास भासा है। इण रौ समै पैली सदी सूं पाचवीं सदी लग हौ। विद्वान प्राकृत रा नरा ई रूप गिणाया है। वररुचि महाराष्ट्री, पैशाची, मागधी अर शौरसैनी प्राकृतां रौ उल्लेख कर्‌यौ है। आचार्य हेमचंद्र ई महाराष्ट्री प्राकृत नैं आधार मानता शौरसेनी, मागधी, अर्द्धमागधी, पैशाची, चूलिका अर अप्रभ्रंश सूं उणरै भेद नैं बतायौ है। नाट्यशास्त्र, साहित्यदर्पण आद रचनावां में ई प्राकृत भासा रै विविध रूपां रौ वरणांव मिळै, पण भासा– वैग्यानिक आं सगळा रौ समाहार आं पांच प्राकृतां में करै–

(क) शौरसेनी प्राकृत– आ प्राकृत शूरसेन प्रदेश (मथुरा अर उणरै आखती–पाखती रौ क्षेत्र) री भासा ही। इण रौ विकास बठां री पालिकालीन (पैली प्राक्रतकालीन) बोली सूं हुयौ। मध्यदेस री भासा हुवण सारू इण नैं कुछ लोग संस्कृत री दाईं इज उण वगत री परिमार्जित भासा मानै। संस्कृत नाटकां अर जैन धारा रै सैद्धान्तिक साहित्य री भासा शौरसेनी इज ही। कर्पूरमंजरी रौ गद्य इणी प्राकृत में लिखिजियौ है। जैन साहित्य री भासा हुवण सूं विद्वान इणनै 'जैन शौरसेनी' या कै 'दिगम्बर शौरसेनी' ई कैवै। 'शौरसेनी' रा बीजा क्षेत्रीय रूप अवन्ती, आभीरी है।

ध्वनि विकास री दीठ सूं आ महाराष्ट्री प्राकृत सूं जूनी है। इण में दो स्वरां रै बीचाळै

त् > द् अर थ् > ध बण जावै–

गच्छति > गच्छदि

कथय > कधोहि

'क्ष' रौ विकास क्ख् में हुवै, ज्यांन–

चक्षु > चक्खु

इक्षु > इक्खु

कुक्षि > कुक्खि (राजस्थानी में कू ख, कोख)।

शौरसेनी प्राकृत में सिरफ परस्मैपद इज बरतीजै, आत्मनेपदी रा प्रयोग कोनी मिळै। धातु–रूपां री दीठ सूं आ थोड़ी संस्कृत सूं प्रभावित लखावै तौ थोड़ी'क महाराष्ट्री प्राकृत सूं।

(ख) महाराष्ट्री प्राकृत– आ प्राकृत महाराष्ट्र री भासा ही। जूल ब्लॉख मराठी रौ विकास इणी रै बोली रूप सूं मानै। शौरसेनी अपभ्रंश रै पूठै इणी नैं महत्व दीरिजै। साहित्य री दीठ सूं आ घणी समरिद्ध भासा रैयी है। बीजी प्राकृतां री तुलना में इण में बेसी कंवळौपण है। इणी वास्तै महाराष्ट्री प्राकृत काव्यभासा रै रूप में घणी मानीती रैयी। गाहासतसई (हाल), रावणवहो (रावरसेन), वज्जालग (जयवल्लभ) आद रचनावां इणरी अमोल धरोहर है। कालिदास, हर्ष आद रै नाटका में गीतां री भासा महाराष्ट्री प्राकृत ई है। 'श्वेताम्बर जैन' कवि ई आपरी रचनावां इणमें लिखी। इण आधार पांण याकोम्बी इण नैं जैन महाराष्ट्री कैवै। महाराष्ट्री रै साहित्य रै पांण इण री खास–खास विसेसतावां इण भांत है–

1. इणमें संस्कृत री ऊष्म ध्वनियां (श, ष, स) 'ह' में बदळीजगी है–

दश > दह

पाषाण > पाहण

दिवस > दिअह।

2. दो सुरां रै बीचाळै व्यंजनां रौ लोप हुयग्यौ–

नुपुर > णेडर

रिपु > रिऊ

3. संस्कृत रा कुछ महाप्राण वर्ण 'ह' में बदळीजग्या है, ज्यांन–

मेघ > मेह

नाथ > नाह

शाखा > शाहा (आई प्रवृत्ति राजस्थानी भासा में मिळै)।

4. पूर्वकालिक क्रिया बणावण में 'ऊण' प्रत्यय रौ प्रयोग हुवै– पृष्ट्वा > पुच्छिऊण।

(ग) मागधी– आ प्राकृत मगध अर उणरै आरवती–पारबती बोळीजती ही। कुछ विद्वान इण रौ सम्बन्ध महाराष्ट्री प्राकृत सूं जोड़ै। वररुचि इण नैं 'शौरसेनी' सूं नीपजी कैवै। लंका में पालि इज मागधी कैईजै। बौद्धां रै मुजब आइज आदि भासा है। 'शौरसेनी' अर महाराष्ट्री प्राकृतां री तुलना में इणरौ प्रयोग बोहोत कम मिळै। स्यात् इणी वास्तै इणरी कोई स्वतंत्र रचना कोनी मिळै, पण संस्कृत नाटकां में नीच पात्रां सारू इणी प्राकृत रौ प्रयोग करीजियौ है। इणरी खास–खास विसेसतावां हैं–

1. इणमें संस्कृत रौ र > ल बण जावै–

पुरुष > पुलिशे

राजा > लाजा।

2. 'स्थ' अर र्थ री जागां 'स्त' मिळै ज्यांन–

उपस्थित > उवस्तिद

अर्थवती > अस्तवती।

3. संघर्ष री बोहोळता रै कारण कठै ई 'ज' 'य' में बदळीज जावै–

जानाति > याणादि

जायते > यायदे।

4. संजुक्त व्यंजन जिका में पैली ध्वनि ऊष्म हुवै, वा में बीजी प्राकृतां री नांईं समीकरण 'आद भाषिक' बदळाव कोनी हुवै–

हस्त > हश्त।

5. पैली विभक्ति एकवचन में संस्कृत रौ 'अः' री बजाय अठै 'ए' मिळै, ज्यांन–

देवः > देवे

सः > से।

(घ) अरध मागधी– इणरी थिति मागधी अर 'शौरसेनी' प्राकृतां रै बिचै मानीजै। आ प्राचीन कौसल री बोली ही। मागधी रै बेसी प्रभाव रै कारण ई आ अरध मागधी कैईजी। इणरै गद्य में मागधी अर पद्य में 'शौरसेनी' रौ प्रभाव देखण में आवै। जैन साहित्य में इण प्राकृत रीं बोहोळता सागै प्रयोग हुयौ है। वै इण नैं 'आर्षी' अर आदि भासा मानै, क्यूंक भगवान महावीर आपरा उपदेस

इणी प्राकृत में दिया हा। संस्कृत नाटकां में ई इणरा प्रयोग मिळै। इणरौ प्राचीनतम प्रयोग अश्वघोष रै नाटकां में मिळै। आचार्य विश्वनाथ अरध–मागधी नैं सेठां अर राजपुत्रां री भासा कैई है। 'मुद्राराक्षस' अर 'प्रबोध चंद्रोदय' में ई इणरा प्रयोग मिळै। डॉ. भोलानाथ तिवारी रै मुजब कुछ विद्वान इण नैं सम्राट अशोक रै अभिलेखां री मूल भासा बतायी है। आं सगळा प्रमाणां रै आधार माथै अरध मागधी प्राकृत री निम्नलिखित विसेसतावां बताइजी है–

1. श, ष री जागां अरध मागधी में स् बण जावै–

   श्रावक > सावग

   वर्ष > वरस।

2. घणी ई बार दन्त्य ध्वनि मूर्धन्य ध्वनि में बदळीज जावै, ज्यांन–

   स्थित > ठिय

   परिस्थिति > परठ।

3. घणी ई जागां स्पर्श ध्वनि रौ लोप हुवण सूं उठै 'य' श्रुति बरतीजै, ज्यांन–

   सागर > सायर

   स्थित > ठिय।

   राजस्थानी में ई आ प्रवृत्ति लखावै।

4. च– वरग री जागां कठै–कठै त–वरग मिळै ज्यांन–

   चिकित्सा > तेइच्छा।

(ङ) 'पैशाची प्राकृत' – इण प्राकृत रा बीजा नांव ग्राम्य भासा, भूत–वचन, भूतभाषित, पैशाचिका आद ई है। महाभारत में 'पिशाच' जात रौ उल्लेख मिळै जिणरौ रैवास उत्तर–पिच्छम (कश्मीर रै नैड़ै) हौ। 'पिशाच' रौ अरथ भूत हुवण सूं ई आ प्राकृत भूतभासा कैईजी। श्री चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' 'पिशाच' देस री भासा नैं पैशाची प्राकृत नांव दियौ। हार्नलै इण नैं द्रविडां द्वारा बरतीजण वाळी प्राकृत मानै। वर रूचि इणरी उतपत संस्कृत सूं मानी है। स्यात् इणी वास्तै आ संस्कृत सूं घणी प्रभावित लागै।

गुणाढ्य री 'ब्रिहतकथा' इणी प्राकृत में लिखीजी है। कठै–कठै आ संस्कृत नाटकां में ई बरतीजी है। इणरौ प्रयोग खासतौर सूं नीचलै समाज में प्रचलित हौ। अतः विद्वानां री मानता है कै 'पैशाची प्राकृत' आपरै भू–भाग रै अलावा च्यारू कांनी रै निम्न समाज में बोलीजती ही। इणरी खास–खास विसेसतावां हैं–

1. इणमें सघोष ध्वनि अघोष बण–जावै, ज्यांन–

   गगन > गकन राजा > राचा

   मेघ > मेखो दामोदर > तामोतर

2. इणरै कुछ रूपां में 'ल्', 'र्' में बदळीज जावै अर कुछ रूपां में 'र्' री जगां 'ल्' हुय जावै, ज्यांन–

   फल > फर रद्रं > लुद्दं

   कुमार > कुमाल रुधिर > लुधिलं।

3. इणी भांत 'ण' री जागां 'न्' 'ल्' री जागां 'ळ्', 'ष्' री ठौड़ 'श्' या 'स्' बरतीजै–

   गुण > गुन सलिल > सळिळ

तिष्ठति > चिश्तदि विषम > विसम।

4. बीजी प्राकृतां री दाईं 'पैशाची प्राकृत' में सुरां रै बिचै आवण वाळी 'स्पर्श ध्वनियां' रौ लोप नहीं हुवै–

नगर > नकद सागर > साकर

प्राकृत री सामान्य विसेसतावां

1. प्रायः सगळी प्राकृतां में वै इज स्वर–व्यंजन बरतीजता हा जका, प्राकृत री पैली औस्था (पालि) में बरतीजता हा। इण भांत अ, आ, इ, ई, ए, ऐ, ओ अर औ सुर प्राकृत में मिळै। श, ष ध्वनियां प्राकृत में पैलां सूं ई बरतीजै ही। इणमें ड़् अर ढ़् ध्वनियां ई बरतीजण लागी। पालि रै ध्वनि बदळाव नैं प्राकृत आगै बधायौ–

चैत्र > चेत्त अक्षि > आक्खि ध्वसं > धंस चक्र > चक्क

चक्र > चक्क कर्म > कम्म नृत्य > नच्च आद।

2. प्राकृत में संगीतात्मक बलाघात री बजाय बलात्मक स्वराघात बोहलता सूं देखीजै।

3. प्राकृत में न् प्रायः 'ण्' में बदळीजै, ज्यांन–

स्थान= ढाण नाम= णाम।

4. प्राकृतां में संस्कृत रा स्वर– 'मध्यम घोष' अर अल्प प्राणां रौ लोप हुयग्यौ, ज्यांन–

सागर= सायर वचन= वअण मदन= मअण।

5. संस्कृत रा महाप्राण स्पर्श व्यंजन अठै 'ह्' में बदळीजग्या–

मुख= मुंह कथा= कहा मेघ= मेह।

6. वैदिकी, संस्कृत संजोगात्मक भासावां ही पण प्राकृतकाल में भासावां विजोगात्मक हुवती गयी। विजोगात्मकता होवण रा दो कारण हा– (क) कारक– अैहलांण कै परसरग रौ प्रयोग (ख) क्रिया में क्रदन्ती रूपां अर सहायक क्रिया रै प्रयोग सूं।

7. कालरचना में लिट् (Perfect) रूप रौ लगै–टगै अभाव लखावै अर लङ् (Imperfect) अर लृङ (Abrist) आपस में भेळा हुयग्या, जिका अपभ्रंशकाल ताईं पूरी तरिया सूं खतम हुयग्या।

8. प्राकृतां में तद्भव सबदां री बोहोलता मिळै। आं में वां सबदां रा ई तद्भव रूप लाध जावै जिका आस्ट्रिक या द्रविड़ भासावां सूं संस्कृत अंगैजिया हा। अनुकरण री प्रवृत्ति रै कारण या कीं बीजै कारणां सूं देसज सबदां रौ ई विकास हुयौ। संस्कृत रै माध्यम सूं या पाधरै ई कुछ ग्रीक, ईरानी, तेगिन, तुर्की अर अरबी सबदावली ई बरतीजबा लागी, ज्यांन– खलीन, सुरंग (ग्रीक); थाह, लिपि, दिपि, नमदक (ईरानी); तुर्क, कतक (तुरकी); ढोल्लड (तेगिन); ताजक (अरबी)।

9. पालिकाल में जिकी ध्वनि–बदळाव री प्रवृतियां (समीकरण, लोप, स्वरभगती, मुखसुख आद) री सरुआत व्ही ही, इण काल में वै औजूं बधगी। अै ध्वनि बदळाव सबसूं ज्यादा महाराष्ट्री अर मागधी प्राकृतां में लखीजै।

1.6 'अपभ्रंश'

तीजी प्राकृत इज 'अपभ्रंश' है। इणरा बीजा नांव अवहंस, देसी भासा, आभीरी, आभीरोक्ति, ग्रामीणभासा, अवहट्ट आदि है। वस्तुतः अवहट्ट आधुनिक आर्य भासावां अर 'अपभ्रंश' रै बीच री कड़ी है, पण तुलना करण सूं आ 'अपभ्रंश' रै ज्यादा नैड़ी है। इण वास्तै इणरौ अध्ययन 'अपभ्रंश' में ई करीजै।

'अपभ्रंश नैं औ नांव संस्कृत रा विद्वान दिरायौ। इण रौ पैलौ प्रयोग पतंजली रै 'महाभाष्य' में मिळै– 'एकैकस्य हि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशाः।' व्याडि नाम रै विद्वान पण 'अपभ्रंश' सबद रौ प्रयोग कर्‌यौ है। पण आं दोई विद्वानां रा प्रयोग भासा रै संदर्भ में नीं होय'र सबद रै तद्‌भव कै विक्रत (भ्रष्ट) अरथ में कर्‌यौ है। भासा रै अरथ में अपभ्रंश सबद रौ पैलौ प्रयोग छठै सइकै रा चण्ड नाम रा विद्वान आपरी पोथी, 'प्राकृत लक्षणम्' में कर्‌यौ है। फेर भामह आपरी रचना 'काव्यालंकार' में इणनैं महताऊ काव्य भासा मानी है। धरसेन (दूजौड़ौ) रै तांबापत्तर में ई 'अपभ्रंश' नैं काव्यभासा मानीजी है। आं प्रमाणां सूं जाहिरं हुवै क छठै सइकै तांणी अपभ्रंश नैं काव्यभासा रौ दरजौ मिळग्यौ हौ। इण भांत सरुपोत अपभ्रंश सबद भलै ई हीणता सूचक रैयौ व्है पण पछै इण जनभासा नैं विद्वान काव्यभासा रै रूप में अंगैज लीवी जिकी 12वैं सइकै में हेमचंद्र रै व्याकरण 'शब्दानुशासन' रै माध्यम सूं घणी आदरीजी।

भासा वैग्यानिक, अपभ्रंश रौ समै 500 ई. सूं 1000 ई. नैं मानै। औ काल ऊपर प्रगट्‌या विचारां सूं ई मेळ खावै'क काव्यभासा रै रूप में छठै सइकै लग अपभ्रंश पूरौ मान पाय लीधौ हौ। किणी भासा रै विकास अर मानक रूप लेवण में 100–150 बरस रौ समै लागणौ लाजमी है। इण रूप में ई सुकुमार सेन अर बीजा विद्वानां री आ थरपणा मानी जा सकै'क अपभ्रंश रौ अस्तित्वकाल पहली ई. सूं 600 ई. है। इणी भांत इणरी छैकड़ली काल सीमा ई 1000 ई. सूं आगै मानणौ उचित नहीं हुवैला, क्यूंक देसी भासा री पैली रचना रोड़ा कृत 'राउलवेल' रौ रचनाकाल 1100 ई. है। हां, आ बात दूजी'क अब्दुररहमान रौ 'संदेस रासक' अर 'कीर्तिलता' रा रचनाकाल इण रै पूठै रा है। कोई भासा जद विकास कर जावै, वा साहित्यिक भासा बण जावै तौ उणरा जाणकार कदै ई उण भासा में रचना कर सकै। उण रौ बोली रूप निस्चित रूप सूं आधुनिक आर्य भासावां रै विकास सागै चाल्यौ ई हुवैला। यूं भी भासा विग्यानिकां री मानता है'क आधुनिक आर्यभासावां पुख्ताऊ रूप सूं 14वीं सदी लग पुख्ताऊ बणगी हुवैला।

जूनां अर नुवां विद्वान अपभ्रंश रै अनेकूं भेद बतळाया है। नमिसाधु (10वीं सदी) अपभ्रंश रा तीन भेद मानै– उपनागर, आभीर अर ग्राम्य। 'प्राकृतसर्वस्व' में इणरै 27 भेदां रौ उल्लेख है। पण मारकण्डेय इणरै आं तीन भेदां रौ ई उल्लेख करै– नागर, उपनागर अर ब्राचड़। 'प्राकृतानुशासन' (पुरुषोतम कृत) में नागर, ब्राचड, उपनागर, पांचाल, कैकय, लाट, टक्का आदि भेद मिळै। आधुनिक विद्वानां में याकोबी अपभ्रंश रा अै च्यार भेद– उत्तरी, दिखणी, आथूणी अर उगमणी गिणावै, जद'क डॉ. तगारै इणरा तीन भेद ई मानै– दिखणी, आथमणी अर उगमणी। डॉ. नामवरसिंघ तौ सिरफ आथूणी अर उगमणी अपभ्रंश नैं ई अंगैजै। डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' पांच प्राक्रतां सूं पांच तरियां री अपभ्रंश रै विकास री बात नैं कोनी अंगैजै। वै इण मत सूं न्यांरी धारणां रै विद्वानां सूं अेकमत हुवता प्राक्रत भासावां सूं अपभ्रंश रौ सीधौ संबंध नीं मानता हुया तीन तरियां री प्राक्रत नैं ई महत्त्व देवै– 1. नागर अपभ्रंश 2. ब्राचड़ अपभ्रंश अर 3. उपनागर अपभ्रंश। उणा वै नागर अपभ्रंश रौ क्षेत्र गुजरात नैं मानता थका इणी नैं साहित्यिक अपभ्रंश मानै। हेमचंद्र आपरी प्रसिद्ध अपभ्रंश व्याकरण इणी में लिखी। डॉ. दिनेश रै मतै ब्राचड़ 'अपभ्रंश' सिंध प्रान्त री बोली ही। वै औ ई मानै'क नागर अर ब्राचड़ अपभ्रंश रौ विकास शौरसेनी प्राक्रत सूं ई हुयौ। उपनागर अपभ्रंश ई शौरसेनी प्राक्रत सूं जळमी। इण रौ क्षेत्र आथूणौ राजस्थान अर पंजाब मानीजै।

डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी री इण मानतां नैं प्रायः विद्वान मानै'क हर प्राकृत सूं उणी नाम री अपभ्रंश रौ विकास हुयौ। इण भांत पांच प्राक्रतां सूं पांच अपभ्रंश– शौरसेनी अपभ्रंश, महाराष्ट्री अपभ्रंश, मागधी अपभ्रंश, अरध मागणी अपभ्रंश अर पैशाची अपभ्रंश–रौ विकास हुयौ। डॉ. भोलानाथ आं में ब्राचड़ अपभ्रंश नैं जोड़ता आं छह अपभ्रंश सूं आधुनिक आर्य भासावां रै विकास नैं बतळायौ है। भा.आ.आ.भा. रै विकास अर अपभ्रंश सूं पैलां रै प्राक्रत भेदां नैं अेक सागै विचारतां डॉ. तिवारी री आ थापणा ठावी लागै।

इण विवेचन सूं अपभ्रंश रौ बोलीक्षेत्र आखौ उत्तर भारत हौ। अपभ्रंश रौ संबंध विद्वान आभीरां सूं मानै जिका री पांचवें छठे सइकै में राजास्थान, गुजरात, मालवा में बोहोलता ही। इण प्रभाव सूँ शौरसेनी प्राक्रत प्रभावित व्ही। राजशेखर रै मुजब अपभ्रंश आखी मरुभोम, टक्क अर भादानक देसां में बरतीजती ही। इणसूं औ खुलासौ हुवै'क अपभ्रंश भलै ई पिच्छमोत्तर क्षेत्र में जळमी हुवै, पण उणरौ फैलाव आथूणै

भारत में ई हौ। राजस्थान, गुजरात रै भण्डारां में अपभ्रंश रौ विपुल साहित्य सुरक्षित है। अतः औ कैयौ जा सकै'क अपभ्रंश रौ फैलाव पंजाब, राजस्थान अर गुजरात में हौ अर उणरौ साहित्यिक रूप छठी सदी लग उभर्‌यौ। 8वीं–9वीं सदी लग वा आखै उत्तर भारत री साहित्यिक भासा बणगी अर जनसमाज ई उणनैं बरतीजतौ हौ।

पण संदेस रासक (अब्दुर्रहमान–मुलतान), नाथ–सिद्ध पद–वाणियां (सरहप्पा–शपरप्पा–बिहार, बंगाल), रामायण (स्वयंभू–अवध), व्याकरण (हेमचंद्र–गुजरात) आद सूं खुलासौ हुवै'क अपभ्रंश फगत मध्यदेश लग ई सीमित कोनी ही, वा आखै भारत में प्रचलित ही। बोली रूप में अपभ्रंश रा क्षेत्र मुजब अनेकू भेद हुय सकै पण देस रै हर क्षेत्र री रचना में बरतीजी अपभ्रंश अेक सारिखी है। वां में कठैई कोई क्षेत्रीय भिन्नता कोनी लखावै। डॉ. नामवरसिंघ रै सबदां में ''वास्तविकता यह है कि अपभ्रंशकाल में पंजाब, राजस्थान, गुजरात, शूरसेन तथा उत्तरी महाराष्ट्र की भासा में कोई मौलिक व्याकरण भेद न था। थोड़े–से उच्चारण गत ध्वनिपरक भेदों तथा कतिपय व्याकरणिक विशेषताओं को छोड़कर भासा का ढांचा सर्वत्र बहुत कुछ अेक ही था। XXX इसीलिए कुछ विद्वानों का अनुमान है कि प्राचीन वैयाकरणों द्वारा निरुपित महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी आदि भेद भौगोलिक नहीं है।''

अपभ्रंश अर अवहट्‌ट (अवहट्‌ठ)

अपभ्रंश रै नावां में अवहट्‌ट नांव पण गिणायौ गयौ है। पण कुछ विद्वान अवहट्‌ट नैं अपभ्रंश सूं न्यांरी मानै। डॉ. भोलानाथ तिवारी रै मुजब सरुआती अपभ्रंश अपभ्रंश है अर छेकड़ली अपभ्रंश (उत्तर अपभ्रंश) अवहट्‌ट (अवहट्‌ठ) है। अपभ्रंश आपरै अवसानकाल में भ्रष्ट हुवण लागी, इण वास्तै इणनैं तद्‌भव रूप (अपभ्रंश– अपभ्रष्ट>अवहट्‌ट) में लारली अपभ्रंश सारू लोग अवहट्‌ट नांव बरतीजता हा। सरुआती अपभ्रंश वास्तै अवहट्‌ट रौ प्रयोग नहीं कर्‌यौ गयौ। अबदुरहमान (संदेश–रासक– 12वीं सदी) ज्योतिरीस्वर (वर्णरत्नाकर– 14वीं सदी), विद्यापाटी–कीर्तिलता– 14वीं सदी उत्तरार्द्ध), ठाकुर, बंशीधर आद लारला कविसरां री रचनावां में बरतीजियौ अवहट्‌ट सबद परवर्ती अपभ्रंश सारू ई है। पण सार रूप में औ मत थरपियौ कोनी जा सकै क परवर्ती अपभ्रंश सारू अवहट्‌ट नांव सरवमान्य हौ। वस्तुतः अपभ्रंश रै समानान्तर नावां में अवहट्‌ट पण अेक नांव हौ।

अपभ्रंश री सामान्य विसेसतावां

1. अपभ्रंश भासा रूपात्मक दीठ सूं पूरी तरिया संस्क्रत रै प्रभाव सूं मुगत होयगी। एँ अर ओ सारू इ अर उ नैं बरतीजता हा।
2. अपभ्रंश भासा में दस सुर बरतीजता हा– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, एँ, ए, ओ अर ओं।
3. नुवा व्यंजनां रै विकास सूं व्यंजनां री संख्या बधगी। पांच वरगां (क सूं प वरग) रै अलावा य्‌, र्‌, ल्‌, व्‌, स्‌, ह्‌, न्‌, म्ह, म्ह्‌, न्ह, ण्ह, ल्ह्‌, रह्‌, ड़, ढ़ व्यंजनां रौ ई व्यवहार हुवण लागौ। पांच वरगां रौ पांचवौं वर्ण इण में नहीं हौ।
4. अपभ्रंश में बालात्मक स्वराघात ई मिळै। औ स्वराघात सबद में आदि आखर में मिळै जिणसूं उणरौ आद सुर सुरक्षित रैयौ।
5. अपभ्रंश अेक उ–कार बोहोळ भासा ही। अठै ई आ प्रवृति ब्रज अर अवधी में मिळै (ज्यांन– एकक्कु, कारणु, पियासु, अंगु, जगु आद)।
6. ध्वनि बदळाव री दीठ सूं जिकी प्रवृत्तियां (लोप, आगम, विपर्यय, सुरभगती आद) पालि सूं सरू होय'र प्राक्रत में विकसित व्ही, उणांरौ अठै औजूं विकास हुयौ।
7. सबद में छैकड़लै सुर रौ ह्रस्वीकरण मिळै। सबद रै सरू में बलात्मक सुराघात सूं इणरौ विकास हुयौ, जिकै आ.आ. भासावां में सबदां नैं व्यंजनान्त बणा दियौ।
8. प्राक्रत रै व्यंजन द्वित्व रौ अपभ्रंश में सरलीकरण हुवणौ सरू हुयौ, ज्यांन– कर्म (सं.) > कम्म

(प्रा.) > कामु (अप.); तस्य (सं.) > तस्स (प्रा.) > तासु (अप.)।

9. म्, रौ, वँ, ष्ण रौ न्ह, क्ष रौ क्ख कै च्छ, व रौ ब, य रौ ज अर ड, द, न, र री जागां ल बणणौ अपभ्रंश री खासियत रैयी, ज्यांन– कमल=कॅवल, कृष्ण= कान्ह, पक्षी= पक्खी कै पच्छी, वचन= बअण; कार्य= कारज; प्रदीप्त= पलित्त।

10. नामपदां (संग्या) अर क्रिया पदां रै रूपां में सरलता अर अेकरूपता आयगी। नामपदां में अकारान्त पुल्लिंग रूपां री बोहोळता रैयी जिण सूं दूजा रूप ई प्रभावित हुया।

11. कारक रूपां में अपभ्रंश भासा में कमी आई। अबै सिरफ छह रूप ई बर्ताव में रैया। दो वचनां में तीन कारक वरग इज बरतीजण लागा। पैलौ वरग करता, करम, संबोधन रौ है दूजैडौ वरग करण अर अधिकरण कारक रौ अर तीजैड़ौ वरग समप्रदान, अपादान अर संबंध कारकां रौ है।

12. निरविभक्ति सबदां रौ प्रयोग बध्यौ। सबद आपरै प्रतिपादिक (शून्य प्रत्यय) में बरतीजण लागा। इण भांत री अस्पष्टता नैं आघी करण सारू परसरगां रौ प्रयोग सरू हुयौ, ज्यान– करण कारक में सहूँ, समप्रदान में केहि अर रेसि, अपादान में इन्तिड, थिड, होन्त, सम्बन्ध में केर, कर, का तथा अधिकरण में मंह, मज्झ आद। इण तरियां री दौरप नैं औजूं सरल बनावण वास्तै वाक्य में सबदां री ठौड़ ढावी करीजी।

13. इण भांत अपभ्रंश भासा संजोगात्मकता री बजाय विजोगात्मकता कांनी बधी।

14. सरवनामां रा रूप ई खासतौर सूं पुरुष वाचक सरवनावां रा रूप कम हुया। सागै ई अपभ्रंश में विशेषण–विशेष्य री अबखाई खतम व्ही। अब विशेष्य मुजब विशेषण री अनिवार्यता पूरी तरिया सूं खतम होयगी।

15. श, ष, स में सूं सिरफ 'स' रै प्रयोग रौ ई प्रचलन रैयौ, जिकौ अजै राजस्थानी में ई वर्तमान है।

16. अपभ्रंश में सबदां रै तद्भव रूपां री बोहळता रैयी। इणरै पछै देशज सबदा री बोहोळता है। क्रियावां में ई अै सबद परयाप्त रूप सूं बरतीजै। जुगानुरूप ध्वनि अर दरसाव पांण बण्योड़ा सबद ई अपभ्रंश में बरतीजण लागा। आई थिति तत्सम सबदां री रैयी। सरूआत में आं सबदां रै प्रयोग में कमी आई पण धीरै–धीरै तत्सम सबद ई बोहोळता सागै बरतीजण लागा। विदेशी सबदां रौ प्रयोग ई इण काल में बध्यौ–ठट्ठा (फा.तश्त), ठक्कुर (तेगिन), नीक, तुर्क, तहसील, नौबति, हुद्दादार (फा. ओहदादार) आद।

17. अपभ्रंश में दो लिंग (पुल्लिंग अर स्त्रीलिंग) अर दो वचन (अेक वचन अर बहुवचन) ई बरतीजिया।

18. क्रिया पदां में ई अठै कमी आई। अपभ्रंश में परम्परागत रूप तीन रैय गया– लट्, लोट अर लृट्। बाकी रूपां री अभिव्यक्ति क्रदन्तां अर सहायक क्रियावां रै योग सूं हुवण लागी।

19. संजुक्त क्रिया रौ प्रयोग बध्यौ अर परवर्ती काल में पूर्वकालिक क्रिया में 'इ' प्रत्यय हुवण लागौ। इणी भांत क्रियार्थ संग्या सारू 'अण' प्रत्यय रौ प्रचलन बध्यौ, ज्यांन– चलण, परण, मरण, भरण आद।

प्राक्रत अर अपभ्रंश में अन्तर

1. 500 ईस्वी पैलां सूं 1000 ईस्वी लग रौ मध्यकालीन भारतीय आर्य भासावां रै विकास रौ समै प्राक्रत काल नांव सूं ई ओळखीजै। इण काल में पैली प्राक्रत (पालि), दूजी प्राक्रत (प्राक्रत) अर तीजी प्राक्रत अपभ्रंश रौ विकास हुयौ। इण रूप में प्राक्रत भासा री आपरी खास ओळखांण ही। इणी प्राक्रत रै व्याकरणिक रूप धारबा रै पूठै देसज भासा अर जन भासां रै रूप में अपभ्रंश विकसित व्ही अर पूरै 500 बरसां तांई अस्तित्व में रैयी। इणी सूं आधुनिक आर्य भासावां रौ विकास हुयौ। इण भांत प्राक्रत अेक मूल भासा ही जिण रौ विकास लौकिक संस्क्रत सूं हुयौ अर

अपभ्रंश इणी काल री विकसित भासा ही जिणरौ विकास दूजी प्राक्रत (प्राक्रत) सूं हुयौ।

2. मोटे रूप में पांच प्राकृतां ही जिणां रौ आपरौ निजी भौगोलिक बोली क्षेत्र रैयौ। भासिक खिमता रै मुजब वांमें साहित्य पण रचीजियौ। आं रचनावां में भौगोलिक क्षेत्र रै मुजब भासिक भिन्नता लखीजै। विद्वानां रै मुजब आं पांच प्राकृतां सूं पांच अपभ्रंशां विकसित व्ही अर आं रै अलावा ई बीजी अपभ्रंशां (नागर, ब्राचड़, उपनागर आद) आप–आपरै भौगोलिक क्षेत्र में बोलीजती रैयी पण साहित्यिक रूप में अपभ्रंश रौ समान रूप बरतीजियौ। इण दीठ सूं प्राक्रत रौ अस्तित्व आखै भारत में समान रूप सूं रैयौ।

3. क्रियापद, कारक, सबद रूपां, लिंग, वचन आद री दीठ सूं अपभ्रंश प्राकृत री तुलना में औजूं सरल बणती गई। वा प्राकृत री तुलना में बेसी विजोगात्मक भासा है।

4. अपभ्रंश आप रै लारलै बरसां में भ्रष्ट–भासा कै निम्नस्तर रै लोगां री भासा रै रूप में अवहट्ट नांव सूं औळखीजी पण प्राक्रत वास्तै इण तरिया री संग्या कदै प्रचलित कोनी रैयी, जद कै जुदी–जुदी प्राक्रतां समाज रै स्तर मुजब प्रचलित रैयी।

1.7 सार

भारत में आयोड़ै अर अठै बसियोड़ै आर्यां री भासा भारतीय आर्य भासा कैलाई। विद्वान इणरै विकास नैं तीन हिस्सै में बांटियौ। पैलौ काल प्रा. भा.आ.भा. (1500 ई.पू.:500 ई.पू.) री खास भासावां वैदिकी अर लौकिक संस्कृत रही। दूजै काल म.भा.आ.भा. (500 ई.पू.–1000 ई.) नैं प्राकृत नांव देवतां थका, इणरी तीन औसथावां बतायीजी। पैली औस्था री प्राकृत पालि कैयीजी जिण में भगवान बुद्ध उपदेस दिरायां दूजी औस्था प्राक्रत कैलाई, जिकी 1 ई.सूं. 500 ई. तांणी आपरौ विकास कर्‌यौ। प्राकृत नांव सूं इणी प्राकृत भासा रौ अध्ययन करीजै। विद्वान खासतौर सूं इणरा पांच भेद बतावै– शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अरध मागधी अर पिशाची। आं प्राकृतां सूं ई विकसित 500 ई. सू. 1000 ई. लग री तीसरी प्राकृत री भासा अपभ्रंश कैलाई जिकी छठी सदी तांई आपरौ साहित्यिक रूप धार लियौ। डॉ. भोलानाथ तिवारी आं पांच प्राकृतां सूं नीपज्योड़ी अपभ्रंशां में ब्राचड अपभ्रंश नैं जोड़'र आं छह अपभ्रंशां सूं सगळी आधुनिक भा.आ.भा. रौ विकास मानैं। आं भासावां रौ समै 1000 ई. सूं. अजैलग है।

1.8 अभ्यास सारू सवाल

1. भारतीय आर्य भासावां रै अरथ रौ खुलासौ करतां हुया वैदिकी अर लौकिक संस्कृत माथै सारभरी टीप लिखौ।
2. प्राकृत आपौ आप जळमी कै संस्क्रत सूं? इण बात रौ खुलासौ करता हुया प्राकृत भासा री सामान्य विसेसतावां बतावो।
3. प्राकृत काल रौ परिचै देवतां थकां प्रमुख प्रमुख प्राकृतां रौ परिचै देवौ।
4. अपभ्रंश भासा री उतपत बतावता थकां खास–खास अपभ्रंसां रौ परिचै दैवौ।
5. अपभ्रंश भासा रौ भौगोलिक क्षेत्र बतावता हुया इणरी विसेसतावां रौ खुलासौ करौ।
6. अपभ्रंश भासा रौ काल निरधारित करौ अर बतावो'क आप इण मत सूं कठै तांईं सैहमत हौ'क प्राकृतकाल में विकसित प्राक्रतां सूं ई अपभ्रंश रौ विकास हुयौ।
7. किणी दोय माथै सारभरी टीपां लिखौ– वैदिक–संस्कृत, लौकिक–संस्कृत, प्राकृत अर अपभ्रंश।
8. अपभ्रंश अर अवहट्ट रै फरक नैं समझावतां हुया अपभ्रंश भासा री विसेसतावां बतावो।

1.9 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. डॉ. उदयनारायण तिवारी– हिन्दी भाषा का उदभव और विकास

2. डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा– भाषा विज्ञान की भूमिका
3. डॉ. भोलानाथ तिवारी– हिन्दी भाषा
4. डॉ. कन्हैयालाल शर्मा– हिन्दी भाषा एवं नागरी लिपि का विकास
5. डॉ. रामगोपाल शर्मा– अपभ्रंश भाषा का व्याकरण और साहित्य
6. प्रो. दीपचंद्र जैन, डॉ. कैलाश तिवारी– हिन्दी और उसकी विविध बोलियां
7. डॉ. भोलानाथ तिवारी– भाषा विज्ञान

इकाई–2

राजस्थानी भासा : उतपत अर विकास

इकाई रौ मंडाण

2.1 उद्देस्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 राजस्थानी भासा : उतपत अर विकास

2.3.1 उतपत

2.3.1.1 राजस्थानी रा विविध नांव

2.3.1.1 राजस्थानी रौ भौगोलिक क्षेत्र (बोली–क्षेत्र)

2.3.1.1 विद्वानां री मानतावां पांण उतपत बाबत विचार

2.3.2 विकास

2.3.2.1 प्राचीन राजस्थानी

2.3.2.1 माध्यमिक राजस्थानी

2.3.2.1 उत्तरकालीन राजस्थानी

2.3.2.1 आधुनिक राजस्थानी

2.4 इकाई रौ सार

2.5 अभ्यास सारू सवाल

2.6 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

2.1 उद्देस्य

इण इकाई रौ खास उद्देस्य विद्यार्थियां नैं राजस्थानी भासा रौ सामान्य परिचै अर बोली–क्षेत्र नैं बतावतां थका उण री उतपत अर विकास री विसद ओळखांण करावणौ है। इण विगत रै अध्ययन सूं राजस्थानी भासा रै अध्ययन रै प्रति विद्यार्थियां री हूंस बधैला।

2.2. प्रस्तावना

भासा–विग्यान री दीठ सूं राजस्थानी अेक वैग्यानिक अर स्वतंत्र भासा है। इण री अेक लांबी भासिक अर साहित्यिक परम्परा है। अजै लग राजस्थानी री 15–16 नाममाळावां अर सबदकोस इणरै अखूट सबद सामरथ रौ परिचै करावै। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, पद्मश्री सीताराम लालस जैड़ा विद्वानां री व्याकरण मुजब पोथियां राजस्थानी री मासिक सुतंतरता सिद्ध करै। इणभांत राजस्थानी में अेक सुतंतर भासा रा सगळा ई गुण मिळै। आं गुणां रै पांण ई डॉ. ग्रियर्सन, अेल.पी. टैसीटरी, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, डॉ. हरदेव बाहरी, प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी आद विद्वान हिन्दी री बोलियां सूं न्यारी अेक सुतंतर भासा रै रूप में राजस्थानी नैं थरपी है। इण रूप में राजस्थानी भासा री खास–खास विसेसतावां नीचै लिख्योड़ी हैं–

1. राजस्थानी घणी मीठी–मोवणी भासा है। इण मिठास नैं औजूं बधावै इणरी ऊन वाचक प्रव्रत्ति। नींदाळू, गोरड़ी, लाडकड़ी, बनड़ी, सूवटौ, काळकी, मीठड़ी जैड़ा सबद संबोधण में मतैई रस घोळै। अेक आकरसण अर अपणायत रौ अणभव करावै।
2. राजस्थानी री सोभा सबद–परम्परा ई आपणी मौलिक सांस्क्रतिक अरथावू दीठ रा दरसाव

करावै। समाज में भूंडा अरथ देवण वाळा, अपसकुनी अरथ–बोध करावण वाळा सबदां नैं मांगळीक अरथां में बरतीजणौ ई सोभन–सबदावली रौ उद्देस्य हुवै। राजस्थानी में अैड़ा सांतरा सबद–प्रयोग है– दुकान बढाणौ (दुकान बंद करण वास्तै), दीवौ नन्दाणौ कै दीवौ बढ़ाणौ (दीवौ बुझावण सारू), मिरत्यु वास्तै– रामसरण होणौ, धाम पधारणौ, सीधारणौ, नारेळ बदारौ (नारेळ नैं तोड़बा वास्तै), रामरस (=लूण), कीड़ौ (= सांप), रात रौ राजा (=उल्लू) आद।

3. राजस्थानी रौ सबद–भण्डार व्यापक अर लूंठौ है। अेक सबद सारू घणाई पर्याय इणरै सबदां री मालदारी प्रमाणित करै। राजस्थानी भासा री सामान्य सबदावली सागै ई इणरी अनुरणात्मक, प्रतिध्वन्यात्मक, देसज सबदावली ई इणरी समरिद्धि रौ डंकौ बजावै।

4. ऋ, क्ष, त्र, ज्ञ वरणां रौ राजस्थानी में स्वतंत्र रूप सूं बरताव नहीं हुवै। ऋ नैं रि, क्ष नैं ख या छ, त्र नैं व्र अर ज्ञ नैं ग्य या न रूप में लिखण री परम्परा है, ज्यांन– ऋषि > रिखि, पृथ्वी > प्रथवी, प्रिथवी, क्षेत्र > खेत, खैतर, छैतर, त्रिगुण > व्रिगुण, तृप्त > तिरपत, ज्ञान > ग्यान, नांण।

5. ड़, ढ़, ण, ळ, व़, स़ व्यंजन राजस्थानी भासा री ओळखांण थरपण वाळी खास ध्वनियां है।

6. राजस्थानी में श, ष, स व्यंजन ध्वनियां रौ सदीव सूं प्रचलण रैयौ पण भासिक ग्यान रै अभाव में लिखबा में लोगां रौ 'स' कांनी इज बत्थौ आग्रह रैयौ। आधुनिक राजस्थानी में अै तीन्यू ध्वनियां आपरै मूल रूप में बरतीजै।

7. राजस्थानी में मुख–सुख री प्रव्रति बोहोळता सागै लखीजै। खासतौर सूं संजुक्त वरणां में स्वर–भगती अर विपरजय रूपां में आ प्रव्रति घणी ऊजळी है–

   जागृति > जागरती, प्रभा > परभा, वर्ण > वरण, श्मसान > मसाण

8. अठै अलेखूं संग्यावां अैड़ी मिळै जिकी रूपभेद रै बिना पुल्लिंग–स्त्रीलिंग दोन्यू में मिळै– तेवड़, निसास, घात, सिकार, काळस, पूंछ, ओखद, बगत, कांकड़, आळजंजाळ आद।

9. राजस्थानी में दोय वचन (अेकवचन, द्विवचन) अर दोय लिंग (पुल्लिंग–स्त्रीलिंग) हुवै। मारवाड़ी रै प्रभाव सूं 'वां' प्रत्यय रौ ई बहुवचन बणावण सारू प्रयोग हुवै– रचनावां, लेखकावां, क्रतियां, नरावां।

10. राजस्थानी में भविस्यतकालिक क्रियावां में विविधता है। मेवाड़ में गा, गी, गे, गो रै सागै ई ला, ली, लो ई बरतीजै। बीकानेर कांनी सा, सी, स्यूं रौ बरताव मिळै। मारवाड़ में ला, ली, ले, लौ रौ प्रचलण है।

11. राजस्थानी में संस्क्रत सूं हिन्दी में विगसित हुयौड़ा अव्ययां रौ इज बरताव मिळै। आं रूपां नैं राजस्थानी रूपान्तर कैय सकां– अबार, अजै, कद, काल, टपट, अगाड़ी, अठै, उठै, आगै, पछवाड़ै, नीचै, हेटै, बीचाळै, अर, पण, कै, तद, हौळै–हौळै, मधरै–मधरै आद।

2.3 राजस्थानी भासा : उतपत अर विकास

2.3.1 उतपत

संसार री सगळी भासावां अठारै भासा–परिवारां में बांटीजी है। राजस्थानी भारत रै राजस्थान प्रदेस री भासा है। भारतीय भासावां मुजब भासा–परिवार भारोपीय कै भारत–आर्य परिवार नांव सूं ओळखीजै। भारतीय आर्य–भासावां रै विकास नैं तीन कालां में बांट्यौ जा सकै–

अ. जूनी भारतीय आर्य भासावां (1500 ईसा पैलां सूं 500 ईसा पैलां)

आ. मध्यकालीन भारतीय आर्य भासावां (500 ईसा पैलां सूं 1000 ई.)

इ. आधुनिक भारतीय आर्य भासावां (1000 ईसा सूं अजै तांईं)।

विकास री दीठ सूं राजस्थानी आधुनिक भारतीय आर्य–भासावां सूं जुड़योड़ी है। भासा–वैग्यानिकां रै मुजब दसवैं सैइकै रै छैला बरसां तांईं उत्तरकालीन अपभ्रंस आपरै जूनै रूप सूं अळगी होयगी। तद सूं इज देसज भासावां रौ विकास नै। 12–13 वैं सैईकै रै लगै–टगै मानै। हिन्दी, गुजराती या जूनी राजस्थानी, बंगला, मराठी आद आधुनिक देसज भासावां आप–आप री अपभ्रंस सूं अळगी होयगी।

2.3.1.1 राजस्थानी रा विविध नांव

राजस्थानी राजस्थान री भासा रौ नुंवौ नांव है। राजस्थान सबद राज+स्थान रौ जोग है, जिणरौ अरथ है राजावां रौ ठाण अर्थात् राजावां रौ राज। राजस्थान रै 'ई' प्रत्यय लगावण सूं भासा विसेस राजस्थानी सबद रौ निर्माण हुयौ। राजस्थान री भासा वास्तै औ नांव अंग्रेजं दियौ। उद्योतन सूरी री रचना 'कुवलय–माला' में मरू प्रदेस री भासा रै रूप में मरू भासा रौ उल्लेख मिळै– 'अप्पा तुप्प भणिरे अहपेच्छउ मारुए तत्तो।' मरू भासा रै सागै ई राजस्थान री भासा सारू मरूगुर्जरी, जूनी गुजराती, लोकभासा, डिंगल, पुराणी राजस्थानी नांव ई प्रचलित रैया है।

रस विलास (गोपाल लाहोरी), आइनै अकबरी, बेलि क्रिसन रुकमणी री, पाबूप्रकाश (मोडजी आशिया), वंशभास्कर (सूर्यमल मिश्रण) आद रचनावां मरू भासा नांव नैं प्रमाणित करै। डॉ. अेल.पी. तैस्सीतोरी इण नैं पुराणी राजस्थानी नांव दियौ। गुजरात री सींव सूं लाग्योड़ी हुवण सूं इण क्षेत्र री भासा नैं मोहनलाल दलीचंद देसाई अर जीवराज बेचरदास दोसी जैड़ा विद्वान जूनी गुजराती नांव दियौ। 'ढोला मारू रा दूहा' रा संपादकत्रय इणनैं लोकभासा री संग्या दीवी। उदयराज उज्वल राजस्थानी नैं डिंगल भासा कैयी। पण डिंगल मध्यकालीन राजस्थानी कविता री फगत अेक सैली इज ही। उण नैं भासा नहीं कैयौ जा सकै। ब्रिहतर राजस्थान निर्माण रै पैलां राजस्थान में गुजरात रौ बोहोत बड़ौ भू–भाग सामिळ हौ अर गुजराती नैं राजस्थानी रौ उद्गम ई अेक इज अपभ्रंस सौरसेनी रै नागर रूप या मरूगूजरी रूप सूं हुयौ, इण वास्तै इण रौ नांव तद मरूगूर्जरी पण सही कैयो जा सकै। तद इण मरूगुर्जर प्रदेस री राजधानी भीनमाल (जालोर) ही। कुछ लोग इण नैं मारवाड़ी ई कैवै। पण मारवाड़ी राजस्थानी री अेक बोळी है जिकी राजस्थान रै मारवाड़ भू–भाग में बोलीजै। अतः आं सगळा नांवां में आज री स्थितियां अर व्यापकता री दीठ सूं राजस्थान प्रदेस री भासा सारू राजस्थानी नांव ई खरौ है।

2.3.1.2 राजस्थानी रौ भौगोलिक क्षेत्र (बोली– खेतर)

ऊपर खुलासौ कर चुक्या हा कै राजस्थानी मरू भासा, आथूणी (पश्चिमी) राजस्थानी, जूनी गुजराती, जूनी राजस्थानी, डिंगल आद नांवां सूं बरतीजती रैयी। इणीज परम्परा में भासा–वैग्यानिक इणरौ भौगोलिक क्षेत्र कूंतता रैया। डॉ. सुनीति कुमार चटरजी राजस्थानी भासा में वर्तमान राजस्थान री सगळी बोलियां (धौळलुपर अर करोली री ब्रज नैं छोड़'र) रै सागै मध्य प्रदेस रै मालवै री मालवी, पहाड़ी प्रदेसां री भीली, पंजाब अर कश्मीर री गूजरी नै बणजारां अर बाळदियां आद घुम्मकड़ जातियां री बोलियां नैं मानै। इतियासकार प्रिथिसिंह मेहता राजस्थानी रै भौगोलिक विस्तार नैं मांडता थका कैवै 'राजस्थानी सगळा राजस्थान रै भू–भाग री भासा है। राजस्थान खेतर में भोम, भासा, रहण–सहण, विचार–व्यवहार अर इतियास री दीठ सूं आथमणै भारत रै उतराद में सरस्वती कै हाकड़ा नदी रै सूखै थाळा सूं दिखणांद में सतपुड़ा रै भाखरां रै ढळाव अर तापती नदी लग नै ऊगमणै में बेतवा नदी री ऊपरली धारा सूं आथमणै में ऊमरकोट सागै सिंध नदी री ऊगमणी धारा ताई रै भाग नैं सामिळ करणौ चाहिजै।'

डॉ. मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी नैं आर्यभासा री अेक साख मानता थकां उण रै खेतर रौ इण भांत निरधारण करै– 'इण समै आ सगळै राजस्थान अर माळवै री भासा है अर मध्यप्रदेस, सिंध नै पंजाब रै ई कुछ हिस्सै में आ बोलीजै।' प्रो. नरोतमदास स्वामी राजस्थान रै सीमाड़ै री बोळियां रै पांण राजस्थानी रौ भौगोलिक क्षेत्र इण भांत निरुपित करै, ''राजस्थानी के पूर्वोत्तर में हिन्दी की बांगडू बोली, उत्तर में पंजाबी, पश्चिमोत्तर में मुलतानी (लहंदा), पश्चिम में सिंधी, दक्षिण–पश्चिम में गुजराती, दक्षिण में मराठी, और पूर्व मे हिन्दी की बुंदेली तथा ब्रज भासा नाम की बोलियां बोली जाती हैं।''

राजस्थानी भासा रै बोलीजण वाळै भौगोलिक खेतर मुजब आं सगळी मानतावां रै परिपेख में औ कैयौ जा सकै क राजस्थानी वर्तमान राजस्थान रै रैवासियां री भासा है। इणमें वर्तमान राजस्थान रै ज़िलावां में सूं धोळपुर, भरतपुर अर करोली ज़िलावां नैं छोड़'र बाकी 30 जिलावां; मध्यप्रदेस रै मालवा; राजस्थान रै सीमाड़ै रौ पंजाब (फाजिल्का, अबोहर, मलोट, बटिण्डा); हरियाणा (हिसार, सिरसा, भिवाणी, नारनौल, मोहिन्दरगढ़, गुड़गांव) रा भू–भाग सामिळ हैं। इण भांत राजस्थानी रै भौगोलिक खेतर रै उत्तराद में लहंदा, पंजाबी अर हरियाणवी; आथूणै में सिंधी, गुजराती; दिखणाद में मराठी अर ऊगमणै में बुन्देली रौ क्षेत्र है। इणीज वास्तै आ अेक कांनी ब्रज अर बुंदेली सूं घणी प्रभावित है अर दूजी कांनी इणरौ गुजराती सूं अेतियासिक संबंध है। ऊपर कैयोड़ा भूभाग रै अलावा असम, आथूणै बंगाल, उड़ीसा, महाराष्ट्र अर दिखणी भारत में बिणज–व्यापार सूं जुड्योड़ा प्रवासी राजस्थानियां री ई भासा राजस्थानी है।

इण सारु अठै औ कैवणौ उल्लेखजोग है के प्रान्त वाचक राजस्थान नांव सूं बण्योड़ै सबद 'राजस्थानी' री भासा–सीमा उणरी भौगोलिक सीमावां सूं न्यारी है। डॉ. चटर्जी जॉर्ज ग्रियर्सन अर डॉ. कन्हैयालाल शर्मा जैड़ा विद्वान इणी मानता रा पोसक है।

राजस्थानी रै इण भौगोलिक खेतर रै आधार माथै ग्रियर्सन राजस्थानी नैं आं पांच भागा में बांटै– (क) आथूणी राजस्थानी (मारवाड़ी) (ख) मध्यपूर्वी राजस्थानी (ग) उत्तरी पूर्वी राजस्थानी (घ) दिखणी–ऊगमणी राजस्थानी अर (ङ) नीमाड़ी। व्याकराणिक संरचना री दीठ सूं विद्वान राजस्थानी रा दो रूप बतळावै– (अ) आथमणी राजस्थानी अर (आ) ऊगमणी राजस्थानी।

यूं तौ मरदमशुमारी रिपोर्ट आद रै आधार पांण राजस्थानी री अनेकू बोलियां हैं। पण आं बोलियां नैं आथमणी अर ऊगमणी राजस्थानी रै रूप में इण भांत प्रस्तुत कर सकां– आथमणी राजस्थानी– मारवाड़ी, मेरवाड़ी, मेवाड़ी, शेखावटी, मालवी आद।

ऊगमणी राजस्थानी– ढूंढाड़ी (जयपुरी), किशनगढ़ी, अजमेरी, हाड़ौती, काठैड़ा, मेवाती, तोरावाटी, नागरचाल, आद। आं सगळी बोलियां में सूं राजस्थानी री खास–खास निम्नलिखित बोलियां कैयी जा सकै– मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, मेवाती, वागड़ी, शेखावटी, मेवाड़ी, मेरवाड़ी अर किशनगढ़ी। अै बोलियां राजस्थान रै पूरै भौगोलिक खेतर सूं जुड़योड़ी हैं। आं में सूं राजस्थानी री मानीती बोलियां रौ परिचै प्रस्तुत है–

(क) मारवाड़ी– मारवाड़ी राजस्थान रै मारवाड़ क्षेत्र री बोली है। इणरौ मानक रूप जोधपुर अर उणरै अैड़ै–नैड़ै बोल्यौ जावै। जोधपुर रै ओसवालां अर माथुरां री बोली मारवाड़ी रौ सागौ उदाहरण कैयौ जा सकै। आपरी उपबोलियां रै मेळ सागै आ ऊगमणै में अजमेर, किसनगढ़, मेवाड़ तांई, दिखणांद में सिरोही, रानीवाड़ा लग; आथमणै में जैसाणै, शाहगढ़ अर उत्तराद में बीकाणै, गंगानगर तांई नै जयपुर रै उत्तराद रै पिलाणी लग बोलीजै।

साहित्य री दीठ सूं मारवाड़ी घणी समरिद्ध बोली है। इणी आधार माथै आ राजस्थानी री 'मानक' बोली बण सकी। काव्य में इणरी डिंगल सैली घणी चावी है। भासा–अध्ययन री दीठ सूं ई इणरौ लूंठौ महतब है। सौरसेनी प्राक्रत अर आधुनिक हिन्दी रै विकास रौ खुलासौ करबा वास्तै आ घणी महताऊ कड़ी रौ काम करै।

संस्क्रत, प्राक्रत, अपभ्रंश, अरबी–फारसी रौ सेहज मेळ इणनैं ओपती बणावै। इणमें अै अर औ रौ उच्चारण तत्सम सबदां में अइ अर अउ ज्यांन हुवै। इणमें संबन्ध कारक सारू रा, री, रै, रौ रौ प्रयोग हुवै। संयोजक अव्यय रै रूप में मारवाड़ी में नै (अनै) कै अर बरतीजै। ब अर व री बिचाळी ध्वनि 'व़' अर वैदिक 'ळ' इणरी ओळखांण है।

(ख) ढूँढाड़ी– इणरौ नुवौ नांव जयपुरी है। ढूंढ़ाड़ी रौ आधार जयपुर रै आथूणै में बस्योड़ी जगा 'ढूंढ' है। इणरौ मानक रूप जयपुर शहर में बोलीजै। इणरा पांच स्थानीय रूप ई मिळै– तोरावाटी, काठेडा, चौरासी, नागरचाळ अर राजावाटी।

ढूंढाड़ी रै उत्तर–पूरब में मेवाती; ऊगमणै में ब्रज अर बुंदेली; दिखणांद में मालवी अर उत्तराद–आथमणै में मारवाड़ी बोली जावै।

इणमें वर्तमान काल सारू छै, भूतकाल वास्तै छी अर भविस्यतकाल सारू स्यूं, स्यां, ला, ली सहायक क्रियावां वापरीजै। संबन्ध–कारकां रै परसरगां वास्तै इणमें का, की, कै बरतीजै। अधिकरण परसरग में 'में' रै अलावा ऊपर, माळै रौ ई प्रचलन है। सन्त कवि दादू अर उणा री सिस्य–परम्परा रा कवि आपरी रचनावां ढूंढाड़ी में ई लिखी।

(ग) हाड़ौती– कोटा, बूंदी, झालावाड़, बारां री बोली हाड़ौती नांव सूं ओळखीजै। उच्चारण री दीठ सूं आ ढूंढाड़ी रै घणी नैड़ै लखीजै। इण समानता रै कारण कोई विद्वान इणनैं ढूंढाड़ी में ई सामिळ करै पण भौगोलिक आधार माथै दोया में घणों फरक मिळै। डॉ. कन्हैयालाल शर्मा इण रै भौगोलिक खेतर नैं बतळावता थका लिखै ''हाड़ौती वर्तमान कोटा, बूंदी ज़िलों तथा झालावाड़ ज़िले के उत्तरी भाग की प्रमुख बोली है। कोटा जिले की शाहबाद व किशनगंज तहसीलों के पूर्वी भाग के निवासी हाड़ौती भाषी नहीं हैं और बूंदी ज़िले की इन्द्रगढ़ और नैनवा तहसीलो के उत्तरी भाग भी इस बोली के क्षेत्र के बाहर हैं।''

हाड़ौती में लोक–साहित्य री इधकाई मिळै जिणरी साख डॉ. कन्हैयालाल शर्मा री पोथी 'हाड़ौती का लोक साहित्य' है। इणरै सबद–रूपां में दो अविकारी अर दो विकारी रूप मिळै। विकारी–रूपां रै सागै न्यारा–न्यारा परसरगां रै जोग सूं वै कारकीय संबन्धां नैं प्रगटै। अविकारी अेकवचन रौ प्रत्यय शून्य (0) है अर बहुवचन रौ 'आ' जिणसूं 'छोरौ' अर 'छोरा' रूप बणै। स्त्रीलिंग रै बहुवचनां रै वास्तै 'आ' प्रत्यय रौ प्रयोग हुवै। जिकौ सबद रै मात्रा–भेद सूं 'यां' कै 'वां' रूप में बदळीज जावै– मालण्यां, चारण्यां, छोर्‌यां आद।

(घ) मेवाती– आ उत्तर–पूरबी राजस्थान री बोली है। सुद्ध मेवाती अलवर, भरतपुर रै उत्तराद–दिखणाद अर हरियाणा रै गुड़गांव रै दिखणी भाग में बोलीजै। अेक कांनी इन माथै ब्रज अर खड़ी बोली रौ प्रभाव लखीजै तौ दूजी कांनी आ ढूंढाड़ी सूं प्रभावित लागै। इणरी खास–खास उपबोलियां हैं– राठी मेवाती, नहेड़ा मेवाती, कठेर मेवाती, अहीरवाटी।

चरणदासी–सम्प्रदाय रौ साहित मेवाती बोली री अमोल साहित–सम्पदा है। मेवाती री कैवतां ई आपरौ महतव राखै। इणमें महाप्राण ध्वनियां नैं अलपप्राण करणै री तथा मुखसुख सारू लोप अर बलाघात प्रव्रति बोहोळता सागै मिळै। आकारान्त सबदां में अेकवचन सूं बहुवचन बणावती दांण अनुस्वार कै 'न' रौ प्रयोग हुवै–

गलियारा > गलियारां, गलियारान; चेला > चेला, चेलान।

मेवाती में सम्बन्ध कारक सारू का, की, के अर अपादान कारक वास्तै 'तैं' परसर्ग बरतीजै–

(अ) बिरामण का लड़का दो कासी करोत पढ़बा चला गया।

(आ) उनमें तैं छोटा नैं अपणा बाप तैं कही बाबा धन में तैं बटको आवै सो मूनै बांट दे।

(ङ) व़ागड़ी– डूँगरपुर अर बांसवाड़ा रौ मिळ्यौ–जुळ्यौ खेतर व़ागड़ नांव सूं जाणीजै। इण क्षेत्र री भासा नैं व़ागड़ी कैवै। आ मेवाड़ रै दिखणांद अर सूंथ रै उत्तराद में ई बोलीजै। डॉ. ग्रियर्सन, डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' इण नैं भीली कैवै। असल में इण भोम माथै रैवण वाळा भीलां री बोली ई भीली है। भीली अर व़ागड़ी में फगत उच्चारण रौ ई फरक है। व़ागड़ी में च, छ रौ उच्चारण 'स' अर 'स़' रौ उच्चारण 'ह' हुवै। संबन्धकारक रा अेहलांण ना, नी, नो बरतीजै। अेक वचन सूं बहुवचन बनावण सारू इणमें किणी विभक्ति–अेहळांण रौ प्रयोग कोनी हुवै। फगत सबदां रै संजोग सूं ई वचन रौ निरधारण कर्‌यौ जा सकै। लोक साहित्य री इणमें इधकाई है, जिकौ भासा–विग्यान री दीठ सूं घणौ महताऊ कैयौ जा सकै।

(च) मेवाड़ी– मेवाड़ भौम रै दिखणी–ऊगमणै हिस्सै नैं छोड़'र सगळै मेवाड़ अर उणरै सीमाड़ै रै प्रदेसां रै कुछेक भागां (नीमच–मध्यप्रदेस) में बोलीजै। इणरौ असली रूप मेवाड़ रै गांवां में सुण्यौ जा सकै, जठै आ आपरै मानकरूप में बोलीजै। स्हैरां में इण माथै हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी रौ रंग चढ़तौ जाय रैयौ है।

मेवाड़ी री अेक लांबी साहित्यिक परम्परा रैयी है। महाराणा कुंभा रा लिख्योड़ा च्यार नाटकां में बरतीजी मेवाड़ी नैं राजस्थानी री बोलियां में साहित्यिक–निरमाण रौ पैलौ अेतियासिक उल्लेख कैयीजै। मेवाड़ी रा उल्लेखजोग कवि–लिखारा हैं– हेमरतन सूरि, किसना आढा, महाराज चतुरसिंघ, नाथूसिंघ महियारिया, रामसिंघ सोळंकी, राणी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत आद।

मेवाड़ी में इ–कार अर उ–कार री ठौड़ अ–कार री प्रव्रत्ति मिळै– हाजर, मनख, मालम, वराजौ आद। इणमें भूतकालिक सहायक क्रियावां सारू था, थी, हो अर भविस्यत कालिक क्रियावां वास्तै गा, गी, गो रौ प्रयोग मिळै। साहित में प्रसंग मुजब ला, ली, लो भविष्यतकालिक क्रियावां ई बरतीजै। इणी भांत सम्बन्ध कारक परसरगां रै रूप में का, की, के रै सागै ई रा, री, रै, रौ ई प्रचलन है।

(छ) मालवी– उज्जैन रै आखती–पाखती रौ इलाकों मालवां नांव सूं औळखीजै। इण खेतर री बोली मालवी है। इणरै आथमणै में परताबगढ़ (राजस्थान), रतलाम (मध्यप्रदेस), दिक्खण–पिच्छम में इन्दौर, दिक्खण–पूरब में भोपाल अर होसंगाबाद रौ आथमणौ हिस्सौ, उत्तर–पिच्छम में नीमच अर उत्तराद में

ग्वालियर रौ थोड़ौ'क हिस्सौ सामिळ है। व्याकरण री दीठ सूं आ मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, मेवाड़ी सूं मिळै। इणरै सबद–भण्डार माथै बुंदेली, गुजराती, मराठी रौ घणौ प्रभाव लखीजै। इणरै सीमाड़ै री अनेकूं उप–बोलियां हैं– निमाड़ी, उमठवाड़ी, रतलामी, सोंधवाड़ी आद।

मालवी में इ, उ, अ ध्वनियां आपस में बदळीजती रैवै। बीचाळै अर छैलड़ै सबद में आवण वाळै 'ड़' रौ उच्चारण 'ड' हुवै–

लड़की > लडकीं; घोड़ौ > घोडौ।

इणमें 'ह' री जागां 'य' कै 'व' ध्वनि मिळै अथवा उणां रौ लोप हुय जावै–

मोहन > मोयन; लुहार > लुवार महीना > मईना।

(ज) सेखावाटी– राजस्थान प्रदेस रै पूर्वोत्तर री भौम माथै सेखावतां रै राज सूं औ क्षेत्र सेखावाटी नांव सूं औळखीजै अर अठां री बोली शेखावाटी कैईजै। असल में इणनैं मारवाड़ी री उपबोली कैवणौ ठीक रैवैला। बोली रूप में डॉ. कैलाशचंद्र अग्रवाल मुजब इणरौ भौगोलिक खेतर उत्तर में पिलाणी, सूरजगढ़ सूं लेय'र दिखणांद में उदयपुरवाटी तहसील अर सीकर तांईं तथा आथमणै में फतेहपुर सूं लेय'र ऊगमणै में खेतड़ी, सिंघाणा तांईं बोलीजण वाळी बोली सेखावाटी है। उच्चारण री दीठ सूं इण नैं बांगरू रै नैड़ै कैयी जा सकै। इणमें दो लिंग, दो वचन बरतीजै। भविस्यतकालिक क्रियावां सारू सा, सी, सूं रौ अर संबन्ध कारकां रै वास्तै का, की, कै, को रौ प्रयोग हुवै।

2.3.1.3 विद्वानां री मानतावां पांण राजस्थानी री उतपत अर सार

असल में राजस्थानी री उतपत किण अपभ्रंश सूं व्ही, इण बाबत भासा–विग्यानिक अेक मत कोनी। ज्यादातर भासा–विग्यानिक इण नैं नागर अपभ्रंश सूं नीपज्योड़ी कैवै। पण रिचार्ड पिशैल, अेल.पी. टैसीटरी जैड़ा विचारक राजस्थानी नैं 'शौरसेनी अपभ्रंश' सूं नीपज्योड़ी मानै। डॉ. के. एम. मुंशी, श्री अेन.वी. दिवेटिया अर मुनि जिनविजय जी राजस्थानी री उतपत 'मरू गूजरी अपभ्रंश' सूं बतळावै। डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी री मानता मुजब इणरी उतपत 'सौरास्ट्री अपभ्रंश' सूं व्ही। आं सगळी मानतावां रै परिपेख में नागर–अपभ्रंस नैं मरू गूजरी नांव देवणौ ठीक रैवैला, क्यूं क प्रारम्भिक काल में राजस्थानी गुजरात अर मरूप्रदेस री भासा ही। अेल.पी. टैसीटरी अर ग्रियर्सन ई. 16वैं सैइकै तांईं आथमणी राजस्थानी अर गुजराती नैं सारीखी मानै। अतः राजस्थानी री उतपत सौरसेनी अपभ्रंस रै नागर रूप सूं, जिणनैं उण वगत इण खेतर (मरू गुर्जर प्रान्त) में मरू गूजरी ई कैवतां हा, सूं व्ही।

2.3.2 विकास

इण गत दसवीं सदी (विक्रम) रै छैला बरसां सूं राजस्थानी रौ आपरै न्यांरा–न्यांरा रूपां में विकास हुयौ। भरतेश्वर बाहुबली रास (वि.स. 1241), जंबूस्वामी चरित, स्थूलिभद्ररास, रैवंतगिरी रास, चंदनबाला रास आद रै आधार माथै कैयौ जा सकै क 13वैं सैइकै में राजस्थानी विकसित हुय'र आपरै साहित्यिक रूप नैं धारियौ। किणी भासा रै बोली–स्तर सूं भासा तांईं विकास में अेक–दोय सैइकां रौ लागणौ बाजब हुवै। राजस्थानी री विगत नैं विद्वान आप–आप री निगाह सूं मांडी है। डॉ. अेल.पी. टैसीटरी डिंगल सैली नैं आधार मानतां थका राजस्थानी रै विकास नैं दो भागां में बांटै–

1. प्राचीन डिंगल (1300 ई सूं 1600 ई.)

2. अर्वाचीन डिंगल (1601 ई. सूं अजै तांई)।

डॉ. मोतीलाल मेनारिया ई राजस्थानी नैं डिंगल मानता थका इण रै विकास रौ वरणांव प्राचीन अर अर्वाचीन डिंगल सीर्सकां सूं करैं। पण इणरौ कोई काल–निरधारण कोनी करैं। इण चरचा सारू उणां रौ आधार डॉ. टैसीटोरी री मानता इज है। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी रै मुजब आधुनिक भारतीय आर्यभासावां री सरुआत वि.सं. 1200 रै लगै–टगै हुवै। इण समै तांई वां नैं अपभ्रंस सूं अलायदा करणवाळी प्रव्रतियां विकसित हुयगी ही। आं प्रव्रतियां रौ उल्लेख करतां थका वै राजस्थानी भासा रै विकास नैं दोय कालां में बांटै–

1. प्राचीन राजस्थानी काल (वि.सं. 1600 रै पैलां)
2. नवीन राजस्थानी रौ काल (वि.सं. 1600 रै लारै)।

'ढोला–मारू रा दूहा' रा संपादकगण राजस्थानी रै विकास री विगत नैं च्यार रूपां में मांडै–

1. प्राचीन राजस्थानी (वि.सं. 1000–1200 वि.)
2. माध्यमिक राजस्थानी (वि.सं. 1200–1600)
3. उत्तरकालीन राजस्थानी (वि.सं. 1600–1950)
4. आधुनिक राजस्थानी (वि.सं. 1950 सूं अजै लग)।

डॉ. हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी भासा रै विकास नैं आं दोय कालां में विभाजित करै–

1. वि.सं. 1300–1650 अर
2. वि.सं. 1650 सूं आगै तांई।

डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया री मानता मुजब राजस्थानी रै विकास नैं आं च्यार सीर्सकां में सामिलकर सकां–,

1. प्रस्तावना काल (वि.सं. 807 सूं वि.सं. 1057)
2. प्राचीन राजस्थानी भासाकाल (वि.सं. 1058 सूं वि.सं. 1557)
3. मध्यकालीन राजस्थानी भासाकाल (वि.सं. 1558 सूं वि.सं. 1907)
4. आधुनिक राजस्थानी भासाकाल (वि.सं. 1908 सूं सरू)।

आं सगळा काल– विभाजनां अर राजस्थानी री रचनावां रै अध्ययन सूं औळखावै कै राजस्थानी भासा री विकासात्मक प्रव्रति री विगतवार सगळी जाणकारी 'ढोला–मारू रा दूहा' रा सम्पादकां रौ वरगीकरण इज करावै। अतः अठै राजस्थानी रै विकास रौ वरणांव इण वरगीकरण रै मुजब इज करालां–

2.3.2.1 प्राचीन राजस्थानी (वि.सं. 1000–1200)

'ढोला–मारू रा दूहा' रा संपादक इण जुग री भासा नैं लोकभासा कैयी है। उणां रै मुजब इण काल में राजस्थानी रौ बोली– क्षेत्र राजस्थान, गुजरात अर ब्रज प्रान्त हौ। कबीर री रचनावां पांण वै इण काल में राजस्थानी भासा रौ प्रभाव कासीलग मान्यौ है। इण समै भारत माथै मलेच्छा रा आक्रमण सरू हुय चुक्या हा, जिण सूं राजस्थानी में वीररसात्मक काव्य धारा नैं बेसी तवज्जु मिळी। सागै ई लोकभासा रै माध्यम सूं जैन, सिद्ध ई मोकळी रचनावां सिरजी। डॉ. अेल.पी. टैसीटोरी इण काल री राजस्थानी नैं 'पुराणी राजस्थानी' कैवै। पुराणी राजस्थानी में पद्य रै सागै ई सांतरौ गद्य ई रचीजियौ। इण काल री भासा माथै अपभ्रंस रौ सैंठो प्रभाव लखावै। अपभ्रंस री द्वित्त प्रवृत्ति री इधकाई जगां–जगां पै दीखै–

1. **बप्पीहा पिउ पिउ मणिवि कित्तिउ सूअहि ध्यास।**
तुह जाळि मुह पुणि बल्लहइ, विहुँ विन पूरिअ आस।।

2. **अज्जु विहाणड, अज्जु दिणु, अज्जु सुवाड पवत्तु।**
अज्जु गळत्थिउ सवलु दुहु, जं तुहु मह धरि पत्तु।।

इण काल में सबदां में ड, ड़, ण, ळ वरणां री इधकाई ही। सरू में तत्समं सबदां रौ प्रयोग कम हुवतौ हौ पण तद्भव सबदां री इधकाई ही। दीरघ अन्त्य सुरां रौ ह्रस्व कै लोप हुवण री ई प्रव्रती ही। स्त्रीलिंग सारू 'ई' प्रत्यय वापरीजतौ हौ।

2.3.2.2 माध्यमिक राजस्थानी (वि.सं. 1200–1600)

इण काल में राजस्थानी अपभ्रंस सूं न्यारी हुवण लागी। इण जुग रै छेलां डौढ़ सै बरसां नैं छोड़'र सगळै राजस्थान, गुजरात अर ब्रजप्रदेस रै सीमाड़ै माथै राजस्थानी इज बोलीजती ही। लोकभासां रौ ऊगमणौ रूप आथमणैं रूप सूं थौड़ौ न्यारौ हुवण ढूक्यौ। ब्रज रौ ई इण जुग में अणूथौ विकास हुयौ। तत्सम रूपां नैं भासा में लूंठौ महत्व मिळण लागौ। कैवण रौ मतळब राजस्थानी रौ अेक नुवौ परिमार्जित रूप विकसित हुयौ, जिणमें फगत चारण–भाट ई कविता नीं लिखता हा बलकै चारणेत्तर कवि ई साहित्य–सिरजण करण लागा हा। भासा रै इण विकास में इण जुग में साहित्य री तीन सैलियां रौ विकसाव हुयौ–

1. **चारण–भाटां री वीर रस सूं भर्योड़ी कविता**– आं कविसरां री कविता इज आगै चाल'र डिंगल कविता या चारण सैली (डिंगल सैली) री कविता कैलाई। इणमें 'ट' वर्ग री प्रधानता अर द्वित्त सबदावली री इधकाई हुवती ही। ओज गुण डिंगल सैली री आतमा हुवतौ हौ। कान्हड़ दे प्रबन्ध, राव जैतसी रौ छंद, हालाझाला रा कुण्डलियां राजरूपक आद इण सैली री उल्लेखजोग रचनावां हैं। अेक उदाहरण प्रस्तुत है–

मुहु उच्छकि मुच्छ मुहच्छवि कच्छवि मूमइ मूंछ समुच्छलिया
उल्लाळवि खग्ग करग्गि निरग्गक गणइ तिणइ दल अग्गळया
प्रल्लय करि लसकरि लोहि छबच्छव छंट करइ छतोस छळि
रणमल्ल रणंगणि राउत विळसइ रवि तळि खित्तिय रोसबळि

(रणमल्ल छंद–श्रीधर व्यास)

2. **जैन–जतियां री रचनावां**– आं री रचनावां रौ लोकसमाज में खासौ प्रचार हौ। अणां री रचनावां में मंगळाचरण, गुरुवदंना रै सागै प्रबन्ध कै मुक्तक काव्य देसी ढाळां में रचीजता हा। आई सैली जैन सैली नांव सूं ओळखीजै। आं रचनावां रौ खास उद्देस्य संयम रौ उपदेस देवणौ है। आपरै इण लक्ष्य री पावती सारू कवि रचना री सरुआत घोर सिणगार सागै करै अर अन्त वैराग भावना सूं। रचना रै आखिर में कवि पुष्पिका जरूर मांडै। इण सैली री उल्लेखजोग रचनावां हैं– अगड़दत्त रास (कुशललाभ) नलदमयन्ती रास (समयसुंदर) म्रगावती चौपई, हंसराज बच्छराज प्रबन्ध, विद्याविलास रास, कलावती चौपई आद। जैन सैली रौ अेक उदाहरण प्रस्तुत है–

राय नी पीरथि सावीया, नहु पेषई नारि
आकुल व्याकुल इम कहइ कीसूं किरतार
विरह व्यथा व्यापउ हीयइ रामा कजि

राइ दइ नुं लंभा देव नई, वली व्याकुल थाइ।।

(कुशललाभ कृत भीमसेन हंसराज चौपई)

3. **लोकसैली**– इण सैली रा लेखक या तौ खुद जनता हुवती कै ढोली, ढाढी दमामी हुवताा अै गीत नैं गाय'र जनता में सुणावता हा। अै रचनावां किणी अेरू व्यक्ति री नीं होय'र सगळै समाज री होवण सूं ई आ सैली लोकसैली कैलाई। इण सैली री रचनावां में अभिव्यक्ति उद्दाम हुवै। इण दीठ सूं राजस्थानी लोकगीत, लोकनाट्य, लोक गाथावां, लोक कथावां, आखौ संत साहित्य, मीरांबाई रा पद, नरसी मेहता रौ मायरौ, ढोला–मारू रा दूहा, जीणमाता रा गीत, हरजी रौ ब्यावलौ हरजस आद इणी सैली री रचनावां हैं। अेक उदाहरण पेस है–

आंखडिया डंबर हुई, नयण गमाया रोय।
से साजण परदेस मइँ रह्या विडाणा होय।।

मुख नीसांसा मूँकती, नयणे नीर प्रवाह।
सूळी सिरखी से ड़ी तो विण जाणे नाह।।

(ढोला–मारू रा दूहा)

इण जुग में ब्रज (पिंगल) रै अणूथै विकास नैं देख'र राजस्थानी रा लेखक ई ब्रज भासा में लिखण ढूकिया। अतः इण काल री रचनावां नैं म्हां दोय वरगां में बांट सकां–

1. डिंगल रचनावां अर
2. साधारण राजस्थानी (पिंगल) री रचनावां।

इण काल री राजस्थानी री जोड़णी (वर्तनी) अपभ्रंस सूं मिळै। ह्रस्व 'अे' अर 'ओ' इण में बरतीजता हा। आधुनिक राजस्थानी में ई आं रौ प्रयोग हुवै। लिखण में 'अे' अर 'ओ' नैं 'अर' अर 'अउ' रूप में लिखिजता हा–

(1) भरई पळट्टइ भी भरइ भी भरि भी पलटेहि।
ढाढी हाथ संदेसड़उ धण बिललंती देह।।

(ढो मा. रा. दूहा)

(2) माधव दिस प्रति जोवइ बाट, अपछर नावइ मना उचार।
अेक दिवस आचीनर मिळी, बिहु जननी मन पूगी रळी।।

(कुशललाभ : माधवानल कामकंदला चौपई)

मध्यकालीन राजस्थानी में करता, करम, करण, अधिकरण आद कारकां नैं बतळावण वास्तै सबदां अर पूर्वकालिक क्रियावां रै लारै 'इ' कै 'अै' वरण बरतीजता हा।

आं सगळा रै सागै ई इण जुग री राजस्थानी में देसज सबदां सागै संस्क्रत, तुरकी, अरबी अर फारसी रा तत्सम अर तद्भव सबद ई इधकाई सागै रळमिळग्या– पाखरिया, बाथै, फणगरा, चंग, आलवइ, तळपत, आरति, उमावौ, नयन, भुवन पातसाह, फील, अनुराग, आनन आद।

2.3.2.3 उत्तरकालीन राजस्थानी (वि.सं. 1600–1950)

साहित्य री दीठ सूं इण राजस्थानी रौ घणौ मांन है। इण जुग में मोकळी राजस्थानी

गद्य–रचनावां रौ सिरजण हुयौ। इण जुग रै गद्य री खास विधा ख्यात ही। आं ख्यात नांव री रचनावां में राजस्थानी रै इतियास रौ अेक वैग्यानिक अर विगतवार रूप जोयो जा सकै। ख्यात नांव री रचनावां रै पछै इण जुग रै गद्य में सबसूं ज्यादा वातां रौ सिरजण हुयौ।

उत्तरकालीन राजस्थानी री पद्यात्मक रचनावां में राठौड़ प्रिथिराज री क्रिसण रुकमणी री वेलि, सिव–पार्वती री वेलि, कुशललाभ रौ पिंगलशिरोमणि, सूरजमल मीसण रौ 'वंशभास्कर' अर 'वीर सतसई' आद उल्लेखजोग साहित्यिक रचनावां रौ निरमाण हुयौ।

सुद्ध साहित्यिक डिंगल सैली रै सागै इज इण जुग में लोकभासा रै रूप में पिंगल सैली रौ ई विकास हुयौ। 'रुकमणीमंगळ', मेहता 'नरसीजी रौ मायरौ' आद पिंगल सैली री घणी लूंठी रचनावां कैई जा सकै।

1. आलोच्य काल री डिंगल–पिंगल सैली री रचनावां री पड़ताळ सूं बैरौ मिळै क इण काल री राजस्थानी में करमवाच्य अर सातमी विभक्ति रै पैलां पुरुस मुजब अेकवचन रै प्रयोग रै लारै री 'इ' 'अै' में बदळीजती ही–

   कसइ > कसै

   मिळइ > मिळै

   मूकजइ > मूकजै।

2. स्त्रीलिंग संग्यावां रै लारली 'इ' रै बदळै 'अ' रौ आगम हुवण ढूक्यौ–

   ख्याति > ख्यात

   तरवारि > तरवार।

3. करण अर संबंध कारकां रै बहुवचनं में बरतीजण वाळा 'अे' रौ 'आं' में बदळाव सरू हुयौ

   आवधां < आवध (आयुद्ध)

   फौजां < फौज

   सुहड़ां < सुहड़ (सुभट्ट)

4. संस्क्रत रै तत्सम सबदां रौ अर अरबी–फारसी रै तद्भव रूपं रौ सैळौ प्रयोग इधकाई सागै सरू हुयौ–

   संस्क्रत– अरुण, अभिरांम, कंज, नयन, ग्रीवा, पतंग, धनुष, परिधान, वयसंधि आद।

   अरबी–फारसी– आदाब, जमात, तमास, दरवेस, फील, फुरमांण, बंदगी, पातसाह, नजीक, दरकार, मुआफिक आद।

5. संस्क्रत रै तद्भव सबदां रै प्रयोग री प्रव्रति इण जुग में ई पैलां ज्यूं इज रैयी– क्रियारथ (क्रियार्थ), नरहेण (नरेश), अरधंग (अर्धांगिनी), औध (आयुध), परमारथ (परमार्थ), सिरजण (सृजन) आद।

2.3.2.4 आधुनिक राजस्थानी (वि.सं. 1950 सूं अजै तांईं)

इण काल में राजस्थानी भासा रै विकास री गत मदरी पड़गी। इणरौ खास कारण इण जुग में म्हैं, थैं मैं बतळावणौ मान रै खिलाफ मानणौ है। इण रै अलावा लगातार उर्दू–फारसी रै बधतै असर अर अंग्रेजां रै राज सूं उकताया मिनखां री राष्ट्रीय अेकता

री भावना ई है। आजादी रै आन्दोलण री भावना सूं ई राजस्थानी भासा नैं कदैई महत्व नीं दिरीजियौ। अठां रा लेखक ई अेकता री भावना में बेय'र हिन्दी में लिखणौ सरू कर दियौ, जिणसूं राजस्थानी रै विकास में रूकावट पड़ी।

पण सिवचंद्र भरतिया, सूर्यकरण पारीक, प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. कन्हैयालाल सहल, पतरामजी गौड़, रैवतदान चारण, कन्हैयालाल सेठिया, चंद्रसिंह, डॉ. मूलचंद सेठिया, प्रो. सत्यप्रकाश जोसी, जैड़ा राजस्थानी रा हिमायती रचनाकारां राजस्थानियां रै मनड़ै में पाछौ राजस्थानी रै महतव नैं थरपियौ अर उणां रै सरजतनां नैं ठौड़ दीधी तद री राजनीतिक प्रष्ठभोम।

किणी भासा रौ विकास उठां री सियासत अर सरकार रै मुजब इज फळै–फूलै। राजस्थानी रै वास्तै ई आई बात साव़ सांची। अबै लगातार स्कूलां, कॉलेजां, विश्वविद्यालयां में राजस्थानी नैं भणाई रै विसय रै रूप में मानता मिळ गई है, जिण सूं इण रै विकास री सींव रौ निस्चै होय सकै है। राजस्थानी रै अध्यापन री मानता सूं राजस्थानी रै लेखकां नैं साहित्य सिरजण री प्रेरणा मिळी है। लगातार साहित्य सिरजण सूं राजस्थानी री अेकरूपता रै सवाळ रौ ई हल हुवैला। राजस्थानी रै इण काल में आलोचना अर पत्रकारिता रै अलावा साहित्य री बाकी री सगळी विधावां में साहित्य–लेखन री गति सरावण जोग है। साहित्य अकादमी, नई दिल्ली राजस्थानी भाषा, साहित्य अेवं संस्कृति अकादमी नै आकासवाणी ई आधुनिक राजस्थानी नैं समरिद्ध कर रैयी है। आधुनिक राजस्थानी रचनावां रै आधार पांण इणरी हैठै लिख्यौड़ी विसेसतावां लखावै–

1. आधुनिक राजस्थानी रै सबद–भण्डार में बढ़ोतरी व्ही है। इण रै सबद–भण्डार नैं म्हां मौटै तौर सूं तीन भागां में बांट सकां–

   (क) प्रतिध्वन्यात्मक सबद–रचना– काग–साग, खेजड़ी– सेजड़ी, गाड़ी–वाड़ी, घोड़ा–फोड़ा, चारौ–सारौ, छाक–फाक, डाक–साक, चारौ–वारौ, लड़ाई–वड़ाई, पाळा–फाळा, काज–कूज, ऊंट–सूंट, ऊजाड़–फुजाड़, औछौ–ऊछौ, टाबर–टींगर, सैंत–मैंत, चटणी–वटणी, साग–वाग, आंवळ–कांवळ, फूट–फजीता आद।

   (ख) अनुरणात्मक सबद–रचना– कडकच, कठकठ, खड़खच, खणखण, घडघच, छमछम, छळढळ, खळ–खळ, खळळ–खळळ, भड़भच, भमभम, कळकळ, कचडक्क, तगग–तगग, घमघम, डबडब आद।

   (ग) सामान्य सबद– कमठांण, बंधाण, मंडाण, सोमाणी, झूंठाणी, मांडाणी, उचांट, पंगातियौ, आगातियौ, पाछांलियौ, समझाइस, फरमाइस, पैमाइस, चिकणाई, सुथराई, भाइपौ, पूजावौ, रंडापौ, सैंणापौ, धणियाप, मिळाप, भोळप, जोड़ायत, जापायती, नातायती, ओटाळ, सूंवाळौ, मूछाळौ, निभाव, रखाव, घिराव, छळाव, बणाव, छिड़काव, बगावत, पकावट, सिरावण, सिरजण, दिखावौ, धकावौ, पिछतावौ, पीळास, मिठास, खटास, चरकास, रमोकड़, रमतियौ, रमझोळ, रातिन्दौ, जोरावरी, दबैरी, उनमादी, कुचमादी, मांगळीक, पूजनीक, भजनीक, रसीलौ, अडीलौ, गरवीलौ, अड़दू, कथावू, नानैरो, मामैरौ, दादैरौ, टणकार, टणकौ, रैकारौ, हुंकारौ, कांमणगारौ, बणत, छीजत, चौबदार, कामदार, चूड़ीदार, छड़ीदार, लुगाईपणौ, दातारपणौ, मिनखपणौ, छैहड़ौ, छैहलौ, ऊपरलौ, माथामाळौ, धनवंती, सतवंती, पाटवी, करमहीण, भागफूटौ, निपूतौ, अकथ, अजैज, गुमैज,

अधमरियौ, अणछक, अणगिण, अणभाणियौ, अस्टपौर, औगण, कंवळ, कांवळ, कुबांण, चौखुंटौ, चौकोर, चौघटियौ, दुघड़ियौ, संजोग, बिजोग, निरफळ, संतोख, निसंक, निबळौ, निरमोही, विवाद, सावळ, कावळ, सुलखणी, लाखीणौ, सुरंगौ, ऊखळी, औखांण, सीहड, गोखड़ौ, कादौ, कंदोई, अंगरखौ, पगरखी, तिखूणियौ, पजूषण, पतहीणौ, दुकाळ, सुकाळ, धजाळ आद।

(घ) देसज सबद– डीकरौ, डीकरी, गूमड़ी, पाज, जंजाळ, डोकरौ, मोकळा, टापर, बिलमावणौ, सिरावण, ब्याळू, डावड़ी, मोड़ौ, दड़ौ, टहूकड़ा, अड़वौ, हाँचळ, जेज, मेड़ी, गींदवौ, बोझाबांठ, पडवौ, गीगल्यौ, ओळू, झालर, छागळ, माळिया, ढूलड़ी, डाकी, वकारणो, डसूकौ, भातौ, खोळायत, लारौ, गबीड़, टोगड़ी, तेवड़, चंवाळिया, लाडी, चकडोळ, पथरणौ, रीठ, पींजू, डसूकौ, रोहिडौ, कांसौ, टोगड़ी, थेच, सेरी, पीलू, डोफर, चीटला, खोखा, कांकड आद।

(ङ) विदेसी सबद–

(अ) अंग्रेजी– डागधर, पाकिटमार, लीवर, मोबिल (मोबाइल), सूटकेस, कलिनिक (क्लिनिक), कारड (कार्ड), अस्पताल (हॉस्पिटल), वैलकम, रेलगाड़ी, एडमबम, कॉलेज, सिगरेट (सिगार), इन्वीटेशन, पोलिटिकल, फ्रेण्ड, इण्टरनेट, फ्लौपी, साइंस, कम्पूटर (कम्प्यूटर), टेकनिक, सनिमौ (सिनेमा), कोरट (कोर्ट) जज, कॉपरेटिव, लवस्टोरी, लव अफेयर्स, बिल, सी.डी., लेपटाप, प्रोग्रेस, एम.एल.ए., एम.पी., कमेटी, हाफपेंट आद।

(आ) फारसी– मुर्दो (मुर्दा), इज़ाज़त, सतरंज (शतरंज), इंकलाब, मग़जपच्ची, खामोस (खामोश), मुजरौ (मुज़रा), हजरत (हज़रत), फौज (फ़ौज), सलामत, तसलीम, उमराव, दीवांण (दीवान), हकीकत, हुकम (हुक्म), सिलाम (सलाम), नाज़र, फुरमाण (फरमान), कोटवाल (कोतवाल), मरदानगी, परगनो (परगना), फतै (फतह), दरीखानौ, दफ्तरबंध, रोज़गार, पायगा, सिरदार (सरदार), खसबोई (खुशबू), खुस्याली (खुशहाली), दरबार, कचेड़ी, प्यादो, नोपतां (नौबत), जीणपोस, काफर, फरीद, कमसीन आद।

2. आधुनिक राजस्थानी री संग्यावां में औ, इयौ, अर ई प्रत्यय जोड़बा सूं बत्था सूं बत्था च्यार रूप बण सकै–

सोन	सोनौ	सोनियौ	सोनी
जसोद	जसोदौ	जसोदियौ	जसोदी
ऊद	ऊदौ	ऊदियौ	ऊदी
बकर	बकरौ	बकरियौ	बकरी
घोड़	घोड़ौ	घ्योड़ियौ	घोड़ी
तासळ	तासळौ	तासळियौ	तासळी

3. औ, इयौ, ई प्रत्ययां रै अलावा दूजां प्रत्ययां सूं ई आधुनिक राजस्थानी संग्यावां रै लिंग रूपां री रचना होय सकै। अै प्रत्यय हैं– आणी, अण, णी, ई, औ आद। ज्यांन–

बाणियौ	>	बणियाणी	सेठ	>	सेठाणी
कंवर	>	कंवराणी	धणी	>	धणियाणी
पुजारी	>	पुजारिण	दरजी	>	दरजण
नाई	>	नायण	साथी	>	साथण
तैली	>	तैलण	चौधरी	>	चौधरण
जाट	>	जाटणी	बामण	>	बामणी
बींद	>	बींदणी	खटीक	>	खटीकणी
चारण	>	चारणी	दास	>	दासी
कुमार	>	कुमारी	सरगरौ	>	सरगरी
चाळ	>	चाळौ	झाळ	>	झाळौ
हाक	>	हाकौ	लारा	>	लारौ आद।

4. घणकरी पुल्लिंग संग्यावा अैड़ी है जिण रा स्त्रीलिंग रूप नीं मिळै। इण भांत इज नरी सारी स्त्रीलिंग संग्यावां रा पुल्लिंग रूप ई नीं मिळै–

(क) चित्राम, घी, पींजरौ, आटौ, कांम, पांणी, कुंजौ, होठ, भाटौ, साबू, तेल, दांत, आद।

(ख) दाझ, जाजम, गाज, मूंण, काया, सक्कर, सतरंज, आंख आद।

5. घणकरी संग्यावां आधुनिक राजस्थानी में स्त्रीलिंग अर पुल्लिंग दोयां में अेक सारीखी होवै–

तेवड़, निसास, बगत, शिकार, धाग, ओखद, आळजंजाळ, थावस, कांकड़ आद।

6. आधुनिक राजस्थानी में दो संग्यावां रै मेळ सूं ई यौगिक संग्यावां बण सकै–

क.

ठाकर	>	ठकराणी	साध	>	साधाणी
रजपूत	>	रजपूतणी	भंगी	>	भंगण
ढोली	>	ढोलण	छोरौ	>	छोरी
भाई	>	बैन	साळौ	>	साळी
डोकरौ	>	डोकरी	बैन	>	बैहनोई

ब.

सासू–बहू	बाल–बचियां
मासी–भाणजी	सीता–राम
सयणी–बीजाणंद	रतना–हमीर
जेठवा–ऊजळी	रामू–चनणा आद।

7. आधुनिक राजस्थानी अेक सांवठी भासा है। इणमें कुछ अैड़ा सबद मिळै जिका

वेदां में पण बरतीजिया है–

गिरिआरक = सुमेरू परबत, आरक = सोनौ

दलम = इन्दर, तविख (तविष) = स्वर्ग।

8. रूपभेद पण आधुनिक राजस्थानी री निजु विसेसता कैयी जा सकै। अेक इज सबद रा कैई रूप अठै मिळै, ज्यांन– भूमि= भोम, भुहंडी, भुंई, भांय, भुंवि; पृथ्वी=प्रथी, प्रथवी, पोहवी, पुहमी आद।

9. प, व, म, य आद व्यंजन बोलती दांण (उच्चारण मांय) स्वर रै नैड़ै होवण सूं स्वर में बदळ'र आपरै पैला वाळा व्यंजन में मिळ जावै। इण भांत रा बदळाव कदैस इत्ता विसम हुय जावै क नुवी ध्वनि मूल ध्वनि सूं अेकदम बदळ'र न्यांरी दीखबा लागै–

पुत्र	=	पुत्त	=	उत्त	=	वत		
शत	=	सअ	=	सव	=	सउ	=	सौ
नयन	=	नइन	=	नैन	=	नैण।		

10. व़, ण, ळ, ड़, ढ़ ध्वनियां राजस्थानी री ओळखांण थरपै।

11. आधुनिक राजस्थानी रा भूतकालिक क्रदन्तीय रूप– गयोड़ौ, मरियोड़ौ उल्लेख जोग रूप हैं।

2.4 इकाई रौ सार

सैवट, राजस्थानी अेक मानक भासा है। वा हिन्दी री विभासा कै बोली कोनी। भासा विग्यान री दीठ सूं राजस्थानी अेक सुतंतर भासा है। उणरौ अेक ठावौ व्याकरण है, कोस है, सबद–सम्पदा है। साहित्य री व्यापकता अर विविधता है। साहित्य री नुवी विधा पत्रकारिता में ई लगोलग विकास हुय रैयौ है। माणक, जागती जोत, गंगा आद पत्रिकावां री खासी ठौड़ है।

राजस्थानी रौ जूनौ नांव मरू भासा हौ, जिणरौ पैलौ उल्लेख कुवलयमाला में मिळै। इणरै पछै राजस्थानी कै मरुभासा सारू मरुगूजरी, जूनी गुजराती, पुराणी राजस्थानी, लोकभासा, डिंगल नांव ई बरतीजिया पण राजस्थानी नांव ई ठावौ रैयौ। राजस्थान री भासा सारू राजस्थानी नांव नुवौं है, जिकौ इंग्रेजां राजस्थान (राज+ठाण) रै आधार माथै दियौ।

अजै राजस्थानी करोली, धोळपुर अर भरतपुर जिलावां नैं छोड़'र राजस्थाना रै बाकी 30 जिलां री भासा है। इणरै अलावा राजस्थाना रै सीमाड़ै रै पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेस में ई राजस्थानी बोलीजै। असम, आथूणै बंगाल, महाराष्ट्र अर दिखणी भारत में रैवणिया प्रवासी राजस्थानियां री ई भासा राजस्थानी है।

राजस्थानी री उतपत सौरसेनी अपभ्रंस री मरु गूजरी साखा (अपभ्रंस) सूं व्ही। आपरै विविध नावां सागै इणरौ विकास 10वैं सइकै सूं लगोलग हुवतौ रैयौ। अध्ययन री सुविधा सूं इण विकास नैं म्हां आं च्चारं कालां में बांट सकां–

(अ) प्राचीन राजस्थानी (वि. 1000–1200)

(आ) माध्यमिक राजस्थानी (वि. 1200–1600)

(इ) उत्तरकालीन राजस्थानी (वि. 1600–1950)

(ई) आधुनिक राजस्थानी (वि. 1950 सूं अजै तांईं)

(आं) कालां में राजस्थानी आप रौ सांवटौ व्याकरणिक रूप अंगैजियौ।

2.5 अभ्यास सारू सवाल

1. मानक भासा रै ततवां रौ उल्लेख करतां सिद्ध करौ कै राजस्थानी अेक सुतंतर भासा है?
2. राजस्थानी भासा री उतपत आप किण अपभ्रंस सूं मानौ? आपरै मत रौ खुलासो करौ।
3. राजस्थानी भासा री उतपत बाबत विद्वानां रै मतां रौ उल्लेख करतां थकां आप री मानता रौ खुलासौ करौ।
4. राजस्थानी भासा रै विविध नावां में आप किण नांव नैं ठावौ मानौ। आपरै मत रौ खुलासौ करौ।
5. राजस्थानी भासा रै बोली–खेतर रौ निरूपण करौ।
6. राजस्थानी भासा रै विकास मुजब ''ढोला–मारू रा दूहा'' रै संपादकां रै मत नैं समझावौ।
7. विद्वानां द्वारा राजस्थानी भासा रै विकास मुजब मतां में सूं आप किण मत नैं ठावौ मानौ? पुख्ता प्रमाणां सैंती खुलासौ करौ।
8. राजस्थानी भासा रै विकास रौ खुलासौ करणवाळा विद्वानां रै मतां रौ उल्लेख करता हुया राजस्थानी रै आधुनिककाल बाबत आपरै विचारां रौ खुलासौ करौ।
9. राजस्थानी रै भौगोलिक खेतर रौ परिचै दिरावता हुया उत्तर राजस्थानी काल में राजस्थानी रै विकास नैं दरसावौ।
10. राजस्थान प्रदेस री भासा सारू आप किण नांव नैं ठावौ मानौ? आपरै मत नैं स्पस्ट करतां हुया राजस्थानी भासा री उतपत नैं समझावौ।
11. राजस्थानी नांव री सारथकता नैं बतळावता थका राजस्थानी री विसेसतावां नैं समझावौ।
12. राजस्थानी री मानीती बोलियां रौ परिचै दिरावौ।

2.6 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. डॉ. मोतीलाल मेनारिया– राजस्थानी भाषा और साहित्य
2. (अनुवादक) डॉ. नामवरसिंह– पुरानी राजस्थानी
3. सं. ठा. रामसिंह, सूर्यकरण पारीक एवं प्रो. नरोत्तमदास स्वामी– ढोला–मारू रा दूहा (भूमिका)
4. प्रो. कल्याणसिंह शेखावत– राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति
5. श्री सीताराम लालस– राजस्थानी सबद कोस, प्रथम भाग (भूमिका)
6. डॉ. कन्हैयालाल शर्मा– पूर्वी राजस्थानी : उद्‌भव और विकास
7. सं. देव कोठारी– राजस्थानी भाषा और उसकी बोलियां

इकाई 3

भासा अर लिपि

इकाई रौ मंडाण :

3.1 उद्देस्य

3.2 प्रस्तावना –

(क) भासा : सामान्य परिचै

(ख) लिपिः अरथ अर सामरथ

3.3 लिपि री उतपत अर विकास

3.4 भारत में लिपि–ग्यान री प्राचीनता

3.5 भारत री खास – खास लिपियाँ : अेक ओळखांण

3.6 लिपि अर भासा रो संबन्ध : समानतां – अर फरक

3.7 इकाई रो सार

3.8 अभ्यास सारूं सवाल

3.9 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

3.1 उद्देस्य

इण इकाई रौ खास उद्देस्य विद्यार्थियां नैं भासा अर लिपि बाबत जाणकारी दिवणौ है। भासा किण नैं कैवै? भासा रा कांई रूप व्है सकै ? उणरी कांई विसेसतावां हैं ? आं सगळी बातां रौ खुलासौ करता थकां लिपि री ओळखांण कराई जावैला। इणरै पछै भासा अर लिपि रै संबधां री विगतवार थापणा करांला। इण भांत इण इकाई री विसय वस्तु सूं विद्यार्थियां नैं निम्नलिखित तथ्यां रौ खुलासौ होसी –

1. भासा री परिभासा, उणरी विसेसतावां, तत्व अर भासा रै विविध रूंपां रौ ग्यान
2. लिपि री परिभासा, उणरी सामरथ, उणरै विगसाव री विगत
3. भारत में लिपि–ग्यान री सरूआत अर खास–खास लिपियाँ री जाणकारी,
4. भासा अर लिपि रौ आपसी महत्व ।

3.2 प्रस्तावना

(क) भासा : सामान्य परिचै

भासा सबद री उतपत संस्क्रत री 'भाष्' (धातु) सूं मानीजै। वाणी रै उच्चारण कै बोलण रै अरथ में इण धातु नैं बरतीजै। इण अरथ में धरती रा सगळा जीव आप–आप री वाणी (भासा) में बतळावै। पंखेरूवां रौ कुरळावणौ, गायां रौ रंभावणौ, घोड़ा रौ हींसणौ, रेलगाड़ियां री लीली–लाल झंडिया, चीलगाड़ी रै पायलटां रै अंगूठा रा अैहलांण, गूंगा रा इसारा, अै सगळा ई भासा री अभिव्यक्ति रा माध्यम है। पण सार्वलौकिक सारथकता (समझ) रै अभाव में आपां आं नैं भासा नहीं कैय सकां। पारिभासिक रूप में भासा उच्चारण अगां सूं बोलीजण वाळौ सारथक सबद–समूह है, जिकौ यादृच्छिक ध्वनि – प्रतीकां री व्यवस्था हुवै। इणसूं इण भासा – समाज रा लोग आपस में आपरै विचारां री अभिव्यक्ति करै। डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा रै सबदां में ''उच्चरित

ध्वनि–संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति भासा है।'' इणरौ औजू खुलासौं करता वै लिखै – ''जिसकी सहायता से मनुष्य परस्पर विचार–विनिमय या सहयोग करते हैं, उस यादृच्छिक, रूढ़ ध्वनि संकेत की प्रणाली को भासा कहते है।'' इण भांत री परिभासा सूं नीचै लिखी वातां रौ खुलासौ हुवै –

1. भासा यादृच्छिक संकेतां माथै आधारित हुवै अर्थात् किणी भासा में सबद अर अरथ में कोई फरक कोनी हुवै। इण वास्तै ई सगळी भासावां में अेक वस्तु सारू न्यारा–न्यारा सबद बरतीजै, ज्यांन – राजस्थानी में डीकरौ, हिन्दी में लड़का, संस्क्रत में बालक अर अंग्रेजी में बोय।
2. भासा रौ आधार ध्वनि – संकेत हुवै। अै ध्वनि संकेत ई लिपि कै 'लेखिम' बाजै, जिका वाणी नैं सागो रूप दिरावैं।
3. भासा री अेक ठावी व्यवस्था हुवै अर्थात् भासा रौ प्रयोग उणरी रूढ़ि मुजब करीजै।

भासा री परिभासा पांण सार रूप में भासा री खास–खास विसेसतावा रौ वरणाव इण भांत कर सकां –

1. ध्वनि, पद (रुप) सबद, वाक्य अरथ भासा रा खास तत्व हुवै। ध्वनि (स्वनिम) भासा री सबसूं ल्होड़ी ईकाई मानीजी है। ध्वनियां रै मेळ सूं रूप या पद बणै । अरथ रै ठीयै सबद नैं भासा री सैं सूं छोटी ईकाई कैवै, जिका च्यार तरिया रा मानीज्या हैं – तत्सम, तद्भव, विदेसी अर देसज।

   भासा सारथक सबदां रौ समूह हुवै, जिकौ भावाभिव्यक्ति रै लेखै आपो आप में पूरौ हुवै। इण भांत अरथ भासा री आत्मा हुवै। इण वास्तै कुछ विद्वान इणनै दरसण सास्त्र री अेक साखा मानै।
2. आं तथ्यां सागै भासा समाज री पूंजी हुवै, किणी री बपौती कोनी।
3. भासा वैवार अर अनुकरण सूं सीखी जा सकै।
4. भासा परम्परागत अर सामाजिक स्तर रै अनुरूप बिगवास करै।
5. भासा सर्वव्यापक हौवे अर्थात दुनिया रै हर भू भाग में कोई न कोई भासा बौलीजै।
6. भासा रौ सरूआती रूप मौखिक (उच्चरित) हुवै अर उणदी अरूआत काव्य सूं हुवै।
7. भासा में बदळाव आवतौ रैवै।
8. भासा संजोगावरथा सूं विजोगास्था कांनी बधै। दूजै सबदां में कैय सकां'क भासा कठिनता सूं सरलता कांनी विगसाव करै।
9. भासा मानकीकरण माथै आधारित हुवै।
10. भासा री अेक ठावी भौगोलिक सींव हुवै। इण भू–भाग रा लोग उण जागां बोलीजण वाळी भासा रौ प्रयोग करै।

विचार विनिमय री सारथकता री दीठ सूं मिनख रै सामाजिक व्यवहार री इण भासा रा दोय रूप हुवै – मौखिक (वाचिक कै उच्चरित) अर लिखित। भासा रौ मौखिक रूप घणौ महताऊ मानीजै। क्यू'क भासा रौ विकास इणरै पांण इज हुयौ है। सागै ई विकास री दीठ सूं भासा रौ लिखित रूप वैग्यानिक, सार्वलौकिक, सार्वकालिक अर स्थाई हुवै। इणरै आधार माथै जूनी भासावां अर साहित्य री सोध संभव है।

भासा रै बरतीजण रै आधार माथै विद्वान भासा रा व्यक्तिगत बोली, उपबोली, बोली, विभासा, मानक–भासा, राष्ट्रभासा, राजभासा, अर्न्राष्ट्रीय भासा आद रूप बतावै। बातचीत में आपां बोली अर भासा नैं समान् अरथ में बरतां। अतः अठै इण बात रौ ई खुलासौ करणौ ठावौ रैवेला'क दोई न्यारा–न्यारा अरथ देवण वाळा सबद है। बोली कैई उपबोलियां रौ समूह हुवै जिका रौ क्षेत्र भासा सूं छोटौ हुवै। इणनैं लोक भासा कैय सकां। इणरै विपरीत अनेकू बोलियाँ रौ मेळ भासा कैईजै। इणरौ बोली क्षेत्र व्यापक हुवै। जद भासा व्याकरणिक रूप धारलै तौ वा मानक भासा बाजै जिणरौ प्रयोग भणाई–लिखाई, राज–काज में हुवै। मानक भासा सारू भासा री एकरूपता (उच्चारण अर प्रयोग) रौ घणौं महत्व है। अठै आ बात ई उल्लेख जोग है'क कोई बोली राजनीतिक, साहित्यक आधार माथै भासा रौ दरजौ लेय सकै अर कदैई कोई विकसित भासा ई बोली बण जावै।

(ख) लिपि : अरथ अर सामरथ

'भासा नैं ठावौ मूरत रूप दिरावण वाळा यादृच्छिक वर्ण प्रतीकां री परम्परागत व्यवस्था लिपि है।' मतळब औ'क भासा री सरूआती औस्था में ध्वनि–प्रतीक विचार–विनिमय रा साधन बणता रैया पण पछै आं प्रतीकां सारूं दरसाव प्रतीक बरतीजण लागा। आं दरसाव प्रतीकां रौ विकसित रूप वर्ण–अेहलांण (चिह्न) है। अै वर्ण – चिन्ह इज लिपि कैईजै। भासा–विग्यान री नुवी सबदावली में अै 'लेखिम' कैईजै। इण भांत लिपि भावां अर विचारां नैं रेखांकन सूं प्रगट करण वाळो साधन हैं। इण आधार पांण आंधां वास्तै ब्रेल लिपि रै आविस्कार सूं लिपि रै दरसाव–बोध सागै स्पर्सात्मक बोध ई जुड़ग्यौ है।

भासा री भांत इज लिपि री ई अेक ठावी सींव हुवै। जिण तरिया उच्चरित भासा सुं भाव अर विचारां री वां रै सागै रूप में अर उणी लांठाई सागै अभिव्यक्ति संभव कोनी हुवै, उण इज भांत लिपि सूं ई उच्चरित भासा री–उणरी सगळी ध्वनि भंगिमावां रै साथै सागी अभिव्यक्ति कोनी हो सकै। इण भांत भासा सूं ई बध'र लिपि (लिखित भासा) री सींमावां है।

लिखित भासा (लिपि) उच्चरित भासा रौ स्थूल (थूळ) सांकेतिक रूप है। थूळ इण वास्तै'क भासा रै उच्चरित रूप में बल, तान, सुर आद सूं अरथ मुजब जिकी विसेसतावां लीरीजै वै लिखित भासा (लिपि) में कोनी लाई जा सकै। कठै जोर सूं बोळणौ है, कठै हौळे सूं, कठै किण भांत रौ काकु बरतीजणौ है, कठै सुर नैं नीचै–ऊपर करणौ है, अै सगळी बातां लिपि री सामरथ सूं बारै है।

आं संकेतां नै समझण सारू पाठक नै आप कांनी सू कल्पना करनी पड़ै। इणरै अलावां जिण भांत सबद, अर अरथ रौ संबंध रूढ़ हुवै, वामै कोई यौक्तिक अर ठावौ संबंध नहीं हुवै – उणी तरियां ध्वनि अर उणरै लिखित संकेत (वरण) रौ संबंध ई रूढ़ अर पारम्परिक ही हुवै, ज्यांन कंठ सूं निकळण वाळी ध्वनि (कंठय ध्वनि) नैं 'क' रूप (वर्ण रूप) में लिखां अर रोमनलिपि में बरतीजणियौ इणनै K रूप में मांडे तौ फारसी भासी इणनैरूप में लिखै। यूं तीन्यू ध्वनियां सारिखी है, पण लिखण रै ढंग में फरक आयग्यौ है। इण वास्ते औ कैयं सकां'क जिण तरियां न्यारी न्यारी भासावां में अेक ई वस्तु वास्तै न्यारा–न्यारा सबद है, उणी भांत अेक ई ध्वनि सारू जुदी–जुदी लिपियां में न्यारा – न्यारा संकेत (वर्ण) मिळै। जै ध्वनि अर वरण रौ संबंध नित्य या नैसरगिक हुवै, तद ई ध्वनि वास्तै न्यारी–न्यारी लिपियां में असमान वरण नहीं होवै, उण हालत में संसार में फगत अेक ई लिपि होवती, इत्ती सारी लिपियां रौ विकास नहीं होवतौ।

3.3 लिपि : उतपत अर विकास

भासा री उतपत री दांई ई लिपि री उतपत बाबत ई विद्वान अेकमत कोनी। ज्यादातर विद्वान लिपि री

उतपत देवतावां सूं मानैं। भारतीय विद्वान लिपि नैं भगवान बिरमाजी री देन मान'र 'ब्राह्मी' (लिपि) नांव सूं आपरै मत नैं पुख्ताऊ करै। वीणा पुस्तक धारिणी वाग्देवी सरस्वती रौ जिकौ रूप भारतीय कल्पना है, पण लिपि री इण देवीय उत्पति रै सिद्धान्त नै बळ देवै। इणी भांत मिश्रा लोग (इजीप्सियन्स) आप री लिपि रा जनेता थाथ (Thoth) या आईसिस (Isis) केवै, तौ बेबिलोनिया रा लोग नेबो नैं, जूना ज्यूं मोजेज (Moses) नैं अर यूनानी लिपि री उतपत हर्मेस (Hermes) कै पैलमीड्स, प्रॉमेथ्यूज, लिनोज जैड़ा, पौराणिक व्यक्तित्वां सूं बतळावैं। पण आं सगळां मतां नैं प्रामाणिक नहीं मान सकां। सांच आई है'क मिनख लिपि बाबत जिका प्रयास कर्‌या उणरौं आधार कतई मिनख में लिपि रै विकास री मंसा नैं नहीं कैय सकां। अै प्रयास तौ उणरै लोकमानस री देन ही। जादू–टोना सारू वौ कुछेक रेखावां मांडी हुवैला या धार्मिक अनुस्ठानां री दीठ सूं किणी देवतां रौ प्रतीक चित्राम मांड्यौ हुवैलौ या पिछाण वास्तै आपरी वस्तुवां (घड़ा, बासस आदि) माथै कोई अेहलाण बणायौ हुवैला, जिणां सूं वै अेक ई जगां में रखियोड़ी सगळा री वस्तुवां में सूं आपरी चीजां नैं ओळख'र न्यारी कर लेवै हा। इणरै अलावा मिनख आपरी बस्ती आादि नैं फूटरी बणावण री दीठ सूं भी गुफावां री भींता माथै जिनावरां, पंखेरूवां या वनस्पति री छिब नैं आड़ा–डोढा रूप में उकेर देवता कै आपरी याददास्त वास्ते सीन्दरी (रस्सी) या रूंख री छाल में गांठां बाधता हा। मिनख री अैई कोसिसां समै पछै भासा री अभिव्यक्ति सारु बरतीजिया हुअे अर अैई अेहलांण पछैं लिपि बणगी हुवै।

इण भात मिनख री सोच रौ विकास ई लिपि री उतपत रौ मूल आधार है। इण रा प्रमाण अजैई भारतीय ग्रंथां अर रीति–रिवाजां में मिळै, ज्यान–हणूमानजी असोक वाटिका में सीताजी सामैं राम री मूंदड़ी पटक'र ई पतियारौ दिरावै'क बे भगवान राम रा दूत है। सकुन्तला पण दुस्यन्त नैं उण रै नांव वाळी मूंदड़ी दिखा'र दुस्यंत नैं याद दिरावैं'क वौ उणसूं कण्व रिसी रै आसरम में मिळयौ हौ। सादी ब्याव रै नूतै सारू पीळा चांवल खिंदावणौ, बच्चा री बरसगांठ यादं राखण वास्तै या किस बात नैं याद राखण सारू रूमाल में गांठ लगावणौ आदि बातां लिपि मुजब इण इस्म्रति सिद्धान्त री धारणां नैं पुख्ता करै।

डॉ. अनन्त चौधरी मुजब कुछ जातियां इण कांनी उल्लेख जोग प्रयास कर्‌या हैं। वै लिखै'क पेरू में कुइप नांव री डोरियां हूंती। अै दो फुट सूं बेसी लाम्बी होवती ही। आं में रंग–रंगीला धागा बंध्या रैवता हा। आं रंगां अर धागां में पड़ी गांठां सूं न्यारैं–न्यारै अरथां रा अेहलाण मिळ जावता हा। आं रै धोळै हिस्सै सूं चांदी कै सांति रौ अरथ समझयौ जावतौ अर लाल सूं सोनै (सुवरण) या जुद्ध रौ अरथ मानीजतौ। इणी भांत मिरगछाल में रंग–रंगीलै मोती–मूंगां आद नैं बांध'र जुदा–जुदा अरथां री अभिव्यक्ति करीजती ही।

इण सगळी विगत सूं अजै लग लिपि मुजब जिकी जूनी सामग्री मिळै, उणरै पांण कैय सकां'क 4000 ई. पू. रै मांझळ तांई लिखण री किणी व्यवस्थित पद्धति रौ कठै ई कोई विकास नहीं हुयौ हौ अर इण भांत रै प्राचीनतम अव्यवस्थित प्रयास 10,000 ई.पू. सूं कुछ पैलां करीजिया हा। इण भांत आं दोई तिथियां रै बिचै अर्थात् 10,000 ई.पू. अर 4000 ई.पू. रै बिच्चै लगैटगैं 6000 बरसां में होळै – होळै लिपि रौ समझाती रूप विकसित हुवतौ रैयो। इण विकास क्रम में निम्नलिखित लिपियां रौ हवालौ मिळै –

1. चित्रलिपि
2. सूत्र लिपि
3. प्रतीकात्मक लिपि
4. भावमूलक लिपि
5. भाव ध्वनि मूलक लिपि

6. ध्वनि मूलक लिपि।

1. **चित्रलिपि** – लेखन रै इतियास रौ इणनैं पैहलो पाउण्डौ कैईजै। इणमें किणी खास वस्तु वास्तै कोई खास चित्राम मांड दिया जावता हा, ज्यांन सूरज वास्ते गोळो अर उणरै च्यारूं कांनी ऊभी रेखावां, पसुआं खातिर वाणां चित्राम, मिनख सारू मिनख री मूरत अर उणरै अंगां वास्तै वां अंगां रा चित्राम। यूं तौ लिपि री इण परम्परा नैं अजै लग नक्सां, बगीचां, भांखरां अर पंचाग में ग्रह–नखतरां रै रूप में आपां जोय सकां पण बरतीजण री दौरप, ज्यांन–मिनखवाची संग्यावां री अभिव्यक्ति री कमी, चित्रामां वास्तै घणी जगां री जरूरत आद रै कारण इणरौ प्रयोग कम हुयौ। आ फगत प्रतीक रूप में बरतीजण लागी।

2. **सूत्र लिपि** – सूत्र लिपि रौ इतियास ई घणौ जूनौ। किणी न किणी रूप में इणरी परम्परा अजै ई लखीजै, ज्यांन–किणी चीज नैं याद राखण वास्तैं रूमाल में गांठ बांधणौ, व्याकरण अर 'दर्शनशास्त्र' रा सूत्र आद। इण लिपि में बात री अभिव्यक्ति सारू रंग–बिरंगी रस्सी (सींदरी) या जिनावरां री खाल माथै न्यारै – न्यारै रंगा रा धागा बाधिजता हा, न्यारी–न्यारी लम्बाई वाळी रस्सियां, झंडिया, आदि रौ प्रयोग हुवतौ हौ।

3. **प्रतीकात्मक लिपि** – इण लिपि रै मुजब मिनख आपरै भावां री अभिव्यक्ति सारू दूजै मिनख कनै कोई प्रतीक वस्तु खिंदावतौ हौ, जिणनै लेय'र वौ उणरौ अरथ जाण–जावतौ, ज्यान तिब्बती – चीनी सीमा रै समाज में मुरगी रा चूजा रौ काळजौ, उणरी चरबी रा तीन टुकड़ा अर अेक लाल मिरच लाल कागद में लपेट'र खिंदावण रौ अरथ युद्ध होवणो मानीजतो हौ। कांगो नदी री घाटी में मिनख आप रै महताऊ समाचार वास्तै अेक केळे री पानड़ी जिकी छव इंच लांभी होवती ही अर उणरै दोन्यूं कांनी च्यार हिस्सा करीजिया – होवता हा – हरकारा सागै भेजी जांवती ही अठैई अजै ई लाल–हरी झंडी गारड वास्तै, पीळा चावंळ ब्याव वास्तै सूत्र रूप में बरतीजै।

4. **भावमूलक लिपि** – भाव लिपि नैं चित्र लिपि रौ ई विकसित रूप मांन संका। चित्र लिपि में चित्राम वस्तुंवां नैं अभिव्यक्ति देवतां हा पण भावलिपि में थूळ वस्तुवां रै अलावा भावां नैं ई अभिव्यक्ति मिळै, ज्यान – चित्र लिपि में सूरज वास्तै गोळो मांडता हा पण भावलिपि में औ गोळौ सूरज रै सागै ई सूरज सूं जुड़योड़ै भांवा, सूरज देवता, गरमी, दिन, ऊजाळै रै भांवां नैं ई दरसावै। इण भांत भावलिपि चित्रलिपि अर सूत्रलिपि सूं बेसी विकसित ही। चीनी जेड़ी लिपियां में घणा सारा अैहलांण इणी वरग रा है।

5. **भाव – ध्वनिमूलक लिपि** – आ लिपि चित्रलिपि सूं विकसित ध्वनि मूलक अर भावलिपि रौ मेळ रूप है। मेसौपोटैनियन, मिस्री अर हित्ती आद लिपियां भाव – ध्वनिमूलक है अर्थात कुछ वातां में अै भावमूलक मानीजे पण वास्तव में अै लिपियां भावध्वनि मूलक हैं। अर्थात् कुछ बातां में अै भावमूलक है तो कुल बातां में ध्वनिमूलक। आधुनिक चीनी लिपि में पण इण लिपि रा लक्षण देखीजै। कुछ विद्वानां मुजब सिंधु घाटी री लिपि ई इणी वरग री है।

6. **ध्वनिमूलक लिपि** – लिपि रै विकास में इणनै लिपि रौ विकसित रूप कैयौ जा सकै। इण लिपि में अेहलांण किणी वस्तु कै भाव नैं नीं ध्वनि नैं प्रगटै अर उणरै पांण किणी वस्तु या भाव रौ नांव लिख्यौ जा सकै। नागरी (देव नागरी) अरबी अर अग्रेंजी भासांवां री लिपियां ध्वनि मूलक इज है।

ध्वनि मूलक लिपि रा दो भेद कैईजिया है – (क) आक्षरिक (Syllablic) अर (ख) वरणिक (alphabetic)

(क) आक्षरिक लिपि – आक्षरिकलिपि में अेहलाण (चिन्ह) किणी आखर (सिलेबल) नैं प्रगटै, वर्ण (एल्फाबेट) नैं नहीं, ज्यांन – नागरी लिपि आक्षरिक है। इणरै 'क' अेहलाण में क् + अ (दो वर्ण) मिल्योड़ा है पण इण रै उलट रोमन लिपि वरणिक है। रोमन लिपि रै K में 'क' (सिरफ अेक वर्ण) है। अक्षरात्मक लिपि प्रयोग री दीठ सूं तौ ठीक है पण भासा–विग्यान री दीठ सूं इणमें ध्वनि – मुजब कमियां हैं, ज्यांन–हिन्दी रौ सबद है बालक, नागरी लिपि में इणनैं लिखण सूं खुलासौ नहीं हुवै'क इणमें किस्या – किस्या वर्ण है पण रोमन लिपि में लिखण पै पूरौ बैरौ मिळ जावै'क इण में किण–किण वरणां रौ प्रयोग हुयौ है – BALAK'A नागरी लिपि में खुलासौ हुवै'क इण सबद में तीन ध्वनियॉ (वर्ण) हैं पण रोमन में अै छव ध्वनियां गिणिजैला। अरबी, फारसी, राजस्थानी, गुजराती, उड़िया, तेलगु आद लिपियां आखरात्मक ई है।

(ख) वरणिक लिपि – डॉ. भोलानाथ तिवारी मुजब लिपि विकास री आ आखरी पैड़ी है। जद'क डॉ अनन्त चौधरी इणनैं लिपि विकास री पैली औस्था ई मानै। विकास री दीठ सूं इणरी कोई ठौड़ हुवै, पण इणमें ध्वनि री हर इकाई सारू न्यारा अैहलाण हुवै अर वां रैं आधार पांण सौरम सूं किणी भासा रौ कोई सबद लिख्यौं जा सकै। इण वास्तै भासा विग्यान री दीठ सूं इणनैं आदर्श लिपि कैय सकां। रोमन लिपि इणी वरग री है।

इण विवरण सूं खुलासौ हुवै'क संसार में अजै ध्वनि मूलक लिपि बरतीजै। आखै संसार री लिपिया नै आं दोय वरगां में बांट सकां – (1) ज्यां में आखर कै वरण नहीं है, ज्यांन– क्यूनीफार्म अर चीनी आद लिपियां तथा (2) ज्यां में आखर कै वरण है, ज्यांन– रोमन अर नागरी। पैलै वरग री बीजी खास – खास लिपियां हैं – 1. क्यूनीफोरम, 2. हीरोग्लाफिक, 3. क्रीट – लिपियां, 4. सिंधुघाटी–लिपि, 5. हिट्टाइट लिपि, 6. चीनी लिपि, 7. जूनै माझळ अमेरिका अर मेक्सिको री लिपियां। दूजै वरग री खास लिपियां है–

1. दिखणी सामी लिपि
2. हिब्रू लिपि
3. फोनेषियन लिपि
4. खरोष्ठी लिपि
5. आरमेइक लिपि
6. अरबी लिपि
7. भारतीय लिपि
8. ग्रीक लिपि
9. लैटिन लिपि ।

3.4 भारत में लिपि–ग्यान री प्राचीनता

भारत में लिपि री सरूआत बाबत जाणकारी नैं आथूणै विद्वानां उळझायौ। पण इण समस्या रौ समाधान म.म. गो.ही. ओझा री पोथी 'भारतीय प्राचीन लिपिमाला' रै 1894 में प्रकासित हुवता इज हुयौ। सबसूं पैलां अथूणै विद्वानां री इण मानता नैं खारिज करीजी'क भारत में लिपि–ग्यान तीजी–चौथी सदी ई.पू. लग नहीं हौ। तद तांई सारौ भारतीय वांग्मय मौखिक परम्परा में हो। इणरै अलावा भारत री प्राचीन लिपि जिकी सम्राट अशोक रै सिलालेखां में मिळै, वा ब्राह्मी लिपि पण किणी परदेसी लिपि सूं जलमी ही। इण वास्तै भारतवासियां नैं लेखन कला रौ ग्यान विदेसियां सूं ई मिळ्यौ।

गोरीशंकर हीराचंद ओझाजी सबसूं पैलां विविध प्रामाणिक ग्रंथां रै आधार माथै औ सिद्ध कर्‌यौ'क भारत में लेखन–कला अर उणरै मुजब ग्यान वैदिक जुग सूं ई हौ। गुरूमुख सूं सुणै बिना रिचावां रौ सुद्ध उच्चारण या पाठ नहीं करयौ जा सकतौ हौ, इण वास्तै वेदां री मौखिक परम्परा रैयी अर वौ साहित्य

'स्रुति' कैलायौ। पण सागै ई उणा रौ लिखित रूप ई मिळतौ हौ। उण वगत लिखित पाठं सू बाचणियौ अधम पाठक बाजतौ हौ। इण वास्तै ई लोग पाठ नैं कंठै करता हा। औझाजी आपरी पोथी में भारतीय लेखन–कला री प्राचीनता नैं सिद्ध करता थका ई.पू. रै पांचवै सइकै सूं आधुनकि युग ताईं री सगळी भारतीय लिपियां रा चित्रामां सागै वरणाव कर्‌यौ। सागै ई आं सगळी लिपियां रौ पारस्परिक संबंधा रौ ब्यौरो देवता थकां उणारौ विगतवार इतियास प्रस्तुत कर्‌यौ। इणीज गत वै ब्राह्मी लिपि नैं भारतीय आर्यां री आप री खोज सूं नीपज्योड़ौं मौलिक आविस्कार मान्यौ। हॉ, वै अठै इण बात रौ खुलासौ नहीं कर्‌यौ'क ई.पू. पांचवीं सदी रै पैला उणरौ कांई रूप हौ अर सरूआत में उणरौ विकास किण ढ़ाळे हुयौ।

भारत में लिपि–ग्यान री प्राचीनता नैं सिद्ध करणवाळा ग्रंथ यास्क क्रत निरूक्त, छांदोग्य उपनिषद्, तैत्तिरीय–संहिता, पाणिनी कृत अष्टाध्यायी, बौद्ध–सांहित्य (महावग्ग, शील) ऋग्वेद अर उणरी संहितावां आदि है। यास्क रै निरूक्त में औदम्बरायण, क्रोष्टकी, सतवलाक्ष, मोदषल्य, साकपूणि, साकटायन, स्थोलाष्ठीवी, अग्रात्यण, औपमन्यव, औरर्णनाम, कात्थक्य कौत्स, गार्ग्य, गालव साकल्य आद वैयाकरणां अर निरूक्तकारां रा नांव मिळै। आं नावां में सूं अस्टाध्यायी में गार्ग्य, साकटायन, गालव अर साकल्य रा नांव अस्टाध्यायी में ई है। इण सूं अनुमान करियौ जा सकै'क पाणिनी अर यास्क रै पैला भी व्याकरण अर् निरूक्त रा घणाई ग्रंथ रचिजिया होवैला। अठै अेक बात रौ खुलासौ करणौ ठीक रैवेला'क मैक्समूलर अर दूजा आथूणै विद्वान अष्ठाध्यायी कोनी बांची। जै वै इणनैं बाचतां तौ वानैं लिपि, लिवि, यवनानी अर लिपिकर आद सबदां सूं ठा पड़ जावती'क भारत में लेखन–कला रौ प्रचलन जूनौ है। पाणिनी स्वरित रै अैहलाणां अर ग्रंथ सबदां रौ उल्लेख कर्‌यौ है। इणरै अलावा वै पसुवां रै कांनां माथै स्रुव, सातियां आद रै सागै आठ अेहलाणं मांडया है–आं सगळा प्रमाणां सूं सिद्ध हुवै'क भारत में लेखन कला रौ प्रचार सरू सूं ई हौ।

बौद्धा रै 'विनयपिटक' में पण–लेखन कला नै सराइजी है। बौध–धरम में सांसारिक कलांवा रै सीखण रौ निसेध होवता हुया भी लेखण कलां नै सीखण री आग्या दीरीजी है। आं प्रमाणां पांण ओझाजी कैवै'क अै सगळा उल्लेख ई. पूर्व छठी सदी रै आखती–पाखती रा है। आं प्रमाणां सूं लखावै'क इण वगत लिखण रौ प्रचार अेक साधारण बात ही। लुगाया अर टाबर पण लिखणौ जाणता हा।

आं प्रागौतिहासिक प्रमाणां रै अलावा इतियासिक प्रमाण ई भारत में लेखन–कलां री प्राचीनता नैं सिद्ध करै। ई.पू. 326 में भारत माथै आक्रमण करण आया सिकन्दर रौ सेनापति निआर्क्स आपरी पौथी 'इण्डिका' में भारतीयां द्वारा रूई सूं कागद बणावण रौ उल्लेख कर्‌यौ है। ई. पू. 306 में मेगस्थनीज चन्द्रगुप्त रै दरबार (पाटलीपुत्र) में आयौ। वौ आपरै 'भारत वर्णन' में बतळावै'क अठै दस – दस स्टेडिआ माथै भाटा लाग्यौड़ा है ज्यां सूं धरमसालावां अर दूरी रौ पतौ चलै। नुवै बरस रै दिन पंचांग सुणायौ जावै। जळम पत्री में समै लिखियौ जावै। अै सगळा प्रसाण भारत री लेखन–कला री प्राचीनता नैं सिद्ध करै। आं सगळा प्रमाणां पांण सार रूप में कैय संका'क भारत में लेखन– कला रौ प्रचार वैदिक जुग सूं ई हौ। भारत रौ प्राचीन वाग्मय फगत मौखिक परम्परा में ई नी लिखित परम्परा में पण सुरक्षित राखीजतौ हौ। इण बात नैं बूलर नैं ई पछै मानणी पड़ी। अब आथूणै विद्वान ई इण मत सूं सै'मत है'क भारत में लेखन कला रौ प्रचार वैदिक काल सूं ई रैयौ है।

3.5 भारत री खास–खास लिपियां : अेक औळखांण

भारत री जूनी लिपियां रौ खुलासौ करणवाळी रचानावा में 'पन्नवणा सूत्र' (जैन रचना) अर 'ललितविस्तार' (बौद्ध रचना) जैड़ी रचनावां री उल्लेख जोग जागां है। पैली रचनां में जठै 18 लिपियां रा नावं मिळै उठै ई दूजी रचना में 64 लिपियां रा नावं है। आं लिपियां में कैई सारा नावं कल्पित है, पण आं में सूं नीचै लिखी लिपियां री विगत अजै ई मिळै – 1. सिंधु घाटी लिपि (सैंधव लिपि) 2. खरोस्ठी लिपि अर

3. ब्राह्मी लिपि ।

1. **सिंधु घाटी लिपि** – मांटगोमरी जिला रै हड़प्पा अर सिंध रै लरकाना जिला रै मोहनजोदड़ो री खुदाई में मिळी सीलां (मुद्रावां) माथै जिकी लिपि लिख्योड़ी है वा सिंधुघाटी लिपि (सैंधव लिपि) नांव सू ओळखीजै। अै जगावां पाकिस्तान में है पण सरू में आं रौ अस्तित्व भारत में हौ। इण वास्तै अठै इण लिपि री जाणकारी कराणी जरूरी है। ई.पू. 400 बरस पैले रौ इण लिपि रौ विस्तार आखै उत्तर–आथूणै भारत में रैयौ क्यूंकै राजस्थान री पीलीबंगा, पल्लू अर झाज्झू री खुदायां री सामगरी पण सिंधुघाटी सभ्यता सूं जुड़यौड़ी है। रोपड़ (पंजाब) री खुदाया में मिळी वस्तुंवां ई इणसूं मेळ राखै। अजै लग आ लिपि बांची नहीं जा सकी पण विद्वान मानै कै आ लिपि भाव–ध्वनिमूलक लिपि है।

   इण लिपि री उतपत बाबत जुदा–जुदा मत है। पण सार रूप में कैयोजा सकै कै आं लिपि आर्य जाति द्वारा बणाइजी ही अर अठां सूं जाय'र उन एलाभाटर, सुमेरी, मिस्री लिपियां रै रूप में आं सूं जुड़यौंड़ां देसां में ई मिळण लागी। डॉ. फतहसिंह इणनैं सिरफ आर्या सूं ई सिद्ध नहीं करै, बलकै इणरीं भासा नैं वैदिक संस्कृत सूं अभिन्न मानै।

2. **खरोष्ठी लिपि** – खरोस्ठी लिपि भारत रै उतराद – आथूणै प्रदेसां तांई रैयी– इणरा प्रमाण 300 ई. रा मिळै । तखसीला रै नैड़ै 'शाह साहबजगढ़ी' अर मानसेरा में लाध्या सिलालेखां री लिपि खरोस्ठी ई कैईजै। इण लिपि में लिख्या कुछ सिक्का पण मिळ्या है।

   इण रै खरोस्ठी नांव माथै विद्वान अेक मत कोनी। डॉ. राजबली पाण्डेय मुजब 'इण लिपि रा आखर गदेड़ा खर (संस्क्रत) रै होठ जैड़ा बेढंगा होवण सूं, इण नैं खरोस्ठी कैयौ गयौ। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी हिब्रू में खरोसेथ रौ अरथ लिखावट अर संस्क्रत में इणी खरोसेथ रौ अरथ खरोस्ठ नैं मानता हुया खरोस्ठी रूप नै लिपि रूप में अंगैजै। चीनी 'विश्व कोस' 'फ्रा–वान–सुलिन' मूजब किणी खरोस्ठ नावं रो आदमी इण लिपि नै बणाई, इण वास्तै इणनैं खरोस्ठी कैवै। गधा री खाल माथै लिखण सूं इरानी इणनै खरपोस्त कैवता हा। इणी रो अप्रभंस रूप खरोष्ठ है। खरपस्ठी होवण सूं आ खरोष्ठी कैईजी। डॉ. भोलानाथ तिवारी इण तरियां रा नवं मत दिया है पण आं में सूं कोई मत तरक–सम्मत नहीं लखीजै।

   खरोस्ठी लिपि अरबी लिपि री दाईं इज जीवणी कांनी सूं डावी कांनी लिखिजै। इणमें लघु–दीरघ सुरां रौ कोई फरक नहीं अर मात्रांवा रौ ई आभाव है। इण में कुल 37 वर्ण है आं में सूं 11 वर्ण आरमाईका लिपि रा हैं, बाकी रा वरण इणरा खुदरा है। वैग्यानिकता रौ इण लिपि में अभाव है। स्यात् इण वास्तै ई आधुनिक भारतीय लिपियां इण सूं प्रभावित नहीं लखावै।

3. **ब्राह्मी लिपि** – ब्राह्मी लिपि भारत की खास लिपि रैयी है। इणरा जूना नमूना पिपरावा रा स्तूपा, बड़ली (अजमेर) रै सिलालेखा में मिलै। इणरा नमूना 350 ई. लग लाधै। सिलालेखां रै अलावा आ भोज पत्रां, ताड़ पत्र आद माथै ई लिखीजती रैयी, पण इण रा नमूना नहीं मिलै।

   खरोस्ठी री दाईं ब्राह्मी लिपि रै नांव बाबत ई विद्वान अेकमत नहीं दीखै। भारतीय विद्वानां मुजब बिरमाजी द्वारा बणायोड़ी होवण सूं अर बिरामणा द्वारा ज्यादा बरतीजण रै कारण इणरौ नांव ब्राह्मी पड़्यौ। राजबली पाण्डेय जैड़ा विद्वान इण बात री हामी भरै'क इण लिपि में ब्रह्म (वेद) री रुखाळी व्ही ही, इण वास्तै आ लिपि ब्राह्मी कैईजी। चीनी विस्व कोस 'फा–वान–षु–लिन' मुजब कोई ब्रह्म कै ब्रह्मा नांव रौ मिनख इणरौ रचैता हौ, इण वास्तै आ ब्राह्मी कहीजी। डॉ. हरदेव बाहरी रै मतै ब्रह्मावर्त सूं जुड़यौड़ी होवण सूं इणरौ नांव ब्राह्मी पड़यौ।

ब्राह्मी लिपि रै उतपत वास्तै दो तरियां रा मत मिळै। अेक मत रै मुजब इणरी उतपत विदेसी है। इण वरग रा विद्वान वूलर, डिरिजर, सेनार्ट, हालवे, विल्सन, प्रिसेष, वेबर, बेनफे, जैनसन, कुपेरी, सोहाना आदि है। अै विद्वान ब्राह्मी री उतपत उत्तरी सामी चीनी अर अरबी, यूनानी आदि विदेसी लिपियां सू मानै। दूजौ मत भारतीय है, जिणमें गौरी शंकर हीराचन्द ओझा, डॉ. चन्द्रंबली पाण्डेय, डॉ. भोलानाथ तिवारी, डाउसन, लसन, थामस है जिका मानै'क ब्राह्मी लिपि री उतपत भारत में ई अठां री किणी जूनी लिपि सूं कै सिंघु घाटी री चित्र लिपि सूं हुई। इण बाबत च्यार मानतावां प्रचलित हैं – द्रविड़ीय उतपत, सांकेतिक अेहलांणा सूं उतपत, वैदिक चित्रलिपि सूं अर आर्य उतपत।

इण लिपि रा जूना नमूनां चौथी सदी ई.पू. रा मिळै। इणरै विकास नैं तीन हिस्सा में बांट सकां हां – 1. प्रागैतिहासिक काल (वैदिक युग) – छठी सदी ई.पू. लग 2. बौद्ध काल – 15 वीं सदी ई.पू. सूं 350 ई.पू. लग अर 3. गुप्तकाल। गुप्तकाल में ब्राह्मी लिपि री दो सैलियां विकसित व्ही। उत्तरी सैली अर दिखणी सैली। आं सैलियां सूं उत्तरी भारत में गुप्त लिपि, कुटिललिपि, प्राचीन नागरी लिपि, सारदा लिपि – ढाकरी, सिरमौरी, डोगरी, चमौली, जौनसारी, कांछी कुल्लई, कास्तवारी, लंडा, मुल्तानी, गुरूमुखी, नागरी (देवनागरी), महाजनी, गुजराती, कैथी, सिंहली, बंगाली आद लिपियां रौ विकास हुयौ।

दिखणी सैली सूं तेलुगु–कन्नड़, ग्रंथ, कलिंग, तमिल, वट्ट लुत्तु लिपियां विकसित व्ही।

ब्राह्मी लिपि डावी कांनी सूं जीवणी कांनी लिखीजै। इणमें स्वर नैं मात्रा सूं जोड़ण री खासियत है जिकी आज देवनागरी अर इण सूं विकसित बीजी लिपियां में अजै ई सुरक्षित हैं। आं आधारां पांण आ लिपि सुद्ध रूप सूं भारत में निपज्योड़ी है।

3.6 भासा अर लिपि रौ संबंध

भासा अर लिपि रौ लूंठौ अर नैड़ै रौ सम्बन्ध हैं। दोई भावां री अभिव्यक्ति करै। आं भावां नैं बतळावण वास्तै भासा कनै ध्वनि–प्रतीक है अर लिपि आं ध्वनि प्रतीकां नैं वरण–प्रतीकां रै मारफत मांडै। भासा अर लिपि दोई सामाजिक प्राणी सूं जुड़योड़ी हैं। वौ उणां रौ आपरै मुजब विकास करैं। पण औ विकास व्यक्ति परक नी होय'र समष्टि रूप में होवै। सागै ई लिपि अर भासा दोई सीखीजै। मिनख अभ्यास पांण आं रौ ओजू विकास अर सुधार कर सकै।

आं समानतावां सागै ई भासा अर लिपि में खासौ आंतरौ ई लखीजै। भासा आपरै मूल रूप में ध्वनि माथै आधारित हुवै, लिपि में वां ध्वनियां नै रेखावां सूं उकेरीजै। इण भांत दोया में माध्यम रौ आंतरौ है। भासा मिनख री उतपत सागै ई सरू होय जावै, पण लिपि रौ जळम भासा रै विकास पछै हुवै। भासा रौ उच्चारण सरीर–संरचना (वाक्–तंत्र) माथै टिक्योड़ौ हुवै। इण प्रक्रिया सूं भासा मूण्डै सूं बोलीजै अर कानां सूं सुणीजै। भासा जद बोलीजे तद इज सुणी जावै अर वा उण जगा तोई'ज सुणी जाय सकै जठै तक उणरी आवाज पूगै। इण काल–बंधण सूं छुटकारै सारू ई लिपि में विकास हुयौ। लिपि रामैअर ठौड़ री सीमा सूं घणी आघी है। लिपि में सुणीणिये (श्रोता) री जरूरत कोनी। लिपि रै विकास पांण इज पुराणी रचनावां रौ अजै आणंद लेय रैया हां।

भासा अर लिपि री आं समानतां अर असमानता री ओळख सूं खुलासौ हुवैं'क लिपि सुनण वाळी भासा नैं दिखणवाळी बणावै अर्थात् लिपि भासा नैं मूर्त रूप देवै। लिपि भासा अर उण रै बरतीजण वाळे रै बिचै पुळ (सैतु) रौ काम करै। भासा अर लिपि दोई मिनख री उन्नति में सहयोगी है। फरक ओई है कै लिपि रौ पोसण भण्योड़ै रै हाथां हुवै जद कै भासा जन सामान्य री धरोहर हुवै।

लिपि रै माध्यम सूं अमेरिका रौ निवासी भारत रै ग्यान–विग्यान अर ताज़ा हालातां नैं जाण सकै। जूनी अर मर्‌योड़ी भासावां री जाणकारी लिपि रै मार्फत इज पाय सकां।

लिपि थोडै कै समै लग भासा रै मौखिक (उच्चरित) रूप नैं रोकै पण अरथगत विकास नैं वां गति देवै। भण्यौड़े मिनखां रा उच्चारण कोस अर जोड़नी सूं नियंत्रित हुवै। इन्दिरा कै पन्द्रह नैं इन्द्रा अथवां पन्दरा लिखणं री जोड़णी री भूल नैं लिपि ई सुधार सकै।

लिपि रै विकास सूं साहित्य में गद्य–पद्य रै लेखन रौ जठै विकास हुयौ है, उठै इज उण री मठौड़ पण बंधी है। लिपि रै विकास सूं भासा रै मानवीकरण में घणी मदत मिळी। भासा में नुवां सबदां रौ चलण लिपि सूं ई संभव है। सामान्य उच्चारण में जिका संधि–समास कोनी बरतीजै, वै पण लिपि रै विकास सूं लिखित भासा री संपति बणग्या, ज्यांन –विद्युल्लेखा, मदोन्मत्त।

इण भांत लिपि रै विकास सूं भासा रौ वाक्य–विन्यास ई प्रभावित हुयौ। बोलचाल रा छोटा–छोटा वाक्य लाम्बा होयग्या अर बंतळ में साव़ अप्रचलित उपवाक्य ई बरतीजण लागा, ज्यान – घोड़ौ, जिकौ कालै देख्यौ, आज बिकग्यौ।

भासावां रै विकास सागै सांवठी लिपियां रौ पण विकास हुवतौ रैये। जद फारसी सबदावली हिन्दी में मानीजो ली गई तद देवनागरी लिपि में फारसी री क़, ख़, ग़, ज़, अर फ़ ध्वनियां सारू अेहलांण बणगया। इणीज गत अंग्रेजी रै फुटबॉल, कॉलेज जैड़ा सबदां में बरतीजी ''ऑ'' (रोमन लिपि चिन्ह) सारू देवनागरी में ई लिपि अेहलाण बण्या।

इण तरिया भासा अर लिपि रौ धणौ गै'रौ संबन्ध है। लिपि रै विकास सूं भासा औजूं सांवठी व्ही है। भासा री थिरता छपाई री सुविधा बधी है, जिणसू ग्यान–विग्यान नैं सुरक्षित अर चिर स्थायी बणावण में मदत मिळी है। अेडवर्ड कॉल रै सबदां में 'भासा रौ आविस्कार जै मानखै सारू बरबरता सूं सभ्यता कांनी पूगण वास्तै वाळौ रस्तौ है तद लिपि रै आविष्कार सूं उण री असीम संभावनावां रै बारणा नैं हमेस वास्तै खोल दियौ है।'

3.7 इकाई रौ सार

भासा मिनखां री भावाभिव्यक्ति रौ साधन है जिकी, यादच्छिक रूढ़ अर ध्वनि अैहलाणां माथै टिक्योड़ी हुवै। इण गत भासा समाज री संपत हुवै जिकी आपरी अेक ठावी सींव में बोलीजै अर उण समाज रै स्तर मुजब विकास करै। भासा सर्वव्यापक हुवै पण वा बैवार अर अनुकरण सूं सीखीजै।

भासा रा खास दो रुप हुवै – मौखिक अर लिखित। प्रयोग री दीठ सूं इणरा कैई रूप हुवै, पण वां में सूं महताऊ रूप हैं– बोली, भासा अर मानक–भासा। भासा रौ मानक रूप ई भणाई –लिखाई, राज–काज में बरतीजै।

भासा नैं ठावौ मूरत रूप दिरावण वाळा यादच्छिक वर्ण प्रतीकां री परम्परागत व्यवस्था लिपि है। इणरी अेक सींव हुए अर मिनख इणनैं ई सीखै। इणरी उतपत रौ मूल आधार मिनख री सोच रौ विकास है। लिपि उतपत रौ मूल आधार मिनख री सोच रो विकास है। मिनख री इणी सोच आपरै भावां नै मूरत रूप देवण री हूंस सूं ई लिपि चित्रामां, सूत्रां, प्रतीकां, भाव, भाव–ध्वनि रूपां में बंधती थकी ध्वनि मूलक लिपि रौ रूप धार्‌यौ। आखै संसार री लिपियां आज इणी रै आखर लिपि अर वरणिक लिपि रूपां में लिखीजै।

भारत रौ लेखन कला (लिपि कला) सूं संबन्ध वैदिक काल सूं ई रैयौ है। इण री साख वेद निरूक्त, अस्टाध्यायी, ललित–विस्तर, जैड़ा ग्रंथ अर जूना सिलालेख ई भरै। भारत री जूनी लिपियां में सिंघु घाटी लिपि, खरोस्ठी लिपि अर ब्राह्मी रा नांव गिणाया जा सकै।

भासा अर लिपि री इण विगत सूं दोयां में गैरौ संबन्ध लखावै। लिपि रै विकास सूं भासा औजूं सांवठी व्ही है। भासा री थिरता, ग्यान–विग्यान नैं सुरक्षित अर चिर स्थायी बणावण में मदत मिळी है।

3.8 अभ्यास सारू सवाल

(क) भासा अर लिपि रौ परिचै लिखतां हुया वां रै सम्बन्ध रो खुलासौ करौ।

(ख) भासा री औळख करावतां हुया भासा अर लिपि में कांई समानतावां अर फरक हैं ? खुलासौ करौ।

(ग) लिपि रै अरथ अर सामरथ नै बतवतां थकां लिपि रै महतब नै समझावौ।

(घ) लिपि री ठावी परिभासा देवता हुया लिपि री उतपत अर विकास रौ खुलासौ करौ।

(ङ) भारत में लिपि ग्यान री प्राचीनता सिद्ध करतां हुया भारत री प्राचीन लिपियां रौ परिचै दिरावौ।

(च) भासा रौ खास–खास विसेसतावां रौ उल्लेख करता हुया ध्वनिमूलक लिपि नैं समझावौ।

(छ) भासा री विविध रूपां रौ उल्लेख करता थकां ध्वनिमूलक लिपि रै रूपां नैं समझावौ।

(ज) लिपि रै विकास नैं समझावता हुया ब्राह्मी लिपि रौ परिचै दिरावौ।

3.9 संदर्भ–ग्रंथां री पानड़ी –

1 डॉ, देवेन्द्रनाथ शर्मा – भाषा विज्ञान की भूमिका,

2 डॉ. भोलानाथ तिवारी – भाषा–विज्ञान,

3 डॉ. रामाश्रय मिश्रा एवं डॉ. नरेष मिश्रा – भाषा और भाषा विज्ञान,

4 डॉ. कन्हैयालाल शर्मा – हिन्दी भाषा एवं नागरी लिपि का विकास,

5. डॉ. अनंत चौधरी – नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी।

इकाई –4

नागरी लिपि : आखरां अर अंकां रौ विकास

इकाई रौ मंडाण

4.1 उद्देस्य

4.2 प्रस्तावना :– नागरी लिपि – नामकरण रा आधार अर बीजा नांव

4.3 नागरी लिपि रै आरवरां रौ विकास

4.4 नागरी अंकां रौ विकास –

(क) जूनी सैली (ख) नुवीं सैली

4.5 इकाई रौ सार

4.6 अभ्यास सारू सवाल

4.7 संदर्भ – ग्रंथां री पानड़ी –

4.1 उद्देस्य –

इण इकाई रौ खास उद्देस्य विद्यार्थियां नैं नागरी अथवा देवनागरी लिपि री औळखांण सागै, उणरै आखरां अर अंकां री विगत बतावणौ है।

4.2 प्रस्तावना : नागरी लिपि : नामकरण रा आधार अर बीजा नांव

नागरी लिपि रै नांव बाबत विद्वानां री राय न्यारी–न्यारी है। इणरै नामकरण मुजब हैठै लिख्यौड़ी मानतावां प्रचलित हैं –

1. खास तौर सूं गुजरात रै नागर बिरामिनां रै बरतीजण सूं आ लिपि नागरी कै देवनागरी कैईजी।
2. खास तौरं सूं नगरां में इण लिपि रै प्रयोग सूं इणरौ नांव नागरी पड़यौ।
3. बौद्ध–ग्रंथ 'ललित विस्तार' में 'नाग' वर्णित नाग लिपि ई नागरी है, क्यूंक नाग सूं नागर सबद रौ संबन्ध है।
4. तान्त्रिक अेहळाण 'देवनागर' सूं समता राखण रै कारण इणनैं पैला देवनागरी कैईजी अर पछै नागरी नांव दीरीजियौ।
5. देवनगर कै कासी में प्रचार रै कारण आ देवनागरी लिपि कैईजी।
6. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा रै मुजब मझजुग में थापण (स्थापत्य) री अेक सैली नागर ही जिणमें चौखूटी आक्रतियां होवती ही। नागरी आखरां रै चौखूटै (प, भ, म, ग) होवण सूं इण लिपि रौ नांव नागरी कै देवनागरी दीरीजियौ।
7. पैला पाटलिपुत्र (पटना) नैं नागर अर चंद्रगुप्त नैं देव कैवता हा। आं दोई सबदां रै मेळ सूं देवनागरी नांव प्रचलित हुयौ।

अै सगली ई मानतावां रा कोई पुख्ताऊ प्रमाण नीं मिळै, अतः कल्पनावां रै पांण अै मानतावां कोनी अंगैजी जा सकै। हां, संस्क्रत भासा ज्यांन देववाणी है उणीज गत नागरी नैं देवनागरी कैय सकां। क्यूंकै देववाणी संस्क्रत री लिपि नागरी अथवा देवनागरी ई है।

आं नांवा रै अलावा नागरी (देवनागरी) सारू नन्दिनागरी, नागर, देवनागर, लोकनागरी, हिन्दी–नागरी नांव ई प्रचलण में है। आखै देस री लिपि होवण सूं आचार्य विनोबा भावै इणनैं लोकनागरी नाम दियौ। इणी भांत हिन्दी वास्तै बरतीजण सूं इणनैं लोग हिन्दी लिपि कैवण लागा। पण अै सगळा नांव देवनागरी कै नागरी रै सामै प्रचलन में नी आय सक्या। देवनागरी लिपि में आज फगत संस्क्रत अर हिन्दी ई नीं लिखिजै। आ मराठी अर आज रै पंजाबी अर सिंधी भासियां री ई लिपि बण रैयी है। इण वास्तै इणनैं हिन्दी लिपि नांव देवण रौ तौ कोई पुख्ताऊ आधार ई कोनी बणै। अतः नागरी कै देवनागरी ई ठावौ नांव है।

4.3 नागरी लिपि रै आखरां रौ विकास

नागरी लिपि ब्राह्मी लिपि सूं निपज्योड़ी है। इण वास्तै नागरी – आखरां रै विकास री परम्परा घणी जूनी अर लांबी है। इण विकास नैं बतळावतां पं. गो. ही. ओझा लिख्यौ है क मिनख आपरी रचना में सदीव बदळाव चावै। संसार री सैं लिपियां में छापाखानै रै आविस्कार रै पैलां लिपियां में घणौ बदळाव आयौ अर या ई दसा नागरी रै विकास में ई लखावै। मध्य अेसिया, जापान आद देसा में मिळी नागरी री पोथियां अर म्हाणैं अठै मिळ्या सिलालेखां, ताम्बा–पतरां अर सिक्कावां री नागरी रै आखरां में आज री नागरी रै आखरां में घणौ फरक मिळै।

आधुनिक नागरी रौ जूनौ (मूल) रूप असोक रै सिलालेखां री लिपि में मिळै, जिकौ विक्रम संवत् सूं 200 साल पैला रौ है। असोक – काल में इण लिपि रौ फैलाव आखै भारत में हौ। असोक रै पैला री नागरी रै हालात बाबत कोई जाणकारी नीं मिळै।

नागरी – आखरां रै विकास री विगत नैं जोवण सूं इण तथ रौ खुलासौ हुवै कै असोक रै सिलालेखां री लिपि रा आखर आज री नागरी रै आखरां री तुलना में सोरा हा। वां में सिरै रेखावां रौ अभाव हौ। पण आगै चाल 'र गति सागै लिखण री आदत सूं अर आखरां नैं रूपाळा बणावण री दीठ सूं लिखारौ आपरै हिसाब सूं आखर माण्डवा लागा। इण भांत नागरी रै आखरां रो विकास हुवतौ रैयौ पण आखर री विगत में मांडिजियौ हर आखर रौ पैलडौ रूप असोक रै सिलालेख सूं ई अंगैजियौ है। जिकौ आखर उठै नहीं मिळै, उणरौ हवालौ जथा ठौड़ दियौ है। अठै गौरीशंकर हीराचंद ओझा री तालिका नी देयर वां आखरां रौ ई अठै विगतवार उल्लेख कर्‌यौ है।

(क) नागरी रै स्वराखरां रौ विकास क्रम :–

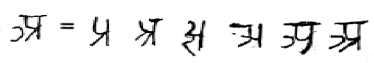

'𑀅' रौ पैलौ रूप काठियावाड़ रै गिरनार परबत रै नैड़ै री अेक चट्टान माथै मंड्योड़ा असोक कालीन लेख सूं लीरिजियौ है। दूजौ रूप कुसाणवंसी राजावा रै दूजै सईकै रै आखती–पाखती रै लेखा में, उच्छकल्प रा महाराजा सरवनाग रै छठै सईकै रा ताम्बापतरां में अर मेवाड़ रै गुहिलवंसी राजा अपराजित रै सातवीं सदी रै लेखां में मिळै। इणमें सिरै रेख देवण री कोसिस लखावै। तीजै रूप में दूज्यौड़ै रूप सूं अळगी बात आईज है क अठै डावी कांनी रै हिस्सै नैं फूटरौ बणावण सारू घुमाव दीरिजियौ है। चौथै अर पांचमें रूप में '𑀅' रै जीवनी कांनी री ऊभी रेख नैं ओपती बणावण री कोसिस करीजी है। इणसूं आखर रै उणियारै में पैलां सूं बत्थौ फरक आयग्यौ है। औ रूप नवैं सइकै सूं 13 वैं सइकै लग रै लेखां अर पोथियां मे मिळै।

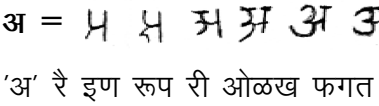

'अ' रै इण रूप री ओळख फगत दिक्खण में ही, पण लिखबा में सौरौ होवण सूं अबै घणखरा इण रूप नैं ई बरतै। इण रौ विकास ' ' रै तीजै रूप नैं औजूं ओपतौं बणावण रौ नतीजौ है।

इणरै चौथै अर पांचमैं रूपां री उपस्थिति जूनै सिलालेखां, ताम्बापतरां अर पोथियां में ई मिळै।

इ = 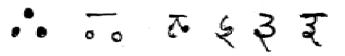

इणरौ दूजोड़ौ रूप गुप्तवंसी राजा समुन्द्रगुप्त रै एलाहाबाद रै चौथै सइकै रै लेख में अर तीजोड़ें रूप स्कन्दगुप्त काल रै छठै सइकै रै कुमांऊवाळा लेख में मिळै। चौथौ रूप हर्यक वंसी राजा जाजलदेव रै 12 वीं सदी रै लेख में अर कैई हाथ लिखी पोथियां में लादै। 'इ' रौ पांचमौं रूप 13वीं सदी रै आखती–पाखती रै सिलालेखां अर पोथियां में मिळै। औ रूप 'इ' सूं घणौ सारिखौ लागै।

उ =

इणरौ दूजोड़ौ रूप कुसाणवंसी राजांवा रै लेखां में मिळै। इण रूप में सिरौ बनावण री कोसिस लखावै अर हैठै री आडी रेख रै छैकड़लैं हिस्सै नैं औपतौ बनावण वास्तै थोड़ोक नीचै कांनी नमायौ है। इणी झुकाव नैं थोड़ोक बधावण सूं चौथै रूप रौ विकास हुयौ, जिणरी उपस्थिति अनेकूं जूना लेखां अर पोथियां में मिळै।

ए = 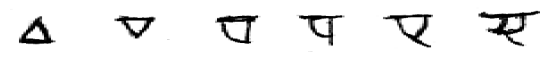

इणरै दूजौड़ै रूप में तिकोण नैं इण गत उलटीजियौ है क वौ उणरै ऊपर कांनी सिरै रेख ज्यांन दीखै। औ रूप समुन्द्रगुप्त रै लेखां में अर कैई दूजोड़ै लेखां में ई लादै। तीजै अर चौथै रूपां में तिकोण री सकल इण भांत री बणगी क वा आज रै' 'श' जैड़ौ लखावै। औ रूप मन्दसौर सूं प्राप्त यसोधरम रै छठै सइकै रै लेख में अर मारवाड़ रै पड़िहार राजा कक्कुक रै नौवैं सइकै रै लेखां में मिळै। पांचमौं रूप जिणरी आज रै 'ए' सूं घणी समता है, राठौड़ राजा गोविन्दाज (तीजोड़ौ) रै नौवी सदी, परमार राजा वाकपतिराज मुन्ज (10वीं सदी) अर कलचूरी राजा करणदेव (11वीं सदी) रै ताम्बांपतरां में मिळै।

(ख) नागरी रै व्यंजन आखरां रौ विकास –

क = 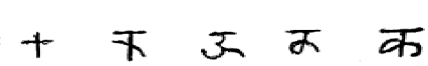

इणरै दूजै रूप में सिरै रेख बनावण री कोसिस है अर बीचाळी आडी रेख नैं थोड़ोक औजूं नमाइजियौ है। तीजोड़ै रूप में बीचाळी आड़ी रेख नैं औजूं नमायौ है। औ रूप कलचूरी राजा करणदेव रै तांबापतर में मिळै। चौथौ अर पांचमौं रूप अनेकूं सिलालेखां अर जूनी पोथियां में मिळै।

ख = 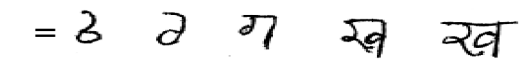

इणरौ पैलौ रूप आसोककालीन सिलालेखां सूं है। दूजोड़ौ रूप कुसाणवंसी राजावां रै लेखां में अर गिरनार रै परबत कनै री सिलावां माथै खुद्योड़ा राजा रूद्रदामा (दूजी सदी) रै लेखां में मिळै। तीजोड़ै रूप में सिरै रेख रै कारण औ आखर दो हिस्सा में बंटग्यौ है, जिका में पैलौ हिस्सौ ओपतौ बनावण री कोसिस में 'र' जैड़ौ बणग्यौ अर दूजोड़ौ हिस्सौ 'व' सरीखो बणग्यौ। औ इज रूप फूटरापै री चाह में आज रै 'ख' रूप में विकसित हुयौ।

ग =

इणरौ दूजौड़ौ रूप मथुरा रै खत्रप (क्षत्रप) राजा सुदास अर राजा नहपान रै जंवाई सक उसवदास रै लेखां में अर कैई दूजौड़ै लेखां में ई मिळै। इण रूप में ऊपरलै कोण री जागां डोडी

लाधै। इणीज रूप माथै सिरै देख देवण सूं अर ऊभी रेख नैं डावी कांनी घुमावण सूं तीजोडौ रूप बण्यौ जिकौ आज रै 'ग' सारिखौ विकसित हुयौ। इणरौ विकास ई 'ख' री दाई सिरै रेख देवण री कोसिस नैं ई मान्यौ जा सकै।

घ = 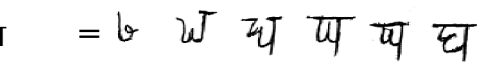

'घ' आखर रौ दूजौड़ौ रूप मालवा रै राजा यसोधरम रै मंदसौर रै सिलालेख में मिळै। इण रूप में सिरै रेख देवण री कोसिस लखावै अर जीवनी कांनी री दोन्यूं ऊभी रेखावां री ऊंचाई ई बधाइजी है। आगै उणीज रूप नैं थोड़ोक डोढों लिखण सूं इणरौ तीजौडौ रूप बण्यौ। इणीज रूप सूं चौथै अर पांचमैं रूप रौ विकास हुयौ जिकौ आज रै 'घ' सरीखौ है।

ङ =

औ आखर असोक रै किणी लेख में नहीं मिळै पण इणरौ सबसूं पैला प्रयोग कुसाणवंसी राजावां रै लेखां में संजुक्ताखरां रै सागै हुयौ है। इणरौ पैलौ रूप समुन्द्रगुप्त रै अेक लेख रै संजुक्ताखर सूं अंगैजियौ है। लारलै बरसां में इणरै नीचै रै हिस्सै री गोलाई में बिरधी हुवती गई अर इणरी सकल 'ङ' सूं मिळण लागी। तद इणनैं 'ङ' सूं अळगौ करबा सारू इणरै माथै ऊपर गांठ लगावणौ सरू हुयौ। आ गांठ कठै चौखूंटी, कठै गोल अर कठै ई त्रिकोणी ही। आगै चाल 'र आई गांठ बिंदी रै रूप में आखर रै बिचै लागण लागी। औ ईआज रौ 'ङ' है।

च = 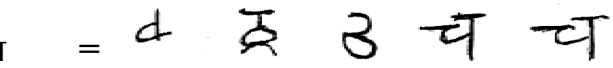

इणरै दूजोड़ै रूप में माथै रै अलावा डावी कांनी हैठैला हिस्सा में नोक सी बणगी है। तीजेडै रूप में आज रैं 'च' री छब लखावै जिकी चौथै रूप में आय 'र सागी दीखै।

छ = 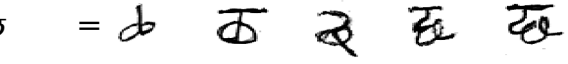

इण आखर रै दूजोडै रूप में ऊभी रेख गोला नैं पार कर 'र बारै निकळीजगी है। इण रूप में सिरै रेख बनावण री कोसिस साफ लखावै। तीजोड़ौ रूप कन्नौज रै गहरवार (राठौड़) वंसी प्रसिद्ध राजा जयचन्द (12 वीं सदी) रै षिलालेख अर मालवा रै परमारवंषी महाकुमार उदय वर्मा (1200 ई.) रै ताम्बापतर में मिळै। आगै रा रूप इण सूं ई विकसित है।

ज =

इणरै दूजौड़ै रूप में सिरै रेख बनावण री कोसिस करीजी है अर हैठैला हिस्सा नैं ओपतौ बनावण सारू कुछ आगै बधा 'र नीचै झुकायौ है। उणीज हिस्सै नैं जीवनी कांनी मोडवा सूं तीसरौ रूप बण्यौ है। चौथौ अर पांचमौ रूप आज रै प्रचलित 'ज 'सूं मिळै। अै सगळा रूप जूनी पोथियां अर लेखां मैं मिळै।

झ (ञ) = 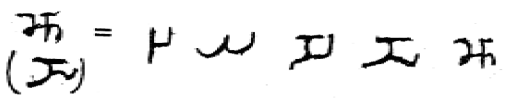

इणरौ पैलौ रूप असोककालीन इज है । जूनै लेखादि में इणरौ प्रयोग बोहोत कम मिळै। दूजौड़ौ रूप बिरामिन राजा सिवगण रै कनसवाँ (कोटा रै नैड़ै) लेख (738 ई.) में अर तीजौड़ौ रूप राठौड़ राजा गोविन्दराज (तीजौड़ै) रै 807 ई. रै ताम्बापत्तर में मिळै। दूजौड़ै अर तीजोड़ै रूप में सिरै रेख बनावण री चेस्टा लखावै चौथौ रूप ' ' सारीखौ इज है। जैनियां री मझकालीन रचनांवां

में ' ' रौ औ ई रूप बरतीजियौ है। राजस्थान में अजै ई ' ' इणी रूप में लिखिजै।

झ =

'झ' आखर रौ औ रूप खासतौर सूं दिक्खण में प्रचलित है। इणरा पैलां तीन रूप 'झ' रै पैलड़ा दो रूपां सरीखौ है। तीजै रूप रै नीचै वाळै हिस्सै में गांठ लगावण सूं चौथौ रूप बण्यौ है, जिकौ जूनी हाथ लिखी पोथियां में कठै–कठै मिळै।

ञ = 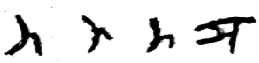

औ आखर संस्क्रत रै लेखां में संजुक्ताखरां में ई मिळै। इणरौ सागौ रूप प्राक्रत लेखां में लाधै। इणरौ पैलौ रूप असोककालीन है। दूजौड़ौ रूप मेवाड़ रै गुहिलवंषी राजा अपराजित रै 531 रै लेख में अर तीजोड़ौ रूप कुमारगुप्त रै काल रै मन्दसौर रै लेख में मिळै। तीजोड़ै रूप रै जीवनी कांनी री ऊभी रेख नैं ऊपर कांनी उठावण सूं चौथौ रूप बण्यौ हैं।

ट =

इणरौ पैलौ रूप असोक रै षिलालेखां सूं लीरिजियौ है। दूजोड़ौ रूप पैला सारीखौ हैं। उणमें सिरै रेख बनावण री कोषिष सूं ऊपरला हिस्सा में थोड़ौक बदळाव लखीजै। तीजोड़ौ अर चौथौ रूप जिकौ वर्तमान ट सूं समता राखै, अनेकू जूनै लेखां में लाधै।

ठ = 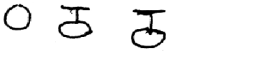

इणरौ पैलड़ौ रूप असोककालीन है। दूजोडै रूप री उतपत सिरफ सिरै रेख देवण री चेस्टा सूं व्ही। यूं दोई रूपां में कोई फरक कोनी लखीजै। तीजोड़ै रूप माथै सिरै रेख बरतीजण सूं अर निचलै गोलाकार हिस्सै रै बिचै नैंनी सीक ऊभी रेख लगावण सूं आज रै 'ठ' रौ विकास हुयौ।

ड(क्) = 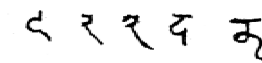

''ड'' आखर रौ औ रूप जूनी जैन पोथियां में लाधै। राजस्थान रा बूढ़ा मिनख अर बाणियां अजै ई 'ड' रै इण रूप नैं बरतै। इणरौ पैलड़ौ रूप अषोक रै षिलालेख में बरतीजियौ है। दूजोड़ै रूप में हैठलौ हिस्सौ थोड़ोक जीवनी कांनी बधाइजियौ है। इणनैं औपतौ बनावण वास्तै कै तेज गत सागै लिखण री कोषिष रै कारण तीजोडौ अर चौथौ रूप विकसित हुयौ। पांचमैं रूप रौ आज रै 'ड' सूं घणौ मेळ मिळै।

ड = 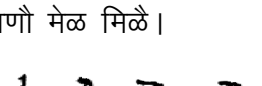

'ड' आखर रै पैलड़ा चार रूप तौ 'ऋ' जैड़ा इज है। पांचमैं रूप रै बीचाळै घुमाव नैं बधावण सूं उणरी सकल आज रै 'ड' सारिखी बणगी।

ढ =

आज री नागरी लिपि वर्णमाळा में अेकलौ 'ढ' ई अैड़ौ वर्ण है जिकौ आपरै जूनै रूप में अजै लग बण्योड़ौ है। इण माथै सिरै रेख ई पूठै री सोच है। इणरौ पैलड़ौ रूप असोककालीन है।

ण = 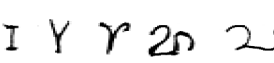

इणरौ पैलड़ौ रूप असोक रै सिलालेखां में लाधै। दूजौड़ौ अर तीजौड़ौ रूप कुसाणवंसी राजावां रै लेखां में मिळै। चौथै सूं छठै रूप लग अनेकूं लेखां अर जूनी पोथियां में बरतीजियौ है। छठै

रूप रै माथै सिरै रेख बधावण सूं आज रौ 'ण' रूप बण्यौ।

ण = 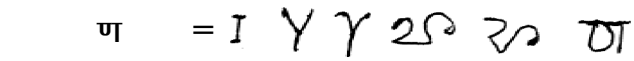

दिक्खण में इण 'ण' आखर रौ पैलां सूं ई चलन हौ पण अजै औ आखै देष में बरतीजै। इणरै पैलड़ा पांच रूपां रौ विकास ' ' दाई इज हुयौ। इणरौ वर्तमान रूप पांचमैं रूप माथै सिरै रेख जोडण सूं अर जीवनी कांनी रै घुमाव नैं नीचै लग बधावण सूं बण्यौ।

त = 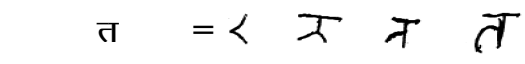

इणरौ पैलड़ौ रूप असोक रै सिलालेख में मिळै। सिरै रेख वाळौ दूजोड़ौ रूप अनेकूं लेखां में बरतीजियौ है। इण रूप सूं ई तीजौ रूप विकसित हुयौ, जिकौ आज रै 'त' सूं पूरी समता राखै।

थ = 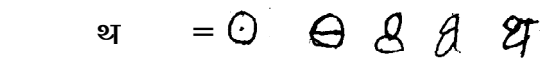

इणरौ सरूआती रूप असोक रै सिलालेखां में वर्तमान है। दूजोड़ौ रूप समुन्द्रगुप्त रै लेख में मिळै। तीजेड़ौ रूप सूं पांचमैं रूप लग अनेकूं लेखां में लाधै।

द =

इणरा पैलड़ा दो रूप असोक रै सिलालेखां में बरतीजिया है। तीजेड़ौ रूप कुसाणवंसी राजांवा रै लेखां में अर चौथौ रूप अनेकूं लेखां अर हाथलिखी पोथियां में मिळयौ है। पांचमौ रूप आजरै 'द' रै नैड़ै लखावै।

ध =

इणरौ दूजैड़ौ रूप कन्नौज रै पडिहार राजा भोजदेव रै ग्वालियर वाळै लेख में मिळै। इण रौ समै 876 ई. है। औ रूप पीळीभीत सूं 20 मील आगै देवळगावं री ईं. 992 री प्रसस्ति में लाधौ है। तीजेड़ौ रूप कन्नौज रै राठौड़ राजा जयचन्द रै 1175 ई. रै ताम्बापत्तर में मिळ्यौं है। चौथौ रूप आज रै 'ध' जैड़ौ इज है।

न = 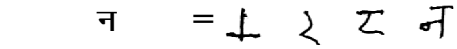

इणरौ दूजैड़ौ रूप खत्रप राजा रूद्रदामा रै लेख सूं लीरिजियौं हैं। तीजैड़ौ रूप राजानक लछमण चन्दर रै समै रै वैद्यनाथ रै लेख में मिळै, जिकौ 804 ई. रौ है। चौथौ रूप तीजेड़ै रूप सूं इज विकसित है, जिकौ आज रै 'न' जैड़ौ इज है।

प = 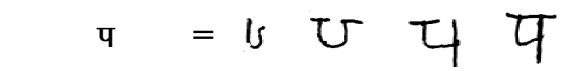

इणरौ पैलड़ौ रूप असोक रै सिलालेखां सू लीरिजियौ है। दूजैड़ै रूप में सिरै रेख देवण री चेस्टा है। तीजोड़ौ रूप अनेकूं लेखां अर जूनी हाथ लिखी पोथियां में मिळै। इणी रूप सूं आज रौ 'प' विकसित हुयौ है।

फ = 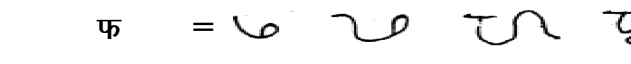

इणरौ दूजेड़ौ रूप असोक कालीन पैलड़ै रूप जैड़ौ इज है। इणमें फगत सिरै रेख बनावण री कोसिस दीखै। तीजैड़ौ रूप समुन्द्रगुप्त रै लेखं सू लियौड़ौ है। चौथौ रूप तीजैड़ै रूप नैं ई तेजी सागै लिखण सूं बण्यौ है। औ रूप अनेकूं जूनी पोथियां में लादै। पांचमौ रूप चौथै रूप रौ ई विगसाव है।

ब =

'ब' आखर रौ दूजैड़ौ रूप राजा यसोधरम रै लेख अर कैई बीजा लेखां में मिळै। तीजौड़ौ रूप कुछ लेखां में 'प' सारिखौ अर कुछ में 'व' जैड़ौ मिळै। इण नैं 'प' अर 'व' सूं न्यारौ रूप देवण सारू इणरै बिच्चै बिन्दी लगावण री सरूआत हुयी। इण धारणा सूं ई चौथौ रूप बण्यौ। इणरौ पांचमौं रूप गुजरात रै सोळंकी राजा भीमदेव रै 1029 ई. रै अेक ताम्बापत्तर में मिळै।

भ = 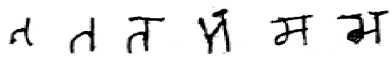

इणरौ दूजैड़ौ रूप कुसाणवंसी राजावां रै लेखां में मिळै। तीजैड़ौ रूप गुप्तवंस रै सासक स्कन्दगुप्त रै इन्दौर सूं मिळ्यौड़ै ताम्बापत्तर में मिळै जिकौ 465 ई. रौ है। चौथौ रूप तीजैड़ै रूप रै लगैटगै नैड़ै है। इणसूं ई आज रौ 'भ' आखर विकसित हुयौ है।

म =

इणरौ पैलड़ौ रूप तौ अषोक रै षिलालेख सूं ई है। आगै रै रूपां रौ विकास सिरै रेख देवण री चेस्टावां रौ परिणाम है। चौथौ रूप आज रै 'म' आखर रै घणा नैड़ै है। इणमें फगत सिरै रेख कट्योड़ी है।

य =

इणरौ ई सरूआती रूप असोक रै सिलालेखां रौ है। दूजैड़ै रूप नैं बिना कलम उठाया लिखण री कोसिस सूं तीजैड़ै रूप रौ विकास हुयौ। चौथौ रूप आज रै 'य' जैड़ौ ई है।

र = 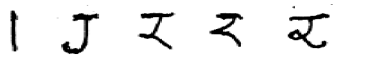

इणरै दूजैड़ै रूप रौ विकास असोककालीन पैलड़ा रूप री ऊभी रेख नैं औजू ओपतौ बनावण री दीठ सूं जीवनी कांनी हैठै नमावण सूं हुयौ है। औ रूप बोध–श्रमण महानायन रै 508 ई. रै लेख में ई मिळै। तीजैड़ौ रूप आज रै 'र' री दाई ई है।

ल = 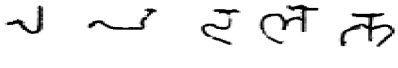

इणरौ दूजैड़ौ रूप हूंणवंसी राजा तोरमाण रै लेखां (500 ई) में लाधै। तीजैड़ौ रूप कैई लेखां में मिळै। इणी नैं औजूं ओपतौ बणावण री चेस्टावां सूं चौथौ रूप विकसित हुयौ। पांचवौ रूप अजैई लिखिजै।

व = 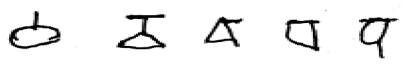

असोककालीन पैलड़ै रूप नै ई बिना कलम उठाया लिखण री कोसिस सूं दूजैड़ौ रूप बण्यौ। दूजैड़ै रूप रै नीचै रा हिस्सा नैं औजू औपतौ बनावण री चेस्टावां सूं आगै रा रूप विकसित हुवता अजै रौ प्रचलित 'व' बण्यौ।

श = 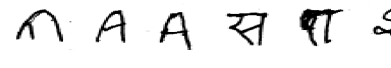

इणरौ दूजैड़ौ रूप ई असोककालीन पैलड़ै रूप सूं विकसित हुयौ। दूजैड़ै रूप सूं ई तीजैड़ौ अर चौथौ रूप विकसित हुयौ। अै नरां ई लेखां में मिळै। पांचमौं रूप ई घणाई लेखां अर हाथ लिखी पोथियां में लाधै। इण सूं ई आज रौ 'ष' बण्यौ। आं रूपां रै विकास में सिरै रेख रै प्रयोग अर आखर नैं औपतौ बनावण री चेस्टावां खास कारण रैया।

ष = 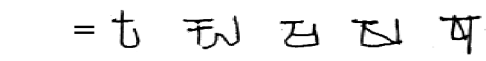

औ आखर असोक रै सिलालेखां में नहीं मिळै। इणरौ पैलौ रूप मेवाड़ रै घोसूण्डा रै सिलालेख सूं लीरिजियौ है। औ सिलालेख ईसा सूं पैला री दूजी सदी रौ है। दूजैड़ौ रूप इणी पैलै रूप सूं विकसित है। इणरौ तीजैड़ौ रूप अनेकूं लेखां में मिळै।

स = 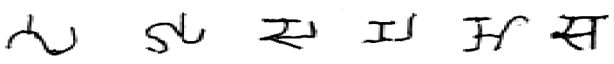

इणरौ दूजैड़ौ रूप असोक रै सिलालेखां जेड़ौ ई है। तीजैड़ौ रूप समुन्द्रगुप्त रै लेखां सूं लीरिजियौ है अर चौथौ रूप कैई बीजै लेखां में मिळै। इण आखर रै विगसाव रौ ई खास कारण सिरै रेख रौ प्रयोग अर इणनैं औपतौ रूप देवण री चेस्टावां रैयी।

ह = 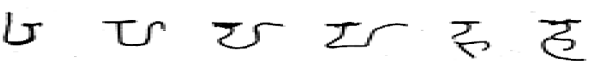

इण आखर रौ दूजैड़ौ रूप ई असोककालीन सिलालेखां जैड़ौ है। तीजैड़ौ रूप उच्छकलप रै महाराज शरवनाथ रै ताम्बापत्तर सूं लीरिजियौं है, जिणरौ समै 463 ई. है। चौथौ रूप तीजेड़ै रूप सूं विकसित है। पांचमौ अर छठौ रूप अनेकूं जूनी हाथलिखी पोथियां में मिळै।

ळ = 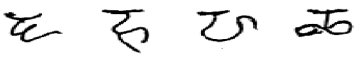

इणरौ पैलड़ौ रूप रूद्रदामा रै लेख सूं लीरिजियौ है। दूजैड़ौ रूप दिक्खण रै सौळंकियां रै 9–11 वैं सइकै रै लेखां में मिळै। तीजैड़ौ रूप दूजैड़ै रूपं सू मिळै। यूं इण आखर री वैदिकी में लूंठौ प्रचलन रैयौ है पण संस्क्रत में औ आखर नहीं मिळै। उठै इण रौ प्रयोग 'ल' कै 'ड' रूप में लिख्योड़ौ मिळै। राजस्थानी में 'ळ' अजै ई बरतीजै।

क्ष = 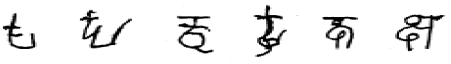

औ संध्याखर है जिकौ क् अर श् रै मेळ सूं बण्यौ है। 10 वैं सइकै लग रै सिलालेखां, ताम्बापत्तरां, सिक्कावां अर हाथ लिखी पोथियां में इणरा दोई आखर दूजै संजुकताखरां री दांई ई मिळा 'र लिखिजता हा। पण लारला लिखारां इणरौ रूप अैढौ निरवाळौ बणा दिरायौ क इणमें इणरा संजोगी रै रूप रा कठै ई कोई अेहलाण नी बचिया। इणरौ पैलड़ौ रूप खत्रप राजा सुदास रै मथुरा रै लेख सूं लीरिजियौ है। दूजैड़ौ रूप पैलड़ै रूप सूं मिळतौ–जुळतौ है अर तीजैड़ौ रूप जूनी हाथ लिखी पोथियां में मिळै। आगै रा रूप इणनैं रूपाळौ बणावण रा जतन है।

ज्ञ = 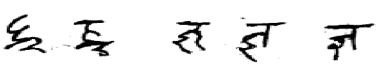

औ ई 'क्ष' री दाई अेक संध्याआखर है, जिकौ ज अर ञ रै मेळ सूं बण्यौ है। इणरौ पैलड़ौ रूप रूद्रंदामा रै लेख में मिळै। दूजैड़ौ रूप पैलड़ा रूप सूं घणौ मैळ खावै अर छेलड़ा दोय रूप जूनी हाथ लिखोड़ी पोथियां में मिळै।

4.4 नागरी अंकां रौ विकास

आ कैय चुक्या हां कै नागरी लिपि री माता ब्राह्मी लिपि है। नागरी रै आखरां रै दाई इज नागरी रै अंकां रौ विकास इणी सूं हुयौ है। जूनै सिलालेखां दान–पत्तरां, सिक्कावां नैं बाचबा सूं लखावै क आखरां री भांत इज जूना अर नुवां अंकां में ई घणौ बदळाव आयौ है। औ बदळाव कै आंतरौ आक्रतिगत नीं हो 'र वां रै लिखण में ई है। अजै १ सूं ९ तांणी अंका अर शून्य आं दस अंक–अेहलाणां (चिन्हां) सूं पूरी अंक–विद्या चालै। पण सरू में अंकां मुजब आ परिपाटी कोनी ही। तद शून्य रौ व्यवहार नहीं हुवतौ हौ

अर दहाई, सैकड़ा, हजार सारू न्यारा–न्यारा अेहलाण हा। अंकां री इण पद्धति नैं विद्वान जूनी सैली कैवै। इणरै विपरीत सून्य रै प्रयोगवाळी पद्धति नैं नुवी सैली नांव सूं औळखै।

(क) जूनी सैली

जूनी सैली में 1 सूं (9) अंकां सारू नव चिन्ह (1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9), 10, 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80 अर 90 वास्तै न्यांरा–न्यारा नव अेहलांण तथा 100 अर 1000 सारू दो अेहलाण – कुल मिला 'र' बीस सुतंतर अेहलांण बरतीजता हा। आं बीस अेहलाणां सूं 99999 तांणी री संख्या लिखी जा सकै ही। लाख, करोड़, अरब वास्तै जिका अेहलांणां रौ प्रयोग हुवतौ हौ, उणां री जाणकारी अजै लग नहीं मिळ सकी है।

डॉ. बर्नले भारत रै अंकां री जूनी सैली री उतपत मिस्र रै 'हिएरोग्लिफिक' अंकां सूं मानै। बेलै नावं रा विद्वान आं अंकां री विगत नैं मिस्त्र रै 'हिएरोग्लिफिक' अंकां सूं प्रभावित कैवै। वूलर अेक तीजी ई बात कैवै। उणां रै मुजब अै अंक मिस्र रै हिएरेटिक अंकां सूं विकसित हुया है। गो. ही. ओझा आं विद्वानां रै मतां री प्रमाण सागै काट करी है अर कैयौ है कै 'जूनी सैली रा भारतीय अंक भारतीय आर्य सुतंतर रूप सूं बणाया।'

(ख) नुवी सैली

इण शैली में १ सूं ९ तांणी रै अंकां सारू नउ अंक अर शून्य (0) अेहलाणं बरतीजता हा। अजै आं दस अैहलांणां सागैई पूरी अंक विद्या री प्रक्रिया चालै। इण सैली में जूनी शैली दाई हर अेक अंक फगत नियत संख्या नैं ई नहीं बतळावै बलकै हर अंक इकाई, दहाई, सैंकड़ां, हजार आद री जागां माथै आय सकै। जागा मुजब जीवणी कांनी सूं डावी कांनी हटावण सूं हर अंक री मूल कीमत दस गुणी बधती जावै। इण वास्तै इज आ संख्या–सूचक विगत 'दस गुणोत्तर' कैईजै। वर्तमान में आ इज अंक प्रणाली सगळै संसार में बरतीजै।

इण अंक–विगत री सरूआत भारत में कदै सूं व्ही, इणरौ सही इतियास नहीं मिळै। पण जूना सिलांलेखां अर दानंपत्तरां सूं खुलासौ हुवै क आं अंकां रौ प्रयोग ईसवी सन् रै छठै सईकै सूं मिळबा लागै। जोतिसषास्त्र री पोथियां में आं अंकां रौ प्रयोग वराहमिहिर री 'पंच – सिद्धान्तिक' नावं री पोथी में मिळै। इण पोथी रौ रचना काल विद्वान 505 ई. मानै। इण आधार पांण औ कैयौ जा सकै क भारतीय नागरी अंकां री नुवी सैली रौ प्रचलन जन–साधारण में तौ हौ पण दानपत्तरां, सिलालेखां में जूनी सैली रां अंक इज बरतीजता हा। इणरौ खास कारण हिन्दू–समाज में सून्य नैं अंमगळकारी मानणौ कैयौ जा सकै।

पंजाब रै बखसाली गांव में खुदाई करतां अेक भोज पत्तर माथै लिख्योड़ी पोथी मिळी। इणमें नुवी सैली रै अंकां रौ प्रयोग मिळै। हार्नले इण पोथी रौ रचना–काल तीजी कै चौथी सदी मानै। वूलर कैवै क जै हार्नले रौ अनुमान सही है, तद आ बात मानी जा सकै क नुवी सैली रै अंकां रौ निरमाण ईसवी सन् री सरूआत या उणरै बाद हुयौ। इणीज सून्य अंक सैली रौ अनुकरण अरब वाळा कर्‌यौ अर उठां सूं इणरौ प्रचार यूरोप रै देसां में सरू हुयौ।

विकास –

आखरां री भांत इज म्हां अठै म. म.गो. ही. औझा री तालिका मुजब नागरी अंका री पूरी विगत क्रम सूं माण्डता हुया उणां रै विकास रौ खुलासौ करा हा।

१ =

इण अंक रौ पैलड़ौ रूप नानाघाट (पूना) अर नासिक री गुफावां में सातवाहन अर बीजा खत्रिय

अर कुसाणवंसी राजावां रै सिलालेखां में तथा राजावां रै सिकां में मिळै। अजैई बाणियां री बहियां में इणीज रूप नैं बरतै। १ रौ दूजैड़ौ रूप गुप्तवंसी राजावां रै सिलालेखां, ईसवी सन् रै छठै सईकै सूं आठवै सईकै तांणी वल्लभी राजावां रा ताम्बापत्तरा अर नेपाली सिलालेखां में मिळै। इणी रूप रै सरू रै हिस्सै में नैंनी–सी घुंडी लगा 'र गोलाई रै बधावण सूं तीजै रूप रौ विगसाव हुयौ। तीजैड़ै रूप रै छैलै भाग नैं हैटै कांनी बधावण सूं १ रै चौथै रूप रौ विकास हुयौ। औ रूप इग्यारवैं सईकै री अलेखूं पोथियां में जोयौ जा सकै। इणी रूप रौ विगसाव पांचमौ अर छठौ रूप है जिकौ आज रै १ सारिखौ है।

२ = = ११ २ २

इणरौ पैलड़ौ रूप दोय आड़ी लीकडियां में हौ। उणी में लगातार फूटरैपण, लेखन रै सौरेपण आद रै कारण विगसाव हुवतौ रैयौ। तीजौड़ै रूप रै छैकड़लै हिस्सा रै मिलण सूं चौथौ रूप बण्यौ। '२' रौ वर्तमान घुण्डीदार रूप लेखनी नैं उठाया बिना लिखण रै जतनां रौ परिणाम है।

३ = ३ ३ ३ ३

इणरौ सरूपोत रूप तीन आड़ी लीकड़ियां वाळौ हौ। आं लीकड़ियां (लकीरां) में घुमाव डालण सूं इणरौ दूजैड़ौ रूप बण्यौ। सरू रै हिस्सै में गांठ लगावण सूं इणरै तीजैड़ै रूप रौ विगसाव हुयौ। औ रूप आज रै रूप सूं ई मेळ खावै।

४ = + ४ ४ ४ ४

इणरौ पैलड़ौ रूप देहरादून रै काळसी गांव रै नैड़ै असोक रै 13 वीं सदी रै धरमाग्या वाळै सिलालेखं में लिख्योड़ौ मिळै। दूजैड़ौ रूप दिक्खण रैं नानाघाट रैं सिलालेखां में लिख्योड़ौ मिळै। तीजेड़ौ रूप राजपूत राजावां रै सिक्कां माथै उकेरिजियौ मिळै। इण रूप रै नीचै री ऊभी रेख रै आखिर में घुमाव दियौड़ौ है। लिखावट रै सौरैपण सारू उणी घुमाव नैं गांठ रौ रूप देवण अर बीचाळी आडी रेख रै सागै उण नैं मिलावण सूं आज रै ४ रौ रूप बण्यौ है। औ रूप दसवै सइकै री अलेखूं पोथियां में ई मिळै।

५ = ५ ५ ५ ५

(५) रौ पैलौ रूप आंध्र–प्रदेस रै भ्रित्यां अर राजपूत राजावां रै लेखां में मिळै। दूजैड़ौ रूप गुप्तवंषी राजावां रै सिलालेखां में जौयौ जा सकै जिणमें ऊभी रेख नैं थौड़ौ'क डोढौ बणा 'र औप देवण री कोसिस करीजी है। तीजैड़ौ रूप नेपाल रै सिलालेखां अर जूनी हाथ लिखी पोथियां में मिळै। औ रूप नागरी रै आज रै ५ रै नैड़ै है।

६ = ६ ६ ६

इणरौ पैलड़ौ रूप बिहार रै साहाबाद रै सहसराम गांव अर जबलपुर (म.प्र) जिलै रै रूपनाथ रै लेखां में सुरक्षित है। औ रूप आज रै ६ सूं घणौ मेळ खावै। इणरै दूजैड़ौ रूप रौ विगसाव पैलड़ै रूप सूं हुयौ, जिकौ मथुरा अर उणरै अैड़ै–नैड़ै मिळिया सिलालेखां में मिळै। तीजैड़ौ रूप दूजैड़ै रूप सारिसौ इज लखावै जिकौ काठियावाड़ रै हडाला सूं मिळ्या कन्नौज रै पडिहारवंसी राजा महिपाल रै 941 ई. रै ताम्बापत्तर सूं लीरिजियौ है।

७ = ७ ७ ७ ७

इणरौ सरूआती रूप आंध्र रै भ्रित्यवंसी राजावां रै सिलालेखो सूं लियौड़ौ है। दूजैड़ौ रूप राजपूत

राजावां रै सिक्कां माथै लिख्यौ थकौ मिळै। इण रूप में ऊभी रेख रै नीचाळै हिस्सै नैं डावीं कांनी घुमाइजियौ है। इणीज घुमाव नैं थोड़ोक बधा 'र तीजैड़ौ रूप बण्यौ है। इणरौ ई विकसित चौथौ रूप है। अै दोई रूप राजपूत राजावां रै सिक्कां अर वल्लभी राजावां रै ताम्बापत्तरां माथै मिळै। आ इज रूपां सू आज रौ ७ अंक विगसित हुयौ है।

८ =

(८) अंक रौ पैलौ रूप आंध्र रै भ्रितवंसी राजावां रै अभिलेखां में मिळै। इणरौ दूजैड़ौ अर तीजैड़ौ रूप गुप्तवंसी राजावां रै सिलालेखां में लाधै। हैटलै हिस्सै नैं डावी कांनी सूं जीवनी कांनी घुमावण सू चौथौ रूप बण्यौ। इण सूं ई आज रो ८ अंक रौ विगसाव हुयौ।

९ = 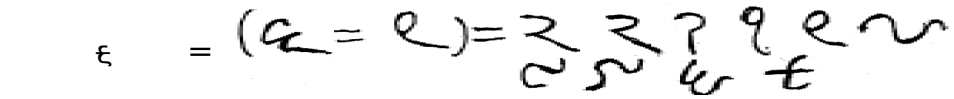

इणरौ पैलड़ौ अर दूजैड़ौ रूप ई आंध्र–भ्रितां रै सिलालेखां में मिळै। तीजैड़ौ रूप सत्रिय राजावां रै सिक्कां में लाधै। सौरेपण सूं लेखन रै सुभाव रै कारण चौथै रूप रौ विकास हुयौ, जिकौ गुप्तवंस रै राजावां रै लेखां में मिळै। चौथै रूप में डावी कांनी रै हैटलै हिस्से री गोळाई नैं बधावण सूं (९) इणरौ पांचवौ रूप बण्यौ। औ रूप आज रै ९ सूं घणौ मिळै।

ज्योतिस ग्रंथा में प्रतीक सैली रौ ई प्रयोग मिळै, ज्यान – रिषि = सात, तीन ; गुण = तीन ; लोक = तीन ; सरोवर = सात ; भू = अेक ; धरती = अेक ; चांद, सूरज = अेक ; जुग = दो आद।

4.5 इकाई रौ सार

नागरी रै नावं बाबत विद्वानां रा न्यारां – न्यारां मत है। नागरी रै अलावा इणनैं देवनागरी, नागर, देवनागर, हिन्दी लिपि नांवां सूं ई औळखै। पण आं नावां रौ कोई पुख्ताऊ प्रमाण कोई विद्वान नहीं दिरायौ है। इण वास्तै नागरी कै देवनागरी जैड़ा प्रचलित नांव नैं ई मानणौ ठीक है।

नागरी रै आखरां अर अंकां रौ विगसाव अठारी प्राचीनतम लिपि ब्राह्मी सूं हुयौ। नागरी–आखरां रा प्रायः सगळा ई आखरां रौ पैलौ रूप असोककालीन सिलालेखां में मिळै।

नागरी रै जूना अर नवां अंकां में आंतरौ लखीजै। अजै १ सूं ९ ताणीं रा अंक अर सून्य (0) आं दस अेहलाणां में पूरी अंक–विद्या समायोड़ी है। पण पैला सून्य रौ व्यवहार कोनी हौ। अंकां री आ प्रणाली जूनी सैली कैईजै। इणमें कुल बीस अेहलाण बरतीजता हा। नुवी सैली में इकाई, दहाई, सैकड़ौ, हजार (षून्य रै प्रयोग सूं) री व्यवस्था बणगी। सून्य रै प्रयोग सूं हर अंक री कीमत दस गुणा होय जावै। अतः आ सैली 'दस गुणोत्तर' ई कैईजै।

4.6 अभ्यास सारू सवाल

(i) नागरी रै नामकरण मुजब मतां रौ उल्लेख करतां हुया नागरी अंकां री जूनी अर नुवीं सैली नैं समझावौ।

(ii) आप 'नागरी' सारू किण नांव नैं ठावौ मानौ ? आपरै मत नैं देवता थंका नीचै लिख्या आखरां रै विकास रौ खुलासौ करौ –

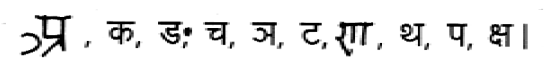

(iii) 'नागरी लिपि' रौ नामकरण करता थकां नागरी रै स्वराखरां रै विकास नैं समझावौ।

(iv) नागरी रै अकां रै विकास नैं समझावौ।

(v) नागरी रै निम्नलिखित आखरां अर. अंकां रौ विकास बतावो इ, ख, भ, म, श, ह, ळ, 1, 5, 8, 9

(vi) किणी पांच व्यंजन आखरा रै विकास नै समझावौ।

4.7 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

(i) गोरीशंकर हीराचन्द ओझा – प्राचीन भारतीय लिपि माला (प्रमुख आधार सामग्री)

(ii) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी भाषा का इतिहास

(iii) डॉ. भोलानाथ तिवारी – भाषा–विज्ञान

(iv) डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' – हिन्दी भाषा और उसका इतिहास

(v) डॉ. कन्हैयालाल शर्मा – हिन्दी भाषा एवं नागरी लिपि का विकास

(vi) डॉ. अनन्त चौधरी – नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी।

खण्ड ।।

इकाई–5

मुड़िया लिपि–सामान्य जाणकारी

इकाई रौ मंडाण

5.1 उद्देस्य

5.2. प्रस्तावना

5.2.1 वैग्यानिक लिपि रौ अरथ अर विसेसतावां

5.2.2 नागरी लिपि री वैग्यानिकता अर विसेसतावां

5.2.3 नागरी लिपि रौ विकास

5.2.3.1 नागरी रौ सरुआती विकास

5.2.3.2 नागरी रौ आधुनिक विकास

5.3 मुड़िया लिपि : अेक ओळखांण

(क) परिचै अर विवेचन

(ख) मुड़िया वैग्यानिक लिपि है?

(ग) नागरी अर मुड़िया में फरक

5.4 इकाई रौ सार

5.5 अभ्यास सारू सवाल

5.6 संदर्भ– ग्रंथां री पानड़ी

5.1 उद्देस्य

इण इकाई रौ उद्देस्य विद्यार्थियां में मुड़िया लिपि री जाणकारी करावणौ है। इण इज दीठ सूं अठै वैग्यानिक लिपि अर नागरी लिपि रै विकास आद री जाणकारी देवतां हुया मुड़िया लिपि री विरोळ करी है। इण संदर्भ में अठै औ खुलासौ ई कर्‌यौ है क मुड़िया लिपि राजस्थानी री साहित्यिक लिपि तौ कोनी ही, पण अठा रै रजवाड़ां में बहियां सारू अर बाणियां आपरै हिसाब–किताब वास्तै इणी लिपि नैं बरतीजतां हा। अेक वैग्यानिक लिपि रा गुण इणमें नहीं हा। आपरी विसेस लिखावट रै कारण आ लिपि जन–प्रिय कोनी बण सकी।

5.2 प्रस्तावना

5.2.1 वैग्यानिक लिपि रौ अरथ अर खासियतां

वैग्यानिक लिपि सूं मतळब है– अैड़ी लिपि जिकी भासा री सगळी ध्वनियां नैं शुद्ध रूप सूं मांडण री सामरथ राखै। इण वैग्यानिक लिपि नैं पावण री हूंस ई लिपि रै विकास री विगत बणी। सैवट, मिनख सागी ध्वनिमूलक लिपि रै निरमाण में सफळ हुयौ, जिका में अेक आदर्श कै वैग्यानिक लिपि रा गुण सोध्या जा सकै। डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ. भोलानाथ तिवारी, श्री शं. दा. चितलै आद विद्वानां इण कांनी विचार कर्‌यौ। आं रै विचारां मुजब अेक वैग्यानिक लिपि में निम्नलिखित गुण हुवणा चाईजै–

1. **अेक ध्वनि सारू अेक लिपि संकेत** – हर ध्वनि सारू अेक ई लिपि संकेत हुवणौ चाईजै, तद इज उणमें ठावौपण आय सकैला। रोमन लिपि में औ गुण कोनी लखावै,

रोमन लिपि में अेक ध्वनि वास्तै न्यारां–न्यारां लिपि अेहलांण बरतीजै, ज्यान k= king (किंग), c= cat (केट), q= queen (क्वीन)। रोमन में अेक ई लिपि अेहलांण सूं आठ ध्वनियां परगट हुवै। आई गत फ़ारसी लिपि में लिखीजै। फ़ारसी री भासा उर्दू में अेक 'ज़' सारू ज़े, ज़ाद, ज़ो, ज़ाल अै च्यार अेहलांण बरतीजै। 'स' ध्वनि वास्तै ई अठै से, सिन्, साद– अै तीन अेहलांणां रौ प्रयोग हुवै। इण तरिया रा प्रयोग किणी लिपि वास्तै मोटा दोस कैईजैला। देवनागरी लिपि इण भांत रै दोसां सूं मुक्त है। इण बाबत केई लोग आरोप लगा सकै क देवनागरी री भासा हिन्दी में 'श' ध्वनि रौ उच्चारण श अर ष लिपि अेहलाणां सूं मंडीज रैयो है, पूरी तरिया सूं कूड़ है। देवनागरी री भासा संस्क्रत में आंरै लेखन में अळगाव ई है।

2. **सामंजस**– अेक ध्वनि संकेत सारू अेक ई लिपि संकेत रै बरतीजण सूं ज्यूं बोलीजै त्यूं इज लिखीजै। इण रै अभाव में रोमन री दाई Put= पुट अर But = बट अर Busy = बीजी लिखिजैला अर बोलणियौ वां नैं पट, बट, बुजी कै पुट, बुट बूजी ई बोल सकै।

3. **सगळी ध्वनियां री अभिव्यक्ति करणवाळी हुवै**– अेक वैग्यानिक कै आदर्श लिपि वास्तै जरूरी है क भासा–विशेष री सगळी ध्वनियां नैं मूरत रूप देवण री उणमें खिमता हुवै। डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा रौ मत है क 'आज संसार में जिकी प्रचलित लिपियां हैं, वां में औ गुण सिरफ देवनागरी लिपि में ई है, किणी दूजी लिपि में नीं। रोमन अर उर्दू तौ इण दीठ सूं घणी ई माडी है। रोमन में ख, छ, ठ, थ, फ, घ, झ, ढ, ध, भ जैड़ी महाप्राण ध्वनियां नैं अर ङ, ञ, ण जैड़ी नासिक ध्वनियां सारू कोई अेहलांण कोनी लखावै। नागरी इण दीठ सूं समरथ है। उणमें 52 वर्णां वास्तै स्वर अर व्यंजन ध्वनियां मुजब न्यांरा–न्यांरा लिपि अेहलाणं हैं। अठै मात्रावां बोधक अर संयुक्ताखरा री अभिव्यक्ति वास्तै ई न्यांरा अेहलाणां री व्यवस्था है।

4. **सौरौपण अर स्पष्टता**– जिकी लिपि रा अेहलाण जित्ता सरल अर स्पष्ट हुवैला वा लिपि उत्तीज वैग्यानिक मानीजैला। टाबर अर सीखणियां उण लिपि नैं सहजता सागै सीख सकैला। किणी लिपि री बहुरूपता उणनैं दौरी बणावै, ज्यांन– रोमन लिपि में अेक ई आखर च्यार रूपां में लिखिजै। लिखण अर छपण रा इणरा न्यांरा–न्यांरा रूप है। इणमें (अंग्रेजी भासा में) कुछ सबदां रौ सरूआती वर्ण मौन रैवै, ज्यांन Knife, Calm, Pnumatics में K, L, P बोलती दाण कोनी बोलीजै। आ दौरप देवनागरी री भासावां में कोनी है। उठै ज्यूं बोलीजै त्यूं इज लिखिजै अर ज्यूं लिखिजै त्यूं इज भणीजै।

5. **ध्वन्यात्मकता**– ध्वन्यात्मकता वैग्यानिक लिपि री खासियत है। इणरी हर ध्वनि सारू न्यांरा लिपि अेहलाण हुवै। नागरी लिपि आखरात्मक है, जिणमें कोई व्यंजन ध्वनि उणरी स्वर ध्वनि बिना नहीं बोली जा सकै। सबदां री सिरै रेख अेक सुर सूं दूजै सुर लग पूगण रै बिच्चै री श्रुतियां री प्रतीक हैं। रोमन लिपि पण ध्वन्यात्मक है। रोमन में लिखित रूप में अेक ध्वनि सूं दूजी ध्वनि लग पूगण रा अेहलांण है पण छपाई में वां वरणां रौ औ संबंध धींगाणै लागै।

6. **ठावी व्यवस्था**– ध्वनि मुजब ह्रस्व, दीरघ, घोष–अघोष, महाप्राण–अलपप्राण आदि रै मुजब लिपि अेहलांणां री व्यवस्था किणी लिपि नैं वैग्यानिकता दिरावै। देवनागरी लिपि में इणरौ सांतरौ रूप जोयौ जा सकै। अठै अ, इ, उ सारू लिपि अेहलाणं है तौ दीरघ स्वर आ, ई, ऊ वास्तै ई लिपि–अेहलांण लागै। हर स्वर–व्यंजन ध्वनि रै उच्चारण री अेक ठावी ठौड़ है। इणी क्रम में अै अेहलांण ई लिपि रूप में व्यवस्थित हैं।

7. **आधुनिक यांत्रिक सुविधावां री अनुरूपता**– आज रै वैग्यानिक युग में लिपि पण

वैग्यानिक गुणा सूं भर–पूर हुवणी चाइजै। संचार– इघकाई रै इण जुग में अैड़ी लिपि वैग्यानिक बाजैला, जिण में छपाई सारू आखरां अर अंक सुविधा सागै कम्पोज हुय सकै अर्थात् उणरा 'फोण्ट' मिल सकै। इण दीठ सूं रोमन री तुलना में नागरी नैं कुछ विद्वान निबळी मानैं। पर इंजीनियरां री समझ–बूझ सूं आज 'इलेक्ट्रोनिक' सुविधावां ई देवनागरी में मिलै हैं।

8. **देस री माटी सूं जुड्यौड़ी**– जद कोई लिपि उणीज भासा रै देस सूं नीपज्यौड़ी हुवै, जिण क्षेत्र में वा भासा बोलीजै, तद उण लिपि रै अेहलाणां रौ उण भासा री ध्वनियां नैं सही रूप में अभिव्यक्ति देय सकैला। नागरी ब्राह्मी लिपि सूं नीपज्योड़ी है, जिकी संस्क्रत अर हिन्दी, मराठी, राजस्थानी री लिपि है। आं सगळा रौ भारत सूं पुस्तैनी संबंध है। आपरी इण खासियत पांण आ आज सिंधी, पंजाबी भासी नवयुवकां सारू चावी बणती जाय रैयी है।

5.2.2 नागरी लिपि री वैग्यानिकता

ऊपरलै विवरण सूं औ खुलासौ ई हुयौ क नागरी लिपि अेक वैग्यानिक लिपि है। इणमें सगळी ई ध्वनियां नैं मांडण सारू लिपि–अेहलांण हैं। इण लिपि में लिख्योड़ी भासा रौ वौईज उच्चारण हुवै ज्यूं वौ आखर लिखिजियौ है अर वौ आखर उणीज भांत बोलीजै ज्यूं वौ मंडिजियौ है। नागरी लिपि में हर स्वर अर व्यंजन ध्वनियां रै उच्चारण री जागा ठावी है, इणी क्रम में आं ध्वनियां नैं मांडण वाळा लिपि अेहलांण हैं। देवनागरी री स्वर–व्यंजन ध्वनियां रौ जिकौ वरगीकरण ह्रस्व स्वर, दीरघ स्वर, विवृत स्वर अर कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, औष्ठ्य आद पांच वरगां में बंटीजियौड़ा व्यंजन है, वौ ई वैग्यानिक हैं। इणरै अलावा देवनागरी रै व्यंजनां रौ वरगीकरण प्राणत्व रै आधार माथै ई है। उच्चारण–संदर्भ में निसरणवाळी हवा रै आधारा पांण करीजियौ औ वरगीकरण–महाप्राण अर अलपप्राण व्यंजन– उत्तम कोटि रौ मानीजियौ है। पांचू वरगां रौ दूजौ अर चौथौ व्यंजन महाप्राण बाजै। आं व्यंजनां रै उच्चाराण में हवा री गत तेज हुवै अर उणमें हकारत्व ('ह' ध्वनि) रैवै। इणरै विपरीत पांचू वरगां रौ पैलै अर तीजौ व्यंजन अलपप्राण कैईजै। आं रै उच्चारण में हवा रौ प्रवाह मंदौ हुवै। देवनागरी में पांचू वरगां रौ छैकड़लौ व्यंजन नासिक्य कैईजै। आं व्यंजनं रै उच्चारण में हवा नाक सूं नीसरै। ङ, ञ, ण, न, म नासिक्य ध्वनियां हैं।

नागरी लिपि री वैग्यनिकता रौ म्होटौ प्रमांण औ पण है क उणमें मात्रावां नैं ई सुद्ध रूप में मांडण री खिमता है। उणमें अ, आ, इ, ई, ए, ऐ आदि सारू न्यांरा–न्यांरा अेहळांण (मात्रावां ा, ि, ी, ु, ू, े, ै) है, जद क अंग्रेजी (रोमन) में I, E, Y आद रौ प्रयोग ठावौ कोनी है। नागरी री इण वैग्यानिकता पांण म्हां उणरी निम्नलिखित विसेसतावां रा बखांण कर सकां–

1. **वैग्यानिकता**– नागरी लिपि री सबसूं मोटी विसेसता है, उणरी वैग्यानिकता। अेक वैग्यानिक कै आदर्श लिपि रा सगळा गुण इणमें है। इणमें ज्यूं बोलीजै त्यूं इज लिखिजै। इणरी हर ध्वनि उच्चारित हुवै अर उण ध्वनि वास्तै अेक ठावौ अेहळांण है। देवनागरी वर्णमाला में 52 वर्ण हैं अर आं सगळा ई 52 वर्णा (स्वर अर व्यंजन ध्वनियां) सारू ठावा लिपि–अेहळांण हैं। आ शुद्ध रूप सूं स्वदेशी लिपि है, जिण रा आखर फूटरा, ओपता, भणबां में सरल अर सहज है। आधुनिक इलेक्ट्रोनिक मुद्रण व्यवस्था रौ ई इणमें लगौलग विकास हुय रैयौ है।

2. **अेतिहासिक महत्व**– इण लिपि में इतिहास दो रूपां में लखीजै– (अ) इतियास सूं ई पैलां भारत री प्रचलित लिपि ब्राह्मी सूं इणरौ संबंध है। ब्राह्मी सूं ई इणरी उतपत व्ही है। इण भांत आ इणरी गुमैजी वंस परम्परा है। (आ) इण में देस री गौरवमयी भासा

संस्क्रत रौ साहित्य उत्तरी अर दिखणी भारत में मिळै।

3. **ध्वनि प्रतीकां (वरणां) री व्यवस्था**– नागरी लिपि री वर्ण–व्यवस्था घणी वैग्यानिक है। वर्णां रौ वरगीकरण, उच्चाराण–प्रक्रिया अर उच्चारण री ठौड़ नैं ध्यान राखतां करीजियौ है। सैं सूं पैलां स्वर अर फेर व्यंजन; स्वरां में ई पैलां ह्रस्व, स्वर अर फेर दीरघ स्वर–रूप। पैलां मूल स्वर पछै संयुक्त स्वर। स्वरां री दाईं इज व्यंजनां रौ पण वरगीकरण व्यवस्थित अर वैग्यानिक है। व्यंजनां रा पांच वरग– क–वरग, च– वरग, ट–वरग, त–वरग अर प– वरग– उच्चारण मुजब व्यवस्थित करीजिया है। सबसूं पैला कंठ री जागां है, अतः कंठ्य–ध्वनियां नैं पैली ठौड़ माथै राखीजी हैं। इणी'ज विगत में तालव्य, मूर्धन्य, वर्त्स्य, दन्त्य अर औष्ठ्य वरग ठावा करीजिया है। आ व्यवस्था रोमन कै अरबी लिपियां में कोनी मिळै। रोमन लिपि में पांच स्वर है– A, E, I, O, U, आं रौ कोई क्रम कोनी है। A रै पूठै B आवै जिकौ व्यंजन है। अरबी लिपि में ई 'अलिफ' स्वर है, जिणरै पछै 'बे' आवै, जिकौ स्वर नीं होय'र व्यंजन है। इण भांत रोमन अर अरबी लिपियां में स्वर अर व्यंजन ध्वनियां रै वर्णां रौ कोई क्रम कोनी है।

4. **अेक ध्वनि सारू अेक प्रतीक (लेखिम)**– नागरी लिपि में अेक ध्वनि वास्तै फगत अेक इज ध्वनि–प्रतीक बरतीजै। इण विसेसता सूं बीजौ भासा–भासी कोई दौरप नहीं अनुभवै। रोमन अर अरबी भासा में इण विसेसता रै अभाव में जोडणी री घणी समस्यावां ऊपड़ै, ज्यांन रोमन में–

cack में c 'क्' सारु

cash में c 'क्' सारु

ceiling में c 'स्' सारु

chafe में ch 'च्' सारु

chemistry में ch 'क्' सारु

chopra में ch 'च्' सारु

cache में che 'श्' सारु

5. **विकाससील लिपि**– नागरी अेक विकाससील लिपि है। हिन्दी माथै विदेसी भासावां रै प्रभाव सूं उणां री ध्वनियां नैं वा (हिन्दी) दो तरिया सूं अंगैजियौ है। कुछ ध्वनियां नैं वौ ज्यूं री त्यूं आप मांय समाय लीवी है तौ कुछ ध्वनियां नैं आपरी ध्वनियां में ढाल लीवी है, ज्यांन– क़, ख़, ग़, ज़, फ़ अर ऑ। देवनागरी अंग्रेजी रै विराम–चिन्ह नैं अंगैज'र आपरी इण प्रव्रति रौ परिचै दियौ है।

6. **भारत री रास्ट्रीय लिपि**– नागरी भारत री खास लिपि है, जिण नैं भारतीय संविधान में राज–लिपि रै रूप में अंगैजी है। आ लिपि हिन्दी अर उणरी विभासावां अर बोलियां रै सागै ई मराठी, राजस्थानी, नेपाली ई इणी लिपि में लिखिजै। उर्दू, सिंधी, पंजाबी, गुजराती भासी नुवी पीढ़ी रा लोग लिखावट में इणी लिपि नैं बरतीजण लागा है।

7. डॉ. हरदेव रै मुजब नागरी लिपि वरणात्मक है पण डॉ. कन्हैयालाल शर्मा इणनैं अरध आखरात्मक लिपि सिद्ध करै। उणा रै मुजब इणरी आखरात्मकता इण वास्तै है क इणरी सगळी ध्वनियां में 'अ' सुर इणरी वरणमाला में हर आखर सागै रैवै। जद कदै ई व्यंजन–संजोग हुवै तद उणमें सूं 'अ' निकळ'र शुद्ध व्यंजन बणावण सारू कै तौ उण नैं हलन्त (्=क्) कर देवै कै उणनैं संजुक्त रूप देवण वास्तै ऊभी रेख हटा देवै– (ट , ख , ग , ध , च , ज , , ण , त , थ , ध , न , , ल , ट , ल , ट , श , ष , स) कै

व्यंजन रै पैलड़ै हिस्सै नैं बरतीजै– (क, प, भ, क्ष,), या व्यंजन रै सिरै मंडीजै– (ि) अथवा लारलै व्यंजन नैं ई जिकौ आखर हुवै, पैलड़ै व्यंजन नैं आखर–रूप में लिख'र उणरै हैटै या बिचै मांडीजै– व्यंजन 'र' में इण तरिया रौ बदळाव घणी जागां जोयौ जा सकै– (क्र, ख्र, ग्र, घ्र, ज्र, ट्र, ठ्र, ड्र, ढ्र, त्र, थ्र, द्र, ध्र, न्र, ब्र, भ्र, स्र, ह्र), बीजा आखरां रा दाखलां हैं– क्त, त्त, ल्ल, ह्न, , , द्व, द्ध, आद।

8. भारतीय साहित्य रा कुछ विकसित रूप फगत नागरी लिपि में ई मंडीज सकै। दूजी लिपियां में वां नैं मूरत रूप देवण री खिमता कोनी है, ज्यांन चित्रालंकार रा पदमबंध, खड़गबंध, मुरजबंध, कपाटबंध, गोमूत्रिकाबंध, अस्वगतिबंध, कामधेनुकाबंध आद। उदाहरण सारू केशवदास रौ औ छंद जिण नैं किणी कांनी सूं भणा–अेक सरीखौ भणीजै–

मा सम मोह सजै बन बीन नवीन बजै सह मोम समा।
मार लतानि बनावति सारि रिसाति बनावनि ताल रमा।।

मानव ही रहि मोरद मोद दमोदर मोहि रही वनमा।
माल बनी बल केशवदास सदा बस केल बनी बलमा।।

9. भारतीय साहित्य री अेक महताऊ विद्या है– तंत्रविद्या। इणरी अनेकू बातां रौ खुलासौ फगत देवनागरी रै वरण–विन्यास में ई हुय सकै। वां बातां रौ खुलासौ दूजी लिपियां में संभव कोनी। इण रौ खास कारण देवनागरी रा आखर, अंक री स्पस्टता है।

10. इण भांत तकनीकि अर वैग्यानिक उपयोग री दीठ सूं ई नागरी लिपि अेक ठावी लिपि है। इण उपयोग नैं देखतां सरकार कांनी सूं इण बाबत ठोस कदम उठावणा चाईजै। आं जतना सूं देवनागरी में लिखियोड़ौ महताऊ साहित्य विस्व रै विद्वानां सामैं आ सकैला।

5.2.3 नागरी लिपि रौ विकास

5.2.3.1 नागरी रौ सरुआती विकास

नागरी लिपि रौ सरुआती विकास भारत री सबसूं जूनी लिपि ब्राह्मी सूं हुयौ। गुप्तकाल में ब्राह्मी लिपि दिखणी अर उत्तर भागां में बंटगी। उत्तरी ब्राह्मी गुप्त–लिपि कैईजी क्यूं'क इणरौ व्यवहार गुप्त सामराज में दूर–दूर तांईं हुतौ। म.म.गौ.ही. ओझा रै मुजब गुप्तकाल में कैई आखरां री आक्रति नागरी सूं कुछ–कुछ मिळण लागी ही। सिरै रा अेहलांण जिका पैलां नैंनां हा अब लांबा हुवण लागा अर स्वरां रै जूनां रूपां रौ लोप होय'र नुवै रूपां में बदळीजण लागा। इणी गुप्त लिपि सूं छठै सइकै में 'सिद्ध मात्रिका' लिपि विगसी, जिण नैं वूलर नैंनीं कोणवाळी लिपि कैयी। गुप्त लिपि सूं ई 7वीं–8वीं सदी में कुटिल लिपि विकसित व्ही। नागरी लिपि रौ विकास इणी लिपि सूं 7वैं–8वैं सइकै में साफ लरवावै।

नागरी (देवनागरी) रौ पैलौ प्रयोग गुजरात रै राजा जयभट्ट (7वीं–8वीं सदी) रै शिलालेखां में मिळै। 8वीं सदी में राठौड़ नरेसां री राज आग्यावां अर 9वीं सदी में बड़ौदा रै ध्रुवराज रा आदेस नागरी में निकाळिजिया हा। दिखणांद रै बिजैनगर राज अर कोंकण में तद देवनागरी रौ प्रचार हौ। आं प्रमांणां पांण कुछ विद्वान औ सार काढ्यौ क नागरी दिखण री लिपि ही अर अठां सूं उत्तरी भारत में पूगी। 8वैं सइकै सूं दसवैं सइकै लग रै नागरी लिपि रै विकास री जाणकारी मेवाड़ रा गुहिलवंसी राजां, मारवाड़ रा परिहार राजां, कन्नौज रा गहरवार, गुजरात रा सोळंकी राजावां, मध्यप्रदेश रा हय, राठौड़ अर कलचूरी राजावां रै पुरालेखां में मिळै। महाराष्ट्र में आ लिपि बाळबोध नांव

सूं प्रचलित ही। उत्तर भारत में इण जूनी नागरी रै सरुआती विकास मुजब म.म.गौ.ही. ओझा लिख्यौ है क''दसवीं शताब्दी की उत्तर भारतवर्ष की नागरी लिपि में कुटिल लिपि की नॉंई अ, आ, ध, प, म, य, ष और स के सिर दो अंशों से विभक्त मिलते हैं, परन्तु ग्यारहवीं शताब्दी से ये दोनों अंश मिलकर सिर की एक लकीर बन जाती है और प्रत्येक अक्षर का सिर उतना लम्बा रहता है जितनी कि अक्षर की चौड़ाई होती है। ग्यारहवीं शताब्दी की नागरी लिपि वर्तमान नागरी से मिलती–जुलती है और बारहवीं शताब्दी से वर्तमान नागरी बन गयी है.... ई. सन् की बारहवीं शताब्दी से लगाकर अब तक नागरी लिपि बहुधा एक ही रूप में चली आती है।''

5.2.3.2 नागरी रौ आधुनिक विकास

जूनी नागरी सूं विकसित आधुनिक नागरी रौ विकास 12वैं सइकै सूं सरु हुवै। नागरी रौ सरुआती रूप जठै सहज रूप में विकसित हुयौ उठै ई आधुनिक नागरी रै विकास में घणी जगां असहज विकास ई लखावै। इण असहज विकास रौ कारण हौ विदेशी भासावां सूं संपरक। फारसी प्रभाव रै कारण नुकतौ कै बिन्दी री सरुआत नागरी में ई होयगी– ड–ड़, ढ–ढ़, क–क़, ख–ख़, ग–ग़, ज–ज़, फ–फ़। औ इज नीं मझ जुग में कुछ लोग य–प दोयां नैं, य सरीखौ अर व–ब नैं व लिखण लागा।

गुजराती मराठी सूं प्रभावित होय'र नागरी लिपि कुछ नुवां ध्वनि अेहळांणां नैं अंगैजिया अर जूनै ध्वनि–अेहळंणां नैं ई छोड्या, ज्यांन– अ, आ, ख, , ळ, आदि। अंग्रेजी री ऑ ध्वनि सूं जुड्यौड़ा सबद हिन्दी अंगैजिया, जिण सूं नागरी में ई 'ॅ' लिपि अेहळाणं सरू हुयौ। विराम–संकेत तौ अंग्रेजी (रोमन लिपि) री इज देन है। अंकां में तौ पूरौ बदळाव निज़र आवै। रोमन अंकां नैं रास्ट्रीय स्तर माथै महत्व दिरायौ है। पण इण काल में नागरी रै आखरां री बणावट में फूटरापौ दीखै। उणां री गोलाई औजू ओपती लखावै।

नागरी लिपि री जनप्रियता इणरै आधुनिक विकास में ई लखावैं। सरुआत में जठै महमूद गजनवी आपरै सिक्कावां माथै देवनागरी लिपि में राजवाक्य लिखाया, उठै ई मुगलकाल में राज री लिपि फ़ारसी हुवता ई इणरौ टणकौ कायम रैयौ। अंग्रेजी शासन में ई रोमन लिपि नैं बधापौ मिळतौ रैयौ। आज़ादी पूठै देवनागरी रास्ट्रीय लिपि बणगी। अजै तौ इणरै विकास री घणी संभावनावां लखावै।

5.3 मुड़िया लिपि : अेक ओळखांण

(क) परिचै अर विवेचन

डॉ. मोतीलाल मेनारिया मुड़िया लिपि नैं राजस्थानी री लिपि मानता थकां उणनैं देवनागरी लिपि सारिखी कैवै। वै इणरै आखरां री बणावट में देवनागरी सूं फरक मानता थका इण बात री थरपणा करै के औ फरक लगौलग खतम हुय रैयौ है। वै मुड़िया लिपि रै उणियारै बाबत लिखै– ''यह लिपि लकीर खींच कर घसीट रूप में लिखी जाती है। राजकीय अदालतों आदि में इस लिपि का प्रायः विशुद्ध प्रयोग होता है। परन्तु महाजन लोग अपने बहीखाते में इसका शुद्ध प्रयोग नहीं करते। उनकी इस अशुद्ध लिपि शैली का नाम ही जुदा पड़ गया है। इसे महाजनी अथवा बणियावाटी लिपि कहते हैं। और इसके अक्षर 'मुड़िया' कहलाते हैं। इसमें मात्राएं नहीं रहतीं। यह एक तरह शॉर्ट हैंड का काम देती है।''

इणी तरिया री बात 'राजस्थानी सबद कोस' रा रचेता पदमश्री सीतारामजी लालस करै। उणा रै मुजब 'मुड़िया राजस्थानी (मारवाड़ी) री लिपि है। इणी में राजस्थानी रौ साहित रचित है।' पण आ बात साव़ खरी कोनी। 12वैं सइकै सूं 19 वैं सइकैं तांणी री हाथ लिखी पोथियां में इण लिपि

रौ कठै ई कोई प्रयोग कोनी मिळै। हाँ, राजस्थान रै रजवाड़ा अर बाणियां रै हिसाब–किताबां में इण लिपि रौ सरू सूं अजै लग प्रयोग मिळै। इण वास्तै ई इणनैं बणियावटी, महाजनी नावां सूं ई ओळखीजै। बिहार, यू.पी. में हिसाब–किताब रौ काम कायस्थां रै हाथां होवण सूं इणनैं कैथी नांव सूं ई जाणै। डॉ. भोलानाथ तिवारी रै मुजब महाजनी, कैथी अर राजस्थानी (मुड़िया) लिपि रौ विकास ब्राह्मी लिपि री उत्तरी सैली सूं विकसित गुप्त लिपि रै आधुनिक नागरी सूं हुयौ।

कैथी लिपि बाबत ग्रियरसन आपरी पोथी 'भारत का भासा सर्वेक्षण' में लिख्यौ है ''कैथी उसी लिपि का नाम है जो उत्तर भारत के कैथ या कायस्थ नामक एक लिपिक जाति में प्रचलित है। यद्यपि कहीं–कहीं अप्रचलित अक्षरों के कारण यह लिपि परिपूर्ण नहीं है, तथापि इस लिपि के तथा देवनागरी लिपि के बीच यही संबंध है जो लिखित अंग्रेजी और मुद्रित अंग्रेजी के बीच है।''

कैथ (कायस्थ) उपनिषद् काल री अेक मसिजीवी जात ही। इण जात री बरतीजण वाळी लिपि कैथी जन लिपि बणगी, जिण रौ प्रयोग अजैलग आखै उत्तर भारत में प्रचलित है।

आज री कैथी लिपि रै सरूप रै परिपेख में अंगिका साहित्य रा विद्वान डॉ. तेजनारायण री पोथी 'अंगिका भासा का इतिहास रै मुजब' कैथी लेखन में शिरो रेखा नहीं होती है और न ही संयुक्त वर्ण उसमें होते हैं। यह कायस्थों में विसेस लोकप्रिय रही क्योंकि लेखन कार्य साधारणतः वे ही किया करते थे। इसलिये कैथी का नामान्तरण रूप कायस्थी भी प्रचलित हुआ–

कायस्थी > कायथी > कैथी

डॉ. राजशेखर झा रौ मानणौ है क मागधी लिपि ई कैथी लिपि है। 'ललित विस्तर' में जिण 64 लिपियां रौ उल्लेख है, वां में मगध लिपि री जागा छठी है। मगध लिपि कैथी लिपि ई है। इण भांत कैथी अेक जूनी लिपि है। इण में इ, ई री जागां सिरफ 'ई' अर उ, ऊ री जागा उ लिखिजै। 12वैं सईकैलग कैथी कुटिल आखरां में ई लिखिजती ही।

इण विगत सूं कैथी, मुड़िया, मोड़ी कै महाजनी लिपि सारिखी है। उदाहरण वास्तै म्हां अठै गो. ही ओझा री पोथी 'प्राचीन लिपि माला' में दियोड़ी कैथी अर मोडी लिपि रै आखरां रा नमूनां प्रस्तुत कर रैया हां। ओझाजी मुड़िया (राजस्थानी) लिपि रौ कोई अलग सो नमूनौ नत्थी नीं कर्‌यौ है–

कैथी लिपि रौ नमूनौ

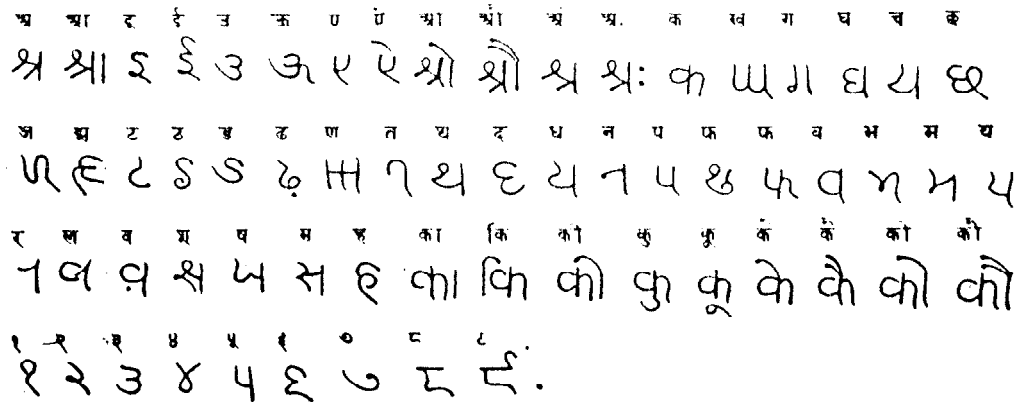

मुड़िया लिपि री लिखावट में पैला अेक आडी रेख मांडीजै अर उण माथै उणरै सहारै सूं आखर लिखिजै। अै आखर मुड़ियोड़ा होवण सूं ई इणनैं 'मुड़िया' नांव दीरिजियौ। इणमें ह्रस्व अर दीरध मात्रावां कांनी कोई ध्यान नहीं दीरिजै। मात्रावां सारूं कानां–मात रा अेहळांण प्रचलित है। आड़ी–डोढी लिखावट रै कारण मुड़िया घणी दौरी भणीजै। घणी बार कानां–मात ई कोनी

बरतीजै। इण वास्तै ई इण में भणन में दौरप आवै।

डॉ. मोतीलाल मेनारिया रै मुजब मुड़िया लिपि रै आखरां रौ आविस्कारक मुगल समराट अकबर रा खजाना मंत्री राजा टोडरमल हा। टोडरमल देवनागरी नैं कठिन लिपि मानता हा, इण वास्तै वै मुड़िया लिपि रौ प्रचार करियौ। इण बाबत औ दूहौ कैईजै–

देवनागरी अति कठिन, स्वर व्यंजन व्यवहार।
तातें जग के हित सुगम, मुड़िया कियो प्रचार।।

म.म. गौ.ही. ओझा इण री उतपत मुजब लिख्यौ क कोई हेमाद्रि पंडित इणनैं लंका सूं लाय'र महाराष्ट्र में प्रचलित करी। पण सिवाजी रै पैलां तांई इणरौ कठैई कोई प्रचार नीं दीखै। सिवाजी आप रै राज री लिपि नागरी नैं थरपी। पण उणरै हर आखर माथै सिरै रेख बनावण सूं वा धीमी गति सूं लिखीजती ही। इणनैं गति सागै लिखण री चेस्टा सूं सिवाजी रा मंत्री बालाजी आपाजी इण रै आखरां नैं तोड़–मरोड़'र अेक नुवी लिपि बणाई, जिणनैं वै मोडी कैयौ। पेसवा राज में विवळकर नांव रा मिनख उणमें औजूं सुधार कर्‌यौ, जिण सूं इणरा आखर थोडा'क गोल बण गया। आ लिपि सिरै ऊपर लांबी रेख खींच'र लिखिजै। इणमें 'इ', 'ई' अर 'उ', 'ऊ' री मात्रावां में ह्रस्व–दीरध रौ भेद नहीं है अर न ही हलन्त व्यंजन है।

मोडी लिपि रौ नमूनौ

(ख) मुड़िया वैग्यानिक लिपि है?

जै म्हा मुड़िया लिपि री परख वैग्यानिक लिपि रै मानदण्डां माथै करां तौ वा खरी कोनी उतरै। वैग्यानिक कै आदर्श लिपि सारू जरूरी है क उणमें अेक ध्वनि सारू अेक ई लिपि अेहलांण हुवै। आ खासियत मुड़िया में सरू सूं आखिर तांई कोनी लखावै। हर लिखारौ आपरी जरूरत मुजब वर्णां रौ प्रयोग करै, जिणसूं नरी बार उण लिपि नैं बांचण वाळौ ई उण रौ ठावौ अरथ कोनी निकाल सकै। उदाहरण सरूप अेक'र कोई वैपारी आपरै सम्बन्धी नैं मुम्बई सूं कागद लिख्यौ क म्हां अठै रूई ले लीवी है, थैं ई उठै रूई ले लीजौ। पण बांचण वाळौ सम्बन्धी उण नैं बांचियौ– म्हां अठै रोई लीधा हा थैं ई उठै रो ई लीजौ। इण संसय में बांचण वाळा रै घरां स्यापौ पड़गौ।

मुड़िया लिपि में सगळी ध्वनियां री अभिव्यक्ति वास्तै कांना–मात, पूरै वरणां रौ प्रयोग कोनी करीजै। अतः इणमें भावाभिव्यक्ति रौ अभाव खटकै। अेक सामान्य व्यक्ति मुड़िया लिपि रै बरतीजण वाळै मिनख रै सही भावां रौ अनुमान नहीं कर सकै, जिण सूं सम ण में अन्तराल आवै अर अेक सामाजिक अव्यवस्था रौ संकट बण जावै। इण भांत मुड़िया लिपि में उच्चारण रै अनुरूप लेखन अर सौरेपण सूं घणी आघी है। आं गुणां रै अभाव में मुड़िया रै ध्वनि अेहळाण अर

लिपि अेहळांणां में कोई सामंजस कोनी लखावै। अतः आ अेक वैवारिक आदर्स लिपि कोनी कैयी जा सकै।

ध्वन्यात्मकता वैग्यानिक लिपि री सबसूं मोटी खासियत कैईजे। मुड़िया लिपि में स्वर अर व्यंजन तथा ह्रस्व अर दीरघ ध्वनियां री कोई ठावी व्यवस्था नीं है। सबदां रै सिरै रेख रौ ई अभाव है। आं सगळा कारणां सूं अभिव्यक्ति ई ठावी कोनी हुय सकै। जिकी लिपि बांचणियां नैं सही भाव कोनी समझा सकै, वा लिपि वैग्यानिक कै आदर्श कींकर हुय सकै।

आं सगळी कठिनाइयां रै सागै इणमें यांत्रिक सुविधावां री सुलभता घणी दौरी है। मुद्रण–व्यवस्था रै अभाव में इणरा लेख आद कींकर जन सुलभ बणैला, आ अेक समस्या है। आं अभावां रै कारण ई मुड़िया कदैई साहित्यिक लिपि कोनी बण सकी। बणियावटी, महाजनी, मुड़िया रै रूप में राजस्थान में इणमें बहिया लिखीज। कैथी नांव सूं इणी रूप में आ उत्तर प्रदेश, बिहार अर गुजरात में जीवती रैयी।

इण भांत अेक वैग्यानिक लिपि रा गुण– 1. अेक ध्वनि वास्तै अेक ई लिपि अेहलांण अर अेक लिपि संकेत सारू अेक ई ध्वनि संकेत 2. उच्चारण रै अनुरूप लेखन, 3. फूटरापौ अर स्पष्टता 4. लिपि नैं बांचण अर लिखण रौ सौरोपण, 5. यांत्रिक अेहलांणां री व्यापकता 6. सामंजस 7. ध्वन्यात्मकता 8. स्वर–व्यंजनां री ठावी व्यवस्था आद रौ इण लिपि में साव अभाव लरवीजै। इण वास्तै आ लिपि संशोधन रै उपरांठ ई साहित्य सिरजण सारू कदैई नहीं बरतीजी। इणरी लिखावट अर आखरां री बनावट रै गुजब आ लिपि व्यावहारिक नहीं कैयी जा सकै। महाजनी अर राजकाज रै गुप्त दस्तावेजां सारू आ लिपि किणी सींव तांईं सफल कैयी जा सकै।

(ग) नागरी अर मुड़िया रौ भेद

नागरी अर मुड़िया दोई भारत री सैं सूं जूनी लिपि ब्राह्मी सूं नीसरी है। पण नागरी रौ विकास समयानुरूप हुवतौ रैयौ अर मुड़िया आपरे बरतीजण वाळा मिनखा रै सीमित दायरै सूं ई बंधी रैयी, जिणसूं इण रौ विकास नहीं हुय सक्यौ। वा सिरफ राजस्थानी राजा–महाराजावां अर बाणियां री बहिया री ई लिपि बण'र रैयगी। आं दोई लिपियां रा खास–खास भेद निम्नलिखित हैं–

1. देवनागरी अेक विकसित लिपि है, जद क मुड़िया थिर लिपि। डॉ. अनन्त चौधरी रै सबदां में ''यह अपने जन्म के साथ ही संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश के अतिरिक्त आधुनिक मराठी तथा हिन्दी जैसी समृद्ध भासाओं की संवाहिका बन गयी। यह भारतीय मनीषा का अपूर्व शोध एवं चिन्तन परम्परा की प्रधान संरक्षिका है। आठवीं–नवीं शताब्दी से लेकर आज तक दक्षिण भारत से उत्तर भारत तक इसका व्यापक प्रचार है, यह इसकी अनुपम जनप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।'' मुड़िया लिपि नैं कुछ विद्वान राजस्थानी री लिपि मानै। पण राजस्थान में इणरौ प्रयोग साहित्य सिरजण में कदैई को रैयौ नहीं। आ हिसाब–किताब सूं जुड़योडी रैयी। राजस्थान रै हाथ–लिखी पोथियां रै संग्रहालयां में सुरक्षित बहियां इणरौ प्रमाण है। महाराष्ट्र में ई महाराज सिवाजी रै समै इणरौ प्रचलन रैयौ पण उठै ई, इणमें लिखीजी कोई साहित्यिक रचना कोनी मिळै। अजै तौ इण रौ सम्बन्ध बहियां सूं ई अळगौ हुयगौ। नुवी पीढ़ी रै वास्तै इणरा आखर अेक अचम्भौ है। इण भांत आ लिपि कदैई जनप्रिय कोनी बण सकी।
2. नागरी कै देवनागरी लिपि आपरै सुपाठ्य, सुबोध हुवण सूं अेक वैग्यानिक अर आदर्श लिपि कैईजी पण मुड़िया ठावी ध्वनि व्यवस्था, काना–मात रै अभाव में सदीव दौरी अर अवैग्यानिक लिपि मानीजी।
3. सबदां री आड़ी–डौढ़ी बणावट अर सिरै रेख रै अभाव में मुड़िया लिपि जठै दौरप सूं

भणीजै उठै वा बिडरूप ई लखावै। उणमें फूटरै पण रौ अभाव है। इण रै विपरीत नागरी सबदां री सुडोलता अर ओपती लिखावट उणनैं जठै जगचावी बणावै, उठै ई ठावी ध्वनि व्यवस्था सूं वैग्यानिकता ई दिरावै।

4. नागरी लिपि में ध्वनि री ई नी वाक्य–विन्यास री ई अेक ठावी व्यवस्था है। अरध–विराम, विराम, प्रश्नवाचक आद भाषिक चिन्हा रै माध्यम सूं उणमें सांतरी अभिव्यक्ति है। किण जगां भणणियां नैं रूकणौ है, किण जगां बल देवणौ है आद री अभिव्यक्ति नागरी लिपि में संभव है। पण मुड़िया लिपि में आं अेहळाणां रै अभाव में बांचणियां नैं अमूझणी महसूस हुवै। वा नीरसता रौ अेहसास करावै।

5. नागरी लिपि में हर ध्वनि वास्तै अेक ठावौ लिपि संकेत हुवण सूं उण में लिखिजियौ है वौ उणीज रूप में बांचीजै। अर जिण रूप में बोलीजै उणीज रूप में लिखिजै। पण मुड़िया में इण भांत री व्यवस्था रौ साव़ अभाव है। इण वास्तै वा मौखिक उच्चारण रै मुजब नीं लिखी जा सकै।

6. मुड़िया में पैला अेक आड़ी रेख मांडीजै तद उण माथै सबद लिखिजै। पण नागरी लिपि में पैला सबद लिखिजै फेर उणा रै माथै सिरै रेख लगाइजै।

7. मुड़िया लिपि में आखर मुड़िया थका हुवै। इणी पांण आ मुड़िया लिपि कैईजी। पण नागरी रै नांव करण बाबत न्यारां–न्यारां विचार है। पण इण बात सूं सब सै'मत है क देव वाणी (संस्क्रत) री लिपि हुवण सूं इण देवनागरी कै नागरी लिपि कैलाई।

इण आखै परिपेख में मुड़िया लिपि रै अस्तित्व नैं किणी भांत कोनी नकार सकां, भलै ई इणरौ प्रयोग साहित्य–सिरजण अर भणाई–लिखाई सारू नहीं हुयौ हुवै। महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, मेहरावगढ़, जोधपुर, राजकीय अभिलेखागार, बीकानेर, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी (जोधपुर), राजस्थान रै ठिकाणावां में अलेखूं बहियां मिळै, जिकी मुड़िया लिपि में ई लिखीजी है। आं माथै शोध जरूरी है। स्व. अगरचंद नाहटा री लिखावट में मुड़िया आखरां री भरमार ही।

इण विरोळ सूं लखावै कै मुड़िया लिपि भारतीय लिपि है, जिणरौ मूल भारतीय लिपि ब्राह्मी है। किणी सींव तांईं इणरै आखरां री बनावट ब्राह्मी रै सरुआती आखरां सूं मेळ खावै। देवनागरी अर मुड़िया रौ मूल अेक हुवता ई दोयां में फरक है। देवनागरी में लगोलग विकास हुवता रैया है पण मुड़िया रै विकास री विगत सिवाजीकाल रै उपरांठ कोनी मिळै। इणी वास्तै आ वैवारिक लिपि नहीं बण सकी अर न ई साहित्य सिरजण रौ माध्यम बण सकी। आ लिपि सिरफ बाणियां अर रजवाड़ां रै बहीखातां तांणी सिमट'र रैय गयी। अठै इण बात रौ उल्लेख करणौ ई सही रैवैला क राजस्थान री बजाय इणरै विकास बाबत ज्यादा कोसिसां महाराष्ट्र में व्ही। इण भांत डॉ. मेनारिया अर लालसजी री आ मानता ई ठावी नीं लखावै के मुड़िया राजस्थानी (मारवाड़ी) री लिपि ही। औ जरूरी नहीं क हर भासा उणी भूभाग में नीपज्योड़ी लिपि में लिखिजै। इणरौ मोटो उदाहरण मराठी है, जिणरी लिपि देवनागरी है। अर राजस्थानी री ई लिपि देवनागरी (नागरी) ई है।

5.4 सार

सार रूप में कैय सका क मुड़िया रौ अस्तित्व भारतीय लिपियां में सरू सूं ई रैयौ, पण इणनैं अेक वैग्यानिक लिपि रै गुणां रै अभाव में साहित्य–सिरजण रै रूप में कदैई महत्ता नहीं मिळ सकी। हां, हिसाब–किताब अर बहियां लिखण में इणरौ अजै ई खासौ महत्व है। इणरै अलावा वैग्यानिकता रौ अभाव जठै मुड़िया लिपि में मोटी विसेसता है, उठै ई आ उणनैं देवनागरी लिपि सूं न्यांरी करै।

5.5 अभ्यास सारू सवाल

1. वैग्यानिक लिपि रौ अरथ समझावतां अेक वैग्यानिक (आदर्श) लिपि री खासियतां नैं उदाहरणां सूं समझावौ।
2. आप इण मत सूं कठै तांई सहमत हौ कै मुड़िया राजस्थानी भासा री लिपि ही? आपरै मत नैं उदाहरणां सूं समझावौ।
3. वैग्यानिक लिपि री विसेसतावां नैं बतावतां हुया सिद्ध करौ कै वै विसेसतावां मुड़िया लिपि में ई है?
4. मुड़िया लिपि री ओळखांण करावौ।
5. नागरी अर मुड़िया लिपि रै फरक रौ खुलासौ करौ।
6. 'कैथी अर मुड़िया लिपि री समानतावां' पर अेक टीप लिखौ।

5.6 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. गौ.ही. ओझा– प्राचीन लिपि माला
2. डॉ. भोलानाथ तिवारी– भाषा–विज्ञान
3. डॉ. मोतीलाल मेनारिया– राजस्थानी भाषा और साहित्य
4. प्रो. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'– हिन्दी भाषा और उसका इतिहास
5. डॉ. कन्हैयालाल शर्मा– हिन्दी भाषा एवं नागरी लिपि का विकास
6. डॉ. कन्हैयालाल शर्मा– पूर्वी राजस्थानी उद्‌भव और विकास

खण्ड – ।।।

इकाई– 6

राजस्थानी भासा री बोलियां–उप बोलियां

इकाई रो मंडाण

6.0 उद्देस्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 राजस्थानी री खास बोलियां : भौगोलिक खेतर अर विसेसतावां

(क) मारवाड़ी (ख) ढूँढाड़ी (ग) हाड़ौती

(घ) मेवाती (ड़) वागड़ी (च) मेवाड़ी

(छ) मालवी (ज) सेखावाटी

6.3 राजस्थानी भासा री विसेसतावां

(क) सामान्य विसेसतावां

(ख) व्याकरणिक विसेसतावां

(अ) ध्वनि मुजब विसेसतावां

(आ) रुपगत विसेसतावां

6.4 इकाई रौ सार

6.5 अभ्यास सारु सवाल

6.6 सहायक पोथियां री पानड़ी

6.0 उद्देस्य

इण इकाई रो उद्देस्य राजस्थानी री बोलियां रै भौगोलिक–खेतर अर उणां री बणराट री जाणकारी सागै ई राजस्थानी भासा री सगळी विसेसातावां री औळखाण करावणौ है । इण विवेचन सूं विद्यार्थियां नै जाणकारी मिलैला क –

1. बोलियां री दीठ सूं राजस्थानी अेक सांवठी भासा है ।
2. राजस्थानी भासा री ध्वनि, रुप–संरचना घणी सांतरी है, जिकी इणरै व्याकरण नै वैग्यानिकता दिरावै ।

6.1 प्रस्तावना

बोलियां रै मेळ सूं भासा बणै। इण दीठ सूं राजस्थानी भासा घणी अमोली अर सांवठी कैईजै। राजस्थानी भासारी मठौठ खातर ई विदेसी विद्वानां री आ चावी रैयी । ग्रियरसन, तैस्सीतोरी, कैलाग जैड़ा विद्वान इणरी बोलियां, साहित्य अर व्याकरण माथै विसद् अध्ययन कर्‌यौ। तद सूं ई आ परम्परा लगौलग आगै बधती रैयी है । राजस्थानी रै भौगोलिक–क्षेत्र री विरोळ पांण डॉ. ग्रियरसन, डॉ. अेल. पी. टैसीटरी, डॉ. सुनीतिकुमार चटरजी, डॉ. भोलाराम तिवारी, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. कन्हैयालाल शर्मा जैड़ा, भासा–वैग्यानिक अर राजस्थानी रा सिरै विद्वान राजस्थानी भासा रौ वर्गीकरण करता थकां उणरी बोलियां गिणाई है । डॉ. कन्हैयालाल शर्मा भारत री 1961 री मरदमशुमारी रपट रै आधार माथै आं री संख्या 73 केवै । आं बोलियां में घणकरा नाम अेक सरीखा है, ज्यांन गूजर, गोजरी, गुज्जरी, लमाणी, लम्बाड़ी आद। इणी भांत केई बोलियां अस्तित्व में ई कोनी । इण भांत मोटै रूप में

विद्वान राजस्थान री खास आठ बोलियां – मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, मेवाड़ी, हाडौती, सेखावाटी, मेवाती मालवी अर वागड़ी रौ ई वरणांव करै। अे बोलियां ई राजस्थानी री उल्लेख जोग बोलियां मानीजी है। आं बोलियां रौ सामान्य परिचय इण भांत है –

8.2 राजस्थानी री खास बोलियां : भौगोलिक–खेतर अर विसेसतावां

(क) मारवाड़ी :

मारवाड़ी राजस्थान रै मारवाड़ क्षेत्र री खास बोली है । इणरौ मानकरुप जोधपुर अर उणरै अैड़ै–नैड़े बोल्यौ जावै। आ बोली मारवाड़ी रौ साचौ उदाहरण मान्यौ जा सकै । आपरी उपबोलियां रै मेळ सागै आ ऊगमणै में अजमेर, किसनगढ़ ताई; दिखणाद में उदयपुर, सिरोही, रानीवाड़ा लग; आथमणै में जैसाणै (जैसलमेर), शाहगढ़ अर उतराद में बीकाणै (बीकानेर), गंगानगर ताई नै जयपुर रै उत्तराद रै पिलाणी लग बोली जावै।

साहित्य री दीठ सूं मारवाड़ी घणी सांवठी बोली है । इणी आधार पांण आ राजस्थानी री मानकबोली बण सकी। काव्य में इणरी डिंगल, सैली बहुत चावी रैयी। संस्क्रत, प्राक्रत, अपभ्रंस, अरबी–फारसी रै सबदां रौ सहज मेळ इणनै ओपती बणावै । इणमें सम्बन्धकारक सारू रा, री, रै, रौ बोलीजै। संयोजक–अव्यय रै रूप में मारवाड़ी में 'नै' (अनै) कै 'अर' बरतीजै। ब अर व री बिचाळी ध्वनि 'व़' अर वैदिक 'ळ' इणरी ओळखांण है। भविस्यतकाल री क्रियावां में धातु सागै हूं, हां, ही प्रत्यय ई जुडै, ज्यांन –

पुरुष	**अेकवचन**	**बहुवचन**
उत्तम पुरुष	देख + हूं = देखहूं	देख + हां = देखहां
मध्यम पुरुष	देख + ही = देखही	देख + हो = देखहो
अन्य पुरुष	देख + ही = देखही	देख + ही = देखही

मारवाड़ी बोली रौ नमूनौ – ''सुभाव तो सगळा ई टाबरां रा न्यारा–न्यारा हुवै पण रणसीगांव रो आसकरण अेक अजब ई ओपरा सुभाव अर ओपरी बणगट रो हो । मतीरा ज्यूं गोळ माथौ। लांबी चोटी । धुगधुगो डील।'' (राजीनांवो – विजयगदान देथा)

(ख) ढूंढाड़ी –

इणरौ नूवौ नांव जयपुरी है । ढूँढाड़ी नांव रौ आधार जयपुर रै आथूणै में बस्योड़ी ठौड़ 'ढूँढ' है। इणरौ मानकरुप जयपुर सहर में बोल्यौ जावै । इणरा पांच स्थानीय रूप ई मिळै – तोरावाटी, काठैड़, चौरासी, नागरचाळ अर राजावाटी। ढूँढाडी रै उत्तर–पूरब में मेवाती, ऊगमणै में ब्रज अर बुंदेली, दिखणांद में मालवी अर उत्तराद आथमणै में मारवाड़ी बोलीजै।

इणमें वर्तमानकाल वास्तै छै, भूतकाल सारू छी अर भविष्यतकाल वास्तै स्यूं, स्या, ला, ली, क्रिया रौ प्रयोग मिळै। सम्बन्धकारक वास्तै का, की, कै बरतीजै। अधिकरण परसर्ग 'में' रै अलावा ऊपर, माळै रौ ई प्रचलन है। संत कवि दादू अर वांणी सिस्य–परम्परा रा कवियां रौ साहित्य ढूँढाड़ी में ई लिखिजियौ है।

बोली रो नमूनौ – ''फाल्यावास नामै गांव छै जैंठै सरस्वति नदी छै, ऊंठै आय कागद लिख्यौ, थांनै बदोबस्त करणो होय सो कीज्यो, धरती लेस्यौ। और दो जणां राज का चाकर सींध्या का साथ मैं छा सो फितूरी छा।'' (कृष्णदत्त कृत प्रतापप्रकास)

(ग) हाड़ौती –

कोटा, बूंदी, झालावाड़ री बोली हाड़ौती नांव सूं ओळखीजै। उच्चारण सैली री दीठ सूं आ

ढूँढाड़ी रै घणी नैड़ै लखीजै। इण समानता रै कारण कोई विद्वान इणनै ढूँढ़ाड़ी में ई सामिल करै पण भौगोलिक आधार माथै दोया में घणौ आंतरौ मिळै। डॉ. कन्हैयालाल शर्मा इणरै भौगोलिक–क्षेत्र नैं बतळावता थका लिखै ''हाड़ौती वर्तमान कोटा, बूंदी जिलों तथा झालावाड़ जिले के उत्तरी भाग की प्रमुख बोली है। कोटा जिले की शाहबाद व किशनगंज तहसीलों के पूर्वी भाग के निवासी हाड़ौती भाषी नहीं है और बूंदी जिले की इन्द्रगढ़ और नैंनवा तहसीलों के उत्तरी भाग भी इस बोली के क्षेत्र के बाहर हैं।''

हाड़ौती में लोक साहित्य री इधकाई मिळै जिणरी साख डॉ. कन्हैयालाल शर्मा री पोथी 'हाड़ौती का लोक साहित्य' है। इणरै सबद–रुपां में दो अविकारी अर दो विकारी रूप मिळै। विकारी रूपां रै सागै न्यारा–न्यारा परसरगां रै जोग सूं वै कारकीय संबन्धां नैं प्रगटै। अविकारी अेकवचन र रौ प्रत्यय शून्य (0) है अर बहुवचन रौ 'आ' जिणसूं 'छोरौ' अर 'छोरा' रूप बणै। स्त्रीलिंग रै बहुवचनां रै वास्तै आ प्रत्यय रौ प्रयोग होवै जिकौ सबद रै छैलै स्वर रै मात्रा भेद सूं 'यां' के 'वां' रूप में बदळीत जावै – मालण्यां, चारण्यां, छोर्‌यां आद ।

बोली रो नमूनौ – ''पलंग पर पड़्यो छोरो रोबा लाग्यो छो। अजरा आपणो दुपट्‌टो संभालती हुई घर के भीतर भागती। आंगणा को तावड़ो भी भरग्यो छो। सूरज फेर बादलां के पाछै चल्यो गियो छो।'' (जागतीजोत, जनवरी 2007, पृ. 28)

(घ) मेवाती –

आ उत्तर पूरबी राजस्थान री बोली है । मेवाती अलवर, भरतपुर रै उत्तराद–दिखणांद अर हरियाण रै गुड़गांव रै दिखणी भाग में बोलीजै । अेक कांनी इण माथै ब्रज अर खड़ीबोली रौ प्रभाव लखीजै तौ दूजी कांनी आ ढूँढाड़ी सूं प्रभावित लागै। इणरी खास–खास उपबोलियां है– राठीमेवाती, नहेड़ामेवाती, कठेरमेवाती, अहीरवाटी।

चरणदासी सम्प्रदाय रौ साहित्य मेवाती बोली री अमोली–सम्पदा है । मेवात री कैवतां ई आपरौ महत्व राखै। इणमें महाप्राण ध्वनियां नैं अल्पप्राण करणै री तथा मुख–सुख सारू लोप और बलाघात प्रव्रति बोहळता सागै मिळै। आकारान्त सबदां में अेकवचन सूं बहुवचन बणावती दांण अनुस्वार 'क' 'न' रौ प्रयोग हुवै –

गलियारा > गलियारां, गलियारान

चेला > चेला, चेलान।

मेवाती में सम्बन्धकारक सारु का, की, के अर अपादान कारक वास्तै तैं परसर्ग बरतीजै –

(अ) बिरामण का लड़का दो कासी करोत पढबा चला गया ।

(आ) उनमें तैं छोटा नैं अपणा बाप तैं कहीं बाबा धन में तैं बटको आवै सो मूनै बांट दे।

(ङ) व़ागड़ी

डूँगरपुर अर बांसवाड़ा रौ मिल्यौ–जुल्यौ क्षेत्र व़ागड़ नांव सूं जाणीजै। इण क्षेत्र री भासा नैं व़ागड़ी कैवै। आ मेवाड़ रै दिखणांद अर सूंथ रै उत्तराद में ई बोलीजै। डॉ. ग्रियरसन, डॉ. दिनेश आद विद्वान इण नैं 'भीली' कैवै । असल में इण भौम माथै रैवण वाळा भीलां री बोली ई भीली है। भीली अर व़ागड़ी में फगत उच्चारण रौ ई फरक है। व़ागड़ी में च, छ रौ उच्चारण 'स' अर 'स़' रौ उच्चारण 'ह' होवै। संबन्धकारक रा अैहलांण ना, नी, नो बरतीजै। अेकवचन सूं बहुवचन बणावण सारु इणमें किणी विभक्ति–अैहलाण रौ प्रयोग नहीं हुवै। फगत सबदों रै संजोग सूं ई वचन रौ निरधाण कर्‌यौ जा सकै। लोक–साहित्य री इणमें इधकाई है जिकौ भासा–विग्यान री दीठ सूं घणौ महताऊ कैयौ जा सकै।

बोली रौ नमूनौ – ''ऍणनै मोटे भागे सभ्यता नी गणतरी मए लई शकाय है जेनूं के मने आजनी फेशन ना परमणो संस्कृति ने बजाय सभ्यता ने संस्कृति नो शेरौ (मुखोटो) पेरावी नै, अणगमतेस, वर्ण करवुं पड़ी र्‌यू है।'' (बागड़ नी संस्कृति, पृ. 51)

(च) मेवाड़ी

मेवाड़ भौम रै दिखणी–ऊगमणी भाग नैं छोड़ 'र सगळै मेवाड़ अर उणरै सीमाड़ै रै प्रदेसां रा कुछेक भागां (नीमच–मध्यप्रदेस) में मेवाड़ी बोली जावै । इणरौ असली रूप मेवाड़ रै गांवां में सुण्यौ जा सकै, जठै आ आपरै मानकरूप में बोलीजै। सहरां में इण माथै हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी रौ रंग चढ़तौ जाय रैयौ है।'

मेवाड़ी री अेक लांबी साहित्यिक परम्परा रैयी है। महाराणा कुंभा रा लिख्योड़ा च्यार नाटकां में बरतीजी मेवाड़ी नैं राजस्थानी री बोलियां में साहित्यिक निरमाण रौ पैलो अेतियासिक उल्लेख कैयीजै। मेवाड़ी रा उल्लेख जोग कवि–लिखारा है – हेमरतन सूरि, किसना आढा, महाराज चतुरसिंह, नाथूसिंह महियारिया, रामसिंह सौळंकी, राणी लक्ष्मीकुमारी जी चुण्डावत आद।

मेवाड़ी में इ–कार अर उ–कार री ठौड़, अ–कार री प्रव्रति मिळै – हाजर, मनख, मालम, वराजौ आद। इणमें भूतकालिक सहायक क्रियावां सारू था, थी, हो अर भविस्यतकालिक क्रियावां वास्तै गा, गी, गो रौ प्रयोग मिळै। साहित में प्रसंग मुजब ला, ली, लो भविस्यतकालिक क्रियावां ई बरतीजै। इणी भांत सम्बन्धकारक परसरगां रै रुप में का, की, के रै सागै ई रा, री, रै, रौ, ई प्रचलन है।

बोली रौ नमूनौ – पोह रो मींनो। ईंया ही ठंड घणी अर आज रा ओळा मेह सूं तो चोगणी व्हैगी। वासदी सुलगाय तावै। टाबर मावों ने नीं छोड़ै। डोकरा डोकरी बैठ्या ''राम राम'' करता, इन्दर सूं कोप कम करणै री अरदास करै । (मांझळ रात, पृ. 88)

(छ) मालवी

उज्जैन रै आखती–पाखती रौ इलाकौ मालवा नांव सूं ओळखीजै। इण क्षेत्र री बोली मालवी है। इणरै आथमणै में परताबगढ़ (राजस्थान), रतलाम (मध्य–प्रदेस), दिक्खण–पिच्छम में इन्दौर, उत्तर–पिच्छम में नीमच नै उतराद में ग्वालियर रौ थोड़ौ'क हिस्सौ सामिल है। व्याकरण री दीठ सूं आ मारवाड़ी, ढूँढाड़ी, हाड़ौती, मेवाड़ी सूं मिळै। इणरै सबद–भण्डार माथै बुंदेली, गुजराती, मराठी रौ घणौ प्रभाव लखीजै। इणरै सीमाड़ै री अनेकूं उप–बोलियां है – निमाड़ी, उमढवाड़ी, रतलामी, सोंधवाड़ी आद ।

मालवी में इ, ड, अ ध्वनियां आपस में बदळलीजती रैवै। बीचाळै अर छैलै में आवणवाळै 'ड' रौ उच्चारण 'ड' होवै – लड़की > लड़की, घोड़ौ > घोडौ । इणमें 'घ' री ठौड़'य कै 'व' ध्वनि मिळै कै उणां रौ लोप व्है जावै – मोहन > मोयन, लुहार > लुवार, महीना > मईना । इणमें करमकारक अर सम्प्रदानकारक में परसरगां रौ प्रयोग होवै – छोटा लड़काए वणी का पिता नैं कह्यौ । मालवी रौ लोक साहित घणोई लूंठौ है।

(ज) सेखावाटी

राजस्थान प्रदेस रै पूरवोत्तर री भौम माथै सेखावाटी रै राजसूं औ क्षेत्र सेखावाटी नांव सूं ओळखीजै अर अटां री बोली सेखावाटी कैईजी। असल में इणनै मारवाड़ी री उपबोली मानणौ ठीक रैवैला । बोली रूप में पिलाणी, सूरजगढ़ सूं, लेय'र दिखणांद में उदयपुरवाटी तहसील अर सीकर ताई तथा आथमणै में फतेहपुर सूं लेय'र ऊगमणै में खेतड़ी, सिंघाणा ताईं बोलीजण वाळी भासा शेखावाटी है। उच्चारण दी दीठ सूं इणनैं बांगरू रै नैड़ै कैयी जा सकै। इणमें दो लिंग,

दो वचन बरतीजै। भविस्यतकालिक क्रिया सारू सा, सी रौ अर संबन्ध–कारकां रै वास्तै का, की, के परसरगां रौ प्रयोग हुवै।

बोली रो नमूनौ – मेरा बाप का नौकर–चाकरां नै रोटी घणी अर 'मैं भूका मरूं'। मैं उठस्यूं अर मेरे बाप कै कनै जास्यूं अर बै नै केस्यूं बाप, मैं रामजी को पाप कर्‌यो अर मैं तेरो बेटो कुहवावण जोगो कोनी । तेरे नौकरां में अेक मन्ने बी राख ले । (राजस्थान का भाषा सर्वेक्षण, पृ. 129)

6.3 राजस्थानी भासा री विसेसतावां

(क) सामन्य विसेसतावां

(i) राजस्थानी घणी मीठी, मोवणी भासा है। इण मिठास नैं औजू बधावै इणरी ऊनवाचक प्रव्रति। नींदाळू, गोरड़ी, लाडकड़ी, सुवटौ, काळकी जैड़ा सबद, संबोधन में मतैई रस घौले। अेक आकरसण अर अपणायत रौ अनुभव करावै। आपरी अभिव्यक्ति नैं बेसी मधुर बनावण सारू कविसर सबदां सागै अ, ज, ह आद वरणां नैं जोड़ देवै – रण (आरण), अंबर (अंबहर), जतन (सरजतन), रजपूती (रजपूतीह) आद ।

(ii) उतपत री दीठ सूं राजस्थानी रौ जुड़ाव वैदिक संस्क्रत परम्परा सूं है, फेरू ई आप रै मौलिक सबदारथां री इणमें कमी को लखावै । राजस्थानी री नाममालावां – (सबदकोश) में संकळित सबद इणरी साख भरै। वरहिस (= इन्दर), दलम (इन्दर), गिरी–आरक (= सुमेरू परबत), तविख (तविष = गिरीआरक) (= सुमेरू परबत) तविख (तविष = स्वर्ग), आरक (= सोनौ) जैड़ा सबद–प्रयोग सूं राजस्थानी वैदिक संस्क्रत सूं जुड़ै उठै ई आभौ (= आकास), मिठास = गोळ कै खाण्ड, सैण (= भलचाहू = शुभ चिंतक), इधकार (= आदर), सरधा (= शरीर री सामरथ कै खिमता), सांपरतेक, लोकाचार (= दाहसंस्कार) जैड़ा सबदां री उतपत संस्कृत सूं होवता ई वाणां लोक–प्रचलित अरथ संस्क्रत सूं जुदा है । आ राजस्थानी री भासिक मौलिकता है।

(iii) राजस्थानी री सोभन सबद–परम्परा ई इणरी मौलिक सांस्कृतिक अरथावू दीठ रा दरसाव करावै । समाज में भूंडा अरथ देवणवाळा, अपसकुनी अरथ देवण वाळा सबदों नैं मंगळीक अरथां में बरतीजणौ ई शोभन–सबदावली रौ उद्‌देस्य हुवै। राजस्थानी भासा में अैड़ा सांतरा सबद–प्रयोग है – दुकान बढाणौ (दुकान बन्द करण वास्तै) दीवौ नन्दाणौ के दीवौ बढावौ (दीवौ बुझावण सारू), मिरत्यु वास्तै – रामसरण होणौ, धाम पधारणौ, सीधारणौ, नारेळ बदारौ (नारेळ नैं तोड़वा वास्तै), रामरस (= लूण), कीड़ौ (= सांप), रात को राजा (उल्लू), हाथ–मूडा धोणौ (= सोचादि सूं निपटणौ) आद।

(iv) इण भांत राजस्थानी रौ सबद–भण्डार व्यापक अर लूंठौ है । अेक सबद सारु अनेक पर्याय सबदां री मालदारी प्रमाणित करै । राजस्थानी भासा री सामान्य सबदावली सागै उणरी अनुरणात्मक अर प्रतिध्वन्यात्मक सबद–संरचना ई उणरै सम्पन्नपणा रौ डंकौ बजावै –

(अ) सामान्य सबद –

बंधाण, मंडाण, कमठांण, झूंठाणी, पंगातियौ, समझाइस, भाइपौ, सैणापौ, धणियाप, मिळाप, भोळप, भेळप, जोड़ायत, खोळायत, सूंवाळौ, नातायती, मूंछाळौ, पसराव, खटाव, निभाव, खरावण, सिरावण, पीळास, रमोकड़, रमझोळ, जोरावरी, मंगळीक, पूजनीक, अडीलौ, कथावू, नानेरौ, हुंकारौ, छळगारौ, कामणगारौ, बणत, दातारपणौ, पाटवी, भागफूटौ, अजेज, अणछक, अस्टपौर, कावळ, सांवळ,

निबळौ, लाखीणौ, सुरंगौ आद ।

(आ) प्रतिध्वन्यात्मक सबद –

काग–साग, खेजड़ी–सेजड़ी, गाड़ी–वाड़ी, घोड़ा–फोड़ा, चारौ–सारौ, छाक–फाक, डाक–साक, ऊंट–सूंट, पाळ–फाळ, उजाड़–फुजाड़, ओछौ–ऊंछौ, कटुम–कबीलौ, ऊगै–आंथवै, उठता–बैठता, जोगी–जती, साज–सिंगार, माछर–वाछर, टाबर–टोळी, आळै–दीवाळै, भण्या–गुण्या आदि ।

(इ) अनुरणात्मक सबद –

कड़कच, कठकठ, खड़खच, खणखण, घड़घच, कणमणइ, झब–झब, सळसळइ, छमछम, हळठळ, भड़भच, खळळ–खळळ, कळ–कळ, कळळ–कळळ, कचड़क्क, तगग–तगग, कळहळिया, हळहळ, चटक्कड़ा, लबथबती, घमघमंतई, झब्बकइ, टबूकई आद।

(v) राजस्थानी में जिनावरां री बोली, उणा री विस्टा, बचिया, रितुमति, हुवण सारू ई न्यारा–न्यारा सबद मिळै । आ सबदावली ई राजस्थानी सबद–संपदा री मालदारी थरपै–

जिनावरां री बोली सारू सबदाळी –

गाय	–	तंबाड़ै	भैंस	–	रिड़कै
ऊंट	–	अरडावै	घोड़ी	–	हींसै
सांढ	–	झेरावै	गधौ	–	भूंकै
कुत्तौ	–	भुसै	कोयल	–	टहूकै
काग	–	करूकै	मुरगौ	–	कुरळावै
चिड़ी	–	चहुकै	मोर	–	बौलै

जिनावरां री विष्टा सारू सबद –

गाय	–	पोठौ	भैंस	–	थेच
ऊंट	–	मींगणौ	घोड़ौ	–	लीध
बकरी	–	मींगणी	पंखेरु	–	बींट

जिनावरां रै बचिया सारू सबद –

गाय	–	टोगड़ियौ, केरड़ौ घुनियौ	भैंस	–	पाडियौ
घोडी	–	बछैरौ	सांढ	–	कुरियौ
बकरी	–	बचियो	कुत्ती	–	कुकरियौ

रितुमति हुवण सारु सबद –

घोड़ो	–	जगरै	सांढ	–	रवै, पणाव
गाय	–	धीणै मिळणौ	भैंस	–	पाळैठीक
कुत्ती	–	काती आयोड़ी			

(ख) व्याकरणिक विसेसतावां

(अ) ध्वनि मुजब विसेसतावां

1. राजस्थानी वरणमाला में 12 स्वर ध्वनियां अर 38 व्यंजन ध्वनियाँ कुल 50 वरण है। आं रै अलावा (ं) अर विसर्ग (ः) रौ ई बरताव हुवै –

स्वर ध्वनियाँ – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, अे, अै, ओ, औ

व्यंजन–ध्वनियाँ – क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण ।
त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल ळ व व़ श ष स
स़ ह । ड़ ढ़ ।

अ, इ, उ स्वर ध्वनियां ह्रस्व स्वर अर ई, ऊ, अे, अै, ओ, औ, स्वर ध्वनियाँ दीर्घ स्वर कैलावै। ध्वनि सास्त्र री दीठ सूं आं रै उच्चारण री निजू विसेसतावां हैं।

ह्रस्व–दीर्घ स्वरां रै व्यंजन–ध्वनियां रै सागै मेळ सूं उणां रौ रूप बदळ जावै। इण बदळियें रूप नैं मात्रा कैवै, जिकी इण भांत है – ा ि ी ु ू े ै ।

ऋ, क्ष, त्र, ज्ञ वरणा रौ राजस्थानी में सुतंतर रूप सूं बरताव नहीं हुवै । ऋ नैं रि, क्ष नै ख या छ, त्र नैं त्र अर ज्ञ नैं ग्य या न रूप में लिखण री परम्परा है, ज्यांन – ऋषि > रिखि, पृथ्वी > प्रथवी, प्रिथवी, क्षेत्र > खेत, खेतर, छैतर, कक्षा > कच्छा, त्रिगुण > त्रिगुण, तृप्त तिरपत, ज्ञान > ग्यान, नांण।

मात्रावां रै संजोग सूं व्यंजन रा नुवा रूप बारखड़ी कैलावै, ज्यांन – क का कि की कु कू के कै को कौ (कं कः कृ)।

2. ड़ ढ़ ण ळ व़ स़ व्यंजन–ध्वनियां राजस्थानी भासा री भासिक ओळखांण थरपण वाळी विशिष्ट ध्वनियां हैं । 'ड़' व्यंजन ध्वनि संग्यावां अर क्रियावां में ऊनवाची (स्वार्थिक) प्रत्यय रूप में ई बरतीजै ज्यांन – लाडकड़ी। 'ळ' री जागां ल बोळण सूं अरथ ई बदळ जावै, ज्यांन –

गाल = कपोल (गाल), गाळ = गाली (भूंडा सबद)
गोल = वृत्त (गोलाकार), गोळ = गुड़
डालौ = म्होटी छाबड़ी डाळौ = रूंख री म्होटी शाख

'व़' ध्वनि व अर ब (भ) रै बीच री ध्वनि है जिकी अंग्रेजी रै (व्ही) दाईं बोलीजै –

	वार = दिन/आक्रमण (वेढ़)	व़ार = मदद सारू
	वात = हवा	व़ात = बात (का'णी)
ढ़ –	डाढी = डोड (1½)	ढ़ेढ = अेक जात
स़ –	सेर = सिंघ	स़ेर = माप (अेक सेर)
	सामी = सामोसाम	स़ामी = साधू
ड़ –	मोडौ = साधु	मोड़ौ = देर (विलम्ब)
	नाडौ = नालौ	नाड़ौ = बंधण (पजामा रौ)

3. राजस्थानी में य अर ज दोन्यूं ध्वनियां रौ प्रयोग मिळै । पण अठै 'य' री ठौड़ ज वणै, ज्यांन –

यशोदा = जसोदा यश = जस

युद्ध = जुद्ध   यमुना = जमुना

पण आखिर कै बीच, बीचाळौ 'ज' य में बदळीज जावै –

सज्जन = सयण   तनुज = तनय

4. घणाई सबदां में प ध्वनि व में अर व ध्वनि म में ध्वनि में बदळीज जावै –

गोपाल = गवाळ   नुपुर = नेवर

कपाट = किंवाड़   दीपक = दीवौ

विवाह = वीमाह   आसिवर = असमर

याद = जादम   हयवर = हेमरा

5. राजस्थानी में श, ष, स व्यंजन ध्वनियां रौ सदीव सूं प्रचलन रैयौ पण लिखबा में लोगां रौ 'स' कानी इज बत्थौ आग्रह रैयौ ।

6. प, व, म, य, न आद व्यंजन बोलती दांण (उच्चारण में) स्वर रै नैड़ै होवण सूं स्वर में बदळ'र आपरै पैला वाळा व्यंजन में मिळ जावै। इण भांत रा परिवरतन कदैस इत्ता विसम व्है जावैक नुई ध्वनि मूल ध्वनि सूं अेकदम बदळ'र न्यारी दीखबा लागै –

पुत्र > पुत्त > उत्त > वत

शत > सअ > सव > सउ > सौ

नयन > नइन > नैन > नैण

7. राजस्थानी में मुख–सुख री प्रव्रति बोहळता सागै लखीजै। खासतौर सूं संजुक्त वरणां में स्वर भगती अर विपरजय रूपां में आ प्रव्रति घणी ऊजळी है –

जागृति > जागरति   प्रभा > परभा

शमसान > मसाण   शिवजी > स्योजी

श्रीनाथ/शिवनाथ > सीनाथ   वर्ण > वरण

8. मुख–सुख (सुखोच्चारण) सारू ई राजस्थानी में पाद पूरति वास्तै किणी स्वर, ह, र, स, ज, रौ बरताव होवै –

रण > आरण   अंबर > अंबहर

रजपूती > रजपूतीह   जतन > सरजतन

9. 'र' रौ (ॅ) रेफ पूरै 'र' रै रूप में लिखीजै कै स्थानान्तरित होय'र आखर रै नीचै लिखीजै, ज्यांन – चतुरदास, धरम, दुरग, द्रग ।

10. राजस्थानी में वा सगळा दो आखर वाळा सबदां में, जिणमें पैलौ आखर अनुनासिक होवै तद अनुनासिक रै पैला वाळा आखर माथै अनुस्वार (ं) रौं प्रयोग हौवै। क्रियावां रै प्रसंग में औ नेम धातुवां माथै लागू होवै –

आम्र > आंम   काम > कांम

जाण > जांणणौ   माण > मांणणौ

(आ) रूपगत विसेसतावां –

किसी भासा रौ रूपगत अध्ययन उणरै स्थायित्व री ओळखांण हुवै। भासा रौ ध्वनिपरक

अध्ययन तौ काल सापेक्ष व्है सकै पण भासा रै लिखित रूप रै आधार माथै उणरौ रूपगत अध्ययन कदैई कर्‌यौ जा सकै। इण थरपणा मुजब राजस्थानी री खास–खास रूपगत विसेसतावां नीचै लिख्योड़ी होय सकै –

1. राजस्थानी में घणकरी पुल्लिंग संग्यावां अैड़ी हैं जिका रा स्त्रीलिंग रूप नीं लाधै। इणीज भांत घणकरी स्त्रीलिंग संग्यावां रा ई पुल्लिंग रूप नी मिळै –

पुल्लिंग – चित्राम, घी, पींजरौ, कुंजौ, भाटौ, साबू, दांत ।

स्त्रीलिंग – दाझ, जाजम मूंण, काया, गिलास, आँख, सतरंज।

2. अठै अलेखूं संग्यावां अैड़ी ई मिळै जिकी रूपभेद रै बिना पुल्लिंग–स्त्रीलिंग दोन्यूं में मिळै –

तेवड़, निसास, सिकार, घात, काळस, पूंछ, ओखद, बगत, कांकड़, आळजंजाळ, चैन आद।

3. राजस्थानी में दो वचन होवै – अेकवचन अर बहुवचन। अकारान्त पुल्लिंग अर स्त्रीलिंग सबदां रा बहुवचन अेकवचन सबद रै छैलै स्वर नैं आं करण सूं बणै –

पुल्लिंग –	नर > नरां	खेत > खेतां
	कायर > कायरां	भड़ > भड़ां
	मिनख > मानखां	बाळद > बाळदां
स्त्रीलिंग –	रात > रातां	चील > चीलां
	आंख > आंख्या	खापण > खापणां

4. मारवाड़ी रै असर सूं 'वां' प्रत्यय रौ ई प्रयोग बहुवचन बणावण सारू होवै –

रचनावां, लेखकावां, कृतिवां, नरावां

5. समूहवाची संग्यावां पैला सूं ई बहुवचन में होवण सूं सबद रूप री दीठ सूं बहुवचन नी होणो –

पंखेरू, जीमणियार, कटक, कमठांण।

6. कुछ संग्यावां सदीव अेकवचन में ई बरतीजै –

भाइपौ, नणदळ, काया, ओखद ।

7. औ–कारान्त पुल्लिंग सबद बहुवचन में आ–कारान्त अथवा आं–कारान्त होय जावै–

घौड़ौ > घोडा/घोड़ां	भालौ > भाला/भालां
पोतौ > पोता/पोतां	दूहौ > दूहा/दूहां

8. राजस्थानी में सरवनांम छह तरिया रा हुवै – पुरुषवाचक, निजवाचक, सम्बन्धवाचक, निजवाचक, सम्बन्धवाचक, निस्चैवाचक, अनिस्चैवाचक अर प्रश्नवाचक।

9. पुरुषवाचक सरवनांमा रा तीन भेद हुवै। आं रा वाचक अैहलांण इण भांत है –

(क) उत्तमपुरुष सरवनांम – म्हें, म्हँ, अम्ह, म्हं, मुझ, मूं, मैं, अम्हीणौ, म्हां, अम्हा, म्हाणैं, आपां, आपणौं।

(ख) मध्यमपुरुष सरवनांम – तू, तैं, थू, थैं, तई, तुझ, थनै, थारौ, थारा, थांकौ, थानैं, थें, थांकै।

(ग) अन्यपुरुष सरवनांम – औ, वौ, आ, वा, या, यो, बींकै, बीनै, विणरा, उणनै, उणरौ, इणारौ, वारौ, वाणै ।

10. निजवाचक सरवनांम रा खास बरतीजण वाळा सबद रूप है –

आप, आपै, आपौआप, सुतै, मतै, खुद, खुदौखुद, सांप्रत, आपरौ, आपां, रावळौ –

(क) रांणी रै मे'ल सूं सांप्रत देखतां नवलखौ हार उचकाय लेजै ।

(ख) म्हैं म्हारै सुतै औ इणरै सुतै

(ग) अबै थैं सगळा आपौआप रै घरै जावौ।

(घ) आपां तौ आ'र खराब हुआ। बालकां रै आपस री व़ातां चलती आवै है।

11. राजस्थानी रै संबन्धवाचक सरवनांम री रूपावली है – जको, जिण। आं रा बहुवचन रूपहै – जका, जकां अर स्त्रीलिंग अेकवचन रूप है – जिकी। आं रूपां रै अलावा जिण, जिणां, ज्यां, सो, तिण रूपां रौ ई बरताव मिळै । दूजौ बीजौ रूप ई नरी बार संबन्धवाचक सरवनांव सारू बरतीजै –

खुद रै मन री खुद नैं ई जांच पड़ै तौ दूजै नैं पड़ण रौ तौ मारग ई कठै।

12. राजस्थानी में निकटवरती निस्चैवाची सरवनांम यो, औ, ये, अै, आ, या, यां, इण, अर दूरवरती निस्चैवाचक सरवनांम रा अेहलांण ऊ, वौ, उण, वै, वा, वेरै है।

13. अनिस्चैवाची सरवनांम सारू कोई, केई, कीं, निरी, अेकजणौ आद सैनाण वापरीजै। पण कोई अर केई रै सागै कौ, सौ, नै, का, सा री आसत्ति सूं कोई सौ, कोई सा रूप ई मिळै –

(क) म्हनैं आज मेळै में आपां रै गांव रौ कोई कौ आदमी इज निगै आयौ ।

(ख) इतरा वाक्य म्हैं देख लीना हूं। वां माय केई का गळत है अर केई का सही है।

14. कुण, किण, कैणौ, कांई राजस्थानी रा प्रश्नवाचक सरवनांव कैईजै।

15. राजस्थानी में च्यार तरिया रा विसेसण मिळै –

(1) गुणवाचक (2) संख्यावाचक (3) परिमाणवाचक अर (4) सार्वनामिक राजस्थानी रै विसेसणां कारक रौ प्रयोग विसेस्य मुजब होवै। स्त्रीलिंग सूचक विसेसण प्रायः इकारान्त इज होवै, ज्यांन – मीठकी, खारकी, काळकी, कांणची, काळची, पीळची।

16. राजस्थानी रै गुणवाचक विसेसणां में तुलनात्मक दीठ ई लखीजै। तुलना मुजब वाचकसबद है – बिचै, सूं, उगणीस/बीस, सैंसूं, सबसूं, घणा सूं, सगळा सूं आद। दाखलां – (अ) औ दोन्यूं भाया बीच मोटो है, (आ) उणियारै में मोहन सूं राम उगणीस है। (इ) आपां घणां सूं चौखा हा, (ई) भणाई में माधौ सैं सूं हुसियार है।

17. राजस्थानी में अकरमक क्रियावां सूं सकरमक क्रियावां बणावण सारू आव, आड़, आण आद प्रत्यय बरतीजै –

उठणौ उठावणौ	मिळणौ मिळावणौ
बैठणौ बैठावणौ	खाणौ खवावणौ
नाचणौ नचाड़णौ	थाकणौ थकाड़णौ
रुसणौ रुसावणौ	चुभणौ चुभाणौ

18. पूरवकालिक क्रिया रुपां सारु राजस्थानी में कर, कै, र, यौ, ने प्रत्ययां रौ प्रयोग होवै, ज्यांन – पीकर, जाकै, खा'र खायायौ, जायने आद।

19. वर्तमानकालिक सहायक क्रिया सारू राजस्थानी में छै, है, सै बरतीजै। भूतकालिक क्रिया रा क्रन्दतीय रूप गयौड़ौ, धाप्योड़ौ, भणियोड़ौ आद राजस्थानी रा उल्लेख जोग प्रयोग है।

20. राजस्थानी में भविस्यतकालिक क्रियावां में विविधता है। मेवाड़ में गा, गी, ग, गो रै सागैई ला, ली, लो, ई बरतीजै। बीकानेर कांनी सा, सी, स्यूं रौ बरताव मिळै। इण भांत राजस्थानी में भविस्तकालिक क्रियावां रै रूप में ला, ली, ले, लौ, गा, गी, गौ, सा, सी, स्यूं रौ प्रयोग होवै।

21. राजस्थानी में संस्क्रत सूं हिन्दी में विगसित हुयौड़ा अव्ययां रौ इज बरताव मिळै। आं रूपां नै म्हां राजस्थानी रूपान्तर कैय सकां – अबार, अजै, कद, काल, झटपट, अगाड़ी, अठै, उठै, कठै, कठी, पछवाड़ै, बारै, नीचै, हेटै, बीचै, बीचाळै बोत, अस्यौ, अर, पण, कै, तद, नैड़ै, सरीखौ, चोखौ, होळै–होळै, धीरै–धीरै, मधरै–मधरै ओहौ, हूं, इब आद।

22. भासा–प्रयोग में कारक घणा महताऊ कैईजै। अै भासा रा संबन्धतत्त्व हुवै। कारक–अैहलांण, ज्यांनै व्याकरण में विभक्तिचिन्ह अर परसर्ग ई कैवै, सूं भासा में अरथ रौ खुलासौ हुवै। इण भांत कारक भासा में कर्ता अर क्रियावां रै संबन्ध नै स्पष्ट करै। राजस्थानी में ई अै आठ है – करता, करम, करण, सम्प्रदान, अपादान, संबन्ध, अधिकरण अर संबोधन। आं री विभक्ति अर अेहलांण इण भांत है –

कारक	**विभक्तियां (परसर्ग)**	**अेहलांण (विभक्ति चिन्ह)**
करता	पैली विभक्ति	0 (शून्य)
करम	दूजी विभक्ति	नैं, नूं, नां, को, कूं
करण	तीजी विभक्ति	सूं, ऊँती, ती, सेती, हूंत, हूंता सां, सै, करि।
संप्रदान	चौथी विभक्ति	बैंई, बैई, लिये, प्रति, वास्तै, सारू, आंटा, आंटै, मांटै, कारण, तांई।
अपादान	पांचमी विभक्ति	तीजी विभक्ति दांई, ते
संबन्ध	छठी विभक्ति	रा, री, रै, रौ, का, की, के, कौ, चो, च, चौ, ची, तणौ, तणी, तण, हंदै, हंदी।
अधिकरण	सातमी विभक्ति	मैं, में, मांय, परै, पै, माथै, ऊपरै, तांई, तक, खनै, माळै, पागती, पास, पासै, पसवाड़ै, पासड़ै।
संबोधन	आठमी विभक्ति	हे, हो, अरे, ओ, रे ।

6.4 इकाई रौ सार –

इण भांत राजस्थानी अेक सांवठी भासा है। इणरी भासिक सामरथ रै कारण ई विदेसी विद्वान इणरै अध्ययन सारू ढूकिया। विदेसी अर देसी विद्वान इणरै भौगोलिक–खेतर री दीठ सूं इणरी बोलियां रौ वरगणीकरण कर्‌यौ। आं बोलियां में महताऊ मारवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, मेवाती, वागड़ी, भीली, सेखावटी, मेरवाड़ी आद है।

जुदा–जुदा भूभागां में बोळीजण वाळी आं बोलियां रौ मानक रूप ई राजस्थानी है। इणरी घणी लूंठी व्याकरणिक परम्परा अर सबद–सामरथ रै पांण राजस्थानी री घणी ई विसेसतावां साकार हुवै। राजस्थानी–सबदावली सूं लखावै क इणरौ वैदिक–संस्क्रत सूं घणै नैड़ै रौ सम्बन्ध हौ। राजस्थानी रै शोभन–सबदां अर संस्क्रत सूं नीपज्योड़ै सबदां रा लोक प्रचलित अरथां सूं राजस्थानी आपरी मौलिकता अर सांस्क्रतिक अरथावूं प्रक्रति रौ ई परिचै देवौ। सामान्य सबदां री बणगट रै सागै ई राजस्थानी रा प्रतिध्वन्यात्मक सबद अर अनुरणात्मक सबद इणरी भासा वैग्यानिक खिमता रौ खुलासौ करै।

व्याकरण री दीठ सूं राजस्थानी भासा री विसेसतावां नैं म्हां ध्वनिगत अर रुपगत सीर्सकां में समझ सकां। प्रचलित स्वर–व्यंजन ध्वनियां रै अलावा राजस्थानी री विसेस ध्वनियां ड़, ढ़, ण, ळ, व़, स़ है। श, ष, स तीन्यूं ई व्यंजन ध्वनियां रौ प्रचलन राजस्थानी में है पण दन्त्य 'स' रौ लेखन में इधकौ प्रयोग हुवै। संग्या, सरवनांव, विसेसण, क्रिया, अव्यय, कारक, परसर्ग (विभक्तियां) री विरोळ सूं राजस्थानी रै व्याकरण री अनूठी ओप अर मठोठ लखीजै। राजस्थानी भासा री जूनी लिपि महाजनी कै मुड़िया हुती, जिकी बाणियां अर रजवाड़ा में हिसाब–किताब सारू बरतीजती। सिक्षा–दीक्षा अर साहित्य सारू देवनागरी रौ ई प्रचलण रैयौ। इणी रै माध्यम सूं अजै ई राजस्थानी आपरी नित नुई सांतराई मांड रैयी है।

6.5 अभ्यास सारू सवाल

(अ) नीचै लिख्या सवावां रा पड़ूत्तर 200 सबदां रै लगै–टगै देवौ –

1. राजस्थानी भासा रै देसी अर विदेसी अध्येता विद्वानां रौ उल्लेख करौ।
2. मारवाड़ी बोली रौ खेतर बतळावौ।
3. राजस्थानी री खास बोलियां रौ संक्षिप्त परिचै दिरावौ।
4. मेवाड़ी अथवा हाड़ौती बोली रौ परिचै दिरावौ।
5. राजस्थानी भासा री विसेसतावां रौ अध्ययन किण तरै कर्‌यौ जा सकैं ?
6. राजस्थानी रै कारकां रौ नामोल्लेख करौ।
7. राजस्थानी रै संबन्धवाचक कारकां रा अेहलाण (विभक्तिचिन्ह) लिखौ।
8. राजस्थानी रै पुरुषवाचक सरवनांव रै चिन्हां (अेहलाणां) नै लिखौ।
9. राजस्थानी रै अनुरणात्मक–सबदां री बानगी दिरावौ।
10. राजस्थानी में ळ री ठौड़ ल अर ड री ठौड ड़ लिखण सूं अरथ कियां बदळै ? उदाहरण देवौ।

(आ) नीचै लिख्या सवालां रा पड़ूत्तर 500 सबदां में देवौ –

1. किणी अेक बोली रौ खुलासौ करौ –

   ढूँढाडी, हाड़ौती, सेखावाटी, मेवाती

2. राजस्थानी भासा री ध्वनि मुजब खास–खास विसेसतावां रौ उदाहरणां सूं खुलासौ करौ।

3. राजस्थानी भासा रै सरवनांमा री विसेसतावां नैं दरसावौ।

4. राजस्थानी भासा री क्रिया विसेसतावां बतावौ।

5. राजस्थानी भासा री खास–खास व्याकरणिक विसेसतावा रौ परिचै देवौ।

6.6 सहायक पोथियां री पानड़ी

1. पद्मश्री सीताराम लाळस – राजस्थानी सबद–कोस (भूमिका)
2. सं. देव कोठारी एवं डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास – राजस्थानी भाषा और उसकी बोलियां
3. डॉ. कन्हैयालाल शर्मा – पूर्वी राजस्थानी : उद्‌भव और विकास
4. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य
5. प्रो. नरोत्तमदास स्वामी – राजस्थानी व्याकरण
6. कालीचरण बहल – आधुनिक राजस्थानी का संरचात्मक व्याकरण (परम्परा, भाग 55–56)
7. डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव – डिंगल साहित्य (पद्य)
8. प्रो. (डॉ.) कल्याण सिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति।

इकाई–7
डिंगल अर पिंगल

इकाई रौ मंडाण

7.1 उद्देस्य

7.2 प्रस्तावना : डिंगल अर पिंगल : सामान्य परिचै

7.3 डिंगल अर पिंगल सबदां रौ इतियास

7.3.1 डिंगल

7.3.2 पिंगल

7.4 डिंगल अर पिंगल री उतपत (नामकरण)

7.4.1 डिंगल

7.4.2 पिंगल

7.5 डिंगल–पिंगल : भासा या सैली

7.5.1 डिंगल

7.5.2 पिंगल

7.6 डिंगल–पिंगल काव्य सैलियां में फरक

7.7 उपसंहार (इकाई रौ सार)

7.8 अभ्यास सारू सवाल।

7.9 संदर्भ– ग्रंथां री पानड़ी।

7.1 उद्देस्य

इण इकाई में विद्यार्थियां नैं डिंगल अर पिंगल री ओळख कराइजैला। डिंगल अर पिंगल दोई भासावां है कै काव्य सैलियां ? जै काव्य सैलियां हैं तौ वां री कांई–कांई विसेसतावां हैं तथा दोई सैलियां में कांई अन्तर है? आं दोयां नैं भासा क्यूं कैईजी– आं सगळी बातां रौ खुलासौ करणौ ई इण इकाई रौ उद्देस्य है।

7.2 प्रस्तावना

डिंगल अर पिंगल : सामान्य परिचै

राजस्थानी साहित्य में सरुपोत डिंगल अर पिंगल रौ परिचै अेक भासा रै रूप में मिळै। मध्यकाल में राजस्थान रै चारणां द्वारा बरतीजी सामान्य राजस्थानी कै मारवाड़ी (मरूभासा) रौ साहित्यिक रूप डिंगल कैइजियौ। इणरै उलट चारणैत्तर अर खासतौर सूं ऊगमणै राजस्थान रै भाटां द्वारा बरतीजी ब्रज–मिसरित बोलचाल री राजस्थानी में रचीजी कविता री भासा पिंगल कैईजी। आ बात दूजी कै आवतां बरसां में डिंगल कविता री दौरप सूं डिंगल रा कवि ई पिंगल में कविता लिखण ढूकिया। इणी वास्तै विद्वानां री मानता है कै आं दोयां रौ भासा–रूप में विसलेसण करणौ घणौ दौरौ। कठै–कठै सबद प्रयोगां सूं यूं लखावै क अै दोई भासावां न्यांरी कोनी, दोई अेक–दूजी में रळी–मिळियोड़ी है। अै दोई नाम राजस्थानी रै मध्यकालीन चारण कवियां रा दियौड़ा है।

9.3 डिंगल अर पिंगल सबदां रौ इतियास

7.3.1 डिंगल सबद रौ इतियास

'डिंगल' सबद रौ पैलो प्रयोग 17 वीं सदी रै कवि कुशललाभ री छंदशास्त्रीय रचना 'पिंगलसिरोमणी' रै तीजै प्रकरण रै 'अथ उडिंगल नाम माला कथ्यतै' सीर्सक में हुयौ है। कवि मनसाराम 'मंछ' आपरी छंद–रचना 'रघुनाथ रूपक गीतां रौ' (वि.सं. 1863) में डिंगल गीतां री विवेचना करी पण अठै वै कठै ई इणरी भासा रै रूप में डिंगल सबद कोनी बरतीजियौ। वै अठै आपरी भासा नैं मरूभासा कै मरू–भूमि–भासा ई कैयौ है। वि.सं. 1871 में लिख्योड़ी 'कुकवि बत्तीसी' नांव री रचना में 'डिंगल' रौ भासा–रूप में प्रयोग कर्‌यौ गयौ है –

डिंगलियां मिलियां करै पिंगल तणो प्रकास।
संस्कृति व्है कपट सज पिंगल पढिया पास।।

बांकीदास रै पछै सूरजमल मीसण री रचना 'वंसभास्कर' में ई डिंगल रौ भासां–रूप में प्रयोग मिळै। अठै वै डिंगल नैं मरूभासा री उपभासा कैयौ है। सागै ई वै आपरै बापजी रै परिचै में ई कैयौ है कै बावजी कवि चण्डीदानजी पिंगल–डिंगल भासा रा पटु अर धुरन्धर कवि हा। इण भांत अठै खुलासौ हुवै कै मरुभासा नैं डिंगल कैवण री परम्परा वि.सं. 1635 (पिंगल शिरोमणि रौ रचना काल) रै पैला कोनी ही। औ नाम फगत चारण–सैली री कविता सारू ई बरतीजतौ हौ।

7.3.2 पिंगल सबद रौ इतियास

सबसूं पैला 'पिंगल छंदशास्त्र' रा रचेता आचार्य पिंगल वास्तै रूढ़ हौ। फेर औ नांव छंदसूत्रां अर छन्द रचनावां सारू बरतीजियौ। भासा रै अरथ में पिंगल सबद रै प्रयोग रौ कोई ठावौ इतियास कोनी मिळै, पण 17वैं सइकै सूं 19वैं सइकै री रचनावां में नाग–भासा रौ उल्लेख मिळै, जिणरौ अेक अरथ पिंगल ई है। इण काल में गुरु गोविन्दसिंह (वि.सं. 1723–65– विचित्र नाटक) अर राजस्थाी कवि डिंगल रै सागै ई पिंगल रौ भासा रूप में वरणाव कर्‌यौ अर वै आपरी कविता डिंगल रै सागै पिंगल में ई लिखता हा।

पिंगल रौ भासा रूप में आरंभ भगती आंदोळण सूं ई जोड्‌यो जा सकै पण 'छंदशास्त्र' रौ ई पर्याय सबद पिंगल है। ब्रज भासा रा कवि, 'छंदशास्त्र' रै नेमसर छंद–बद्ध रचना करता हा, जिणरी व्यवस्था डिंगल कवियां रै डिंगल गीत छंद सूं अेकदम न्यारी ही। पण वैई पिंगल में कविता लिखण लागा हा। डॉ. मोतीलाल मेनारिया रै मुजब 16वीं सदी रै मध्य लग पूगता ब्रजभासा ठावी होय चुकी ही अर आखै माझल देस री साहित्यिक भासा बणगी ही। इण क्षेत्र में राजस्थान रौ ई अेक मोटौ हिस्सौ सामिळ हौ। इण वगत राजस्थान में डिंगल रै सागै ई ब्रज भासा में ई कवि लिखण लागा। ब्रजभासा साहित्यिक दीठ सूं डिंगल सूं आगै बधगी। राजस्थान रा कवि डिंगल रै तौल माथै ब्रज री कविता नैं पिंगल काव्य नाव दे दियौ। इण भांत भासा रै रूप में ब्रज वास्तै पिंगल सबद रौ प्रयोग ई 17वीं सदी सूं हुवण लाग्यौ अर औ नांव राजस्थानी कवियां रै माध्यम सूं ज्यादा प्रचारित रैयौ।

7.4 डिंगल अर पिंगल री उतपत

7.4.1 डिंगल री उतपत

'डिंगल' सबद री उतपत विद्वान आप–आप रै ढंग सूं बताई है, जिकी कोई किणी ठोस तरक माथै कोनी। कीं मत पेस हैं–

1. डॉ. अेल.पी. टैसीटॉरी री मानता है कै डिंगल सबद रौ असली अरथ अनियमित अर गंवारु है। ब्रजभासा परिमारजित अर व्याकरण मुजब ही, पण डिंगल इण बाबत अेकदम स्वतंत्र। पिंगल रै सारिखैपण रै पाण इणरौ नांव डिंगल पड्‌यौ। इण मत बाबत सांच तौ

आ है कै इण नैं बुद्धिजीवी चारण आपरी कविता वास्तै बरतता हा, अतः उणनैं गंवारु कींकर कैय सकां। इणी भांत डिंगल नैं अनियमित ओ नीं कैय सकां, क्यूंकै डिंगल कविता बाबत ई ठावा नियम बणायोड़ा हा। रैयी बात पिंगल रै सारिखैपण रै डिंगल नामकरण री, पण परमांणां रै आधार पांण दोयां रौ इतियास अेक समै रौ ई है।

2. डिंगल री उतपत बाबत श्री हरप्रसाद सास्त्री रौ मत ई उल्लेख जोग है। वे मुरारीदान जी अर 14वीं सदी रै अेक दूहा– ''दीसे जंगळ डगळ जेथ जळ बगळ चाटे....' रै पांण डगळ सबद सूं डिंगल री उतपत मानैं। वां रै मुजब 'डगळ' पैलां जंगल कै मरूदेश री भासा रौ नांव हौ। पिंगल री समता रै कारण वा डिंगल कैयीजी। 'इण मत बाबत प्रो. नरोत्तमदास रौ कैवणौ है कै सास्त्री जी द्वारा दाखळ इण दूहै में कठै ई जंगल देस री भासा रौ वरणांव कोनी। इण में तौ उठा रै रैवासियां रौ वरणांव है, जिणमें बताइजियौ है कै उठां रा लोग पांणी रै सारू बण्योड़ै चमड़ै रै बासण (बागळ) नैं चाटै। पांणी रै नीठण पर आलै बासण नैं ई चाटीजै।

3. श्री गजराज ओझा रै मुजब डिंगल में 'ड' वर्ण बेसी रूप सूं बरतीजै। इण विसेसता सूं ई पिंगल रै तोल माथै डिंगल नाम पड़्यौ। जिण भांत बिहारी लकार इधक भासा है, उणी दाई डिंगल ड–वर्ण इधक भासा है। डिंगल काव्य–सैली (चारण सैली) है जिणमें वीर रस वास्तै ट–वरण री प्रधानता है। पण भासाविग्यान रै इतियास में अैड़ी कोई भासा कोनी लाधै, जिणरौ नामकरण वरणा माथै हुयौ व्है।

4. श्री पुरुषोत्तम स्वामी कैवै कै 'डिम+गल सूं डिंगल सबद बण्यौ है। अठै डिम रौ अरथ 'डमरू' री ध्वनि अर गल रौ अरथ 'गलौ' है। डमरू री ध्वनि जुद्धां में वीरां नैं तैड़ै। डमरू वीर रस रै देवता महादेव रौ बाजौ कैईजै। जिकी कविता गळै सूं निसर'र डिम–डिम री तरिया सुभटां रै हिरदै नैं उमाव सूं भर देवै, उण नैं ई डिंगल कैवै।

अठै स्वामीजी गळती कर दीवी है। क्यूं कै न तौ डमरू री ध्वनि उमाव बधावै अर न ई महादेव वीररस रा देवता है। वै तौ रौद्र रस रा देवता मानीजै। वीररस रा देवता तौ इन्दर है।

5. उदयराज उजळ रै मुजब ब्रजभासा साहित्य रै नेमं सूं बंध्योड़ी भासा है, इण वास्तै वा पांगळी कैईजी है, इणरै उलट डिंगल संस्क्रत अर पिंगल रै रीति तथा छंदशास्त्र रै नेमां सूं सुतन्त्र अर मुगत है, इण वास्तै उणनैं 'उड़णवाळी' नांव दीरिजियौ है। डिंगल सबद रौ अरथ उड़णवाळी भासा है। वै इणनैं 'डीगल' अर 'ढीगल' (ढीकरौ) सबदां सूं नीपजी मानै। इण रूप में वां णी मानता है कै ज्यूं ढीकरौ बिडरूप हुवै, त्यूं ई डिंगल ई व्याकरण रै नेमां रै अभाव में अनगड, बिडरूप है। वा पिंगल री तुलना में घणी कम है। आई डिंगल सबद री उतपत है।

भासा–विग्यान री दीठ सूं उदयराज रै बतायौड़ै सबदां सूं डिंगल बणबो सौरौ कोनी। उणांरी आ मानता सामान्य मिनख नैं बिळमावै। डिंगल विद्वानां मुजब डिंगल गीतां अर छंदा रै भणबा अर उच्चारण री अेक खास लय कैईजै। हां, कविता में किणी भासा रौ कवि आपरै भाव मुजब किणी सबद नैं बरतीजण वास्तै सुतंतर रैवै।

6. डिंगल री उतपत बाबत चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी आपरा विचार प्रगट करता थकां लिखै ''मेरे मत में डिंगल केवल अनुकरण शब्द है। काफिया न मिलेगा तो बोझों तो मरेगा– की कहावत के अनुसार पिंगल के भेद दिखाने के लिए बना लिया गया है। ..... निश्चित अर्थ के वाचक किसी शब्द से, उससे भेद दिखाने के लिए उसी की छाया पर, दूसरा अनर्थक शब्द बनने, और उस दूसरे अर्थ के वाचक हो जाने के कई उदाहरण मिलते

हैं।'' औ मत ई दूजैडै मतां रै मुजब है। प्रो. नरोतम स्वामी इणनैं बौदौ मत मानै, जिण सारू वै आपरै मत में उल्लेख करयौ है।

7. डॉ. मोतीलाल मेनारिया डिंगल री उतपत 'डींग' सूं कैवै। वां री मानता है क डींग मारण वाळी भासा डिंगल है– वा भासा जिणरी रचनावां में डींगा मारीजी हैं। चारण आपरै आश्रयदातां री सरावणा में अतिसयोक्ति पूरण रचनावां करता हा। इण वास्तै ई बूढा चारण अजै ई डिंगल नैं डींगल कैवै।

मेनारियाजी रौ मत इण वास्तै तरक पूरण नहीं है, क्यूं कै पिंगल री रचनावां में ई भरपूर अतिसयोक्ति मिळै। सागै ई बूढ़ा लोग तौ डिंगल नैं ई डींगल नहीं कैवै, वै तौ पिंगल नैं पण पींगल कैवै जद कै सही सबद डिंगल अर पिंगल ई है।

8. डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी घणौई अस्पष्ट अर संकालू मन सूं डिंगल सबद री उतपत बतळावता लिखै– ''डिंगल शब्द की व्युत्पत्ति डूंगर शब्द से हुई। राजस्थानी में डूँगर शब्द का अर्थ पर्वत या पहाड़ी है। अतएव डिंगल का अर्थ संभवतः पर्वतीय प्रदेश की भासा होगा। डूँगर शब्द के अनेक रूप अन्य भारतीय आर्य भासाओं में भी पाये जाते हैं। डंग, डिंग और डुंग इसके तीन रूप हैं। डिंगल शब्द स्पष्टतया पिंगल के साम्य पर बनाया गया है जो कि राजस्थान में सदैव प्रचलित रही है।''

9. प्रो. नरोत्तमदास स्वामी डिंगल री उतपत दोय रूपां में बतळावै–

   अ. अपभ्रंश लोकसाहित्य सूं घणा ई छंद सरजिया। देस–भासावां रै विकास रै समै लोक–साहित्य पांण औजू नुवां छंद बणाया। ऊगमणै रा कवि ज्यां में भाट (ब्रह्मभाट) खास हा। वै पद सिरजिया अर आथूणै रा चारण कवि (चारणी) गीत रचिया। ब्रह्मभाट पिंगल रै मानीता छंदा में ई रचनावां लिखता हा। वां री रचनावां में पदां री तुलना में पिंगल रै मानीता छंदां री ई बोहोळता रैयी। पण चारण आं छंदां री बजाय गीतां नैं महताऊ मान्या। पिंगलानुमोदित छंदां में रचीजी कविता री भासा (ब्रजभासा) पिंगल नांव सूं ओळखीजी। उणी रै तौल माथै पिंगल रै छंदां सूं न्यारी गीतां में लिखीजी कविता री भासा रौ नांव डिंगल पड्यौ। इण भांत डिंगल सबद, ज्यूं गुलेरीजी कैवै निरर्थक है अर पिंगल रै वजन पांण गड़ीजियौ है।

   आ. कुशललाभ री रचना 'पिंगल शिरोमणि' में 'उडिंगल नागराज' रौ अेक छंदशास्त्री रै रूप में उल्लेख हुयौ है। छंदां रा सबसूं पैलां विरोळ करणियौं 'पिंगल नाग' हौ। जद अपभ्रंसकाल में नुवा मात्रिक छंद बरतीजण लागा तद उणां रा सिरजक ई पिंगल मानिजिया। इण भांत पिंगल कविता में बरतीजिया छंदां रौ आविष्कारक पिंगल–नागराज प्रसिद्ध हुयौ। जद डिंगल गीतां रौ आविस्कार हुयौ तौ उणरौ संबंध ई किणी जूनै महापुरुस सूं जोडणौ जरूरी मानीजियौ अर नागराज रै समान उडिंगल नागराज री कल्पना करीजी। स्यात् औ उडिंगल सबद ई डिंगल रौ मूल है।

   अठै प्रो. स्वामी दोय रूपां में– पिंगल रौ अनुमोदित सबद डिंगल अर उडिंगल री संभावना सूं डिंगल री उपतप खरी करी है। पण 'उडिंगल नागराज रौ फगत' अनुमान इज कर्यौ जा सकै। इण भांत री अजै लग प्रामाणिक रचना कोनी मिळी है।

10. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी पण इणी संभावना नैं मानता थका डिंगल री मानता मुजब आपरै मत नैं यू प्रस्तुत करै– ''प्रतीत होता है डिंगल, डित्थ, डवित्थ आदि आदि

यादच्छात्मक निरर्थक शब्दों की भांति तद्भव अनुकरणात्मक शब्द है, हो सकता है उडिंगल शब्द डिंगल का मूल रहा हो। अन्य ठोस प्रमाणों के अभाव में इस अनुमान को स्वीकार किया जा सकता है।''

11. किशोरसिंह जी बारहस्पत ''डीङ् विहायसा गतौ'' अर्थात् उड़ण वाळी डी धातु सूं डिंगल री उतपत मानै। इण आधार माथै वै डिंगल नै उड़ण वाळी भासा कैवै, क्यू कै उड़ण रै अरथ वाळी धातु डी सूं इणरी उतपत व्ही है। अठै बारहस्तपतजी रौ उड़ण वाळी सूं अरथ स्यात् डिंगल रै ऊंचै सुर में भणन री प्रव्रति सूं है। बदरीदानजी कविया अर सतदेवजी आढ़ा ई इण मत सूं आपरी सै' मती जतावै। पण सिरफ ऊंचै सुर सूं बांचण सूं किणी भासा रौ नांव पड़ जावै तौ श्यामनारायण पाण्डे, रामधारी–सिंह दिनकर जैडा कवियां री वीररस री कवितावां मतै ई ऊंचै सुर में भणीजी, तौ कांई आं कवितावां नैं ई डिंगल–काव्य माना?

12. श्री जगदीश सिंह गहलोत 'डिंभगळ' सबद जिणरौ अरथ 'बाल–भासा' है, सूं मानैं। वै कैवै कै प्राक्रत बाल–भासा कैईजती ही, उण इज भांत राजस्थानी री लोकभासा डिंभगळ कैईजी। औ ई सबद आगै चाल'र डिंगल बणगौ।

    इण मत बाबत औ कैवणौ सारथक है कै डिंगल कदै ई लोक भासा रै रूप में चावी नीं रैयी। वा तौ सदीव अेक वरग विसेस री काव्यशैली ही, जिणनैं समझण री दौरप सामान्यजन हरमेस करी। डिंगल रै इण गुण वास्तै ई उण रै घर में उण रै सामै पिंगल चावी बणगी।

13. डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव री डिंगल री उतपत बाबत मानता है कै ज्यूं किणी टाबर रौ नांव बिना किणी तरक–वितर्क रै राख लियौ जावै। उण नांव रै किणी गुण–औगुण री व्याख्या कोनी करीजै। उणी तरियां सूं डिंगल री उतपत बाबत विवाद करणौ बिरथा है– ''डिंगल संज्ञा बिना किसी विशिष्टता को परिलक्षित करके दी गई है ठीक उसी प्रकार जैसे कि नवजात शिशु का नामकरण संस्कार उसके गुणों तथा दुर्गुणों के पल्लवित एवं पुष्पित हुए बिना ही कर दिया जाता है।''

डॉ. श्रीवास्तव री आ मानता सहज अर बेबाक हुय सकै, पण किणी टाबर रै नामकरण रै समान किणी भासा रौ नामकरण करणौ संभव कोनी, क्यूं क टाबर अर भासा रै विकास में घणौ फरक है।

सैवट, आ बात साव सांची क डिंगल सबद पिंगल (छद शास्त्र रै संदर्भ में पिंगल सबद) री समानता पांण इज बण्यौ। डिंगल सूं जुड्यौड़ा चारण, भाट, रावल, मोतीसर, ढाढी आद जातियां रा दाना मिनख अजै ई डिंगल नैं डींगल अर पिंगल नैं पींगल बोलै, भलैई भासा री दीठ सूं वै सही नी हुवै। डिंगल राजस्थानियां री काव्यभासा रैयी, जठै भणाई–लिखाई री बजाय सूरौपण सिरै हौं। पिंगल पंडिता री भासा ही। इण वास्तै अठै जाणीती–मानीती ओज भरी अपभ्रंश सूं प्रभावित मरूभासा कै डिंगल री तुलना में लोगां नैं पिंगल पराई, कठिन अर पांगळी लागती रैयी। औ ई कारण रैयौ क अै लोग पिंगल रै सादृश्य माथै मरूभासा रौ नांव ई डिंगळ राख दिरायौ, जद क वा अठै रै चारण कवियां री फगत अेक शैली ही। इण भांत साब्दिक उतपत रै रूप में 'डडिंगल' सबद सूं 'डिंगल' सबद री उतपत मानी जा सकै जिकौ कुशललाभ पिंगल शिरोमणि में बरतीजियौ है। यूं डिंगल भासा नी होय'र मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य री फगत अेक शैली ही जिणमें खासतौर सूं राज्याश्रित चारण कवि वीररस एवं आपरै आश्रयदातावां रा विरुद लिखता हा। इण सैली में इण तरिया री रचनावां सर काव्य कैईजती ही।

7.4.2 पिंगल री उतपत

पिंगल री उतपत बाबत विद्वानां री मानता इण भांत है–

1. डॉ. श्यामसुन्दरदास री मानता है क हिन्दी रौ ई अेक साहित्यिक रूप थरपीजग्यौ हौ। उणमें साहित्यिक रचनावां री इधकाई रै कारण बीनै मानता दीरिजी। उणरौ व्याकरण पण ठावौ हुयग्यौ। हिन्दी रै उण साहित्यिक रूप री ओळखांण पिंगल नांव सूं व्ही अर बीजै रूप नैं डिंगल नांव दीरिजियौ। पिंगल भासा में खासतौर सूं वै विद्वान सिरजण करता हा जिका आपरी रचनावां में संयत भासा अर व्याकरण री शुद्धता री सामरथ राखता हा। साहित्यिकता रै सागै ई उणरा नेम करडा हुवता गिया।

   डॉ. दास रै इण मत में म्हांणी आं तीन बातां कांनी निजर जावै– (अ) पिंगल आदिकाल री साहित्यिक भासा ही, (आ) आ अेक व्याकरणबद्ध भासा ही, (इ) इणरी साहित्यिक मानता रै पूठै नेमां में जटिलता बधी। वस्तुतः मझकाल में डिंगल अर पिंगल दोई साहित्यिक भासा मानीजी है। साहित्यिक भासा वास्तै जरूरी है कै इणमें वैवारिक सुद्धता हुवै। इण वास्तै मात्रा री दीठ सूं आं में व्याकरणिक शुद्धता कम–बेशी हुय सकै। डिंगल नैं पूरी तरिया सूं व्याकरण सून्य नहीं कैय सकां।

2. आचार्य रामचंद्र सुक्ल पिंगल री उतपत बाबत कैवै कै ''इससे यह सिद्ध हो जाता है कि प्रादेशिक बोलियों के साथ–साथ ब्रज या मध्यदेश का आश्रय लेकर एक सामान्य साहित्यिक भासा भी स्वीकृत हो चुकी थी जो चारणों में पिंगल के नाम से पुकारी जाती थी।''

   शुक्लजी पिंगल नैं डिंगल री भांत साहित्यिक भासा मानैं। उणा रै मुजब राजस्थानी भासा रौ औ वौ सरूप है जिणमें ब्रज अर मध्यदेश री भासा रौ मेळ हुयौ है अर हौळै–हौळै वां प्रदेसां री भासावां रै मुजब इणमें व्याकरण–बद्धता अर नियमानुरूपता बधी। इण रूप में शुक्लजी रौ औ मत घणौ ठावौ कैयौ जा सकै।

3. डॉ. रामकुमार वर्मा सौरसेनी अपभ्रंस सूं नीपज्योड़ी 12वैं सइकै री ब्रज भासा नैं पिंगल मानता थका कैवै क राजस्थानी डिंगल–साहित्य रै समान ई पिंगल में मध्यदेश री साहित्यिक रचनावां री भासा ही। इण भांत डॉ. वर्मा रै मुजब ब्रज अर पिंगल अेक ई भासा है जिणरौ राजस्थानी कै डिंगल सूं कोई संबंध नहीं हौ। इण धारणा रै मुजब म्हाणौ औई कैवणो है क पिंगल–साहित्य माथै ब्रज रौ घणौ असर लखीजै। सागै ई मध्यदेश री बोलियां रौ ई प्रभाव पिंगल–साहित्य में दीखै। अर उणरौ राजस्थानी साहित्य सूं ई संबंध रैयौ है। अठां घणा ई डिंगल कवि पिंगल में ई रचना करी प्रिथीराज रासौ रुकमणी मंगल, राजप्रशस्ति महाकाव्य, भासा–भूषण, नेहतरंग, शत्रुसाल रासौ, वंशभास्कर आद रचनावां इणरौ प्रमाण है।

4. राजस्थान रा इतिहासविद मुंसी देवी प्रसाद राजस्थानी अर ब्रज कविता रै बांचण रै पांण पिंगल री उतपत बतळावता कैवै क मारवाड़ी में गल्ल रौ अरथ बात कै बोली है। अठै डींगा नैं लाम्बौ कै ऊंचा रै अरथ में अर पांगळौ (पंगु) नैं लूलै रै अरथ में बरतीजै। चारण आपरी मारवाड़ी कविता रौ पाठ ऊंचै सुरां में करतां हा अर ब्रज कविता हौळै–हौळै मंधरा सुरां में भणीजै। इण वास्तै आं कवितावां सारू डिंगल अर पिंगल नांव बरतीजण लागा। ऊंची बोली में भणीजण वाळी कविता डिंगल कैईजी अर हौळै (नीचां) सुरां में भणीजण वाळी कविता पिंगल कहींजी।

   अठै ऊंचै–नीचै सुरां में भणन री बात तौ मानी जा सकै, पण भासिक इतियास में अैड़ौ कठैई कोई दाखलौ कोनी मिळै, जठै ऊंचै–नीचै कै लूलै–लंगड़ै रै आधार पांण किणी भासा रौ नांव–करण हुयौ व्है। इणरै अलावा कवि रौ औ कौसल हुया करै क वो चावै किणी भासा में लिखै, भावानुरूप भासा अर सबदावली बरतै। इण रूप में डिंगल में जै

जे कंवळै भावां री कै करूण, सिणगार, सांत, आद रसां रौ वरणाव मांडै तौ कवि वास्तै जरूरी है क वो उणा रै मुजब सबदावली बरतै। इणी भांत जद पिंगल कवि वीर, भयानक, वीभत्स रसां कै करड़ा भावां री रचना सिरजै तौ उण तरिया री सबदावळी रै प्रयोग नैं जरूरी मानै।

5. पिंगल बाबत डॉ. मोतीलाल मेनारिया रौ ई मत लगभग इणी तरिया रौ है। डॉ. मेनारिया कैयौ है के 'राजस्थान रा चारण ब्रज भासा नैं परदेसी भासा मानता हुया उण नैं 'भाट भायषा' (भाटां री भासा) कैवता हा। आ भासा ऊगमणी भोम रै ब्रह्मभटां जिका ऊढूं सूं आय'र मारवाड़ में बसग्या हा, री काव्यभासा ही। इण भांत पिंगल मारवाड़ (राजस्थान) में बस्यौड़ै आं भाटां री काव्यभासा है। पिंगल नैं अठां रा चारण ई अंगैज लीवी, क्यूंक छंद–रचना में डिंगल सबद रै सागै संगत बिठावण अर कविता पाठ में सुखोच्चारण री दीठ सूं पिंगल ब्रज भासा री बजाय बेसी ओपती ही। अठै मेनारिया जी ई डिंगल नैं राजस्थानी भासा रौ परयाय अर पिंगल नैं ब्रज भासा रौ परयाय मानता थका दीखै। पण इण विवेचन में लखावै के वै पिंगल नैं अेक काव्य–सैली रूप में पेस करण री कोसिस करी है।

6. 'हिन्दी साहित्यकोस' रौ पिंगल री उतपत बाबत मत है क ''पिंगल उस देशी प्राक्रत को कहते थे, जिसके उदाहरण 'प्राकृत पिंगल' या 'प्राकृत पैंगल' में मिलते हैं। इसके विरोध में यह कहा जा सकता है कि 'प्राक्रत पिंगल' अथवा 'प्राक्रत पैंगलं' नाम से 'पिंगल' अथवा 'पैंगल' शब्द पिंगल (आचार्य) की कृतिके अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, 'पिंगल' भासा के अर्थ में नहीं। भासा के लिए तो रचना के नाम में 'प्राकृत' शब्द ही है। दूसरे यह भी कि 'प्राकृत पिंगल' में किसी एक प्रदेश की देश्य प्राकृत नहीं है, उसमें जहां एक ओर राजस्थान की देशी प्राकृत के रूप हैं, वहां मिथिला की भी देशी प्राकृत के रूप मिल जायँगे। फिर भी यह असंभव नहीं है कि आधुनिक आर्य भासाओं के साहित्य–क्षेत्रों में पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित होने के पूर्व जब अपभ्रंश बोल–चाल की भासा नहीं रह गयी थी, एक मध्यवर्ती देश्य प्राकृत भासा के रूप में व्यापक रूप से व्यवहृत होने लगी हो और पीछे काव्यभासा होने के नाते यही पिंगल भिन्न अर्थ में प्रयुक्त हुआ हो। शौरसेनी प्राकृत अपभ्रंश पूर्व से काव्य–भासाएं रह चुकी थीं, इसलिए शौरसेनी देश्य प्राकृत और तदनन्तर ब्रज प्रदेश से बाहर काव्यक्षेत्र में उसकी उत्तराधिकारिणी 'ब्रजभासा' को यदि 'पिंगल' कहा गया हो, तो कुछ अनहोनी बात नहीं है।''

अठै कोसकार रौ मत दूजै मतां सूं न्यारौ है वै डिंगल री तोल री बात नी कर'र पिंगल री उतपत सौरसेनी प्राक्रत सूं जोड़ै। पण वै ऊपरलै विद्वानां ज्यूं ई ब्रजभासा नैं ई पिंगल मानै। पण वै पिंगल रौ सम्बन्ध किणी जात विसेस रै कवियां सूं होवण री बात ई कोनी करै।

सैवट, पिगल मूलतः छंदसास्त्र रै संदर्भ में थरपीजी संग्या है। ऊगमणै राजस्थान कै मध्यदेश सूं मारवाड़ रै ब्रह्म भाटां री रचनावां नैं अठा रा चारण कवि डिंगल रै तौल माथै पिंगल री कविता कैवण लागा। इण भांत पिंगल ई मझकालीन राजस्थानी काव्य (साहित्य) री अेक शैली ही, भासा कोनी। भासा तौ ब्रज इज ही।

7.5 डिंगल–पिंगल : भासा कै सैली

7.5.1 डिंगल

ऊपरलै विवेचन सूं औ खुलासौ हुवै के विद्वान डिंगल री प्रभुता री थरपणा वास्तै उणरै नांवकरण बाबत ई उखाड़–पछाड़ करता रैया। उण री खास–खास प्रव्रतिगत विसेसतावां नैं सोधण री

कोई कोसिस नीं करी। इणरौ खास कारण औई रैयौ के वे डिंगल नैं राजस्थानी रौ जूनौ रूप मानता थका उणनैं भासा रौ दरजौ ई देवता रैया। इण बाबत विद्वानां री तीन विचार धारावां सामीं आवै–

1. पैली विचार धारा रा विद्वान डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी है, जिका डिंगल नैं भासा–रूप में थरपै। इण मुजब आप रै मत रौ खुलासौ करता हुया डॉ. गोवर्द्धन शर्मा लिखै ''डिंगल एक भाषा है, जिसे प्रारंभ में चाहे कुछ जातियों द्वारा भले ही अपनाया गया हो किन्तु बाद में वह सभी द्वारा समादृत भाषा बन गई। उसे मात्र शैली नहीं कहा जा सकता।''

2. ग्रियर्सन, टैसीटरी, कविराजा बांकीदास, डॉ. श्याम सुंदर दास, श्री गजराज ओझा, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. रामसिंह तोमर, रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत अर डॉ. गोवर्द्धन शर्मा रौ दूजौ वरग है जिकौ डिंगल नैं मारवाड़ी भासा या उणरौ जूनौ रूप मानतां थका डिंगल नैं अेक भासा रूप मे अंगैजै। 'कवि मत्तमंडण' में कविराजा डिंगल नैं मरुभासा रौ पर्याय स्वीकारता हुया औ दूहौ कैवै–

   ऊधत भाखा ओ अरथ, भाखौ डींगल भार।
   मारू भाखा मानजै, सो ई गीता साख।।

   इणी भांत रा विचार डॉ. गोवर्द्धन शर्मा आप रै सोध–प्रबंध 'डिंगल साहित्य' में प्रगटै। वां रै मुजब मझकालीन मरूभासा रौ साहित्यिक रूप डिंगल कैईजियौ अर आज री बोलचाल री भासा नैं राजस्थानी कैय सकां। डिंगल भासा रै विकास नैं समझण रौ अरथ दूजै सबदां में राजस्थानी रै उद्‌भव अर विकास रौ अध्ययन मात्र है।'

इ. अेक तीजी मानता मुजब डिंगल मरुवाणी (मरूभासा) री उपभासा है। इण मत रा पोसक 'वंश– भास्कर' रा रचेता सूरजमल मीसण है। इण बाबत उणा रौ औ दूहौ प्रस्तुत है–

डिंगल उपनामक कहुंक, मरूबानीय विधेय।
अपभ्रंश जामें अधिक, सदा वीर रसस्चेय।।

विद्वानां रै आं विचारां मुजब डिंगल अेक जात विसेस री भासा है। पण सांच आ है क भासा कदै ई किणी जात विसेस री बपौती कोनी हुवै। भासा अेक ठावै भूभाग रै सगळै मिनखां री भावाभिव्यक्ति रौ साधन हुवै। उण समाज री सम्पत्त हुवै जिणरौ व्याकरण, सबदकोस, साहित्यिक–परिवेस हुवै। भासा किणी समाज रै लोक अर सिस्ट साहित्य में समान रूप सूं बरतीजै। डिंगल रौ प्रयोग फगत मरू प्रदेस रै चारण रचेतावां री साहित्यिक रचनावां में ई हुयौ है, उणमें लोक–साहित्य कोनी सिरजियौ। इणरै अलावा जै डॉ. गोवर्द्धन शर्मा रै ऊपरलै दूजै मत नैं अंगैज लैवां तौ उणरै पांण म्हांनै राजस्थान री पिंगल रचनावां नैं राजस्थानी–साहित्य सूं बारै करणौ पड़सी। आ बात ठावी कोनी, क्यूंक राजस्थानी रौ विकास डिंगल अर पिंगल दोन्यू सूं हुयौ है।

इण विरोळ सूं खुलासौ हुवै के डिंगल फगत मझकालीन राजस्थानी साहित्य री अेक सैली है, जिणमें अठा रा चारण साहित्यकार आपरी रचनावां लिखी। इण सैली में अतिसयोक्ति अर कल्पना सूं भरपूर वरणाव हुवतौ हौ। ट–वरण री इधकाई ही, जिणसूं वीररस रा वरणांव प्रभावू बणता हा। अपभ्रंस री द्वित्त सबदावली री ई इणमें भरमार ही। आ द्वित्त सबदावली वीररस नैं ध्वन्यात्मकता बगसता हां। डिंगल सैली री इण कविता नैं चारण–सैली ई कैवता हा। कवियां

रौ खास उद्देस्य आपरै आसरयदातावां नैं रिझा'र पसाव हासल करणौ हौ। इण वास्तै अधिकांश घटनावां में इतियास री बजाय कल्पना री प्रधानता हुवती ही। औई कारण है के आं रचनावां में प्रामाणिकता रौ अभाव रैयौ। हां, आं कवियां रा जुद्ध वरणांव घणां सजीव हा। पण रास्ट्रीयता री भावना घणी संकुचित ही। डिंगल सैली में काव्य–रूपां रौ विकास मिळै। छन्द अर अलंकारां रा ई सांतरां अर ठावा प्रयोग जोया जा सकै। इण भांत डिंगल री तरक–संगत व्याख्या सूं 'डिंगल' री प्रक्रति मुजब कैयौ जा सकै क डिंगल मझकालीन राजस्थानी साहित्य री साहित्यिक सैली है, जिणमें चारणां रै अलावा चारणेत्तर लिखारा ई साहित्य सिरजियौ। इण सैली रौ खास रस वीर है, पण सागै ई दूजै रसां री कमी कोनी लखावै। प्रसंग मुजब वीर रसेत्तर रस ई मिळै, हाला–झाला री कुंडलिया, नागदमण, नेहतरंग, रतनरासौ, मानविलास आद रचनावां इणरा ठावा परमाण हैं।

डिंगल : बणावटी भासा– डॉ. टीमकसिंह तोमर, डॉ. उदयसिंह भटनागर, अर डॉ. शमशेरसिंह नरुला आद विद्वान डिंगल नैं न भासा मानै अर न ई सैली। वै इण नैं फगत अेक बणावटी भासा कैवै। डॉ. नरूला रै मुजब ''डिंगल एक बणावटी भासा है। वह बोलचाल की भासा कभी नहीं रही।'' डॉ. उदयसिंह भटनागर ई भाषिक तत्त्वा माथै डिंगल री विरोळ करता हुया कैवै कै अेक स्वतंत्र भासा सारू जरूरी है क उण रा रूप बंतळ में बरतीजै। इण दीठ सूं डिंगल में कोई स्वतंत्र रूप योजना कै वाक्य विन्यास कोनी लखीजै। अतः डिंगल अेक सुतंतर भासा कै बोली नहीं कैयी जा सकै। उणमें दिखावटी सबदावली इज बरतीजी है। सैली रूप में ई वा बणावटी दिखाई देवै। चारण कवि आपरै वरचस्व नैं कायम राखबा वास्तै मनमाफिक सबदां नैं तोड़–मरोड़'र कविता में बरतीज्या। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी इणरै उलट डिंगल नैं बोलचाल में रळी–मिळी भासा कैवता थका उणनैं सहज साहित्यिक और बोलचाल री भासा रै गुणां सूं भरपूर मानै। बे इणरै बणावटी पण रै कारण नैं पिंगल रै प्रभाव नैं मानता हुया राजस्थानी री अेक काव्यगत सैली विसेस मानै ''डिंगल राजस्थानी सूं न्यारी कोई भासा नहीं वा राजस्थानी री ई अेक काव्यगत सैली–विसेस है।''

7.5.2 पिंगल

डिंगल री भांत इज विद्वान पिंगल नैं ई भासा कैवै। अधिकांस विद्वान इण मत सूं सै' मत है कै राजस्थान में जिकौ ब्रजभासा में साहित्य रचीजियौ, वो ई पिंगल साहित्य है। ब्रजभासा रै प्रभाव सूं ई पिंगल नैं ब्रजभासा रौ परयाय मानै। पण अठै डिंगल री भांत इज औ सार निकाळां कै पिंगल भासा कोनी ही। आ ई राजस्थानी साहित्य री अेक सैली ही। क्यूंक काव्य भासा रै रूप में ब्रजभासा वास्तै भाखा अथवा ब्रजभासा रौ ई प्रयोग करीजियौ है। इण सारु जाहिर है कै पिंगल ब्रज भासा कोनी, वा तौ अेक काव्य सैली है।

डिंगल री भांत ई कुछ विद्वान पिंगल नैं ई क्रत्रिम भासा कैवै। इण बाबत डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी रौ मत उल्लेख जोग है– 'रासौ की जैसी भाषा है वह जीवित बोली नहीं है। वह किसी भी काल या प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा नहीं है। वह एक कृत्रिम साहित्यिक बोली है, जिसका स्वरूप कई शताब्दियों की और सहस्रों वर्ग मील में फैले भूखण्ड की कई बोलियों द्वारा निर्मित हुआ था। उसमें मुख्य तत्व पश्चिमी अपभ्रंश का है, जिसमें पश्चिमी हिन्दी के साथ राजस्थानी कविता में 1200 ई. के बाद क्रमशः प्रचलित हो चली थी उसका पिंगला या पिंगल नाम था। किन्तु राजस्थानी चारण काव्य की यह मिश्रित बोली केवल विशिष्ट जनों द्वारा समझी जाती थी, जनसाधारण की वह भाषा नहीं थी (भारतीय भाषा और हिन्दी, पृ. 109)।''

इण विवेचन सूं खुलासौ हुवै क पिंगल ई डिंगल री दांई भासा कोनी, वा फगत राजस्थानी–साहित्य री अेक सैली है। इण रूप में वा न ब्रज भासा री परयाय है अर न ही वा राजस्थान प्रदेस री ब्रज भासा है। पिंगल ब्रजभासा सूं प्रभावित राजस्थानी काव्यसैली है। इण सैली में फगत भगती–काव्य ई नी रचिजियौ बल्कै नवरसां री कविता लिखीजी। भावानुरूपता अर कोमलकांत पदावली इण सैली री खासियत हैं। छंदसास्त्रीय सैंठाई ई इण में भरपूर है।

पिंगल सैली ब्रह्मभाट या किणी जात विसेस सूं जुड़योड़ी कोनी। भाटां रै अलावा बीजी जात रा लिखारा ई इण सैली में काव्य रचियौ है। जान मुसलमान हा, उत्तमचंद भण्डारी जैन हा, डूंगरसी रजपूत हा, पण अै आपरी रचनावां पिंगल–सैली में लिखी।

7.6 डिंगल–पिंगल काव्य–सैलियां में फरक

1. डिंगल राज्याश्रित चारण कवियां री साहित्यिक सैली ही। इण सैली रौ विकास सामंती ठाठ–बाट में हुयौ। राजदरबारियां, राजा–महाराजावां अर उणां रा मरजीदान ई इण कविता रा सरावणियां हा। साधारण जनता सूं इणरौ कोई लेणौ–देवणौ नीं हौ। पण पिंगल–सैली री कविता राजसत्ता अर जन साधारण दोई वरगां री चावी ही। समाज में डिंगल–काव्य सैली री रचनावां री तुलना में पिंगल–काव्य सैली री क्रतियां रौ घणौ मान हौ।

2. इणी जनप्रियता रौ खास कारण पिंगल रचनावां री सरल सबदावली, कोमलकान्त पदावली जनप्रिय काव्य विसस हा। इणरै उलट डिंगल–काव्य सैली में कठिन सबदावली अर खास अरथावू सबदावली, सामन्ती विसस रा वरणांव जनसमाज री समझ रै बारै हा। इण प्रव्रति रै कारण डिंगल कविता खास वरग री कविता ही। भासा–भाव दोई दीठ सूं वा सर्वहारा वरग सूं घणी आघी ही। इण भांत डिंगल काव्य सैली रा रचेतावां रौ लक्ष्य लौकिक हौ। वे धन अर प्रतिष्ठा सारू कविता लिखता हा।

3. डिंगल सैली री कविता रा अधिकांश रचेता चारण, भाट, मोतीसर हा। बोहेात कम चारणेत्तर रचेतां डिंगल सैली में आपरी रचनावां लिखी। पिंगलसैली री कविता रा रचेता सरु सूं ई चारणेत्तर जातियां रा कवि, ब्रह्मभाट, संत, महात्मां रैया, जिका जनकल्याण अर जनप्रिय भावना री कविता लिखता हा। पिंगल कविता री जनप्रियता सूं ई पछै चारण कवि ई इण सैली में रचनावां लिखण लागा।

4. डिंगल काव्य सैली रौ खास छंद डिंगल गीत छंद रै अलावा दूहौ, नाराच, कुण्डलिया, कवित्त, गुंजग प्रयात, चांद्रायण, आर्या, सवैयौ छप्पय आद हा, जद क पिंगलसैली में छंदशास्त्रीय सगळाई चावा छंद बरतीजिया है। आं छंदा में ध्वन्यात्मकता रै सागै ई गेयता री प्रधानता मिळै। इण संगीत–तत्व रै कारण ई पिंगल सैली री कविता जनप्रिय रैयी। डिंगल कविता में ध्वन्यात्मक गति तौ है, पण उण री बनावटी संरचना साधारण स्त्रोतां नैं आप कांनी खींचण में असमरथ है। दोई सैलियां रौ अेक–अेक दाखलौ पेस है–

डिंगल– कळकळिया कुन्त किरणि कळि ऊकळि

वरजित विसिख, विवरजित वाउ

धड़–धड़ धड़कि धार धारूजळ

सिहर–सिहर समरव़इ सिळाउ।

पिंगल– पिय आवन सुनि हरष हिम, भूषन बसन सँवार।

हौइ और की और जहँ, सो बिभ्रम रस सार।।

जानबूझ अनजान ज्यौं, पिय स्यौं बूझै तीय।

यहै मुग्धता कबि कहै, सुनि राखौ धरि हीय।।

5. डिंगल–सैली री कविता रौ खास गुण ओज है, जद के पिंगल सैली री कविता में माधुर्य गुण री इधकाई मिळै। सागै ई प्रासाद अर ओज गुणां रा प्रयोग ई मिळै।

अठै म्हां औ खुलासौ करदां क पिंगल काव्यशैली सूं जुड्यौड़ा ब्रह्मभाट मारवाड़ रै भाटां सूं अलायदा है जिका वंसावलिया लिखता हा। इणरै अलावा इण बात नैं ई साफ कर दां के डिंगल सैली में बरतीजिया छंद–कवित्त, कुण्डलिया, सवैयौ, छप्पय परम्परित छंदां सूं अलायदा है। आं रा लक्षण राजस्थानी लक्षण ग्रंथां रै मुजब है।

6. डिंगल रा विद्वान डिंगल नैं भासा मानता हुया इणरा दो रूप बतळावै– प्राचीन डिंगल अर अर्वाचीन डिंगल। म्हा डिंगल नैं सैली माना। इण रूप में डिंगल सैली रा अै दो रूप हैं। पण जिका विद्वान पिंगल नैं भासा मानैं, वै ई इण रा कोई भेद नीं बतळाया है। इण ढाल पिंगल सैली आपरै अेक ई रूप में विकसित व्ही।

7. पिंगल अर डिंगल सैली रै मूल सुरां रै उच्चारण में तौ सारीखौपण लखावै पण दो–एक व्यंजनां रौ उच्चारण न्यारौ है। 'व' आखर पिंगल में 'ब' बण जावै अर ब इज लिख्यौ अर बोल्यौ जावै, ज्यांन– विपिन > बिपिन, दिवस > दिबस। डिंगल में 'व' दो तरिया सूं बोलीजै, अेक उच्चारण संस्क्रत व कै अंग्रेजी रै W ज्यांन है अर दूजैड़ौ अंग्रेजी रै V ज्यांन। उच्चारण रै इण फरक रै बतळावण वास्तै लिखण में पैलड़ै 'व' नै तौ इणी रूप में लिखिजै पण दूजैड़ै व रै हैटै बिंदी (व़) लगाइजै।

8. आखरी आखर रौ 'ल' जिकौ दीर्घ हुवै तौ पिंगल में वौ 'र' बण जावै, ज्यांन– काले > कारै, पनाले > पनारै, भोली > भोरी आद। इणरै उलट डिंगल में 'ल' रौ 'र' नीं बण'र वौ 'ळ' हुय जावै– काल > काळ, टोल > टोळ, भाल > भाळ।

9. पिंगल में 'ण' न बण जावै– प्राण > प्रान, रण > रन, अरूण > अरून। पण डिंगल में इणरौ उलटौ हुवै। डिंगल में न– कारान्त सबद ण– कारान्त उच्चरित हुवै– नयन > नयण, पानी > पाणी, धन > धण।

7.7 उपसंहार

सैवट, डिंगल अर पिंगल रौ प्रयोग मध्यकाल में भासा रूप में करीजियौ। डिंगल नैं मरूभासा रै परयाय रूप में अर पिंगल रौ ऊगमणै प्रदेसां सूं मारवाड़ में आय'र बस्यौड़ै ब्रह्म भाटां री कविता री भासा–रूप में प्रचलन रैयौ। डिंगल (उडिंगल) रौ भासा रूप में सबसूं पैला प्रयोग कुशललाभ आपरी रचनां पिंगल शिरोमणि में कर्‌यौ अर पिंगल रौ भासा रूप में पैलौ प्रयोग गुरु गोविन्दसिंह री रचनां 'विचित्र नाटक' में हुयौ– 'भासा पिंगल दी'। पण छंदशास्त्र रै रूढ़ नांव 'पिंगल' रै आधार माथै पिंगल सबद रौ प्रयोग डिंगल सूं जूनौं है। इणी आधार पांण अधिकांश विद्वान डिगळ सबद री उतपत पिंगल रै वजन अर तोल माफिक मानैं।

विद्वान आप–आप रै मतै डिंगल अर पिंगल री उतपत रौ बखाण करृयौ है। विद्वान दोयां नैं भासा री दीठ सूं ज्यादा निरख्यौ–परख्यौ है। पण अपरतिख रूप सूं वै डिंगल अर पिंगल रै सैली रूप नैं ई अंगैजियौ। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी इण दीठ सूं सिरै हैं। साचाणी तौ डिंगल अर पिंगल दोई मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य री सैली विसेस है। डिंगल चारण कवियां री मरूभासा (मारवाड़ी) में लिखीजी कविता रौ साहित्यिक रूप है, जिणमें वीररस री प्रधानता हुवती ही। राजा–महाराजावां (आश्रयदातावां) रौ विरुद गान ई इण कविता रौ लक्षय हौ। इण नैं प्रभावी बणावण सारू अै कवि अपभ्रंस री द्वित्त्व सबदावली अर 'ट' वर्ण प्रधान वरण–व्यवस्था बरतीजता हा। इणरै विपरीत पिंगल सहज, छंदसास्त्रीय गुणां सूं भरपूर, कोमलकान्त पदावली सूं सम्पन्न काव्य सैली ही जिणनैं चारण कवि सरू में भायटा (भाटां) री कविता

मानी पण बाद में उणरी सरसता आद गुणां सूं आकरसित होय'र वै ई इण सैली में काव्य रचना करण ढूकिया। वस्तुतः पिंगल सैली री काव्यभासा ब्रज कोनी कैयी जा सकै। वा ब्रजमिश्रित बोलचाल री राजस्थानी भासा में लिखिजी। इणी सहजता रै कारण आ जनप्रिय व्ही। डिंगल सैली री कविता वरग विसेस री दीठ सूं लिखीजती ही। इण वास्तै आ कविता सामान्य वरग री समझ सूं घणी आघी ही। औ ई खास कारण रैयौ के डिंगल कविता आपरै ई घर में लारै रैयगी।

डिंगल काव्य री कठण सबदावळी पांण डॉ. टीकमसिंह तोमर, डॉ. उदयसिंह भटनागर, शमशेर सिंह नरुला इणनैं बणावटी भासा मानी है। आई गत पिंगल री रैयी। सुनीतिकुमार चटर्जी जैड़ा विद्वान मानैं के पिंगल कदैई जनभासा कोनी रैयी। आं सगळी मानतावां पांण सार रूप में कैय सकां क पिंगल अर डिंगल दोई मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य री साहित्यिक सैलियां ही, भासा कोनी। आपरी लौकिक दीठ रै कारण वा फगत डिंगलगीतां अर उणरी बणगट में तथा राजस्थानी रै खास छंदा लग ई सीमित रैयी, उठैई पिंगल सैली री कविता आपरी गेयता, लयात्मकता सागै जनप्रिय रैयी।

7.8 अभ्यास सारू सवाल

1. डिंगल अर पिंगल रौ सामान्य परिचै देवता हुया बतावौ के अै दोई भासा है कै सैलियां?
2. डिंगल री उतपत मुजब मतां री विरोळ करतां सिद्ध करौ क डिंगल बणावटी भासा है?
3. पिंगल नैं आप ब्रजभासा रौ परयाय मानौ कै सैली? प्रमाणां सागै आपरै मत रौ खुलासौ करौ।
4. डिंगल अर पिंगल सबदां रै इतियास री विगत लिखता हुया डिंगल अर पिंगल सैलियां रै फरक नै समझावौ।
5. पिंगल री उतपत मुजब मानतवां नैं बतळावता सिद्ध करौ कै वा न बणावटी भासा है अर न ई भासा। वा फगत अेक काव्य सैली है।

7.9 संदर्भ– ग्रंथां री पानड़ी

1. सं. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा– हिन्दी साहित्य कोश, भाग–1
2. डॉ. मोतीलाल मेनारिया– राजस्थानी भाषा और साहित्य
3. डॉ. मोतीलाल मेनारिया– राजस्थान का पिंगल साहित्य
4. सं. प्रो. नरोत्तमदास स्वामी– क्रिसन–रूकमणी री वेलि (प्रस्तावना)
5. प्रो. शिवकुमार– हिन्दी साहित्य का इतिहास
6. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी– राजस्थानी साहित्य (वि.सं. 1500–1650)
7. डॉ. गोवर्द्धन शर्मा– डिंगल साहित्य
8. डॉ. जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव– डिंगल साहित्य (पद्य)
9. देवकोठारी– राजस्थानी भाषा और उसकी बोलियां
10. डॉ. नगेन्द्र– हिन्दी साहित्य का इतिहास
11. डॉ. कल्याणसिंह शेखावत–राजस्थानी भाषा एवं साहित्य

इकाई–8

राजस्थानी भासा री व्याकरणगत विसेसतावां–सबद भंडार

इकाई रौ मंडाण

8.1 उद्देस्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 समास

8.4 उपसर्ग

8.5 प्रत्यय

8.6 पर्यायवाची सबद

8.7 (अ) मुहावरा–लोकोक्तियाँ

8.7 (आ) लोकोक्तियाँ

8.1 उद्देस्य

किणी भासा री मूळ अर विसेस ध्वनियां री पिछांण करियां अर सबद भेदां री जांणकारी करियां मात्र सूं कीं घणी पार नीं पड़ै। भासा री खरीकी अर ऊंडी सझ सारू उण भासा रै अकूत सबद भंडार सूं वाकफ होवणौ पड़ै। भासा री झीणी–झीणी बातां जाणियां इज इण रौ बोलण वाळौ आपरी बात नै असरदार ढंग सूं पेस कर सकै। अेक सफळ लेखक सारू तौ घणौ जरूरी है कै वो आपरी बात री पुख्ता प्रस्तुति सारू ओपता सबदां रौ प्रयोग करै। यूं तौ एक अरथ रा बोध करावण वाळा केईका सबद उण भासा में प्रचलित व्है, पण खरौ पारखू जांणै कै सही अर सटीक अर्थ करण सारू किसै पर्यायवाची सबद नै परोटणौ। समान अरथ करणवाळा घणा सबदां री आछी अर ऊंडी पिछांण करणवाळा हुयां इज आंपां अवसर अर प्रसंग रै अनुरूप सटीक सबद रौ प्रयोग कर सकां। इसा सबद प्रयोग भासा रूपी गहणां में जड़ियोड़ा नगीजां ज्यूं लखावै। जिण भांत किणी अेक नगीना रै झड़ियां आमूखण री ओप मगसी पड़ जावै, उणीभांत वाक्य में ओपती ठौड़ प्रयुक्त कीनोड़ै सार्थक सबद री ठौड़ दूजै समानार्थी सबद रौ प्रयोग करियां उण वाक्य रौ सारौ फूठरायौ मिट जावै। इणी भाँत आपरी भासा नै प्रभावकारी बणावण सारू आंपांनै भांत–भांत रा मुहावरां अर लोकोक्तियां रौ भी प्रयोग करणौ पड़ै। अें कहावतां कै सूक्ति–वचन आंपांणी बातनै साफ समझावै अर सुवाणवाळै रै हियै सोळै आंनां सही ढूकै। इण इकाई रौ उद्देस्य औ इज बतावणौ है कै समृद्ध सबद–भंडार, मुहावरां–लोकोक्तियां रै प्रयोग सूं भासा कितरी असरदार बणै। भासा रौ सरुआती (प्रारंभिक) ग्यांन तौ कोरी मोरी जांणकारी करावै, पण भासा रौ व्यावहारिक ग्यांन खाली भासा नै असरदार इज नीं बणावै बल्कि प्रयोक्ता रै सामाजिक–सांस्कृतिक सरूप नै निखारै अर उणरी ओपती–फबती पिछांण कायम करै। सरुआती ग्यांन काम चलाऊ व्है जद कै व्यावहारिक ग्यांन अर सबद भंडार कह्योड़ी बात नै पार पटकै। मिनख–मानवी री अनूठी ओळखांण करावण वाळा भासा तत्त्वां री जांणकारी देवणौ इण इकाई रौ लूठौ उद्देस्य है।

8.2 प्रस्तावना

किणी भासा रौ बोलपगत अर लिखणगत प्रयोग करणवाळा लक्खूं नीं करोडूं व्है, पण आं सगळां नै भासा रै मामलै में अेक जिसी सिद्धाई प्राप्त नीं व्है। जकां नै भाषा–प्रयोग में महारत हासिल व्है, वां रौ पछै कैरणौ ई कांई। इसा लोगां रै पांण इज भासा प्रतिष्ठित व्है अर देस–दिसावरां आ बेल पसरै। इतरौ इज नहीं जिणनै आपरी भासा री बारीकियां री जांणकारी व्है, वो दूजी भासा में कह्योड़ी अनुभव अर ग्यांन री झीणी–झीणी बातां आपरा समाज नै भली भाँत समझाय सकै। रात–दिन बोल–चाल में परोटीजाणियां

सबदां बिचै सामासिक सबदां रै प्रयोग सूं भासा रौ फूठरापौ बधै। जिण मांणस नै आ जांणकारी व्है कै म्हारी भासा रै सबदां में किसा–किसा उपसर्ग अर प्रत्यय जोड़'र नुंवा–नुंवा सबद बणाईज सकै, वो मांणस इज भासा रौ बोलपगत अर लिखणगत प्रभावकारी प्रयोग कर सके। जरूरत मुजब नुंवा सबदां रौ निर्माण कर सकै।

8.3 समास

जिण भाँत 'उपसर्ग' अर 'प्रत्यय' लगावण सूं नूवा सबद बणै, उणी भाँत दो सबदां नै मिळायनै एक नूवै सबद री सरजणा करीजै। वां दो सबदां रै बिचलौ सबद (जे कोई व्है तौ) कै विभक्ति–चिह्न अलोप हुय जावै अर नूवै सुंततर सबद री सरजणा हुय जावै। इण भाँत बण्योड़ा सबदां नै 'समास' कैवै। ज्यूँ–

माता अर पिता – मात–पिता

सुख अनै दुख – सुख–दुख

भूंडौ'र भलौ – भूंडौ– भलौ

आं सबदां माँय सूं 'अर', 'अनै', 'र' इत्याद बिचला सबद अलोप हुयग्या। इण भाँत बण्योड़ा सबद सामासिक पद कैईजै। इणमें पैले सबद नै 'पूर्व पद' अर पछलै सबद नै 'उत्तर पद' कैवै। सामासिक पद रा सबदां नै न्यारा–न्यारा करनै लिखण रै ढंग नै 'विग्रह' कैवै। समास रा छ भेद व्है–

(1) अव्ययी भाव समास।

(2) तत्पुरस समास।

(3) कर्मधारय समास।

(4) द्विगु समास।

(5) द्वन्द्व समास।

(6) बहुब्रीहि समास।

(1) अव्ययी भाव समास – जिण समास में अव्यव सबदां रौ मेळ दूजा सबदां रै साथै व्है, उणनै 'अव्ययी भाव' समास कैवै। इणमें पूर्व पद अव्यय हुया करै। ज्यूं–

जथाजोग, अणचींतौ, अणघड़, निडर।

संज्ञावां अर अव्यव सबदां री पुनरक्ति में भी अव्ययीभाव समास व्है। ज्यूँ–

दिन–दिन, हाथोहाथ, पाखती–पाखती, छिन–छिन।

(2) तत्पुरस समास – जिण सामासिक पद में अर्थ रै हिसाब सूं पूर्वपद गौण अर उत्तर पद प्रधान व्है, उणनै 'तत्पुरस' समास कैवै। ज्यूँ–

देसनिकाळौ, हाथघड़ी, कामचोर, सरणागत।

राजकंवर, आपबीती।

तत्पुरस समास में प्राय पैलौ सबद संज्ञा सबद व्है।

(3) कर्मधारय समास – जिण सामासिक पद में पूर्व पद विसेसण अर उत्तर पद विसेस्य व्है, उणनै 'कर्मधारय' समास कैवै। इणमें एक पद उपमान अर दूजौ पद उपमेय भी हुय सकै। ज्यूँ–

लाल मिरच, चन्द्रमुखी, परमातमा, सज्जन, मझधार।

जठै दूनां ई पद विसेसण इज व्है, उठै ई कर्मधारय समास व्है। ज्यूँ–

काळौ–पीळौ, पतळौजाडौ, खाटौखारौ।

(4) द्विगु समास – जिण सामासिक पद में पहलौ सबद संख्यवाची विसेसण व्है अर पूरै सबद सूं

समूह रौ बोध व्है, उणनै 'द्विगु' समास कैवै। ज्यॉं–

चौमासौ, पचकूटौ, सतसई, त्रिफळा, तिरलोकी, नवरतन।

(5) **द्वन्द्व समास** – जिण सामासिक पद में दोनूं ई पद बराबरी कूंत रा व्है (नीं कोई प्रधान अर नीं कोई गौण), उणनै 'द्वन्द्व' समास कैवै। यां रौ मेळ करावणियौ समुच्चय बोधक अव्यय अलोप हुय जावै। ज्यूँ–

रात–दिन, मात–पिता, अंजळ, साग–रोटी, नर–नार, गुळ–घी।

(6) **बहुब्रीहि समास** – जिण सामासिक पद रा दोनूं ई पदां मांय सूं कोई ई पद प्रधान नीं व्है, उणनै 'बहुब्रीहि' समास कैवै। उण सामासिक पद सूं रूढ अर्थ निकळिया करै। ज्यूँ–

चतुरभुज (विस्णु), तिरनेतर (सिव)

बीसहथी (दुर्गा), लोवड़ियाळी (करणीमाता)

बोध सवाल

1. समास रा कितरा भेद है?
2. बहुब्रीहि समास रा दो दाखळा दौ।
3. अव्ययीभाव समास किणनै कहै?

8.4 उपसर्ग

अैड़ौ कोई सबदांस जकौ सबद सूं पैला जुड़'र एक नूवौ सबद बणावै, वो 'उपसर्ग' मानीजै। सबद सूं पैला उपसर्ग रै जुड़पा सूं कै तौ उण सबद रौ अर्थ बदळ जावै अर कै उण सबद रै अर्थ में कीं भळै विसेसता जुड़ जावै। राजस्थानी रा प्रमुख उपसर्गां री ब़िगत –

अ	–	अदीठ, अभाव अखंड, अछूत (नहीं रै अर्थ में)
अ	–	अपार (घणै रै अर्थ में)
अ	–	अलोप (विसेसता वरधक)
अण	–	अणभै, अणचेत, अणपढ
अप	–	अपजोरौ (अधिक रै अर्थ में)
आ	–	आजीवण (तक रै अर्थ में)
उण	–	उणतीस, उणचाळीस, उणपचास (एक कम रै अर्थ में)
औ	–	औगण, औगत
क	–	कपूत
कठ	–	कठरूप
का	–	कापुरस
कु	–	कुजस, कुचाल, कुठौड़, कुमाणस, कुकरम
दुर	–	दुरजण
दू	–	दूबलौ
ना	–	नाजोगौ, नालायक
नि	–	निबळौ, निडर, निसरमौ

निर – निरगुण, निरधनियौ

नु – नुगरौ

पर – परनार, परदेस, परघर

बड – बडबोर, बडबोलौ,

बि – बिदेस (परायै रै अर्थ में)

बे – बेसरम, बेनामी, बेबात

सं – संतोस, संयम

स – सपूत, सचेत, सपौछौ

सत – सतकार, सतसंग, सतपुरस

सर – सरजीव, सरजळ, सरजीत

सा – सापुरस

सु – सुजस, सुगरौ, सुमाणस

सैं – सैंदेह, सैंजोड़ै

हर – हरघड़ी, हरपळ, हरेक

बोध सवाल

1. उपसर्ग सबद सूं पहला लागै कै पछै ? स्पस्ट करौ।
2. 'औ' उपसर्ग रा हो दाखहा दौ।
3. आं सबदां सूं उपसर्ग न्यारा करौ–

   कुजस, निबळौ, परदेस

8.5 प्रत्यय

जकौ सबदांस सबद रै पछै लाग'र एक नूवौ सबद बणावै अर सबद रै अर्थ में कीं फरक घालै, वो 'प्रत्यय' गिणीजै। ज्यूँ –

खेल सूं खेलाड़ी

लड़णौ सूं लड़ोकड़ौ

प्रत्यय दोय भाँत रा व्है–

(1) कृत

(2) तद्वित

'क्रत' प्रत्यय धातु रै आगै (लड़णौ – लड़ोकड़ौ) जोड़ीजै, इण सारू आं सूं बणणिया सबद 'कृदंत' गिणीजै। धातु रै टाळ दूजा सबदां (संज्ञा, सर्वनाम, विसेसण इत्याद) रै आगै लागणिया प्रत्ययां नै 'तद्धित' प्रत्यय कैवै, राजस्थानी रै कृत अर तद्धित प्रत्ययां री बिगत इण भाँत है–

कृत प्रत्यय

आऊ – खाऊ, उडाऊ, बिकाऊ, टिकाऊ

आक – लड़ाक, खवाक (खावाक) रमाक

आळ – लेवाळ, देवाळ

इयौ – पीवणियौ, खावणियौ, रमणियौ, चोरणियौ

अेल – झगड़ेल, अकड़ेल

आई – लड़ाई, देखाई

आप – मिळाप

आव – चढाव, बचाव

आवौ – पिछतावौ, बुलावौ

त – घड़त, रमत, बचत, खपत

ती – बढती, बधती, घटती

अंदौ – करंदौ, खुरंदौ

ओकड़ौ – चटोकड़ौ, लड़ोकड़ौ, खावोकड़ौ

क – प्रजाळक, भाळक

खंडौ – खावणखंडौ

तद्धित प्रत्यय –

आई – मेहाई, बेदाई

आऊ – गामाऊ

आरौ – बिणजारौ, पूजारौ

आयत – लैणायत, अपणायत, धाड़ायत, सिरायत, बंटायत

आळ – दूधाळ, लाताळ

आंतियौ – पगांतियौ, सिरांतियौ

आपौ – बूढापौ, फूठरापौ

इयौ – मेड़तियौ, सैरियौ

इयांण – सुभियांण

ई – मारवाड़ी, मेवाड़ी, गोडवाड़ी, सूती, रेसमी

ईक – भावीक

ईकौ – पुड़ीकौ, मणीकौ

ईणौ – लाखीणौ, साखीणौ

ईड़ – भैंसीड़, गधीड़, पोठीड़

ऊ – घरू, तनू, बजारू

अेती – गामेती, भाड़ेती, धाड़ेती

अेड़ौ – कामेड़ौ

अेतण – मांनेतण

ओती – बापोती

ओतियौ – पगोतियौ, हळोतियौ

कली – चिड़कली

कौ – बोलकौ, लाडकौ

गत – राजगत, देवगत

गार – बुरीगार

गारौ – छंदागारौ–चाळागारौ, औगणगारौ

गी – मांदगी, सादगी, सिरदारगी

ड़ौ – छोटोड़ौ, मोटोड़ौ, संदेसड़ौ

चारौ – गिनायतचारौ, भाईचारौ

चौ – कूड़चौ

टौ – चोरटौ

दाई – सुखदाई, दुखदाई

दार – अमलदार, रसोईदार

प – भेळप, सैंणप

पणौ – माईतपणौ, मिनखपणौ, टाबरपणौ

यण – गुणियण, कवियण

याळ – सींगड़ियाळ, दाँतड़ियाळ

ल – दागल, सोनल

लौ – आगलौ, लारलौ, पाछलौ

वत (उत)– अमरावत, कूंपावत, जोधावत

वाड़ – भेळवाड़

वाड़ौ – पखवाड़ौ, अठवाड़ौ

ळू – बरसाळू, ऊनाळू, सियाळू

बोध सवाल

1. प्रत्यय कितरी भाँत रा व्है ?
2. 'ळू' प्रत्यय लगाम'र तीन सबद बणाओ।
3. आं सबदां में प्रत्यय न्यारा करौ–
   दागल, कुड़चौ, मांदगी।

8.6 पर्यायवाची सबद

एक जैड़ा अर्थ (समानार्थी) राखणिया सबद 'पर्यायवाची' सबद मानीजै। किणी भाव, विचार कै वस्तु विसेस रौ वर्णन करण सारू केई वार जरूरत मुजब उणरौ बोध करावणिया सबद रा घड़ी–घड़ी प्रयोग करणा पड़ै। अैड़ी ठौड़ जे एक ई एक सबद रौ प्रयोग हर वार करां तौ वो अडोपतौ लागै। इण सारू हर वार सागै इज अर्थ बोध करावणिया न्यारा–न्यारा पर्यायवाची सबद रौ प्रयोग करणौ जरूरी अर वाजब लखावै। पर्यायवाची सबदां रै प्रयोग सूं भासा रै फूठरापै में ई बधापौ व्है। एक ई एक सबद घड़ी–घड़ी बोलण अर सुणण में भूंडौ लागै। अठै कुछेक प्रमुख सबदां रा पर्यायवाची सबद प्रस्तुत है।

अगनी – हुतासण, आग, पावक, अनळ, वैसंनर, मंगळ

आँख – चख, नैण, नेत्र, लोचन, अंबक, कटाख, गो, द्रिग

ऊँट – पाँगळ, करहौ, मईयौ, डगरौ, करभ, जाखोड़ौ, पाकेट

कटारी – त्रिजड़, जमडाढ, अणियाळी, धाराळी, दुधारी, बाढाळ

कमल – पंकज, कुसेसय, पदम, पुण्डरीक, अरविंद, राजीव

किरण – रसमी, मयूख, कर, अंसु, मरीची

गढ – दुरग, किलौ, कोट, भुरजाळ

गाय – गऊ, गौ, धेन, सुरभी, स्रंगणी

घर – गेह, निकेतण, धांम, आलय, सदन, भवन

घोड़ौ – हय, सैंधव, पंखाळ, हैवर, रेवंत, केकांण, पमंग, सैंधव

चन्द्र – इन्दु, मयंक, ससि, सोम, विधु, राकेस, कळानिध

जोधौ – वीर, सूर, सूरमा, जूंझार, सुभट, भड़

तरवार – करवाळ, खांडौ, कृपांण, चन्द्रहास, बिजड़, खाग

तीर – बांण, सर, सायक, नाराच, विसिख, पंखाळ

दिन – दिवस, दिव, दीह, वासर, अह, दिवा

दूध – पय, खीर, गोरस, ऊधस, पुंसर

देह – तन, डील, कलेवर, गात, घट, पिंड, पींजर

धरती – धरा, प्रथमी, ख्योणी, अवनी, मेदणी, इळा, भोम, वसुधा

धनुस – चाप, कोदंड, पिनाक, सरासण, सारंग

नदी – तटणी, तरंगणी, परबतजा, नीझरणी

पवन – वायु, वात, मारुत, समीरण, प्रभंजण

पहाड़ – भाखर, डूंगर, परबत, अनड़, गिर, भूधर, सैल

पंखेरू – विहग, खग, दुज, अंडज, पंछी

पाणी – जळ, नीर, उदक, पय, सलिल, तोय

फूल – पुसप, प्रसून, कुसम, सुमन, पुहुप

बकरी – बोकड़ी, छाळी, अजा, टाट, छागी

पांणी – जळ, नीर, उदक, पय, सलिल, तोय

बादळ – मेघ, बळाहक, अभ्र, जळमंडळ, जळहर

बांदरौ – मरकट, लंगूर, वानर, कपि, माकड़, कीस, पलवंग

बुद्धि – बुध, धी, मेधा, मति, समझ, अकल, प्रागना

भंवरौ – चंचरीक, त्रभाग, कूंत, नेजा, बरछौ

मिनख – मानव, नर, आदमी, मनुज, म्रतलोकी

मूरख – जड़, सठ, मूढ, मतमंद, गिंवार, अबूझ

मोर – केकी, मयूर, सिखी, कळापी, सारंग

राजा – भूपाळ, अधपत, महीपत, भूप, नरपत, नरिंद

रात – जांमणि, निसा, खिणदा, खिपा, विभावरी, रजनी, तमसा

रूंख – बिरछ, ब्रख, विटप, द्रुम, झाड़

वन – अटवी, विपिन, कांतार, कानन, अरण्य

स्त्री – नार, अबळा, वळभा, अंगना, महिळा, कांमण, रमणी, तिरिया

समुद्र – उदधि, सिंधू, सागर, रेणायर, अरणव, लहरीरव

सरप – फणी, विखधर, उरग, पनंग, अही, व्याळ, कुंडळी, नाग

सिंघ – म्रगपत, विखधर, लंकाळ, केसरी, कंठीर, बाघ, मयंद

सूर – दाढाळौ, एकल, गिड़, दांतड़िपाळ, वाराह

सूरज – भांण, पतंग, आदीत, अरक, हंस, मारतंड, दिवाकर

सैना – कटक, चतुरंगणी, वाहणी, फौज, दळ, चमू

हाथी – दंती, दंताळ, गैबर, सूंडाळ, कुंजर, मैंगळ, कुंभी, वयंड

हिरण – हरिण, म्रग, कुरंग, सारंग, मिरगलौ, ऐण

ब्योम – अकास, गिगन, अंबर, अंतरीख, नभ, गैण, आभौ

बोध सवाल

1. किसा सबद पर्यायवाची सबद मांनीजै ?
2. घर सबद रा च्यार पर्यायवाची सबद लिखौ।

8.7 (अ) मुहावरा–लोकोक्तियाँ

भासा भावनावां अर विचारां नै प्रगट करण रौ साधन है। आंपां कदै ई तौ साव–सीधै–सादै तरीकै सूं आंपां री बात कैय देवां पण कदै ई बात नै असरदार बणावण सारू मुहावरा या कै लोकोक्तियां रौ प्रयोग करां हां।

मुहावरौ मतलब–अभ्यास। अभ्यासवस एक अभिव्यक्ति कदै ई कदै ई एक खास अर्थ देवण लागै। वो वाक्यांस मुहावरौ मांनीजै, जकौ आपरौ साधारण अर्थ छोड'र एक खास अर्थ रौ बोध करावै। मुहावरै रौ कदै ई सुतंतर प्रयोग नीं व्है, जद कै लोकोक्ति (कहावत) रौ घणी ई वार सुतंतर प्रयोग हुय जावै। मुहावरै रौ प्रयोग तौ वाक्य में इज व्है। प्रयोग में आवतां ई मुहावरौ तौ वाक्य रौ अंग बण जावै पण लोकोक्ति सदाई एक उपवाक्य रै रूप में रैवे। लोकोक्ति (कहावत) 'लोक' रै केई बरसां रै अनुभव रौ फळ है। इणरौ साच लोक रौ साच है।

मुहावरा

अकल रै लारै लट्ठ लियां फिरणौ – बेवकूफी रा काम करणा

अंजल ऊठणौ – संबंध टूटणौ

अंगूठौ दिखावणौ – कीं नीं देवणौ

आँख दिखावणौ – रीस भरी दीठ सूं देखणौ

आखियां खुलणी – समझ आवणी/असलियत रौ पतौ लागणौ

आग लगावणौ – झगड़ौ करावणौ

आग सूं खेलणौ – खतरनाक काम करणा

आटै दाळ रौ भाव ठा लागणौ – कठिन स्थिति रौ ग्यान हूवणौ

आडै हाथां लेवणौ – खरी खरी – सुणावणौ

आसमांन सूं बातां करणी – घमंड करणौ

आभौ टोपली जित्तौ लागणौ – अणूंतौ घमंड राखणौ
ईंट सूं ईंट बजावणी – जोरदार जुद्ध करणौ
उल्लू हाथ हूवणौ – कृपा हूवणी
ऊपर हाथ करणौ – हार मांनणी
कमर टूटणी – निरास हूवणौ
कमर सीधी करणी – थोड़ी सी ' के नींद लेवणी
काळजौ ठंडौ करणौ – संतुस्ट करणौ
कान ऊभा करणौ – चौकस हूवणौ
कान खावणौ – अणूंती बातां करणी
कान भरणौ – किणी रै खिलाफ ऊंधी पाधरी बातां करणी
काम आवणौ – मारियौ जावणौ
काम तमाम करणौ – मारणौ
कुए भांग पड़णौ – सगळां री बुद्धि भिस्ट हूवणी
कुत्ते री मौत मरणौ – बुरी मौत मरणौ
खून सूखणौ – अणूंतौ डरणौ
गळौ काटणौ – नुकसान पुगावणौ
गुड़ गोबर एक करणौ – काम बिगाड़णौ
घर माथै लेवणौ – अणूंतौ हाकौ करणौ
गोडा देवणौ – नुकसान करणौ
गोडा टेकणौ – हार मानणी
चकमौ देवणौ – धोखौ देवणौ
चीकणौ घड़ौ हूवणौ – कीं असर नीं हूवणौ
चाँदी रा जूत लगावणा – आर्थिक नुकसान करणौ
चूड़ियां पैरणी – डरपोक बणणौ
चैन री बंसी बजावणी – मौज करणी
छक्का छुडावणौ – बुरी हालत करणी, भगावणौ
जमी माथै पग नीं पड़णौ – घमंड हूवणौ
जहर घोळणौ – किणी रै खिलाफ भिड़ावणौ
झक मारणौ – बेकार में बखत खराब करणौ
झाँसौ देवणौ – धोखौ देवणौ
ठिकाणै लगावणौ – मारणौ
डकार जावणौ – माल हड़पणौ
तूं तूं मैं मैं करणौ – आपस में झगड़णौ
थूक'र चाटणौ – कैय'नै नटणौ

दिन काटणा – समय बितावणौ

दूध रौ दूध अर पाणी रौ पाणी करणौ – अदल न्याव करणौ

धाक जमावणौ – रौब जमावणौ

नमक मिरच लगावणौ – भळै कीं भैळ'र बात कैवणी

नाक रगड़णौ – इज्जत राख लेवणी

नाक राखणौ – गरज करणी

नाक रगड़णौ – इज्जत राख लेवणी

पाग उछाळणौ – बेइज्जत करणौ

पाँचू आंगळियां घी में हूवणौ – हर तरह सूं लाभ

पाणी पीय'र जात पूछणौ – काम करनै पछै उण माथै विचार करणौ

पीठ मोड़णौ – रणखेत/लड़ाई सूं भागणौ

पौ बारै पच्चीस हूवणौ – खूब लाभ हूवणौ

बात बणावणौ – झूठ बोलणौ

बीड़ौ उठावणौ – कठिन काम करण री जिम्मेवारी लेवणी

मन रा लाडू खावणा – बेकार री कल्पना करणी

रफू चक्कर हूवणौ – दौड़ जावणौ

हवा लागणौ – प्रभाव हूवणौ/असर हूवणौ

हाथ पसारणौ – मांगणौ

हाथ पीळा करणौ – ब्याव करणौ

होका–पाणी बंद करणौ – जात बारै करणौ

8.7 (आ) लोकोक्तियाँ

अकल बड़ी कै भेंस – सरीर–बळ सूं बुध बळ बत्तौ

अपणी करणी पार उतरणी – जैड़ौ करौला वैड़ौ भरौला

उलटौ चोर कोतवाळ ने डंडै – अपराधी निरदोस माथै दोस लगावै

ऊँची दुकान फीका पकवान – बारलौ दिखावौ

एक म्यांन में दो तलवार – विरोधी सभाव वाळां रौ साथ

ऊँखली में माथौ दियां पछै धमकां सूं कैड़ौ डर – जोखम में कूदियां पछै काणं रौ डर

आँधा पीसै'र कुत्ता खाय – मूरख री कमाई दूजा उडावै

आँधा में कांणौ राजा – नाजोगां में थोड़ै घणै जांणकार री ई पूछ व्है

किया सो कांम अर भजिया सो राम – सुभ काम फट देणी रा करणौ

कठै राजा भोज अर कठै गंगलौ तेली – घणौ फरक

कोयलै री दलाली में काळा हाथ – भूंड रै टाळ कीं लाभ नीं

घर रौ भेदू लंका ढावै – आपस री फूट भूंडी व्है

चमड़ी जाय पण दमड़ी नीं जावै – अणूती कंजूसी

च्यार दिन री चाँदनी फेर अंधारी रात – थोड़ा दिनां रौ सुख

चीकणै घड़ै पाणी नीं ठैरै – बेसरम माथै कीं असर नीं व्है

पाँचू आंगळियां ई बराबर नीं व्है – सब एक जैड़ा नीं व्है

नमै जकां नै नारायण मिळै – नरमाई लाभकारी है

पाणी पीजै छांण, गुरू कीजे जांण – सोच–समझ'र काम करणौ

पईसै बिना बुध बापड़ी – अर्थ तंत्र में पईसै री इज पूछ है

उधार दीजे–दुसमण कीजे – उधार देवणौ आछौ काम नीं

देस री गधी पूरब री चाल – आपरी असलियत भूल'र दूजां री नकल करणी

ऊगसी जकौ आथमसी – मौत जरूर आवणी है

मीठौ बोलै मोरियौ आखां नै गिट जाय – कपटी–मूंडै मीठौ व्है

डाकणियां रै किसा गा – दुस्ट किणी संबंध नै नीं गिणै

हाथां कीना कांमड़ा, किण नै दीजै दोस – खुद रा कर्‌या कामां रौ दोस दूजा नै देवणौ बिरथा है

भागयै भूत री लंगोटी ई भली – जठै कीं आस नीं व्है, उठै कीं ई मिळै वो ई चोखौ

नाम मोटा दरसण खोटा – झूठौ जस

धांमीणी रा किसा दांत गिणीजै – मुफत री चीज रौ माप जोख नीं करणौ

बोध सवाल

1. मुहावरा अर लोकोक्ति रौ फरक स्पस्ट करौ।
2. पई सै बिना बुध–बापड़ी–कहावत रौ अरथ बतावो।
3. आमौ टोपली जित्तौ लागणौ–मुहावरा रौ सार्थक वाक्य–प्रयोग करौ।

सहायक पोथ्यां

1. राजस्थानी व्याकरण – सीताराम लाळस
2. राजस्थानी भाषा और साहित्य – मोतीलाल मेनारिया
3. राजस्थानी सबदकोस भाग–1 (भूमिका) – सीताराम लाळस
4. राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति – डा. कल्याणसिंह शेखावत
5. राजस्थानी साहित्य (व्याकरण रचना – भाग – 2) डा. सोहनदान चारण

इकाई संख्या – 9

राजस्थानी भासा री व्याकरणगत विसेसतावां – ध्वनि अर सबद रूप

इकाई रौ मंडाण :

9.0 उद्देस्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 राजस्थानी वर्णमाला

9.3 सबद रा भेद

9.4 सर्वनाम

9.5 विसेसण

9.6 क्रिया

9.7 काल

9.8 अविकारी सबद

9.9 सारांस

9.10 बोध सवाल

9.11 सहायक पोथ्यां

9.0 उद्देस्य

परिवार अर समाज रै बिचाळै रैवतां थको मिनख नै आपसरी में बोल–बतळावण करणी पड़ै। समाज, राष्ट्र अर आखी दुनिया में उण मिनख रौ दूज मान सम्मान व्हैं, जिणरी रांणी अर लेखणी ओपती, ठावी, मिनखी चारै री मठोठ लियां अर लोक–सुहावणी व्है। भासा रै पांण इज मिनख चौरासी लख जूणां में सिरै गिणीजै। भासा अेक मात्र इसौ साधन है, जकौ मिनख नै मिनख सूं, एक समाज नै दूजै समाज सूं अर अेक देस नै दूजा देस सूं जोड़ै। इणरै मारफत मांनखौ आपरै हियै रा भाव अर मस्तक रा विचार दूजां सांमी प्रगटावै। आ बात सोळै आंना साची लखावै कैजे भासा नीं हूवती तौ मिनख हियौ फूटनै मर जावतौ। मिनखी जात जितरौ विकास कर सकी है, उणमें केई कारणां में अेक महताऊ कारण भासा भी रही है। भासा रै अभाव में आपरा सुख–दुख कींकर दरसावतौ ? बूढा–बडेरां रा अनुभवां रौ लाम भासा रै पांण इज उठाइजियौ है। सार सरूप बात आकै समाज अर देस ई नीं, आज रै इण सकळ संसार नै इतरी हदभाँत विकसित करण में भासा इज सै सूं लांठी अर घणी मदत करी है। इतरौ इज नीं, देस रौ विकास अ पतन भासा रै उठाव अर उतार साथै हदभाँत जुड़ियोड़ौ गिणीजै। भासा प्रयोग सूं इज मिनख–मानवी रै संस्कारां री अर उणरै ग्यांन री ओळखांण व्है। सही– सुद्ध अर खरीकौ बोलणौ तद तक असंभव व्है, जद तक आंपांनै उण भासा रै व्याकरण री खरी–खरी जांणकारी नौ व्है। किसी ध्वनि कै किसौ आखर कीकर बोलीजै अर लिखीजै, इणरौ ग्यांन व्याकरण सूं इज व्है। संसार री सगळी भासावां रा व्याकरणां रा नियम–उपनियम बण्योड़ा है, वां नै समझनै इज आपां भासा रौ ठावकौ अर असरदार प्रयोग कर सकां। व्याकरण रै नियमां री जांणकारी रै अभाव में प्रयोग किनोड़ी भासा असुद्ध तौ व्है इज, अनर्थकारी भी सिद्ध हुय सकै।

भाषा री जिणनै सही पकड़ व्है, वो इज सबदां–अरथां रौ साचौ अर खरौ पारखू। उणरौ समाज अर देस–दिसावर में घणौ कुरब–कायदौ, मान–सम्मान। भासा री ही अर खरीकी पकड़ ई व्याकरण सूं सीखीजै अनै सबदां–अरथां री सीमावां अरवां री परख ई व्याकरण रै पांण जांणीजै। ध्वनियां रौ

सही–सही उच्चारण, सबदां रौ असरदार प्रयोग अर वाक्यां री खरीकी बणावट इत्याद अै सै बातां व्याकरण रै ग्यांन टाळ नीं सीखीजै। इण इकाई रौ उद्देश्य पाठकां नै राजस्थानी भासा बाबत जांणकारी देवणी है।

9.1 प्रस्तावना

राजस्थानी भासा रै बोलणगत इजनीं लिखणगत प्रयोगां रा ई घणा जूना दाखळा मिळै। शौरसेनी अपभ्रंश रै नागर रूप सूं जकी भासा विकसित व्ही, वा सरूपोत रा केई बरसां तक 'मरु गुर्जरी' रै रूप में जांणीजी। देस भेद रै पांण भासा–रूपां में ई फरक आवणौ सरू व्हियौ अर इजरौ अेक रूप आज गुजरात प्रदेस में विकसित हुयनै गुजराती नांव सूं पिछांणी जै अर दूजौ रूप राजस्थान में विकसित हुयनै राजस्थानी रै नांव सूं ओळखीजै।

राजस्थानी रौ प्रचलन सरू सूं इज पुरांणी रजवाड़ी रियासतां में बोलण अर लिखण दोनूं ई रूपां में रयौ है। राजकीय आदेस–फरमान अर पट्टा–पखाना इणी भासा में जारी करीजता। न्यारी–न्यारी रियासतां रा कवीसरां री रचनावां भी इणी'ज राजस्थानी में रचीणती। वो बखत छोटी–छोटी रजवाड़ी रियासतां रौ हौ अर वां रा सासक छोटी–मोटी बात'नै मूंछ रौ सवाल बणाय'नै आपसरी में लड़ता–झगड़ता इन रैवता। मतीरै री बेल अर मतीरै रै खातर ई अठै जुद्ध हुया है। औ इज कारण है कै राजस्थानी रौ घणकरौ जूनौ साहित्य जुद्ध विसयक है। जुद्ध वर्णन री ओपती सबदावळी खातर कवीसरां अेक प्रकार री काव्य–सैली, अपणाई जका आज लग ई 'डिंगळ' नांव सूं जांणीजै। इण काव्य–भासा में सृजित जुद्ध–काव्य री जोड़ रौ जुद्ध–काव्य संसार री किणी ई भासा में सृजित नीं व्हियौ है। पद्य री भाँत राजस्थानी में ई गद्य साहित्य घणा जूना नमूना मिळै। ज्ञात–ख्यात, पट्टा–पखांना, तांबापत्र, सिलालेख, टीका–टब्बा–बालावनोध इत्याद रूपां में राजस्थानी गद्य रौ सरजण व्हियौ। आधुनिक राजस्थानी में पद्य रै साथै गद्य री सगळी विधावां (निबंध, कहाणी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र इत्याद) में साहित्य सरजपा हुय री है। जद तक भासा री प्रकृति अर उणरी बणगट री बारीकियां री जांणकारी नीं व्है, तद तक साहित्यिक कृतियाँ रै मूळ अर्थ अर वां रै संदेस नै अंगेजण में घणी–घणी अबखायां लखावै। ध्वनि, सबंद अर अरथ रै मरम री पिछांण उण भाषा रै व्याकरण नै जांणियां इज हुय सकै। दूजा सबदां में कैय सकां कै व्याकरण भासा अर साहित्य रूपी भवन में प्रवेस सारू सिरै दरवाजै सरूप व्है।

व्याकरण में सगळां सूं पहला उण भासा री ध्वनियां री ओळखांण जरूरी व्है। इण इकाई में राजस्थानी वर्णमाला री ध्वनियां रै उच्चारण बाबत विचार करीजियौ है। राजस्थानी में इसी कुछेक ध्वनियां रौ उच्चारण भी व्है, जकी ध्वनियां दूजौ आधुनिक भारतीय आर्य भासावां में नीं मिळै। सबदां रा भेद बाबत पुख्ता व्याकरणिक जाणकारी हुयां इज वां सबदां हंदा अरथ सावजोग पणै सूं घाड़ीजै।

9.2 राजस्थानी वर्णमाला

आखै संसार में भाँत–भाँत री भासावां अर बोलियां बोलीजै। हरेक भासा री ध्वनियां री आपरी न्यारी–न्यारी लकब है। आंपां कंठ, जीभ, ताळवौ, दाँत, होठ अर नाक री मदत सूं भाँत–भाँत री ध्वनियां बोल सकां। राजस्थानी भासा री घणकरी ध्वनियां संसार री दूजी भासावां री ध्वनियां सूं मेळ खावै। राजस्थानी री कुछेक खास ध्वनियां है, ज्यां रै तोल री ध्वनियां संसार री दूजी भासावां में नीं मिळै। इण पाठ में राजस्थानी री सामान्य अर खास ध्वनियां री जाणकारी उच्चारण (बोलणगत) री दीठ सूं दिरीजैला। उच्चारण रै हिसाब सूं हरैक भासा में दोय भाँत री ध्वनियाँ **हुया करै**–

(1) स्वर ध्वनियां।

(2) व्यंजन ध्वनियां।

राजस्थानी भासा में स्वर ध्वनियां 'बिलटी' अर व्यंजन ध्वनियां 'कक्कौ' नाम सूं जांणीजै।

राजस्थानी री वर्णमाला नीचै मुजब है–

स्वर–ध्वनियां

अ आ इ ई उ ऊ,

ए (अे) ऐ (अै) ओ औ

अं (अ)

कुल स्वर 11 है।

व्यंजन ध्वनियां

क् ख् ग् घ् ङ् (ङ्)

च् छ् ज् झ् (ञ्)

ट् ठ् ड् ढ् (ढ़्) ण्

त् थ् द् ध् (ध़्) न्

प् फ् ब् (ब़्) भ् म्

य् र् ल् (ळ्) व्

(श्) (ष्) स् (स्) ह्

कुल व्यंजन 30 हैं ?

ध्वनियां रा उच्चारण–स्थान

भासा री हरेक ध्वनि रौ सही–सही उच्चारण मूंडा सूं व्है। आपणा फैंफड़ां सूं छोडियोड़ी हवा (प्राण–वायु) जीभ, कंठ, ताळवौ, दाँतां, होठां कै नाक सूं, कठै ई न कठै ई, थोड़ी' क सी रुक–थम'र मूंडा सूं बारै आवै अर वा इज हवा ध्वनि–विसेस रै रूप में बोलीजै–सुणीजै। अठै जांणण–जोग बात आ है कै स्वर–ध्वनियां रै उच्चारण में तौ फैफड़ां सूं छोडियोड़ी हवा बिगर किणी रुकावट रै सास री नळी रै रस्तै सूं बारै निकळै, पण व्यंजन ध्वनियां रै उच्चारण में आंपां इण हवा (प्राण–वायु) नै (गळै सूं लेय'र होठां तांई) कठै ई न कठै मामूली सी'क जेज सारू (पलक झपकै जित्ती जेज सारू) रोक'र पछै मूंडा काढां हां। जठै थोड़ी क जेज सारू सास रोकीजै, वो इज ध्वनियां रौ उच्चारण स्थान मांनीजै। बोलण–गत (उच्चारण) रै माप–तोल सूं राजस्थानी ध्वनियां रा उच्चारण स्थान इण मुजब है–

वर्ण	**उच्चारण स्थान**	**वर्ण–ध्वनि रौ नाम**
(1) अ, आ, (ऑ), ह् क् वर्ण अर (विसर्ग)	कंठ	कंठ्य
(2) इ, ई च् वर्ग अर य्, (श)	ताळवौ	ताळवी / ताळव्य
(3) ट् वर्ग, र् (ष्) (ळ)	मूर्द्धा / मुरधनी	मूर्धन्य / मुरधन
(4) त् वर्ग, ल्, स्	दंत	दंत्य / दंती
(5) उ, ऊ, अर प् वर्ग	होठ	ओष्ठ्य
(6) अं, अँ, (ङ्), (ञ), ण् न, म्	नाक	नासिक्य
(7) ए (अे), ऐ (अै)	कंठ ताळवौ कंठ–ता़लव्य	कंठ–ताळवी /
(8) ओ, औ	कंठ–होठ	कंठोष्ठ्य
(9) व्	दाँत–होठ	दंत्योष्ठ्य

ऊपर दरसाया आखरां रै टाळ राजस्थानी में अै विसेस आखर ई मिळै–

ड़, ढ़, ं, ध़, ब़, ऴ, स़।

ड़

वर्णमाला लिखती वेळा औ वर्ण 'क' वर्ग रै साथै लिखीजै। अजकालै इण वर्ण रौ प्रयोग हिन्दी में भी हूवण लाग्यौ है। राजस्थानी में इण वर्ण रै प्रयोग रा दाखळा (उदाहरण) घणी ई जूनी पोथियां में मिळै। इण रौ ('ड़' रौ) उच्चारण करती बखत जीभ रै आगलै भाग नै थोड़ौ क मोड़नै ताळवा रै ऊपरला भाग सूं सपरस करावणौ पड़ै। इण कारण इणनै द्विस्पृष्ट (दोय स्पर्स) ध्वनि कैवै। इण ध्वनि रा कीं सबद–

गड़बड़, बड़बड़ावणौ, गाबड़, तावड़ौ, झूपड़ौ। औ वर्ण कदै ई सबद रै सरू में नीं आवै।

ढ़

वर्णमाला में औ वर्ण 'ट' वर्ग रै साथै लिखीजै। हिन्दी रै वर्ण 'ढ़' (ज्यॉं–पढ़ना, गढ़) अर राजस्थानी रै वर्ण 'ढ़' रै उच्चारण में घणौ फरक है। इणरौ उच्चारण नीं तौ 'ड' ज्यूं व्है अर नीं ई 'ढ' ज्यूं व्है। इण (ढ़) रौ उच्चारण करती बखत जीभ रै आगलै भाग नै थोड़ौ'क मोड़णौ पड़ै। जीभ रै आगलै मुड़ियोड़ै भाग रौ सपरस जद मूर्द्धा सूं व्है, तद राजस्थानी री विसेस ध्वनि 'ढ़' रौ उच्चारण व्है। इण ध्वनि रा कीं सबद–

ढूंढ = कमर रै नीचलौ भाग

ढ़ांढौ = पसू

ढ़ावौ = किनारौ (नदी कै नाडी रौ)

ध़

वर्णमाळा में औ वर्ण 'त' वर्ग रै साथै लिखीजै। आ ध्वनि 'द' अर 'ध' रै बिचली आवाज सूं बोलीजै। इणनै बोलती बखत जीभ रौ आगलौ पूरौ सीधौ भाग मूर्द्धा रौ सपरस करै। 'द' अर 'ध' दोनूं ई ध्वनियां रै बोलण में तौ जीभ री नौक दाँतां रौ सरपस करै, पण 'ध़' बोलण में जीभ रौ आगलौ पूरौ सीधौ भाग मूर्द्धा रौ सपरस करै। (विसेस–जीभ रौ आगळौ मुड़ियोड़ौ भाग मूर्द्धा रौ सपरस करौ तद तौ 'ढ़' ध्वनि रौ अर जीभ रौ आगलौ पूरौ सीधौ भाग मूर्द्धा रौ सपरस करौ तद 'ध़' ध्वनि रौ उच्चारण व्है।) 'ध़' ध्वनि रा कीं सबद–

(धाव) ध़ाव = पसू

ध़ाब = दबाव

ध़ैग = ऊपर सू नीचौ कूदणौ

'द' अर 'ध' सूं 'ध़' ध्वनि रै फरक रौ दाखळौ (उदाहरण)

दड़ौ = मोटी गेंद

ध़ड़ौ = ताकड़ी रा दोनूं बराबर करण सारू राखीजण वाळी

कीं ई चीज, वर्ग

ध़ड़ौ = रेत रौ टीबौ

ब़

लिखत में ओ वर्ण 'प' वर्ग रै साथै लिखीजै। आ ध्वनि 'ब' अर 'भ' रै बिचली आवाज सूं बोलीजै। 'ब' अर 'भ' बोलती बखत दोनूं होठां नै भेळा करणा पड़ै। 'ब' बोलण सारू दोनूं होठां नै भेळा करनै थोड़ी क जेज सारू मामूली सौ'क जोर देय'र भींचणा ई पड़ै। राजस्थानी रा कुछेक विद्वान् 'व'रै नीचै मींडी (व़) लगाय'र लिखण री राय देवै, पण सही बात आ है कै आ ध्वनि 'ब', 'भ' रै नैड़ली ध्वनि है, 'व' रै नैड़ली नीं है। 'व' तौ दन्त्योष्ट्य ध्वनि है। 'ब' 'भ' अर 'ब़' तीनूं ई ध्वनियां रै उच्चारण में फरक तौ अवस है, पण तीनूं ई ओष्ठ्य ध्वनियां है। इण वासतै राजस्थानी रै इण विसेस वर्ण नै 'ब़' रै नीचै मींडी (ब़)

लगाय'र इज लिखणौ चाहीजै। 'ब' ध्वनि रा कीं सबद–

बात = कथा, कथन

बगत = समै

बाटकी = कटोरी

'ब' अर 'भ' सूं 'ब' ध्वनि रै फरक रौ दाखळौ (उदाहरण)

(1) बाड़ौ = कसेलौ सवाद

भाड़ौ = किरायौ

बाड़ौ = घर रै लारै पसुवां नै बांधण री ठौड़

(2) बाट = लापसी सारू दळियोड़ा गऊँ

भाट = एक जात

बाट = रस्तौ, इंतजार, तोलण में काम आवणिया बाट।

ळ

राजस्थानी भासा में 'ल' तौ दंत्य ध्वनि है अर 'ळ' मूर्धन्य ध्वनि है। गुजराती अर मराठी में ई 'ल' सूं न्यारी 'ळ' ध्वनि है। केई लिखारा 'ल' रै नीचै मींडी (ल) लगाय'र लिखणी री राय देवै। 'ळ' ध्वनि रा कीं सबद–

बोळौ = बहरौ

झाळ = लपट

'ल' अर 'ळ' रै फरक रौ दाखळौ (उदाहरण)

कालौ = पागल

काळौ = सांवलौ रंग

स

इणरौ उच्चारण कठै ई तौ संस्कृत रै विसर्ग () दाई ध्वनि–रहित (अघोसवत्) व्है अर कठै ई 'स' अर 'ह' रै बिचलै सुर सूं व्है । इण ध्वनि रा कीं सबद

सीरौ = हलवौ

सोगरौ = बाजरी री रोटी

'स' अर 'ह' सूं 'स' ध्वनि रै फरक रै दाखळौ (उदाहरण)

सार = चौपड़ री गोटी

हार = माळा

सार = देखभाळ

राजस्थानी वर्णमाला में औ तीन वर्ण ई मिळै

क्ष त्र ज्ञ

आं तीनूं ई वर्णा में व्यंजन सूं व्यंजन रौ मेळ हुयौ है। इण वासतै आं वर्णां नै संयुक्त व्यंजन भी कैय सकां। व्यंजन सूं व्यंजन रै मेळ में केई वार तौ उणरै रूप (लिखावट) में मामूली सौ' क फेरफार व्है (ज्याँ–न्याव, स्रस्टि) अर केई वार उणरौ पूरौ र पूरौ रूप (लिखावट में) बदळ जावै। क्ष, त्र, ज–अै तीनूं ई अैड़ा संयुक्त व्यंजन है, ज्याँ रौ रूप (लिखावट में) सफा ई बदळग्यौ है।

आं संयुक्त व्यंजनां रौ मूळ रूप इण भाँत है–

क् + ष् = क्ष

त् + र् = त्र

ज् + ञ् = ज्ञ

(ग् + य् = ज्ञ)

आं तीनूं ई संयुक्त वर्णां रौ घणकरौ प्रयोग संस्कृत तत्सम सबदां (नक्षत्र, क्षमा, त्रिलोकी, यज्ञ, ज्ञान, कक्ष–पुराणी हस्तलिखित पोथियां में अै सबद मिळै) में इज मिळै।

आधुनिक राजस्थानी में 'क्ष री ठौड़ 'छ' (क्षमा – क्षमा), 'त्र' री ठौड़ पूरौ 'त' अर 'र' (त्रिलोकी – तिरलोकी) अर 'ज्ञ' री ठौड़ 'ग्य' (ज्ञान – ग्यांन) लिखीजै।

9.3 सबद रा भेद

लोक–बेवार अर व्याकरण ग्रंथां मुजब सबद उणनै कैवै, जकौ एक कै एक सूं सल्ला (ज्यादा) आखरां रै मेल सूं बणै अर जिणरौ एक सुतंतर अर्थ व्है। आखरां रौ अैड़ौ मेळ, जिणरौ कोई अर्थ नीं निकळै, सबद नीं गिणीजै। ज्यॉं–

राकोतूनीसपा

औ आखरां रौ मेळ तौ है, पण इण सूं कोई अर्थ नीं निकळै, इण सारू इण मेळ नै सबद नीं कैय सकां। पण जिणरौ अर्थ निकळै, वो सबद अवस गिणीजै। ज्यॉं–

मॉं, छोरौ, गाय, घर, गंगा, देवता, सावजोग।

आं सगळा सबदां सूं निस्चित अर्थ रौ बोध व्है। सगळा जीवधारियां, पदारथां, धरमां रा नाम अर वां रा आपसरी रा संबंध सबदां रै मारफत इज प्रगट व्है सकै। एक पूरै भाव कै बिचार नै भली–भाँत अर सही रूप सूं प्रगट करण सारू न्यारी–न्यारी भाँत रा केईका सबदां रौ प्रयोग करणौ पड़ै। विद्वानां वाक्य में प्रयोग रै हिसाब सूं सबदां रा आठ भेद गिणाया है।

(1) संज्ञा

(2) सर्वनाम

(3) विसेसण

(4) क्रिया

(5) क्रिया–विसेपण

(7) समुच्चय–बोधक

(8) विस्मयादिबोधक

अ. विकारी सबद ऊपर लिखिया आठ भाँ रा सबदां मांय सूं संज्ञा, सर्वनाम, 'विशेषण' अर क्रिया री जांणकारी करावणियां सबदां नै 'विकारी सबद' भी नाम दीरिजियौ है अर दूजा सबदां नै 'अविकारी सबद' नाम दीनौ है। विकारी सबदां रौ रूप लिंग, वचन अर काळ रै अनुरूप बदळतौ रहै, जद कै अविकारी सबदां रै रूप माथै लिंग, वचन अर काळ रौ कीं असर नीं व्है। इसा अविकारी सबदां 8 नै 'अव्यय सबद' भी नाम दीनौ है।

9.3.1 संज्ञा

किणी चीज–बुस्त, ठौड़,–ठायै, जीव–जिनावर कै भाव–विसेस रौ बोध करावणिया सबद संज्ञा–सबद मानीजै। सबद–कोसां मुजब संज्ञा रौ अर्थ है–नाम।

संज्ञा रा भेद

संज्ञा रा अै तीन भेद मानीजै।

(1) व्यक्तिवाची संज्ञा

(2) जातिवाची संज्ञा

(3) भाववाची संज्ञा

(1) व्यक्तिवाची संज्ञा – व्यक्तिवाची संज्ञा सबदां सूं किणी खास आदमी कै चीज–बुस्त कै ठौड़–ठायै रौ अर्थ बोध व्है। ज्यूँ–

(1) **गौरव** अर **विवेक** पक्का बेली है।

(2) **लूणी** रौ पांणी खारौ है।

(3) **मथाणिया** री मिरचां जग–चावी है।

(4) **राजस्थान** रा वीर देवतावां ज्यूं पूजीजै।

ऊपर लिखियोड़ा वक्यां में गैरा लिखियोड़ा सबदां नै ध्यान सूं पढौ। यां में 'गौरव' अर 'विवेक' खास आदमियां रा नाम है। 'लूणी' खास नदी रौ नाम है। 'मथाणिया' अर 'राजस्थान' खास–खास ठौड़ाँ रा नाम है। इण सारू अै सगळा रेखाकिंत सबद व्यक्तिवाची संज्ञा गिणीजै।

(2) जातिवाची संज्ञा – जका सबदां सूं किणी वर्ग कै जात री सगळी चीजां कै जीवां रौ बोध व्है, वे जातिवाची संज्ञा सबद गिणीजै। ज्यूँ–

(1) आ **पोथी** म्हारी है।

(2) **गायां** चरै है।

(3) आज रौ **मिनखं रूंखड़ां** रौ दुसमण है।

(4) सैना रै सालीणै जलसै में **टाबरां** नैं नीं आवण दैला।

आं वाक्यां में गैरा लिखियोड़ा सगळा सबद (पोथी, गायां, मिनख, रूंखड़ा, सैना, टाबरां) किणी एक खास जीव कै चीज रौ अर्थ–बोध नीं करावै। अै सगळा ई सबद पूरै समूह रौ अर्थ–बोध करावै, इण वासतै अै जातिवाची संज्ञा सबद है।

(3) भाववाची संज्ञा – जका सबदां सूं गुण, दोस, दसा, अवस्था हालत कै भाव रौ बोध व्है, वे भाववाची संज्ञा सबद गिणीजै। ज्यूँ–

(1) सगळा ई कायरता नै भूंडै।

(2) गांधीजी सत्य पर अहिंसा रा पुजारी हा।

(3) क्रांतिकारी प्रतापसिंह बारठ री टणकाई नै कुण पूग सकै।

(4) जोबन च्यार दिन रौ पांवणौ गिणीजै।

यां वाक्यां में गैरा लिखियोड़ा सगळा सबद (कायरता, सत्य, अहिंसा, टणकाई, जोबन) किणी गुण–दोस अर अवस्था रौ बोध करावै, इण वासतै अै भाववाची संज्ञा सबद है।

9.3.2 लिंग

सबद–कोसां में 'लिंग' सबद रौ अर्थ दियौड़ौ है– चिह्न, पहचाण, परचै। सबद रै जिण रूप सूं आ ठा लैगै कै वो पुरस जात रौ है कै स्त्री जात रौ है, उणनै व्याकरण में 'लिंग' गिणै। ज्यूँ–

नर (पुरसवाची सबद)

नारी (स्त्रीवाची सबद)

राजस्थानी में लिंग रा दोय भेद गिणीजै–

(1) पुरसवाची पुल्लिंग

(2) स्त्रीवाची स्त्रीलिंग।

पुरस जात रौ बोध करावणिया सगळा सबद पुल्लिंग में गिणीजै। जियाँ–

बाप, घोड़ौ, दिन, नगर।

स्त्री जाति रौ बोध करावणिया सगळा सबद स्त्रीलिंग में गिणीजै। ज्यूँ–

माँ, घोड़ी, रात, नगरी।

लिंग–निर्धारणकीं जांणण जोग बातां

प्राणी–वाची संज्ञा सबद जे पुरस रौ बोध करावै तौ पुल्लिंग अर जे स्त्री रौ बोध करावै तौ स्त्रीलिंग गिणीजै। ज्यूँ–

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
छोरौ	छोरी
सिंघ	सिंघणी
सेठ	सेठाणी

देस, परबत, समन्दर, धातु, महीणां अर बार रौ बोध करावणिया घणकरा सबद पुल्लिंग व्है। जियाँ–

भारत, राजस्थान, हेमाळौ, आडावळौ, अरब सागर, सोनौ, लोह, चैत, फागण। सोम, मंगळा।

पण लंका, चाँदी, काती इणरा अपवाद है। अै स्त्री लिंग सबद है।

नदी, तिथ, भासा अर लिपि रौ बोध करावणिया घणकरा सबद स्त्रीलिंग व्है। ज्यू–

गंगा, लूणी जोजरी, बीज तीज, सातम, हिन्दी, राजस्थानी, देवनागरी, महाजनी।

'णो', 'पणौ', 'आव', 'पौ', प्रत्यय लागण सूं बणण वाळा संज्ञा सबद प्राय पुल्लिंगव्है।

हँसणौ, कूदणौ, टाबरपणौ, भलापणौ, बचाव, बूढापौ, मोटापौ।

अणूती मोटी, कोजी अर बेडौळ (डौळ बायरी) भारी भरकम जड़ वस्तुवां रौ बोध करावण वाळा संज्ञा सबद प्राय पुल्लिंग व्है। ज्यूँ–

लक्कड़, रस्सौ, खाडौ।

मिनखां अर जीव– जिनावरां में समुदाय कै समूह रौ बोध करावणिया कुछेक संज्ञा सबद पुल्लिंग व्है अर कुछेक सबद स्त्रीलिंग व्है। संघ, कुटंब, कडूंबौ, दळ, टोळौ, समाज इत्याद पुल्लिंग सबद है अर सभा, सैना, फौज, भीड़, सरकार इत्याद स्त्रीलिंग सबद है।

डील रै अंगां रा नामां में माथौ, कान, गळौ, मूंड़ौ, नाक, होठ, दाँत, हाथ, पग, अंगूठौ, नख, घांटौ, लिलाड़, गोडौ, ठोलौ, पेरवौ, इत्याद पुल्लिंग सबद है। आँख, जीभ, मूंछ, बाँह, कळाई, गाबड़, नाभी, टाँग, नस, नाड़ी, आँगळी, साथळ इत्याद स्त्रीलिंग सबद है।

(घांटौ, लिलाड़ पर गोडौ पुल्लिंग सबदां रा घांटी, लिलाड़ी, अर गोडी स्त्रीलिंग सबद ई मिळै। ज्यूँ–

संतू कूकरियै री घांटी भांग दी।

मूळियै री इत्ती'क लिलाड़ी में सासू दही कींकर दियौ व्हैला।

मेह री छांट लागतां ई ऊँट गोडी ढाळ दी।)

जका सबदां रै अंत में 'ई' री मात्रा व्है, वेघणकरा सबद स्त्रीलिंग वाची इज व्है। ज्यूँ– नाड़ी, चोटी, खेती, टोपी, घड़ी, चरी, पोथी, दरी इत्याद सबद, पण मोती, घी, पांणी अर दही सबद अपवाद है।

अै ईकरांत हूवतां थका ई पुल्लिंग वाची सबद है।

जका सबदां रै अंत में 'ऊ' री मात्रा व्है, वै घणकरा सबद पुल्लिंग वाची व्है। ज्यूँ–

ब्याळू, बरसाळू, झाड़ू, नींबू, आँसू, धुराऊ, रताळू, गेरू, हेताळू, इत्याद।

पण तोरू, बेळू, बेकलू, इणरा अपवाद है अर स्त्रीलिंग सबद है।

अैड़ा घणा ई संज्ञा सबद है, जकां रै लिंग–भेद रौ बोध वां रै जोड़ा सूं इज व्है। ज्यूँ–

पुल्लिंग	**स्त्रीलिंग**
मिनख	लुगाई
मोर / मोरियौ	ढेलड़ी
बळद	गाय
घेटौ	गाडर / घेटी
बाप	माँ
सूर	भूंडण
बकरौ	छाळी / बकरी
ऊँट	साँयड
गोवणियौ	चरी

नीचै लिखिया सबद स्त्रीलिंग में इज है–

चील, जूं, लीख, लट, ईली, उदेई, सेह, बाटबड़, तिलोर, कोयल, चमचेड़।

अै सबद पुल्लिंग में इज व्है–

ममोलियौ, पपइयौ, माछर, आगियौ, गग्गू, पुटियौ।

योगिक नै समास सबदां रै लिंग रौ निर्धारण आखरी सबद रै मुजब व्है। ज्याँ–

माँ–बाप	–	बाप सबद रै मुजब	–	पुल्लिंग
म्रगछाळा	–	छाळा सबद रै मुजब	–	स्त्रीलिंग
गोमूत	–	मूत सबद मुजब	–	पुल्लिंग
पौसाळ	–	साळ सबद मुजब	–	स्त्रीलिंग
धरम साळ	–	साळ सबद मुजब	–	स्त्रीलिंग

व्यवसाय अर जातिवाची ईकारान्त पुल्लिंग सबदां रै आगै 'अण' प्रत्यय लगावण सूं स्त्रीलिंग सबद बणै। इणमें 'ई' रौ लोप हुय जावै। ज्यूँ–

माळी	–	मालण
चौधरी	–	चौधरण
धोबी	–	धोबण
तेली	–	तेलण

बिसनोई – बिसनोयण

दरजी – दरजण

प्राणिवाची, संबंधवाची अर जातिवाची अकारांत सबदां रै आगै 'अण' 'णी', आणी'कै'ई' प्रत्यय लगायां स्त्रीलिंग सबद बणै। ज्यूँ–

सेठ – सेठांणी

राजपूत – राजपूतांणी

चारण – चारणी

सुथार – सुथारी

भील – भीलणी

बींद – बींदणी

गुर – गुरांणी

नाग – नागणी/नागण

बाघ – बाघण

निरादर अर लघुतावाची पुल्लिंग सबदां रै अंत रौ 'इयौ' हटाय'र सबद में'की' प्रत्यय जोड़ण सूं स्त्रीलिंग सबद बणै। जियाँ–

टोगड़ियो – टोगड़की

मिनियौ – मिनकी

कुतियौ – कुतकी

बिरमा – बिरमांणी

इन्द्र – इन्द्रांणी

रुद्र – रुद्रांणी

भोजन में लांगटियौ, खीच, फलकौ, फाफरौ, सीरौ, लाडू, सोगरौ, बटियौ, खाखरौ इत्याद सबद पुल्लिंग है अर रोटी, थूली, राब (राबड़ी) लापसी, जळेबी, घाठ, खीर, दाळ इत्याद सबद स्त्रीलिंग है।

9.3.3 वचन

रात दिन बोलचाल री भासा में वचन–बात कथन कै कौल–बाचां रौ अर्थ– बोध करावै पण व्याकरण में इण सबद (वचन) सूं संख्या रौ बोध व्है।

सबद रै जिण रूप सूं उणरी गिणती (एक कै अनेक) हूवण रौ बोध व्है, व्याकरण में उण मैं 'वचन' कैवै। राजस्थानी भासा में वचन दोय भाँत रा है।

(1) एकवचन

(2) बहुवचन

एक मिनख कै एक चीज रौ बोध करावणिया सबद एक वचन मांनीजै। ज्यूँ–

गाय, घोड़ौ, चील, बेटी, तारौ, नाडी।

दोय कै दोय सूं घणा जीवां अर चीजां रौ बोध करावणिया सबद बहुवचन मांनीजै ज्यूँ–

गायां, घोड़ा, चीलां, बेटियां, तारा, नाडियां।

एक वचन सूं बहुवचन बणावण रा नियम

(1) 'अकारातं' एक वचन सबदां नै 'आंकारांत' करण सूं–

घर	–	घरां	खेत	–	खेतां
बात	–	बातां	रात	–	रातां
चारण	–	चारणां	जाट	–	जाटां

(2) 'आकारांत' एक वचन सबदां नै 'आंकारांत' कै 'वांकांरात'करण सूं–

देवता देवतावां

राजा राजाआं/राजावां

मा/माता माआं/मावां माताआं/मातावां

(3) एक वचन 'ईकरांत' सबदां नै ईकरांत करनै अंत में 'यां' कै 'याँ' जोड़ण

लोटी लोटियां

रोटी रोटियां

नाडी नाडियां

घोड़ी घोड़ियाँ

पोथी पोथियाँ

मैड़ी मैड़ियाँ

(4) एक वचन 'ऊकारांत' सबदां नै 'उकारांत' करनै अंत में 'आं' 'कै' 'वां' जोड़ण सूं

ढालू ढालुआं/ढालुवां/ढालवां

लू लुआं/लुवां

जूं जुआं/जुंवां

गग्गू गगगुआं/गग्गुवां

केई 'ऊकारांत' एक वचन सबदां माँय सूं 'ऊ' री मात्रा आगी करणी पड़ै। पछै सबद रै आगै 'आ' कै 'वां' जोड़ण सूं बहुवचन बणै। ज्यूँ–

डाकू डाकवां

तोरू तोरवां/तोरआं

साधू साधवां

(5) 'औकारांत' एक वचन पुल्लिंग संज्ञा सबदां नै 'आकारांत' करण सूं–

घोड़ौ घोड़ा

गधौ गधा

रसतौ रसता

रावळौ रावळा

कूंडौ कूंडा

छोरौ छोरा

सोगरौ सोगरा

फलकौ फलका

9.4 सर्वनाम

संज्ञा रै बदळै (संज्ञा री ठौड़) जका सबदां रौ प्रयोग व्है, वां नै सर्वनाम कैवे। जे एक ई एक संज्ञा सबद वाक्य में घड़ी–घड़ी आवतौ रैवै तौ वो घणौ अडोपतौ लागै। इण सारू वाक्य में फूठरापौ लावण वासतै संज्ञा सबदां री ठौड़ सर्वनाम सबदां रै प्रयोग री जरूरत रैवै। नीचै लिख्या वाक्यां रा दाखळां (उदाहरणां) सूं सर्वनाम सबदां री जरूरत अर वां रै महत्त्व रौ ठा लाग जासी।

नरपत अर्जुन ने कह्यौ – म्हैं जोधपुर जाऊं हूँ। थूँ ई म्हारै साथै हाल परौ।

अर्जुन पडूतर दीनौ – थारै काम व्है तौ थू जा परौ। आज म्हारा संगी–साथी आंपां रै गाँव आवैला। म्हनै वां रै साथै बेरै जावणौ है, क्यूंकै आज रै दिन काकोसा व्हांनै बेरै आवण सारू निमतिया है।

आ नरपत अर अर्जुन रै आपस री बातचीत है। दोनूं ई जणा खुद सारू म्है, म्हारै, म्हारा, म्हनै, म्हांनै, दूजै सारू थूं, थारै, दूनांरै सारू आंपां अर संगी–साथियां सारू वां–इत्याद सबदां रौ प्रयोग कीनौ है। जे यां सबदां रौ ठौड़–ठौड़ प्रयोग नीं हूवतौ अर घड़ी–घड़ी'नरपत' अर 'अर्जुन' सबद री पुनरावृत्ति इज हूवतौ रैवती तौ यां वाक्यां रौ रूप दूजी भाँत रौ हूवतौ। ज्यां–नरपत अर्जुन नै कह्यौ– नरपत जोधपुर जावै है। अर्जुन ई नरपत रै साथै चालै परौ।

अर्जुन पडूत्तर दीनौ – नरपत रै काम व्है तौ नरपत जावै परौ।

आज अर्जुन रा संगी–साथी नरपत अर अर्जुन रै गाँव आवैला। अर्जुन नै अर्जुन रै संगी–साथियां रै साथै बेरै जावणौ है, क्यूं कै अर्जुन रा काकोसा आज रै दिन अर्जुन नै अर अर्जुन रा संगी–साथियां नै बेरै आवण सारू निमतिया हा।

अैड़ा वाक्य घणा अडोपता लागै। अैड़ा वाक्य नीं तौ बोलण में चोखा लागै अर नीं ई सुणण में। फूठरै अर ओपतै वाक्य रै गठण सारू सर्वनाम सबदां रौ प्रयोग वाजब अर जरूरी लखावै। सब रा नाम बणण री सामरथ राखण रै कारण इज, आं रौ नाम–सर्वनाम है। सर्वनामा रा अै पाँच भेद है–

(1) पुरसवाची सर्वनाम

(2) निस्चयवाची सर्वनाम

(3) अनिस्चयवाची सर्वनाम

(4) प्रस्नवाची सर्वनाम

(5) संबंधवाची सर्वनाम

(1) पुरसवाची सर्वनाम – जिण सर्वनाम सबद रौ प्रयोग किणी व्यक्ति रै वासतै व्है, उणनै 'पुरसवाची' सर्वनाम कैवै। इणरा तीन भेद है–

(क) उत्तम पुरसवाची – खुद सूं संबंध राखण वाळा सबद उत्तम पुरसवाची सबद गिणीजै ज्याँ– म्हैं म्हारै घरै जाऊँला। (म्हैं, म्हारौ, म्हारा, म्हांरा, म्हारै, म्हे, म्हांनै, म्हनै, आंपां, आंपा रै, आंपारा, आंपारी।)

(ख) मध्यम पुरसवाची – बोलणियौ कै लिखणियौ सुणण वाळै कै पढणवाळै सारू जका सर्वनाम सबदां रौ प्रयोग करै, वे मध्यम पुरसवाची सर्वनाम गिणीजै। ज्यूँ–

हरी गोपाळ नै कह्यौ – थूं थारै रस्ते जा।

(थूं, थारै, थारा, थनै, थे, थांरा, थांनै, थारै, आप, आपरै, आपरा, आपरी)।

ऊपरला सर्वनाम सबदां मांय सूं थे, थांरा, थारै रौ प्रयोग घणकरी वार तौ बहुवचन में इज व्है, पण जद आंपां किणी नै आव – आदर देय बतळावां तद यां सर्वनाम सबदां अर आप, आपरा, आपरै, आपरी इत्याद सबदां रौ प्रयोग एक वचन में भी करां। ज्यूँ–

माधू मामै नै पूछियौ – थे (आप) कद आया ?

(ग) अन्य पुरसवाची – बोलणियौ के लिखणियौ सुणण–पढण वाळै रै टाळ जद किणी बीजै आदमी सारू जका सर्वनाम सबदां रौ प्रयोग करै, वां सबदां नै अन्य पुरसवाची सर्वनाम कैवै। ज्यूँ–

हिंगळाज सिवदत्त नै पूछियौ– वे कुण जावै है ?

(वो, वे, वा, उण, उणां)

(2) निस्चयवाची सर्वनाम – जका सर्वनाम सबदां सूं नैड़ा कै आगा मिनखां अर पदारथा रौ निस्चै बोध व्है, वां नै निस्चयवाची सर्वनाम कैवै। ज्यूँ–

औ कुड़तौ राम रौ है।

वे थारी गायां है।

(औ, आ, अै, वो, व, वे, यौ, यां, बो, बां)

(3) अनिस्चयवाची सर्वनाम – जका सर्वनाम सबदां सूं किणी आदमी कै पदारथ रौ निस्चै बोध नीं व्है (अनिस्चै कै संसय री स्थिति), वां नै अनिस्चयवाची सर्वनाम कैवै। ज्यूँ–

कोई तौ खेत री रुखाली करतौ व्हैला।

म्हैं किणी रौ थोरौ नीं करूंला।

(कोई, किणी, की)

(4) प्रस्नवाची सर्वनाम – जका सर्वनाम सबदां सूं किणी आदमी कै पदारथ रै बाबत प्रस्न करीजै, वां नै प्रस्नवाची सर्वनाम कैवै। ज्यूँ–

घर में कुण बड़ियौ ?

इण थैली में कांई है ?

(कांई, कुण, किण, क्यूं, कठै)

'कांई–कांई' री पुनरक्ति विविधता रौ बोध करावै। ज्यूँ–

थूं आज कांई–कांई माल खायनै आयौ है ?

(5) संबंधवाची सर्वनाम – जका सर्वनाम सबद आगला कै लारला छोटा वाक्यां में आय' र दूजा छोटा वाक्यां रा संज्ञा – सर्वनाम सबदां सूं संबंध जोड़ै, वां नै संबंधवाची सर्वनाम कैवै। ज्यूँ–

थे चावौ जकी वो नीं हूवण दैला।

बेटा हूसी जकां रै बहुवां आसी।

(जकौ, जकी, जक, जकै, जैड़ौ, जैड़ी, जैड़ा)

9.5. विसेसण

संज्ञा के सर्वनाम री विसेसता वाळा सबद 'विसेसण' गिणीजै। ज्यूँ–

काबरकी गाय **घणौ दूध दै।**

सिवरामै सूं रूंखड़ै रौ **ऊँचलौ** डाळौ नीं बाडीजै।

झूमर **अधसेर** घी लायौ।

आ पोथी नंदू री है।

ऊपरला वाक्यां में 'काबरकी', 'घणौ', 'ऊँचलौ', 'अधसेर' अर आ 'सबद' गाय', 'दूध', 'डाळौ', 'घी', अर

'पोथी' सबदां री विसेसता बतावै, इण कारण अै सबद विसेसण है।

विसेसण जका संज्ञा कै सर्वनाम सबदां री विसेसता प्रगट करै, वां संज्ञा कै सर्वनाम सबदां नै व्याकरण में 'विसेस्य' कैवै। ऊपरला वाक्यां में 'गाय', 'दूध', डाळौ', 'घी', अर 'पोथी', सबद विसेस्य हैं।

घणकरी वार तौ विसेसण विसेस्य सूं पैली लिखीजै, पण केई वार विसेसण रौ प्रयोग विसेस्य रै पछै व्है। ज्यूँ–

(1) खौड़ौ हिरण चरै है। (विसेसण–विसेस्य)

(2) म्हारै धड़ै में नरपत जोगौ है। (विसेस्य विसेसण)

विसेस्य सूं पैली लिखीजणियां विसेसणां नै 'विसेस्य–विसेसण' अर विसेस्यरै पछै लिखीजणियां विसेसणां नै 'विधेय विसेसण' कैवे।

वरतमान में व्याकरण रा लिखारा एक नूवौ नाम 'प्रविसेसण' ई बतावै। अैड़ा सबद, जका विसेसण री विसेसता में बढोतरी करै, प्रविसेसण गिणीजै। ज्यूँ–

सुसीला साव साजी–सूरी है।

रुघनाथ अणूंतौ भलौ मिनख है।

आं वाक्यां में 'साव' साजी–सूरी' विसेसण अर 'अणूतौ' सबद 'भलौ' विसेसण में और ई बधापौ करै, इण कारण अै सबद (साव, अणूतौ) प्रविसेसण है।

विसेसण रा इण मुजब च्यार भेद मांनीजिया है–

(1) गुणवाची विसेसण

(2) परिमाणवाची विसेसण

(3) संख्यावाची विसेसण

(4) सर्वनामी (संकेतवाची) विसेसण।

(1) गुणवाची विसेसण – संज्ञा कै सर्वनाम रै किणी गुण (गुण, दोस, रंग–रूप, डील, डौळ, अवस्था देस–काळ, सवाद, गंध इत्याद) रौ बोध करावणिया सबद 'गुणवाची' विसेसण मांनीजै। ज्यूँ–

जोगौ, दातार, सीधौ, समझणौ, सचबोलौ, भलौ	(गुण)
नाजोगौ, नीच, कपटी, रीसोकड़ौ, ठोठ, भूंडौ	(दोस)
गोरौ, काळौ, फूठरौ, पीळौ	(रंग–रूप)
गोळ, चौरस, चौड़ौ, लांबौ	(डील–डौळ)
रोगी, निरोगौ, दूबळौ, बळी, गरीब, अमीर	(अवस्था)
आगलौ, लारलौ, ऊपरलौ, नीचलौ, थिर	(ठौड़–ठायौ)
भारतीय, मारवाड़ी, नेपाळी, पुराणौ, नूवौ, जूनौ	(देस–काळ)
मीठो, बाड़ौ, फीकौ, लूणियौ	(सवाद)
सुगंध, बासतौ,	(गंध)

(2) परिमाणवाची विसेसण – जका सबद किणी संज्ञा कै सर्वनाम री माप–जोख बाबत विसेसता प्रगट करै, वां नै 'परिमाणवाची' विसेसण कैवे। परिमाणवाची विसेसण दोय भाँत रा व्है–

(क) निस्चित परिमाणवाची विसेसण – चार सेर तेल, दो मण गऊँ, बीस गज कपड़ौ, पाँच रिपिया, एक तोळौ सोनौ।

(ख) अनिस्चित परिमाणवाची विसेसण – थोड़ौ'क दूध, अणूंतौ घी, कम चावळ, इत्ता' क

दांणा।

(विसेस–निस्चित परिमाणवाची विसेसण सबदां में 'आं' प्रत्यय लगायां वो सबद अनिस्चित परिमाणवाची विसेसण हुय जावै। ज्यूं–माणां बंध दूध, घड़ां रै भराव पांणी।)

(3) **संख्यावाची विसेसण** – जका सबद संज्ञा कै सर्वनाम री संख्या कै तादाद रौ बोध करावै, वे 'संख्यावाची' विसेसण गिणीजै। यां रा ई दो भेद है– एक निस्चित संख्यावाची अर दूजौ अनिस्चित संख्यवाची।

निस्चित संख्यावाची रा नीचै मुजब केई भेद है–

(क) पूरणांक वाची–एक, दोय, तीन, सौ, हजार।

(ख) अपूरणांक वाची– पाव, अधसेर, पूण, डौढ, ढाई।

(ग) क्रमवाची – पैलौ, दूजौ, तीजौ, चौथौ, पांचमौ।

(घ) आवृत्ति वाची – इकेवड़ौ, बेवड़ौ, तेवड़ौ (तेलड़ौ), चौलड़ौ।

(ङ) समूह वाची–सातूं ई बैनां, पाँचू ई पीर, तीनूं ई देव।

(च) हरवाची – हर पळ, हर घड़ी, हरेक मिनख।

अै अनिस्चित संख्यावाची विसेसण गिणीजै–

थोड़ा'क घर, **कुछेक** मिनख, **अणूंती** भीड़, सैंग जीव।

कैई वार निस्चित संख्यावाची सबदां में 'आं' प्रत्यय जोड़ण सूं अनिस्चित संख्यावाची विसेसण बणै। ज्यूँ–बीस, बीसां, सैकड़ा, सैकड़ां, लाख, लाखां।

अठै खास जांणण जोग बात आ है कै अै सबद (कीं, सब सैंग, थोड़ा, घणा इत्याद) अैड़ा है, जका परिमाणवाची अर संख्यावाची दोनूं तरै रा विसेसणां में गिणीजै। इणमें खास ध्यान राखण री बात आ है कै जे विसेस्य गिणीजण जोग है तद उणरै विसेसण नै संख्यावाची विसेसण मानणौ अर जे विसेस्य तोलण जोग है तो उणरै विसेसण नै परिमाणवाची विसेसण गिणणो। ज्यूँ–

घणा सारा आंबा – संख्यावाची विसेसण

घणा सारा घी–तेल – परिमाणवाची विसेसण

(4) **सर्वनामी (संकेतवाची) विसेसण** – जद कोई सर्वनाम सबद विसेसण सबद रै रूप में प्रयुक्त व्है, तद उणनै 'सर्वनामी' कै 'संकेतवाची' विसेसण कैवै। ज्यूँ–

आ गाय रामेसर री है।

वो आदमी सूतौ है।

इण पोथी रौ मोल पाँच रिपिया है।

यां वाक्यां में 'आ', 'वो', अर 'इण' सर्वनामां सूं 'गाय', 'आदमी' अर 'पोथी' रौ विसेस परिचय मिळै, इण खातर अै सर्वनामी कै संकेतवाची विसेसण है। आं रा भेद इण भाँत है–

(क) निस्चयवाची सर्वनामी विसेसण – आ गाय, वो आदमी, इण पोथीद्य

(ख) अनिस्चयवाची सर्वनामी विसेसण – कोई टाबर, कीं काम।

(ग) प्रस्नवाची सर्वनामी विसेसण – कुण छोरौ, किसौ हिरण।

(घ) संबंधवाची सर्वनामी विसेसण – जकी लुगाई, जकौ पाठ।

9.6 क्रिया

जका सबदां सूं किणी काम रै करण कै हूवण रौ बोध व्है, वे सबद 'क्रिया' सबद मांनीजै। ज्यूँ–

ऊदौ रमै है।

हिंगळाज पोथी पढैला।

थेली फाटगी।

आं वाक्यां में गैरा लिखियोड़ा, सबदां सूं किणी–न किणी विधान (रमणौ, पढणौ, फाटणौ) रौ अर्थ–बोध व्है। इम सारू अै सबद क्रिया रा उदाहरण है।

घणकारी वार तौ क्रिया रौ करता संज्ञा सबद इज होवै, पण केई वाक्यां में सर्वनाम अर विसेसण सबद ई क्रिया रौ करता व्है। ज्यूँ–

टाबर डागळै माथै ऊभौ है। (संज्ञा)

वो ग्यौ। म्हे सिनान करां। (सर्वनाम)

बावळौ रात सैंग नीं सूवै। (विसेसण)

वाक्य में क्रिया रौ घणौ महत्त्व व्है। वाक्य में क्रिया सबद हुयां इज वो पूरौ वाक्य गिणीजै। क्रिया सबद रै अलोप रैवण सूं वाक्य रौ सही अर खरौ अर्थ नीं निकळै। जे कोई इतरौ इज वाक्यांस–घणौ चौखौ–बोलै, तौ इण सूं खरीकौ अर्थ नीं निकळै, इणनै 'घणौ चोखौ करियौ'कै घणौ चोखौ हुयौ', बोलियां इज खरीकौ अर्थ–बोध व्है।

धातु – क्रिया सबद रै मूळ रूप नै धातु कैवै। धातु रै आगै 'णौ' जोड़ण सूं क्रिया रौ सामान्य रूप बणै। ज्यूँ–

पढ पढणौ

लिख लिखणौ

केई वार यां सामान्य क्रिया सबदां रौ प्रयोग संज्ञा रै रूप में ई करीजै। ज्यूँ–

तिरणौ तन्दुरस्ती वासतै गुणकारी है।

पढणौ चोखौ काम है।

आं नै क्रियार्थक संज्ञा कैवै।

हरेक क्रिया में दो बातां व्है– 1. कार्य 2. फळ।

धोबी कपड़ा धौवै।

इण वाक्य में 'धौवै' क्रिया है। अठै कपड़ा गीला करणा, साबू लगावणौ, थापां देवणौ, निचोड़णौ, इत्याद कार्य है, अर गीलौ हूवणौ, साबू लगाईजणौ, थापीजणौ अर निचोड़ीजणौ इत्याद क्रिया रा फळ है। धोवण रौ विधान (कार्य व्यापार) धोबी करै अर उण विधान रौ फळ कपड़ा माथै पड़ै। क्रिया रौ करण वाळौ 'करता' गिणीजै अर जिण सबद माथै क्रिया रौ फळ पड़ै वो 'करम' गिणीजै। धोबी 'करता' अर कपड़ा 'करम' है।

क्रिया रा भेद – विधान (कार्य व्यापार) अर फळ रै हिसाब सूं क्रिया रा दो भेद मानीजै।

(1) अकरमक क्रिया

(2) सकरमक क्रिया

(1) अकरमक क्रिया – आं रौ फळ किणी दूजा पदारथ माथै नीं पड़ै। इण कारण अै क्रियावां बिना 'करम' री क्रियावां गिणीजै अर आं नै 'अकरमक क्रिया' नाम दिरीजै। ज्यूँ–

लिच्छू हँसै।

गोपू सूतौ है।

पँखेरू उडै।

आं वाक्यां में 'हँसै', 'सूतौ', अर 'उडै' अकरमक क्रिया है।

(2) **सकरमक क्रिया** – सकरमक क्रियावां रौ फळ 'करम' माथै पड़ै। ज्यूँ–

टाबर पांना रमै है।

ऊँट फळगटी खावै है।

चन्दू कुड़तौ लायौ।

आं वाक्यां में 'रमै', क्रिया रौ फळ' पांना', 'खावै क्रिया रौ फळ' फळगटी' अर लायौ' क्रिया रौ फळ' 'कुड़तौ' सबदां माथै पड़ै। यां क्रियावां (रमै, खावै, लायौ) रै काम रौ फळ करता (टाबर, ऊँट, चन्दू) सूं निकळ'र पांना' 'फळगटी' अर 'कुड़तौ', इत्याद दूजा पदारथां माथै पड़ै। इण सारू अै सकरमक कियावां है। सकरमक कियावां में केई कियावां अैड़ी ई व्है, जकां रा दो करम व्है। अैड़ी कियावां नै व्याकरण में (द्विकर्मक) दुकरमक नाम दिरीजियौ है। ज्यूँ–

लालू कुत्तै नै रोटी दी।

म्है पेमू नै पोथी पढाई।

थूं थारै मिंतर नै गीत सुणाया।

यां वाक्यां में 'दी' किया रा 'कुत्तौ' अर 'रोटी', 'पढाई'किया रा'पेमू' अर 'पोथी', 'सुणाया' किया रा 'मिंतर' अर 'गीत' दो दो करम है। इण सारू अै दुकरमक कियावां गिणीजै।

अकरमक–सकरमक री पिछांण – सकरमक कियावां री पिछांण सारू किया सबद सूं पैली 'कांई' अर 'किणनै' प्रस्नवाची सबद लगाय'र ठा करणौ चाहीजै। जे इण प्रसनां रौ कीं उत्तर मिळै, तद तौ वे कियावां सकरमक है अर नींतर अकरमक है। (कोई' क अपवाद हुय सकै।)

अकरमक कियावां री संख्या कम इज है। ऊठणौ, पड़णौ, जागणौ, बैठणौ, सूवणौ, मरणौ, डरणौ, फिरणौ, लुटणौ, दौड़णौ, लाजणौ इतयाद कियावां रौ घणकरौ प्रयोग अकरमक रूप में इज व्है।

क्रिया रा भेद – संरचना री दीठ सूं किया रा नीचै मुजब भेद है–

(1) **नाम–धातु किया** – मूळ धातवा रै टाळ–संज्ञा, सर्वनाम, विसेसण सबदां सूं बणण वाली धातुवां नै 'नाम–धातु' कैवै। यां सूं इज 'नाम धातु' कियावां बणै। ज्यूँ–

अरथ अरथावणौ

काट काटीजणौ

पीड़ पीड़ीजणौ

सूखौ सूखीजणौ

अपणौ अपणाणौ

बड़–बड़ बड़बड़ाणौ

(2) **संयुक्त–किया** जकी किया दो कै दो सूं घणी कियावां रै मेळ सूं बणै, वा संयुक्त–किया' गिणीजै। ज्यूँ–

प्रदीप पढ चुकौ।

सोवन चौपड़ रम लियौ।

वो हँसण लागौ।

अनुपम हालतौ–हालतौ खावै।

(3) प्रेरणार्थक क्रिया– जिण क्रिया नै करता खुदोखुद नीं करनै किणी दूजै नै प्रेरणा देय'र करावै, वां नै 'प्रेरणार्थक क्रियावां कैवै। ज्यूँ–

अरोगणौ अरोगावणौ

सुणणौ सुणावणौ

पढणौ पढावणौ

सीखणौ सीखावणौ

(4) पूर्वकालिक क्रिया– जद करता किणी एक क्रिया नै पैली करनै पछै दूजी क्रिया करै, तद पैलड़ी क्रिया 'पूर्वकालिक' क्रिया गिणीजै। ज्यूँ–

गौरव पढनै सूवैला।

हेतू घरै जायनै रोटी खावैला।

हाळी हळ घड़नै घरै आवैला।

जोसीजी टीपणौ देखनै बतावैला।

9.7 काळ

क्रिया रै जिण रूप सूं उणरै हूवण रै समय रौ बोध व्है, उणनै व्याकरण में 'काळ' नाम दिरीजै। काळ रा अै तीन भेद है–

(1) वरतमान काळ

(2) भूत काल

(3) भविसत काळ।

(1) वरतमान काळ – जकौ काम उणी'ज बखत में हुय रह्यौ है, इण भाव रौ बोध करावणिया सबद 'वरतमान काळ' रा बोधक व्है। ज्यूँ–सूवटौ बोलै है।

वरतमान काळ रा ई न्यारा–न्यारा तीन भेद मांनीजिया है–

(क) सामान्य वरतमान– प्रदीप पोथी पढै।

(ख) अपूरण वतरमान – प्रदीप पोथी पढ रह्यौ है।

(ग) संदिग्ध वरतमान – प्रदीप पोथी पढतौ व्हैला।

(2) भूत काळ – क्रिया रै जिण रूप सूं क्रिया–व्यापार रै संपूरण हुय जावण रौ बोध व्है, वो 'भूत काळ' मांनीजै। ज्यूँ–

दरसथ रोटी खायली।

भूतकाळ रा छ न्यारा–न्यारा भेद इण भाँत है–

सामान्य भूत – म्हैं पोथी पढली।

आस भूत – म्हैं पोथी पढली है।

अपूरण भूत – म्हैं पोथी पढतौ हौ।

पूरण भूत – म्हैं पोथी पढली हो।

संदिग्ध भूत – म्हैं पोथी पढली व्हूंला।

हेतुहेतुमद भूत – जे म्हनै थोड़ी ई बखत मिळती तौ म्हैं पढली हूवती।

(3) भविसत काळ – किया रै जिण रूप सूं किया– व्यापार रै भविस में हूवण री सूचना मिळै, वो सबद 'भविसत काळ' सूचक व्है। ज्यूँ–

भविसत काळ रा अै दो भेद है–

(क) सामान्य भविसत – म्हैं रोटी खाऊँला।

(ख) संभाव्य भविसत – सायत म्हैं रोटी खावूं/खाऊँ।

बोध सवाल :

1. किया–व्यापार रै संपूरण हूवण रौ बोध जिण सबद सूं व्है, वो सबद किसै काळ रौ मिणीजै ?
2. वरतमान काळ रा कितरा भेद व्है ?
3. संभाव्य भविसत काळ रौ ओपतौ उदाहरण देवो।

9.8 अविकारी सबद

जका सबदां रै रूप में लिंग, वचन, कारक, पुरस अर काळ रै कारण कीं ई वदळाव नीं आवै, वे 'अविकारी सबद' गिणीजै। अविकारी सबद रौ दूजौ नाम 'अव्यय' है। अविकारी सवदां रा अै च्यार भेद है–

(1) क्रिया विसेसण

(2) समुच्चय बोधक

(3) संबंध बोधक

(4) विस्मयादि बोधक

(1) क्रिया – विसेसण – जका अविकारी सबद किया री विसेसता बतावै, वां 'किया–विसेसण' कैवे। ज्यूँ–

वे सटकै–सटकै हालै।

वसुदेव सावचेती सूं तिरै।

राम–लिछमण गोडै–गोडै हालता हा।

राजस्थानी रा किया–विसेसण रा भेद इण मुजब है–

(क) काळवाची किया–विसेसण – अबै, आबर, कद, कदै, कणै, जणै, आज, कालै, पिरसूं, सवारै, पैलेदिन, तैपैलै, दिन, सदाई, हरमेस, रोजीना, नित, जद–कद, साकळै।

(ख) रीतिवाची किया–विसेसण–सटकै – सावचेती सूं, इण भाँत, कदै ई, कठै ई, जठै–तठै, नीं, मत, मती, नांज, इण, कारण, इण, वासतै। गटळ–गटळ, धड़ाधड़, झापाझप, गटागट, भडा–भड, ढाळोढाल, लपालप।

(ग) स्थानीवाची किया– विसेसण – अठै, उठै, गोडै, नजीक, पासै।

(घ) परिमाणवाची किया विसेसण – इधर, अति, कम।

कुछेक सबद तौ आपरै मूळ रूप में किया–विसेसण इज व्है, पण कुछेक सबदां नै प्रत्यय अर समास रै मेळ सूं किया–विसेसण बणाईजै। इण भाँत रचना री दीठ सूं किया–विसेसण दो भाँत रा व्है–

(अ) मूळ किया विसेसण – ऊपर, ठीक, अजांणचक, आज, अवस।

(आ) यौगिक किया–विसेसण – छिणभर, छिणपल, जथासगती, जथाजोग, रात–दिन, काल–पिंरसूं।

(2) **समुच्चय बोधक** – दो सबदां, वाक्यांसां कै वाक्यां नै आपस में जोड़ण वाळा अविकारी सबद समुच्चय बोधक कै योजक गिणीजै। ज्यूँ–

सीता गी अर राधा आई।

समुच्चय बोधक रा दो भेद व्है–

(क) समानाधिकरण समुच्चय बोधक

(ख) व्यधिकरण समुच्चय बोधक

(क) समानाधिकरण समुच्चय बोधक – समानाधिकरण समुच्चय बोधक दो मुख्य वाक्यां कै सबदां नै आपस में जोड़ै। ज्यूँ–

सिंघ ग्यौ अर हाथी आयौ।

सात अर आठ पनरै व्है।

राजस्थानी में नै, जका, तौ, तौई, अर, फेर, भळै इत्याद समानाधिकरण समुच्चय बोधक है।

(ख) व्यधिकरण समुच्चय बोधक – जका सबद एक कै एक सूं बततां आश्रित वाक्यां नै प्रधाान वाक्य सूं जोड़ै वे 'व्यधिकरण' समुच्चय बोधक गिणीजै। ज्यूँ–

म्हैं आपनै नीं पढा सकूं क्यूं कै म्हारै खनै पोथी नीं है।

राजस्थानी में कै, क्यूं कै, पण, इण सारू, नई इत्याद व्यधिकरण समुच्चय बोधक है।

(3) **संबंध बोधक** – जका अविकारी सबद संज्ञा कै सर्वनाम सबदां रै साथै प्रयुक्त हूय'र वां रौ सबंध दूजा सबदां सूं जोड़ै, वे 'संबंध बोधक' अव्यय सबध गिणीजै। ज्यूँ–

पाळ माथै जिनावर बैठा है।

इण वाक्य में 'माथै' सबद संबंध–बोधक है। औ 'पाळ' सज्ञां रौ संबंद 'बैठा है' क्रिया सबद सूं जोड़ै। केई वार विसेसण सबदां रौ प्रयोग संबंध–बोधक रै ज्यूँ होवै।

बिता बराबर दोय बंट करौ। (विसेसण)

थूं म्हारै बराबर नीं हाल सकै। (संबंध बोधक)

राजस्थानी में बिना, बिगर, माथै, ज्याँ, सिवा, समेत, मुजब, भर, तक, बिचै, बदळै, वासतै, पलटै, इत्याद सबद संबंध–बोधक सबद है।

(4) **विस्मयादि बोधक** – जका अविकारी सबदां सूं वक्ता रै मन रा यां भावां। (हरख, सोक, इचरज) रौ बोध व्है, वां नै 'विस्मयादिबोधक' कैवे। ज्यूँ–

ओह। है ओहो। (विस्यम)

हाय। ओय। (सोक)

आहा। वाह। (हरख)

छैबास। सैबास। (तारीफ)

अरे बाप रे। (भय)

हाँ–हाँ। (अनुमोदन)

कदै ई कदै ई संज्ञा, विसेसण, क्रिया अर क्रिया–विसेसण सबद भी विस्मयादि बोधक रै। ज्याँ काम आवै। ज्यूँ–

राम। राम। घणी खोटी हुयी।

भलां। उणरौ काम कींकर कीनौ ?

जा। अठै क्यूं आयौ ?

9.9 सारांस

इण इकाई में भासा बाबत जांणकारी देयर राजस्थानी भासा री ध्वनियां रौ विवेचन कीनौ है। आधुनिक भारतीय आर्य भासावां सूं राजस्थानी भासा में किसी किसी न्यारी अर नुंवी ध्वनियां री बोलजगत बाबत चरचा कीनी है। ओपता दाखळा देय'र खुलासौ कीनौ है कै यां ध्वनियां अर यां रै पाखती वाळी ध्वनियां रै उच्चारण सूं सबदं रै अरथ में कितरौ फरक आय जावै। ज्यूं–

कालौ – गैलौ कै पागल

काळौ – काळै रंग रौ

इणी इकाई में सबद रा भेद बताया है अर वां रा विकारी – अविकारी रूपां री पिछांण कराई है। अै सगळी बातां उदाहरण देय'र समझाई जी है। जे कोई नुंवादौ मिनख राजस्थानी सीखणी चावै तौ इण इकाई री सामग्री सूं वो भलीभाँत सगळी जांणकारी पाय सकै। आ इकाई पढियां आप आ बात जोरदार ढंग सूं बता सकौ कै भासा री दीठ सूं राजस्थानी कितरी समर्थ भासा है।

9.10 बोध सवाल

1. भासा रै सामाजिक महत्त्व नै उजागर करौ।
2. राजस्थानी भासा रौ विकास किसी अपभ्रंश सूं हुयौ ?
3. राजस्थानी में किसी किसी खास ध्वनियां मिळै ? ओपता दाखळा देय – समझावौ।
4. राजस्थानी री बिलटी ध्वनियां किसी है ?
5. संज्ञा रा भेद बताऔ।
6. जातिवाची संज्ञा रा तीन उदाहरण देवो।
7. भाव वाची संज्ञा सूं कांई तात्पर्य है ?
8. सेठ, सुथार अर बाघ–यां पुल्लिंग वाची सबदांरा स्त्रीलिंग वाची सबद लिखौ।
9. भोजन सूं संबंधित च्यार स्त्रीलिंग वाची सबदां रा दाखळा देवो।
10. यौगिक अर समास सबदां रौ निर्धारण किण मुजब व्है ? दाखळौ देय'र समझावौ।
11. व्याकरण री दीठ सूं 'वचन' सबद रौ कांई अरथ है ?
12. राजस्थानी में सबद रै वचन–निर्धारण रा कोई दो आधार बताऔ।
13. आं सबदां रा वचन बताऔ – फलका, रसता, तोरूं
14. सर्वनाम री ओपती परिभासा देवो।
15. सर्वनाम कितरी भांतरा व्है?
16. प्रश्नवाची सर्वनाम रा दो उदाहरण देवो।
17. विसेसण सबद सूं कांई तात्पर्य है ?
18. निस्चित संख्यावाची विसेसण कितरां भेद है ?
19. सर्वनामी विसेसण रौ कांई अर्थ है ?
20. 'क्रिया' सबद रौ व्याकरण री दीठ सूं अर्थ बताऔ।
21. अकरमक क्रिया किणनै केवै ?

22. पूर्वकालिक क्रिया सूं कांई तात्पर्य है ?

23. अविकारी सबद किणनै कैवे ?

24. अविकारी सबदां रा भेद बताऔ।

25. काळ–वाची अर रीति वाची क्रिया–विसेसणां रा दो–दो दाखळा दौ।

9.11 सहायक पोथ्यां

1. राजस्थानी व्याकरण – सीताराम लाळस
2. राजस्थानी भाषा और साहित्य – मोतीलाल मेनारिया
3. राजस्थानी सबदकोस भाग–1 (भूमिका) – सीताराम लाळस
4. राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति – डा. कल्याणसिंह शेखावत
5. राजस्थानी साहित्य (व्याकरण रचना – भाग – 2) डा. सोहनदान चारण

इकाई– 10

आदिकाल : कालगत प्रवृत्तियां, काव्य–धारावां अर विधावां

इकाई रो मंडाण

10.0 उद्देस्य

10.1 प्रस्तावना

(क) नामकरण

(ख) काल–निरणै

(ग) परिस्थितियां

10.2 आदिकाल री प्रामाणिक रचनावां : सामान्य परिचै

10.3 आदिकाल : अेक अध्ययन

(क) कालगत प्रवृत्तियां

(ख) काव्य–धारावां

(ग) काव्य–विधावां।

10.4 उपसंहार (सार)

10.5 अभ्यास सारू सवाल

10.6 संदर्भ–ग्रंथां री पानड़ी

10.0 उद्देस्य

इण इकाई रो खास उद्देस्य विद्यार्थियां नै राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल बाबत जाणकारी करावणौ है। इण इकाई में आदिकाल रा प्रचलित बीजा नावां, समै बाबत विवाद रो खुलासौ करता हुया, इण काल री सियासी, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक अर आर्थिक हालातां सूं विद्यार्थियां नैं अवगत करायौ जावैला। आं परिस्थितियां में किण तरियां री किसी–किसी रचनावां कठै लग प्रमाणिक है– आं सगळी बातां रो सामान्य परिचै दिरावता थका आदिकाल री कालगत प्रवृत्तियां, काव्यधारावां अर काव्य–विधावां री विसद् व्याख्या करीजेला। अठै इण बात रो ई खुलासौ करीजेला कै प्रवृतियां, धारावां, विधावा रा अरथ देवण वाळा सबद दीखै, पण अै अेक–दूजा सूं अरथ भिन्नता राखै।

10.1 प्रस्तावना

(क) नामकरण

हिन्दी साहित्य रै सरुआती काल आदिकाल रै नांवकरण ज्यांन राजस्थानी–साहित्य रै प्रारंभिक काल वास्तै ई विद्वानां री राय न्यांरी–न्यांरी रैयी। विभिन्न विद्वानां रै विस्लेसण रै उपरांत राजस्थानी साहित्य रै सरुआती काल वास्तै च्यार नांव साम्ही आवै– प्राचीनकाल, आदिकाल, वीरगाथा काल अर प्रारंभिक काल। आदिकाल अर प्राचीन काल नावां में जुगादीपण रो आभास हुवै। आं नावां रै कारण यूं लखावै कै इण काल रो साहित्य मिनख री आदिम प्रवृतियां सूं जुड़्यौड़ौ है। इणी भांत वीरगाथा काल नांव इण वास्तै ठावौ कोनी कैयौ जा सकै कै इण काल री सगळी रचनावां वीर गाथावां या वीर रसात्मक कोनी। नरपति नाल्ह री रचना 'बीसलदेव रास' सिणगारात्मक बेसी है, वीर रसात्मक कम। फगत राणी रै ओळमें सूं नायक रै राज छोड'र चल्यौ

जावणौ वीरता कोनी कही जा सकै। इणीज भांत 'प्रिथीराज रासौ' रचेता अर रचनाकाल री दीठ सूं अजैई विवादास्पद है। खुम्माण रासौ 17 वें सइकै री रचना सिद्ध हुई चुकी है। इण वास्तै राजस्थानी साहित्य रै प्रारंभिक नांव सारू प्रारंभिक काल या आदिकाल नांव ठावौ हुय सकै। इण नांव में इण काल री सरुआती रचनावां जिणां में राजस्थानी में अैड़ै–नैड़ै री भासिक प्रवृतियां अर इण काल रै छैलड़ै हिस्सै री रचनावां अर विविध प्रवृत्तियां वाळौ साहित्य सामिल कर्‌यौ जा सकै। इण रूप में आदिकाल सूं अरथ सरुआती साहित्यिक प्रवृतियां सूं लेवणौ पड़ैला। जै कोई फगत मिनख री आदिम प्रवृतियां सूं इण नै जोड़ै तौ ई मिनख री आदिम प्रवृति पण साहित्य री विसयवस्तु हुय सकै क्यूंकै हिन्दी साहित्य रै सरूआती काल सारू आदिकाल नांव सरू हुयगौ हौ। अतः इण साहित्य वास्तै आदिकाल या प्रारंभिक नाव ठीक है। इणी प्रवृति सूं राजस्थानी साहित्य रै सरुआती साहित्य रो अध्ययन–अध्यापन सार्थक हुवैला। सागैई किणी काल रै नांव सारू जरूरी विसेसतावां रो ई समावेस हुय जावैला।

(ख) काल–निरणै

नामकरण री भांत इज राजस्थानी रै सरूआती साहित्य रै काल–निरणै बाबत ई विद्वान अेक मत कोनी। विद्वान इण काल नैं वि.सं. 700 सूं वि.सं. 1650 लग री सींव में बांधै। विद्वान इणरा उपभेद प्रारम्भकाल, वीरगाथाकाल अर अभिलेखीय काल रूप में ई कर्‌यौ है। इण काल री सरुआती सींव वि.सं. 700 सूं मानण वाळा रो आधार जैन कवि पुष्य, स्वयंभू अर बीजा अभिलेख रैया है। डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. उदयसिंह भटनागर, पदमश्री सीताराम लालस, प्रो. कल्याणसिंह सेखावत इण वरग रा विद्वान है। आं आधारां रै अलावां ई उद्योतन सूरि री रचना 'कुवलमाला' (वि.सं. 835) है, जिणमें मरुभासा रो वरणांव मिळै। औ वरणांव साहित्य–सिरजण रा अेहलांण ई देवै। सागै ई विद्वान इण मत सूं ई सहमत लखावै कै 8 वीं सदी सूं वि.सं. 1000 लग अपभ्रंस अर राजस्थानी रो मिळयौ–जुळयौ रूप साम्ही आयौ, जिणमें आपभ्रंस री सबदावली अर राजस्थानी रै जूनै रूप में साहित्य सिरजित हुवण लागौ। इण आधार पांण विद्वान औई मानै कै राजस्थानी साहित्य रो सिरजण नुवैं सइकै रै पूठै लगोलग बधतौ रैयौ। हौळै–हौळै जन चेतना सूं भरपूर रचनावां रो सिरजण हुयौ। अैड़ी साहित्यिक भासा अर सांतरी अनुभूतियां रो सावळ रचाव इग्यारै सइकै सूं लगोलग हुवण लाग्यौ। राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल रो समै वि.सं. 1050 सूं 1550 हुय सकै। कुछेक बीजा विद्वानां मुजब आदिकाल (प्रारंभिक काल) री समै–सींव इण भांत है–

1. अेल.पी. टेसीटरी– प्राचीन डिंगल काल– 1300 ई. सूं 1600 ई.
2. प्रो. नरोत्तमदास स्वामी– प्राचीन काल– वि.सं. 1150–1550
3. डॉ. मोतीलाल मेनारिया– प्रारंभिक काल– वि.सं. 1045–1460
4. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी– विकास काल– वि.सं. 1100–1500
5. श्री सीताराम लालस– आदिकाल वि.सं. 800 सूं 1460
6. प्रो. कल्याणसिंह सेखावत–

   आदिकाल– वि.सं. 800 सूं 1450

   (अ) अभिलेखीयकाल (वि.सं. 800–1045)

   (ब) वीरगाथा काल (वि.सं. 1045–1450)।

कुछ विद्वान आदिकाल रै समैं में राजस्थानी साहित्य रा तीन–तीन चरण बताय दिया है, जिणां

री विकासात्मक दीठ वीर गाथा काल लग गई है, ज्यान डॉ. उदयसिंह भटनागर इण समै रै इतियास नै आं तीन कालां सूं सम्बोधित करे–

(अ) प्रथम उत्थान या सूत्रपात युग (वि.सं. 700–1000)

(आ) द्वितीय उत्थान या नव विकास युग (वि.सं. 1000–1200)

(स) तृतीय उत्थान या वीर गाथा युग (वि.सं. 1200–1500)

डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया इण विगत नैं यूं मांडै–

(अ) प्रारंभ काल– वि.सं. 835–1240

(आ) वीर गाथा काल– वि.सं. 1241–1584

(ग) वातावरण

(अ) राजनैतिक

राजनीतिक दीठ सूं औ समै अराजकता अर उथळ–पुथळ रो हौ। राजपूत सत्ता उत्थान कांनी बध रैयी ही तो मलेच्छ सेना च्यारू कांनी भयंकर आक्रमणां सागै नरसंहार कर रैयी ही। इणसूं बधती देसी रियासतां री सगती खीण हुवण लागी, आपसी कलह बध्या। 11–12 वीं सदी में दिल्ली में तोमर, अजमेर में चौहान अर कन्नौज में गाहड़वाल रा राज थरपीजिया। वि.सं. 1150 में अजमेर री बीसलदेव चौहान, तोमरां सूं दिल्ली अर हांसी रो राज जीत'र उणनैं हिमाळै लग बधायौ अर तुर्का नैं पंजाब सूं खदेड़ दिया। वि. सं. 1250 में भारत रै आखरी सम्राट प्रिथिराज चौहान री मुहम्मद गौरी सूं हार रै पूठै राजस्थान ही नीं आखी भारतीय राजनीति में बदळाव आयगौ। भारतीय आज़ादी सारू झगड़ै री बागड़ौर हम्मीर, कान्हड़ दे चौहान, कुंभा, सांगा जैड़ा वीर राजावां रै हाथां आयगी जिका भारतीय मान–मरजाद री पूरी रक्षा कीधी। इण भांत इण काल में भारतीय स्वाधीनता सारू राजस्थान अेक खास राजनीतिक केन्द्र बणगौ। राजपूत सेनानायक राजस्थान रै न्यारै–न्यारै सुरक्षित जगावां में आपरौ राज थरपण लागा। मेवाड़ औ काम वि.सं. 790 में ई कर लीधौ पण राठौड़ां रा जोधपुर अर बीकानेर में, कछवाहां रा ढूंढाड़ में अर हाडा चौहानां रा हाड़ौती प्रदेस में राज इण काल में थरपीजिया।

इण राजनीतिक उठा–पटक रै वातावरण में अै राजनीतिक ताकतां अेक जुट हुय'र नीं रैयी। वां में रास्ट्रीयता रो अभाव ई रैयौ। सिरफ आपरी सींव लग ई वै आपरौ राज मानता हा। आखै भारत नैं वे कदैई रास्ट्र कोनी मान्यौ। इण वास्तै ई अै सामन्त विदेसी सत्तावां सूं हारता रैया। आपसी ईसकै–द्वेसभाव रै सागै भारतीय इतियास में औ काल पतनोन्मुखी ई रैयौ। 'प्रबन्ध चिंतामणीं (मेरुतुंग), पृथ्वीराज विजय (जयनीक), समरारास (अंबदेव) आद रचनावां में आं राजनीतिक परिस्थितियां रो घणौ ई सांतरौ वरणाव हुयौ है।

(आ) धार्मिक

बिगड़ी थकी राजनीतिक अवस्था में धरमान्धता रो बधणौ स्वाभाविक है। राजपूती राजा अहिंसात्मक धार्मिक विचारधारावां (बौद्ध–जैन) रा विरोधी हा। वै सैव अर साक्त धार्मिक भगती रै विकास नैं सहयोग करण लागा। इणी रै विकास सूं नाथ पंथ रो उदय हुयौ। राजपूत राजावां रै सै'योग सूं वैस्णव धरम री धजा च्यारूं कांनी फैराबा लागी। वैस्णव–भगती आन्दोलन आपरै नुवै रूप में प्रगट हुयौ। इस्लाम रा मौलवी भारतीय

राजनीतिक वातावरण नैं असान्त करण वास्तै आं सगळी धार्मिक विचारधारां रा मठाधीसां में फूट डालण री भरपूर आफळ करी, जिणसूं ब्राह्मण–जैन, बौद्ध–नैयायिक, सैव, वैस्णव, विचारधारावां में खार पड़गौ। वै आपस में लड़ीजण लागा। पण जैन मतावलंबियां अर नाथ पंथी विचारधारा रै पांण दसवीं–ग्यारवी सदी में आं धार्मिक मतावलम्बियां में अेक लूंठौ बदळाव आयौ। इण नुवीं धार्मिक सोच सूं धार्मिक सहिस्णुता रो भाव बध्यौ। इण समरसता रो खुलासौ इण काल री पंच पंडव, चरितरास, बुद्धिरास, चंदनबाला रास, समरारास में मिळै। नाथां रै धार्मिक समन्वय बाबत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी री मानता है कै' संकराचार्य रै पछै जै कोई प्रभावी चिंतक हुयौ तौ वै सिरफ गोरखनाथ ई हा। वै औ ई मानै कै 'भगती आन्दोलण रै पैलां सबसूं सबळौ धार्मिक आंदोळण गोरखनाथ रो जोग मारग इज हौ।'

सैवट, आदिकाल री धार्मिक परिस्थितियां बेसी ई विसम अर असंतुलित ही। जन–मानस में गै'रौ असंतोस, दुःख अर भरम लखावै हौ।

(इ) सामाजिक अर सांस्कृतिक

जद किणी राज कै देस में राजनीतिक अर धार्मिक असान्ति हुवै तौ उठै समाज में सांवळ वातावरण कींकर हुय सकै, अर जद समाज रो सोच इज विक्रत हुय जावै तौ उण समाज री संस्क्रति कींकर आपनैं ओपती अर प्रेरणादायी बण सकै। इस्लामी सत्ता रै बधतै प्रभाव सूं राजस्थानी समाज रै सागै ई सगळी भारत भोम री सामाजिक चूलां डिग गी ही। नाथ अर कौल पंथ रै वामाचारां तथा इस्लाम री कुदीठ रै कारण समाज में लुगाई सुरक्षित नी रैयी। वा सिरफ भोग्या बणगी। करम कांड, छूआ–छूत, जंतर–मंतरां जैड़ी कुटेकां रो समाज में बोलबालौ हौ। समाज री आं कुरीतियां नैं मेटण री ई आफळ इण काल रै जैन रचनाकारां करी। 'बीसल देव रास' में इण काल री नारी री दयनीय हालत अर मिनख री वासना वृत्ति आं औळियां में जोय सका–

अस्त्रीक जनम काई दीधउ महेस।
अवर जन्य धारइ घणा रै नरेस।।

इण वातावरण में आदिकाल दो संस्क्रतियां (हिन्दू अर मुसलमान) रै ह्रास अर विकास रो काल हौ। हर्षवर्धन जिण हिन्दु संस्क्रति नैं सिरै पुगाई, इस्लामी आक्रमण अर उणरौ नित बधतौ प्रभाव उणरी किरच्या कर दीवी। हिंदू स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, संगीत आद कलावां में धार्मिक भावनावां रो मंडाण हौ पण मुसलमान भारत में आय'र मिंदर संस्क्रति रो नुकसान कर्‌यौ। भुवनेस्वर, पुरी, खजूराहो, कांची, तंजोर, आबू रो जैन मिन्दर जिका 11 वै सइकै री स्थापत्य कला रा बेजोड़ उदाहरण है, नैं खिंडा'र संस्कृति रो विनास कर दिरायौ। राजपूत राजा वांणी रक्षा खातर विदेसी सत्ता सूं जुद्ध करण वास्तै ढूक्या पण आप स्वारथ अर रास्ट्र प्रेम री कमी रै कारण सफल नीं हुय सक्या। राजपूत राजावां रै निजू गुमेज री इच्छा पूर्ति रै कारण राजस्थान अर आखै भारत री संस्क्रति, स्थापत्य, चित्रकला, संगीत, वाद्य, रीतिरिवाज, पैरावा, खाण–पांण माथै मुस्लिम संस्क्रति छायगी।

(ई) आर्थिक

इण अस्थिर अर असान्त वातावरण में देस रो आर्थिक वातावरण ई बदहाल हुयग्यौ। वौ देस जिणरी ओळखांण सोन चिड़कली (सोने की चिड़िया) रै रूप में ही, इण समै अेक गरीब अर असहाय देस बण'र रैयगौ। लगोलग जुद्धा में लाग्या रैवण सूं उतपादन री

बजाय खरचौ बधतौ गयौ। फौजां रै रख–रखाव अर प्रसासनिक खरच देस नैं आर्थिक दीठ सूं निबळौ कर दियौ। प्रजा आपरै अभावां सूं दुखी हुयगी। मलेच्छा री लूटपाट अर सोसण हुवण लागौ। विलासिता बधण सूं इणमें औजूं बधावौ हुयौ।

(उ) साहित्यिक

आं विरोधी परिस्थितियां में आदिकाल में आखौ भारतीय जन–जीवन अबखायां अर दौरप सूं भरपूर हौ। इण वातावरण में जनता रो अेक अैड़ौ वरग साम्ही आयौ जिकौ साहस अर वीरता सागै जुद्ध कर'र जीवणौ चावतौ हौ तौ दूजी कांनी अैड़ौ वरग ई ऊपजयौ जिकौ विनासलीला देख'र वीतरागी बातां सोचण लागौ। अराजकता, गृह–कलह, विद्रोह, आक्रमण अर जुद्ध रै वातावरण में जे अेक कवि आध्यात्मिक जीवन री सोचतौ हौ तौ दूजौ मरतां–मरतां ई रस भोगणौ चावतौ हौ। अेक तीजौ कवि ई हौ– जिकौ तरवार रा गीत गाय'र पूरै गुमैज सागै जीवणौ चावतौ हौ। अै ई इण काल री राजनीतिक परिस्थितियां री निरवाळी देन है जिण रै कारण अेक स्त्री भोग हठयोग सूं लेय'र आध्यात्मिक पलायन अर उपदेसां लग सूं जुड़्यौड़ौ साहित्य लिखिजियौ तौ दूजी कांनी ईस्वर री लोक कल्याणकारी सत्ता में विस्वास, वीरता अर सांसारिकता री भावना ई इण काल रै साहित्य में उकेरीजी। संस्क्रत, अपभ्रंस अर जन भासा रै कवियां सूं हर्षवर्धन कालीन दरबार सैंठौ भर्‌यौ रैवतौ, पण वां नैं किण भांत री मदत्त कोनी मिळती। 10–11 वैं सइकै सूं राजपूत राजावां री राजधानियां थरपीजण पूठै लोक भासा रो मान बध्यौ। चारण–भाट आं रै आश्रय में रैवण लागा। उणा रै विरुद में कविता करतां अर धन–धरती ईनाम रूप में पावण लागां। आं राजावां री इण प्रव्रति सूं इण अराजक समै में ई लूंठै साहित्य रो सिरजण सरू हुयौ।

अपभ्रंस, मिश्रित अपभ्रंस अर लोक भासावां में रचीजियै इण जुग रै सिद्ध, नाथ, सैव अर साक्त साहित्य री परम्परा आगै कोनी बध सकी, क्यूं कै संरक्षण रै अभाव में औ साहित्य सुरक्षित नहीं रैय सकौ। जनता आं री रहस्यमयी साधना पद्धति अर निरवाळै विस्वासां सूं डरपती ही। जैन सम्प्रदाय री दाईं आं संप्रदायां रो संगठन पण द्रिढ़ कोनी हौ। इण वास्तै राज्याश्रय री भांत इज धर्माश्रय ई आं नैं कम मिळयौ। आं परिस्थितियां में आदिकाल में लोक भासा में लिखीजी जैन कवियां री रचनावां ई सुरक्षित रैय सकी अर उणां रो लेखन ई लगौलग बधतौ रैयौ। मरु गुर्जर प्रदेस (वर्तमान राजस्थान अर गुजरात) में इण साहित्य री सांवठी परम्परा रैयी।

10.2 आदिकाल री प्रामाणिक रचनावां सामान्य परिचै

राजस्थानी साहित्य रै लगोलग पठन–पाठन री प्रव्रति सागै राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री प्रामाणिक रचनावां मुजब सवाल उठण लागा। इण संका रो मूल कारण रैयौ आचार्य रामचंद्र शुक्ल रै 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में वीरगाथाकाल सारू प्रामाणिक मानीजी अै राजस्थानी रचनावां है– पृथ्वीराज रासो, विजयपाल रासो, हमीर रासो (प्राक्रत पैंगलम), खुमाण रासो। अै च्यारूं रचनावां आपरै अस्तित्त्व, भासा अर घटनावां पांण आदि काल वास्तै संदिग्ध सिद्ध हुय चुकी है। गद्य–पद्य री 21 जैन अर जैनेत्तर रचनावां नैं प्रामाणिक मान'र एल.पी. टैसीटोरी आपरी पोथी 'पुराणी राजस्थानी' लिखी। आं रचनावां में आचार्य शुक्ल कानी सूं प्रामाणिक मानीजी वां चार रचनावां रो नामोल्लेख है। टैसीटोरी मुजब प्रामाणिक गद्य–पद्य री रचनावां हैं– रिसभदेव धवल संबन्ध, कान्हड़दै प्रबन्ध (पद्मनाभ), चतुर्विंशति जिनस्तवन, जम्बू स्वामी नउ गीता छन्दड, पंचाख्यान, रत्नचूड़ या मणिचूड़ नी कथा, विद्याविलास चरित,

शालिभद्र चउपई।

गद्य रचनावां

आदिनाथ देशनोद्धार (बालावबोध), आदिनाथ चरित, इन्द्रिय पराजय शतक (बालावबोध), उपदेश माला बालावबोध (सोमसुंदर सूरि), कल्याण मंदिर स्तोत्र (अवचूरि), दशवैकालिका सूत्र (अवचूरि), दशदृष्टान्त, प्रश्नोत्तर रत्नमाला, भव वैराग्य शतक (बालावबोध), मुग्धावबोध– मौक्तिक, हेमचंद्र योगशास्त्र, शीलोपदेशमाला (जयकीर्ति), श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र (बालावबोध), षष्टिशतक (बालावबोध)।

इणी भांत कुछ विद्वान राजस्थानी भासा री पैली प्रामाणिक रचना रै रूप में पद्मनाभ रै 'कान्हड़ दे प्रबन्ध' नैं मानै। इणरौ रचना काल वि.सं. 1512 है। इण तिथि पांण औ सवाल उठै कै इणरै पैलां राजस्थानी भासा में कोई रचना नीं लिखीजी? जद इणरै पैलां कोई रचना सिरजी ई कोनी तौ आदिकाल री सरुआत ई वि.सं. 1512 सूं मानणी चाईजै।

सरुआती रचनावां री प्रामाणिकता बाबत सवाळ उठणौ स्वाभाविक है। अतः अठै वां रचनावां नैं प्रामाणिक मानी है जकां रै रचनाकाल नैं कोई मानीतौ विद्वान पुख्ताऊ करियौ है कै अन्तः साक्ष्य अथवा इतियासिक घटनावां रै आधार माथै इण काल (वि.सं. 1050–1550) में आवै। इण सीमांकन पांण इण काल री टाळवां जैन अर जैनेत्तर प्रामाणिक काव्य रचनावां है–

जैठवै ऊजळी रा दूहा (वि.सं. 1100 रै आखती–पाखती), उपदेस रसायन (जिनदत्त सूरि (वि. 1171) बीसलदेव रास– नाल्ह (वि. 1212) भरतेस्वर बाहुबली रास–वज्रसेन (वि. 1225), भरतेस्वर बाहुबलिरास– सालिभद्र सूरि (वि. 1241), थूळिभद्र फागु– जिनपद्म सूरि (वि. 1250), जीव दया–रास, चंदनबाला रास– आसिगु (वि. 1257), स्थूलिभद्र रास– जिनधर्म सूरि (वि. 1266), नेमिनाथ रास– सुमतिगणि (वि. 1270), रेंवतागिरी रास– विजयसेन सूरि (वि. 1288), आबूरास, नेमिनाथ बारहमासा– पल्हण (वि. 1289), महावीररास– अभय तिलक (वि. 1307), नेमिनाथ फागु– राजशेखर (वि. 1370), समरारास– अंबदेव सूरि (वि. 1371), हंसाउली– असाइत (वि. 1427), वीरमायण– बादर ढाढी (वि. 1440), रणमल्ल छंद– श्रीधर व्यास (वि. 1454), सदयवत्स चरित– भीम (वि. 1466), अचलदास खीची री वचनिका– सिवदास गाडण (वि. 1480), सिद्धचक्र श्रीपाल रास– मांडण (वि. 1498), ढोला मारू रा दूहा (वि. 15वीं सदी), वसंत विलास फागु (वि. 1508), कान्हड़ दे प्रबन्ध पद्मनाभ (वि. 1512)

आं टाळवां उल्लेखनीय रचनावां में सूं कुछेक रचनावां रो सामान्य परिचै अठै दियौ जा रियौ है–

1. भरतेस्वर बाहुबलि रास

इणरा रचनाकार सालिभद्र सूरि है। अै वज्रसेन सूरि रा चेला हा, जिका री अेक महताऊ 48 छंदां री लघुकाय रचना 'भरतेस्वर बाहुबलि घोर' है। रचना री पुस्पिका मुजब इण रो रचना काल वि. सं. 1241 है। इण रै अलावा कवि री बीजी उल्लेखजोग रचना है– बुद्धिरास।

आलोच्य रचना में भरतेस्वर अर बाहुबली रो चरित कथीजियौ है। यूं तौ कवि आप कांनी सूं कथावस्तु रो कोई वरगीकरण कोनी करयौ गयौ पण अध्ययन री दीठ सूं इण नैं तीन हिस्सा में बांट सकां– भरत री दिग्विजय, भरत–बाहुबली रो जुद्ध अर बाहुबली रो दीक्षित हुवणौ। कथा पांण आ रचना वीर रस प्रधान है पण जैन सैली री रचना हुवण सूं इण रो अन्त सांन्तरस में ई हुयौ है। रचना रो मूल उद्देस्य भाई–भाई रै बिचै बैर भाव नैं मिटा'र साचौ भाईपौ थरपता हुया सत्य, अहिंसा, सान्ति, स्वतंत्रता आदि जीवणमूल्यां री थरपणा करणौ है।

काव्य–सौष्ठव री दीठ सूं रचना घणी सबळी है। नाटकीय प्रसंगां री योजना सूं रचना में अणूथी रोचकता आयगी है। इण भांत आ रचना राजस्थानी ई नीं जैन रासो परम्परा री अेक ओळखांण है।

2. बीसलदेव रास

अजमेर रै सासक बीसलदेव रै आश्रित भाट कवि नरपति नाल्ह इणरो सिरजण वि.सं. 1212 में कर्‌यौ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल वीर गाथाकाल नामकरण सारू इणनैं प्रामाणिक वीर रसात्मक रचना मानी है पण विसय–वस्तु री दीठ सूं इणमें वीर रस मुजब कोई घटना कोनी। इणरै कथानक सूं तौ आ सिणगार रस री रचना ई सिद्ध हुवै।

बीसलदेव आपरै ब्याव पछै राणी राजमती सूं रीस'र उड़ीसा कांनी परौ जावै। उठै वौ राजा री चाकरी करण लागै। विरह–व्याकुल राजमती अेक बामण रै हाथां कागद खिंदावै। उण कागद रै पांण वौ पाछौ अजमेर आय जावै अर सुख सूं रैवण लागै। इण भांत आ रचना बारहमासा सैली रो अेक लघु खण्ड–काव्य है। विरह–विकल नारी रा घणाई फूटरा चितरांम इणमें मंडीजिया हैं। कवि इणमें आदमी रै उत्पीड़न सूं दुःखी, बेबस नारी रै हिवड़ै री पीड़ नैं वाणी देय'र उणरै प्रति सहानुभूति जगाई है–

अस्त्रीय जनम कांई दियो हो महेस?

अवर जनम थारै घणा हो नरेस।

राणि न सिरजीय धड़ळीय गाउ।

वण खण्ड काली कोइली।

हंड बइसती अंबा नइ चंचा की डाल।

भाषती दाष बीजोरड़ी।

3. चंदनबाला रास

जैन कवि आसगु इणरी रचना जालोर नगर में वि.सं. 1257 में करी। औ पैतीस छंदां में रचियोड़ौ छोटौ–सो खण्ड बाव्य है। रचना री कथा–नायिका चंदन बाला चंपा नगरी रै राजा दधिवान री बेटी है। अेक'र कौसाम्बी रै राजा सतानीक चंपानगरी माथै घमासाण जुद्ध करै अर उणरौ सेनापति चंदनबाला रो अपहरण कर'र उण नैं अेक सेठ नैं बेच देवै। सेठ री जोड़ायत उण नैं घणा दुःख दैवै। चंदनबाला आपरै अटल सतीत्त्व रै पांण सगळा दुःख सेवती रैवै। सेवट महावीर सूं दीक्षा लेय'र मुगती पावै।

इण लघु कथानक माथै रच्यौड़ी आ जैन रचना करुण रस री गंभीर व्यंजना करै। भाव–सौंदर्य रा लूंठा चितरांम कवि री काव्य–निस्ठा रो सांतरो परिचै दिरावै। कवि इणमें सत्पख री विजै दिखा'र पुण्य बद्यापो, जिन भगवान री भगती अर दुःख–विनास रै मंडाण नैं ई आपरौ उद्देस्य बतायौ है। भासा री दीठ सूं राजस्थानी रै सागै गुजराती री भेळप है। वरणावां री सजीवता सरसता अर जन भासा री मनोरमता री दीठ सूं आ आदिकाल री अेक सफल काव्य रचना है।

4. नेमिनाथ फागु

राजशेखर इण री रचना 27 छंदां में वि.सं. 1405 में करी। नेमिनाथ जैनियां रो 22वों तीर्थंकर है, ज्यां नैं वै भगवान क्रिसन रो रूप मान्यौ जावै। राजुलमती सूं आपरै ब्याव रै मौकै वै जद बारातियां वास्तै वध हुवता पसुवां री चीत्कार सुणै तौ चंवरी नैं छोड'र वै वैराग धारलैवौ। विसय वस्तु री दीठ सूं आ लघुकाय रचना घणी ई मार्मिक है। इण भांत इणमें अहिंसा अर करुणा जैड़ा मानव–मूल्यां नैं थरपण री चेसटा करीजी है।

5. हंसाउली

सिद्धपुर निवासी औदिच असाइत इणरी रचना वि.सं. 1427 में कीधी। इणरी कथावस्तु विक्रम

कथा चक्र सूं जुड़्योड़ी लोककथा पर आधारित है जिकी 468 छंदां अर च्यार खण्डां में समाहित है।

पुरपट्टन रो राजा नरवाहन अेक'र रात नैं कणयापुर पाटण रै राजा कनुक भ्रम री बेटी हंसाउली नैं सुपणा में देखै। वौ उण नैं पावण सारू उतावळौ हुवै, पण अेक मालण सूं पतौ चालै कै वा तौ मिनख विरोधी है। तद वौ आपरै भंगी मनकेसर री मदत्त सूं हंसाउली सूं परणै। दूजैड़ै खण्ड में दोय बेटा वत्सराज अर हंस जळमै। हंस रै युवा रूप माथै कामातुर हुय'र पटराणी लीलावती उणरै साम्ही आपरौ प्रेम–प्रस्ताव राखै पण हंस उण नैं ठुकराय देवै। पटराणी तद दोई भाइयां नैं मरावण रो आदेस दिरावै। मनकेसर दोई भाईयां नैं चतराई सागै बचाय'र जंगळ में खिंदा देवै। उठै वां नैं घणी ई अबखायां सूं जूझणौ पड़ै।

तीजै खण्ड में राजकुमार वत्सराज अर सनक भ्रमराज री कन्या चित्रलेखा रै प्रणय–प्रसंग रो वरणाव है। चौथै खण्ड में प्रति नायक पुष्पदंत कानी सूं राजकुमार वत्सराज नैं छळ सूं समन्दर में पटक'र राजकुमारी सूं अळगी कर देवण रो वरणाव हुयौ है। संजोगवस हंसराज नैं कांतिनगर रै निपूतै राजा री मिरत्यु पूठै वठां रो राज मिळ जावै। आखेट में वत्सराज पण उण नैं मिळ जावै। इण भांत जैन कथावां रै दो भाईयां रै कथा तंतु सूं सिरज्योड़ी इण रचना में सिणगार रस रै सागै अद्‌भुत रस री सांतरी अभिव्यक्ति व्ही है। कथा रो अन्त सुखान्त है।

6. वीरमायण

ओज गुण प्रधान इण रचना रा रचेता कवि है बादर ढाढ़ी। चारण सैली री वीर रसात्मक रचनावां में वरणाव री दीठ सूं इणरौ घणौ महत्त्व है। इण रो रचनाकाल वि.सं. 1440 है। इण में रावल मल्लीनाथ अर उणा रै पाटवी बेटै जगमाल री वीरता, राव वीरमजी रो इतियास अर आखर में उणां रै बेटै गोगाजी द्वारा आपरै बापू री मौत रो बदळौ लेवता जुद्ध में वीर गति पावण रो खुलासै रे साथ वरणाव हुयौ है। इण भांत इण में इतियास री घणी सामग्री सुरक्षित है। गो.ही. ओझा, विश्वेस्वर नाथ रेऊ, रामकरण आसोपा अर जगदीश सिंह गहलोत आद विद्वानां री इतियास रचनावां ई आं घटनावां री साख भरै। इण रै अलावा कवि आपरै चरित नायकां रो जथा–तथ वरणांव कर्‌यौ है। उणां रै गुणां नैं कठै ई बढ़ा–चढ़ा'र नहीं दरसायौ।

7. ढोलामारू रा दूहा

'ढोला–मारू रा दूहा' अेक लोकसैली री रचना है, जिणरौ रचनाकाल इणरै संवादकां मुजब वि. सं. 1450 रै पछै रो नीं हुय सकै। सोध रै पांण विद्‌वाण इण रचना नैं राजस्थानी रै प्रारंभिक काल री मानता हुया इण नैं जनप्रिय लोकगीत कैवै।

'ढोला–मारू रा दूहा' काव्य में नरवरगढ़ (ग्वालियर) रै राजा नल रै बेटै ढोला (साल्हकुमार) अर पूंगळ (बीकानेर) रै राजा पिंगल री डीकरी मारवणी (मारू) री प्रेम गाथा कैईजी है। दोयां रो ब्याव बाळपणै में पुस्कर में हुवै। उण वगत ढोलौ तीन बरस रो अर मारवणी डौढ़ बरस री हुवै। मोट्‌यार हुवण पर साल्ह कुंवर रो ब्याव मालवणी सागै कर दीरीजै, पण इणरी जाणकारी राजा पिंगल नैं नीं दिरायी जावै। अठीनै राजा पिंगल नरवर गढ़ घणाई संदेसा भेजै, पण उणरौ वां नैं कोई पडूत्तर कोनी मिळै।

घोड़ा रै व्यापारी सूं पिंगल नैं बैरौ हुवै कै साल्हकुंवर मालवणी सागै परणीजगौ है अर वा उणरै संदेसां नैं ढोला लग पूगण ई नीं देवै। इण संवाद नैं मारवणी ई सुण लैवै। सौदागर री सलाह मुजब मारू रा संदेसा ढाढी लेय'र नरवरगढ़ पूगै, ज्यां नैं ढोलौ सुणै। ढोलौ विरह विगलित हुय'र संवारै ढाढियां नैं तेड़ावै अर सगळी विगत सांभळ'र पूंगळ जावण री योजना बणावै।

अेक दिन ढोलौ मालवणी नैं बिळखती छोड़'र पूंगल कांनी जावै। गैला में उणरै सागै घणाई छदम खैलीजै, अबखाया आवै पण वौ आखर में मरवण कनै पूग जावै। ढोला रो संजोग हुवै। ढोलौ घणोई पिछतावौ करतौ, इण बिछोह नैं भाग रा लेख मानै। सासरै सूं बिदा हुय'र ढोलौ–मारवणी सागै नरवर कांनी निकळै। पीवणौ सांप मरवण नै डस लेवै। ढोलौ सतो हुवण नै ढूकै पण सिव–परवती प्रगट हुय'र बींनै समझावै अर मारवणी नै सरजीवित करै। वै पूंगळ कांनी आगै बधै कै ऊमरौ–सूमरौ उणसूं छळ करै। ज्यूं–त्यूं अबखायां नैं आघी करता वै नरवरगढ़ पूगै। सरू में तौ मालवणी खोड़िलाइया करै पण पछै तीन्यू घणै आनन्द सागै रैवण लागै।

आ आखी कथा 674 दूहा–सोरठा, गाहा, चंद्रायण छंदां में कैयीजी है। इणरौ विरह त्रिकोणात्मक है। ढोला– मारवणी अर मालवणी तीन्यू रै ई विरह में सात्विकता है। इण भांत प्रेम, संजोग अर विजोग री आ अेक लूंठी राजस्थानी रचना है। दाम्पत्य री लगोलग लालसा, आसक्ति अर अनन्यता तीन्यू में है। प्रसंग मुजब रौद्र, हास्य, सान्त अर करूण रस रा ई सांतरा चित्राम मिळै। इणरी सहज भासा, संवादसैली, नाटकीयता इणरै मरमीळैपण नैं औजू बधावै। सादृस्य मूलक अलंकारां रो प्रयोग इणरै वरणावां नैं ओपता बणावै। आं सगळी विसेसतावां रै सागै इणमें उण वगत रै राजस्थान री धरती, धरती रो जन अर जन रो जीवण सगळी रो बड़ौ ई सुन्दर वरणाव हुयौ है। इणमें साहित्य, संस्क्रति अर इतियास री त्रिवेणी रा दरसाव हुवै।

8. रणमल्ल छंद

श्रीधर व्यास रचित 'रणमल्ल छंद' इण काल री चावी अर महताऊ वीर रसात्मक रचना है। इणरा संपादक श्री मूलचंद प्राणेस ई इण नैं 'वीर रसात्मक ऐतिहासिक खण्ड काव्य' कैयौ है। कवि श्रीधर इणमें ईडरपति वीर रणमल्ल रै सुलतान ज़फ्फर खान रै सागै हुया जुद्ध रो 70 छंदां में वरणाव मांड्यौ है। औ वरणाव उण वगत रै पश्चिमोत्तर भारत री सगळी उधळ पूथळ रो सागेड़ो चितरांम है। कवि रणमल्ल री वीरता अर पुरुसार्थ नैं दरसावता उण सारू 'वीरवर, वीर कमधज, शकदल मर्दनोजयति' जैड़ा विसेसण बरतीजिया है।

कवि अठै रणमल्ल री वीरता रो बखाण निरपेख भाव सूं कर्‌यौ है। इण वास्तै मौकैसर वौ दुसमी रै बाहुबल नैं ई उपाडै। इण वीरता नैं वौ अपभ्रंस मिश्रित जूनी राजस्थानी में मांड़ी है। आपरी अनुरणात्मकता सूं वीर भाव नैं घणै सांतरै रूप में अभिव्यक्ति मिळी है। अेक उदाहरण देखणजोग है–

ढम ढमई ढम–ढम कर ढूंकर ढोल ढोली जंगिया

सुर करहि रण सरणाइ समुहारि सरस रसि समरंगिया

कळकळहि काहल कोडि कलरवि कुमल कायर थरपरइ

संचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि संगरइ।।

9. अचळदास खीची री वचनिका

सिवदास गाडण रचित 'अचळदास खीची री वचनिका' आदिकाल री अेक महताऊ रचना है। कवि इण रै रचनाकाल रो कठै ई कोई उल्लेख नहीं कर्‌यौ है पण रचना री अेतियासिक विसयवस्तु री घटनावां रै आधार पांण आ रचना वि.सं. 1480 री सिद्ध हुवै। इणमें मांडूपति बादसाह हौसंगसाह कै अलपखां (आलम खां गौरी) अर गागरोनगढ़ रै चौहानवंसी हिन्दू राजा अचळदास खीची रै जुद्ध री कथा कैईजी है। हिन्दुत्व री रक्षा खातर अचळदास रै द्रिढ़ निसचै, पराक्रम अर आखर में जौहर रो घणौ ई मार्मिक वरणांव करीजियौ है।

राजस्थानी साहित्य री वचनिका सैली री आ पैली अर प्रतिनिधि रचना है। इण री अेक औजूं

खासियत है कै इण जुद्ध में खुद कवि हौ। इणमें मंडीजी हर घटना उणरी आंख्यां देखी ही है। वौ इण आंख्या देख्या जोहर रो वरणांव करता लिख्यौ है–

जउहर माहि जाळिवाह, इसइ तेज पइसइ अनळ।
पहिली थी रहि पाछिली, पग अेक पडावउ नाह।।

10. कान्हड़ दे प्रबन्ध

जालोर रै सासक सोनगरा चौहानवंसी कान्हड़ दे व अर अल्लाद्दीन अर मालदेव अर वीरमदेव रै साथै लड़ीजियै जुद्ध सूं संबन्धित इण रचना रौ सिरजण बीसलनगर (गुजरात) में जळम्यौड़ा नागर बामण कवि पदमनाभ वि.सं. 1512 में कीधो।

कवि रो इण रचना रै लिखण सारू खास उद्देस्य उणरै आश्रयदाता री कीरत गाथा नैं घणी ईमानदारी सागै मांड'र उणरी कीरती रो विस्तार करणौ ई हौ। आपरै इण उद्देस्य री पूरति वास्तै ई आलोच्य रचना में वर्णित ज्यादातर घटनावां इतियास समरथित हैं। कवि आपरी बहुग्यता सूं उण वगत री सामाजिक, सांस्क्रतिक स्थितियां रो ई सांतरौ अर ठावौ वरणाव करयौ है।

भासाविग्यान री दीठ सूं इण रचना रो घणो महत्व है। इणमैं पुराणी राजस्थानी रै 'अइ' 'अड' रूप बरतीजिया है। विसय–वस्तु री दीठ सूं इणरौ रस वीर है। जुद्धोन्माद रो ओजस्वी वरणाव पूरी रचना में आखरां ढकिया है।

11. राय हम्मीरदेव चौपई

इण रा रचयिता भाण्डउ व्यास है। अजै लग आ रचना अणछपी है। इणमें इण रो रचनाकाल वि.सं. 1538 दियोड़ौ है। विसयवस्तु रणथम्भोर रै चौहान वीर हम्मीर हठीलै रै अल्लाउद्दीन रै सागै हुयौड़ै जुद्ध सूं सम्बन्धित है। 321 दूहा–चौपई अर गाथावां में इण जुद्ध रौ, हम्मीर री सरणागत रक्षा, पराक्रम अर आखिर में उणा री मिरत्यु रो घणौ ई सुभाविक वरणाव करीजियौ है। डॉ. माता प्रसाद गुप्त रै मुजब आ रचना महेसक्रत हम्मीर रासो सूं ई बेसी अेतियासिक अर प्रामाणिक है।

10.3 आदिकाल : अेक अध्ययन

अठै कालगत प्रव्रत्तियां, काव्य धारावां अर काव्य विधावां माथै चरचा करण रै पैलां इण बात रो खुलासौ करणौ ठीक समझां कै आं तीन्यू सबदां रो कांई अरथ है या आं रो परस्पर सम्बन्ध कांई है? काव्य रै संदर्भ में ओई कैय सका कै कोई भी साहित्य उणरै समै में प्रचलित प्रव्रतियां सूं घणौ प्रभावित रैवै। इण वास्तै ई साहित्य समाज रो दरपण कैईजै। आं प्रव्रत्तियां रै पांण इज इण जुग रै साहित्य रो उणियारौ (सरूप) अर विकास निरधारित हुवै। इण आधार माथै प्रव्रत्तियां सूं मतळब है किणी काल विसेस में रचीजी रचना रो विसय अर उण री प्रस्तुति बाबत बरतीजी बणगत सूं है। अै प्रव्रतियां किण–किण रूपां में बुई, अर्थात् वां रो लेखन–सरूप कांई रैयौ– औ रूप इज काव्यधारा है। इणीज भांत काव्य विधावां सूं अरथ है, उणरै सरूप सूं अर्थात् रचना प्रबन्ध रूप में लिखिजी है कै मुक्तक रूप में अथवा अेकार्थ–काव्य रूप में। इण खुलासै पांण अठै राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री, कालगत प्रवृतियां, काव्य धारावां अर काव्य विधावां रो विवेचन करियौ जावैला।

(क) कालगत प्रव्रतियां

(अ) वीर रसात्मक काव्य परम्परा

राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री खास काव्य धारा वीर काव्य सिजरण री रैयी। वीर रसात्मक काव्य री बहूलता रै कारण ई घणकरा विद्वान इण नैं वीर गाथा काल ई कैयौ

है। इण काल में वीर रसात्मक रचनावां रै सिरजण रो मूल कारण उण वगत रै राजस्थान रो जुद्धमय वातावरण हौ। मोहम्मद गौरी री पैली वार सूं आगै तांईं अठै लगोलग घमसाण जद्ध हुवता रैया। रासो काव्य परम्परा आं जुद्धां रो ई परिणाम है। इण काल में विविध काव्यरूपां में वीर रसात्मक रचनावां लिखिजी। आं वीर रसात्मक रचनावां रै पांण ई नस्ट हूवती धरम अर संस्क्रति री रक्षा हुय सकी। अतः वीर काव्य सिरजण आदिकाल री जरूरत ही।

वीर काव्य रा रचेता कवि राज्याश्रित हा। चारण–भाट अर बीजा राज्याश्रित कवि आपरै अश्रयदाता राजावां रा विरुद गावता हा तौ दुसमियां रो निंदा गान ई करता हा। अै रचनावां खास तौर सूं प्रबन्धकाव्य विधा में रचीजी। प्रबन्धकाव्य विधा में अै रचनावां रासो, विलास, प्रबन्ध, वचनिका, छंद, दूहा, अयण, चौपई नांव सूं रचीजी, ज्यांन– हम्मीर रासो (सारंगधर), रणमल्ल छंद (श्रीधर व्यास), वीरमायण (बादर ढाढ़ी), अचलदास खीची री वचनिका (सिवदास गाडण), कान्हड़ दे प्रबन्ध (पद्मनाभ), राव हम्मीर देव चौपई (भांडउ व्यास) आद।

आं प्रबन्ध रचनावां री सरूआत मंगलाचरण सूं व्ही है। मंगलाचरण रै उपरांत देई–देवतावां री स्तुति, रचना रै महत्त्व नैं थरपता हुया कवि राजवंसावली रो वरणांव कर्‌यौ है। फैर विसय वस्तु रै मुजब ओजपूर्ण सैली में रचना रै नायक रो वीरोचित वरणाव मांड्‌यौ है। आं रचनावां में अपभ्रंस री द्वित्त सब्दावली अर ''ट'' वरग री प्रधानता है। आं रचनावां री सैली चारण सैली कैयीजी है। चांदन खिडिया जैड़ा कवि उण वगत रै नायकां रै वीरत्व रो वरणांव दूहा, सोरठा, गीत छंदां में मुक्तक काव्य रूप में ई कर्‌या। कवि चांदण खिड़िया रचित रणमल्ल राठौड़ रा सोरठां नींबा जोधावत रा छंद इण दीठ सूं उल्लेख जोग रचनावां हैं।

(आ) भगती काव्य

इण काल में आखौ राजस्थान आपरै दुसमियां सूं जूझ रैयौ हौ। मानखै री मनःस्थिति थिर कोनी ही। मन सूं निबळौ मिनख जुद्ध करण री सामरथ कोनी राख सकै हौ, पण भुजबळ रा धणी क्षत्रिय रणभोम सूं ई राजी हा। अतः अधिकांस कवि वीररसात्मक रचनावां रै सिरजण में ई रत हा। पण दूजी कांनी अहिंसक जैन जति, श्रावक उपासरावां में समाई अर स्तुतिगान में ई सुख री अनुभूति करता हा। इण रै अलावा नाथ–सिद्धां रै प्रभाव सूं मंत्र–तंत्र साधना रो प्रचार हौ। क्षत्रीय साक्त धरमी हा, पण उण मुजब चारण या चारणेत्तर कवि सक्ति री स्तुति में कोई उल्लेखजोग काव्य सिरजण कोनी कर्‌यौ। वैस्णव धरमी स्वतंत्र रचनावां रो ई अभाव रैयौ। अतः इण काल में जित्ती भी भगती परक काव्य रचनावां लिखीजी वै जैन भगती मुजब ई ही। अै रचनावां रास, फागु, हीयाळी, सिलोका, आख्यान आद रूपां में मिळै। आं में सान्त अर सिणगार, रसां रो अद्‌भुत मेळ लखावै। भाव–पख री दीठ सूं अै भगती मुजब रचनावां घणी मरमीली है। प्रक्रति रा ओपता उद्दीपन चित्राम काव्यत्व री लूंठी ओळखांण करावै। सक्ति पूजा रै रूप में जैन कवियां री पद्मावती देवी री भगती मुजब रचनावां सरावण जोग है। जैन भगती मुजब खास–खास रचनावां है भरतेस्वर बाहुबली रास (सालिभद्र सूरि), चंदनबाला रास (आसगु), स्थूलिभद्ररास (जिनधरम सूरि), आबूरास (पल्हण), नेमिनाथ रास (सुमति गणि), कछूली रास (प्रग्यातिलक), गौतम स्वामी रास (उदयवंत), सिरिभूळिभद्र फागु (जिन्‌पदम सूरि) आद।

अतः राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री कालगत प्रव्रतियां रै रूप में दो तरियां री काव्य–रचनावां इज रचीजी (1) धर्माश्रित काव्य अर (2) राज्याश्रित काव्य। राज्याश्रित वीर रसात्मक काव्य रचनावां में घणकरी संदिग्ध ई हैं। अतः कुछ विद्वानां री मानता है क आदिकाल री काव्य प्रव्रत्तियां रै पांण जिका विद्वान इण नैं वीर गाथाकाल नांव देवै वौ खरौ कोनी। वीर गाथाकाल री बजाय इण रो सही नांव धार्मिक रचनावां रो काल हूवणौ चाईजै।

(ख) काव्य–धारावां

(अ) चरितकाव्य धारा (रासो / रास अर रासान्वयी काव्यधारा)

राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल में चरितकाव्य री लूंठी परम्परा मिळै। इणरौ खास कारण उण समै रो जुद्धमय वातावरण हौ। इण दौरप में अहिंसावादी जैन उपासक आपरै उपासरावां में बैठ'र आपरै सलाका पुरखा पौराणिक चरितां रै चरित रो जैन–भगती मुजब वरणांव माण्ड्यौ तौ दूजी कांनी चारण अर चारणेत्तर कवि उण बगत रै जुद्धां में जूझण वाळा आपरै आश्रयदातावां रो वीरता मंडित बखांण कर्‌यौ। इण भांत जैन कवि ज्यां चरितां बाबत रचनावां लिखी वै 'रास' कहीजी। अै काव्य–रचनावां प्रायः प्रबन्ध रूप में लिखीजी, पण मुक्तक रूप में ई अै कवि आपरी रचनावां स्तवन, स्तुति, छंद, चौढ़ालियौ, छत्तीसी, हीयाळी, पारणौ, आद नांव सूं लिखी। आं रचनावां री प्रस्तुति जैन सैली कैईजी।

आं रचनावां रो प्रधान रस सान्त हौ। रचनावां री सरुआत सिणगार रस सागै करीजती, पण अन्त सान्त रस में हुवतौ। अै चरित रचनावां कथात्मक ही। घणाई मार्मिक वरणावां सागै उण वगत री सामाजिक–सांस्क्रतिक, आर्थिक अर ऐतियासिक घटनावां रा सांतरा चितरामां सूं ई भरपूर ही। आं कवियां रा प्रिय छंद दूहा–सोरठा, चौपई, गाथा, कळस, पद्धरी हा। सादृस्य मूलक अलंकार आं रचनावां में घणा बरतीजिया है। भासा माथै अपभ्रंस रो सांवठो प्रभाव लखीजै। रास संग्यक चरित काव्य परम्परा री उल्लेखजोग रचनावां है– उवसर सायणु (जिनदत्त सूरि वि. 1150), भरतेस्वर बाहुबलि घोर (वज्रसेन सूरि वि. 1225), भरतेस्वर बाहुबलि रास (सालिभद्र सूरि वि. 1241), चंदनबाला रास (आसिगु वि. 1257), रेवन्तगिरि रास (विजयसेन सूरि, वि. 1287), महावीर रास (अभयतिलक गणि, वि. 1307), सालिभद्र रास (मुनि राजतिलक, वि. 1332), समरारास (अम्बदेव सूरि, वि. 1371), पद्मावती चौपई (जिनप्रभ सूरि, वि.सं. 1385), मयणरेहा रास (हरसेवक वि. 1413), वस्तुपाल तेज पाल रास (हीराचंद सूरि, वि. 1485), नल दमयन्ती आख्यान (देववर्धन, वि. 1500), मुनिपति चरित (सालभद्र वि. 1550) आद।

चारण अर चारणेत्तर रचित रासो संग्यक रचनावां ई प्रबन्ध काव्य है। आं में अेतियासिक चरितां रो वीरत्त्व पूर्ण बखाण करीजियौ है। वीर रस, कल्पना अर ओज गुण सूं भरपूर अै रचनावां– अेतियासिक काव्य रै भारतीय सरूप रो ओपतो बखाण करै। रासो नांव री आं रचनावां में चरित काव्य अर प्रेमाख्यान काव्य री प्रव्रत्तियां रो घणौ ओपतौ मेळ लखावै। इणी वास्तै अठै वीर अर सिणगार मित्र रस रै रूप में बरतीजिया है। मां, भैण, सहेली अर जोड़ायत आद सगळा ई नारी रूप आपरै ओपतै रूप में दरसाइजिया है। वीर रसोचित छंद अर अलंकारां रो प्रयोग आं वरणावां नैं औजूं फूटरा बणावै। आदिकाल री अधिकांस रासो नांव री रचनावां संदिग्ध है। पृथ्वीराज रासो रा च्यार रूपान्तर मिळै, ज्यां में लघुत्तम संस्करण नैं प्रामाणिकता रै नैड़ै मान्यौ जा सकै।

सारंगधर रचित हम्मीर रासो ई रासो नांव री महताऊ रचना है।

(आ) लोक काव्य धारा

राजस्थानी साहित्य रै आदिकालीन काव्य रचनावां में लौकिक काव्य रचनावां ई रचीजी। अै रचनावां दो विधावां में मिळै कथात्मक अर मुक्तक। लोक धारा री आदिकालीन प्रमुख काव्य रचनावां हैं– ऊजळी–जेठवे रा दूहा, बीसलदेव रास (नरपति नाल्ह), बसन्त–विलास फागु, ढोला–मारू रा दूहा आद। आं रचनावां री विसय–वस्तु प्रेम है जिणमें सिणगार रस रा दोई रूप अर विविध काम–दरसावां रा फूटरा चित्राम मंडीजिया है।

(ग) काव्य–विधावां

राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल में साहित्य री दोई विधावां– गद्य अर पद्य मिळै। जदपि गद्य विधा आपरै सांतरै रूप में विकसित नीं कैयी जा सकै, फैर ई इण काल में रोडा रचित राउलवेल उण वगत रै गद्य री ओळखांण करावै।

राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल में पद्यात्मक रचनावां ज्यादा लिखीजी। पद्य री प्रबन्ध अर मुक्तक दोनूं विधावां में इण काल री ओपती कविता रा दरसाव कर सकां। प्रबन्ध काव्य रा दो रूप हुवै– महाकाव्य अर खण्ड काव्य। आं रो ठावौ विधान हुवै, ज्यांन महाकाव्य में सर्गबद्धता, उच्च कुलोत्पन्न नायक, अेतियासिक या पौराणिक कथावस्तु, वीर, सिणगार, सान्त में सूं किणी अेक रस री प्रधानता, स्थानीयता रो निर्वाह आदि री अनिवार्यता हुवै। खण्ड काव्य में किणी अेक घटना रो वरणाव हुवै अर पूर्वापर सम्बन्ध अर सरगां री कोई अनिवार्यता कोनी हुवै।

(अ) प्रबंध काव्य विधा

मुख्य रूप सूं इण काल रा कवि प्रबन्ध रचनावां रो ई सिरजण कर्‌यौ। इण रो खास कारण हौ कै उणां रै चरित नायकां रै वीरत्व अर आध्यात्म री खिमता अर सामरथ रो दरसाव। वीर काव्य में चारण अर चारणेत्तर कवि आपरै आश्रयदातावां रा विरुद गावता हा। उणां रै घमसाणां रो विगतवार वरणांव मांडता हा। वीर रस सूं जुड्‌यौड़ी अै प्रबन्ध रचनावां खासतौर सूं रासौ नांव सूं लिखीजी। रासौ रै अलावा विलास, दूहा, छंद रूप में ई अै रचनावां रचीजी। जैन कवि आपरी प्रबन्ध रचनावां– 'रास' नांव सूं मांडी। 'रास' नांव रै अलावा जैन प्रबन्ध काव्य रचनावां आख्यान, चरित, फागु, ब्यावलौ, संधि, मंगळ, धवळ आद रूपां में ई रचीजी।

आदिकालीन प्रबन्ध काव्य रचनावां चारण, जैन अर लोकसैली में लिखिजी है। वीर रसात्मक रचनावां री सैली चारण सैली है। जैन भक्ति मुजब रचनावां री काव्य सैली जैन सैली है। लोककाव्य धारा री रचनावां री लोक सैली है। प्रबन्ध काव्य रै रचना सिल्प रो आं रचनावां में पूरौ निर्वाह मिळै, चावै वौ महाकाव्य हुवै या खण्ड काव्य सूं जुड्‌यौड़ी रचना।

(आ) मुक्तक काव्य विधा

मुक्तक काव्य रचना आपोआप में स्वतंत्र रचना हुवै। प्रबन्ध रचना री दांई मुक्तक रचना में घटनावां रो पूर्वापर सम्बन्ध कोनी हुवै। इण वास्तै ई आचार्य रामचंद्र शुक्ल कैयौ है कै जे प्रबन्ध काव्य अेक विस्तृत वनस्थली है तौ मुक्तक अेक चुणयौड़ौ गुलदस्तौ है। अतः मुक्तक रचना रै कवि वास्तै जरूरी है कै उणमें पाठकां नै रसमगन करण री खिमता हुवै तद इज मुक्तक काव्य सरस, मधुर अर नाद सौंदर्य सूं भरपूर बण सकैला।

मुक्तक किणी ई रस सूं भरपूर हुय सकै। चारण, चारणेत्तर अर जैन कवि घणी ई मुक्तक रचनावां लिखी। चारण अर चारणेत्तर वीर रसात्मक मुक्तक रचनावां दूहा, सोरठा, कुंडकियां कवित्त, झूलणा, छत्तीसी, छिहत्तरी, नीसांणी, गीत नांवां सूं लिखी मिळै, जद कै जैन मुक्तक रचनावां स्तोत्र, स्तवन, वीनंती, हीयाळी, सिलोका, कळस, छंद, पद, चौढ़ालियौ, चूंदड़ी, ढ़ाळ आद रूपां में लिखीजी। जैन मुक्तक रचनावां में उणां री प्रबन्ध रचनावां री दाईं लोकतत्त्व री अधिकता ई मिळै।

वीर–रसात्मक काव्य खास तौर सूं राज्याश्रय में रचीजियौ है। औ काव्य प्रसंसात्मक (सर) अर निन्दात्मक (विसर) रूप में लिखिजियौ। अै प्रायः मुक्तक काव्य रचनावां ई हैं।

10.4 सार

राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल बाबत विद्वान न्यांरा–न्यांरा नांव सुझाया। आं नावां में च्यार नांव खास तौर सूं सामी आवै– प्राचीन काल, आदिकाल, वीर गाथाकाल अर प्रारंभिक काल। सरुआती साहित्य री विसय वस्तु या प्रव्रत्तियां रै पाण राजस्थानी साहित्य रै सरुआती काल अर च्यार नावां में सूं आदिकाल (प्रारंभिक काल) नांव ठावौ है।

नावंकरण री दांईं ई इण काल रो कालनिरणै ई विवादास्पद है। विद्वाना री काल सीमा वि.सं. 700 सूं 1650 लग पसर्‌यौड़ी है। विद्वान इण तथ्य सूं सहमत है कै वि.री 8वीं सदी सूं वि.सं. 1000 लग अपभ्रंस अर राजस्थानी रै मिलियौ–जुलियौ रूप सूं राजस्थानी साहित्य री सरुआत व्ही जिकौ आपरौ ठावौ रूप 11 वैं सइकै सूं धार लियौ हुवैला। इण आधार पाण राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल रो सही समै वि. सं. 1050 सूं वि.सं. 1550 हुय सकै।

राजनीतिक दीठ सूं औ समै अराजकता अर उथळ–पुथळ सूं भरयौड़ौ हौ। राजपूत सत्ता उत्थान कांनी बध रैयी ही तौ मलेच्छ सेना च्यारू कांनी भयंकर आक्रमणा सागै नर–संघार कर रैयी ही। मलेच्छ हिंदुआं नै आपस में लड़ाय'र उणारी धार्मिक आस्थावां री ई किरच्यां करण लागा। पण धीजै अर आपसी समझ सूं विभिन्न धार्मिक विचार धारावां में समन्वय सधियौ। इण समन्वय में जैन अर नाथ पंथ रो बेसी सैयोग रैयौ।

इस्लामी सत्ता रै बधतै प्रभाव सूं समाज में लुगाई री हालत घणी भूंडी हुवण लागी। समाज में वा भोग री वस्तु बण'र रैयगी। करम–काण्ड, जंतर–मंतर, छुआ–छूत कानी लोग बेसी बिस्वास करण लागा, पण जैन रचनाकार आं कुरीतियां नैं मेटण री कोसीस करी। राजपूत राजा आपरै सुवारथ अर रास्ट्र प्रेम रै अभाव में मलेच्छ सत्ता सूं जूझण में असफल इज रैया। नतीजौ औ रैयौ कै आर्थिक स्थिति माड़ी पड़ती गई। आखौ भारतीय समाज दोरप में पड़गौ। अराजकता, घर–कळैह सूं जूंझतै समाज रा कवि वातावरण मुजब साहित्य लिखण लाग्या। चारण कवि जठै राज्याश्रय रै कारण ईनाम पावता हा, उठै ई नाथ–सिद्ध रचनाकारां री काव्य परम्परा संरक्षण रै अभाव में आगै जीवित कोनी रैय सकी। धर्माश्रय रै कारण इण जुग में जैन–साहित्य रो विपुल विकास हुयौ।

आं परिस्थितियां में जैन अर जैनेत्तर रचेता आपरी काव्य रचनावां लिखी, ज्यांरी प्रामाणिकता बाबत सवाल उठ्या। अठै आदिकाल री वां रचनावां नैं प्रामाणिक कैई है जिका रै रचनाकाल नैं कोई मानीता विद्वान पुख्ताऊ कर्‌यौ है या अन्तः साक्ष अथवा अेतियासिक घटनावां रै आधार पांण इण काल (वि.सं. 1050–1500) री मानीजै।

राजस्थानी साहित्य रै आदिकालीन साहित्य री दोई प्रव्रत्तियां कैयी जा सकै– वीर रसात्मक काव्य अर भगती काव्य। जुद्ध रै वातावरण रै कारण वैष्णव, सैव अर साक्त भगती री रचनावां रो प्रायः अभाव ई लखावै। भगती काव्य रै रूप में जैन रास रचनावां या जैन भगती मुजब मुक्तक काव्य रचना री ई बहुलता

रैयी।

आदिकालीन राजस्थानी काव्य री मुख्य धारावां चरित काव्य धारा (रासो अर रासान्वयी काव्यधारा) अर लोक काव्य धारा रैयी। अै रचनावां प्रबन्ध अर मुक्तक काव्य विधावां में लिखीजी।

10.5 अभ्यास सारू सवाल

1. राजस्थानी साहित्य रै सरुआती काल रो ठावौ नामकरण करता हुया उण रो समय निरधारण करौ।
2. राजस्थानी साहित्य रै वातावरण नै समझावौ।
3. राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री प्रमुख प्रामाणिक रचनावां रो परिचै करावौ।
4. आदिकाल री लोक काव्य धारा री रचनावां रो परिचै देवो।
5. राजस्थानी साहित्य री आदिकालीन प्रमुख रासकाव्य परम्परा माथै टीप लिखौ।
6. राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री प्रमुख प्रवृत्तियां, काव्य धारावां अर काव्य विधावां रो खुलासौ करौ।
7. काव्य–प्रवृत्तियां, काव्य धारावां अर काव्य विधावां रै अरथ नै समझावता हुया राजस्थानी साहित्य रै आदिकाल री प्रमुख काव्य धारावां रो खुलासौ करौ।
8. आदिकाल रै नांवकरण री सारथकता थरपता हुया इणरी प्रमुख काव्य धारावां अर काव्य विधावां रो परिचै दिरावौ।

10.6 संदर्भ–ग्रंथां री पानड़ी

1. सं. धीरेन्द्र वर्मा– हिन्दी–साहित्य कोश, भाग 1
2. प्रो. कल्याणसिंह शेखावत– राजस्थानी भाषा एवं साहित्य
3. डॉ. पुरुषोत्तमलाल मेनारिया– राजस्थानी साहित्य का इतिहास
4. सं. डॉ. नगेन्द्र– हिन्दी–साहित्य का इतिहास
5. डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा एवं डॉ. रामनिवास गुप्त– हिन्दी–साहित्य का इतिहास।
6. 'साहित्यानुशीलन' त्रैमासिक शोध–पत्रिका– साहित्येतिहास विशेषांक, अप्रेल–जुलाई 1977 (हिन्दी–विभाग, रोहतक विश्वविद्यालय, रोहतक)
7. डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव– डिंगल साहित्य (पद्य)
8. श्री सौभाग्यसिंह शेखावत– राजस्थानी साहित्य संपदा

इकाई – 11

राजस्थानी सहित्य रो कालविभाजन

इकाई रो मंडाण

1. राजस्थानी भासा रो इतिहास – उदय अर विकास
2. साहित्य लेखन रा आधार –
   - 1 समै – अर वाताकरण
   - 2 विसय – वीरता, भगती, नीति, सिणगार
   - 3 गद्य – विधावां
   - 4 पद्य – विधावां अर काव्य धारावां
   - 5 जुग रो राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अर साहित्यिक दरसाव
3. विद्वानां कानी सूं करयौड़ो काल विभाजन – प्रमुख विद्वान
   - 5 आचार्य रामचन्द शुक्ल

   राजस्थानी भासा रा विद्वान –
   - 6 डॉ. मोतीलाल मेनारिया
   - 7 डॉ. नरोत्तमदास स्वामी
   - 8 डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
   - 9 सीताराम लालस
   - 10 डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

   उर्दू भासा–साहित्य रो काल विभाजन
4. राजस्थानी साहित्य री विसय – सामग्री
   - 1 वीरगाथावां – गद्य अर काव्य री प्रमुख रचनावां
   - 2 भगती रचनावां
   - 3 नीति साहित्य
   - 4 प्रेम – सिणगारपरक साहित्य
5. राजस्थानी साहित्य री प्रमुख काव्यधारावां, काव्य विधावां, प्रमुख रचनावां अर रचनाकार
6. राजस्थानी साहित्य री प्रमुख गद्य विधावां अर प्रमुख रचनाकार अर रचनावां
7. सार
8. संदर्भ पोथ्यां

1. राजस्थानी भासा रो इतिहास – उदय अर विकास

राजस्थानी जुगां जूनी, सम्रद्ध अर सुतंत्र भासा है। विक्रम री नोवीं सदी सूं इणरो इतिहास सामी आवै– जद जैनयति उद्योतन सूरि री रचयौड़ी नामी पोथी 'कुवलयमालां में वां दिनां री 18 भासावां में आज री राजस्थानी भासा रो 'मरूभासा रूप' लेखो मिळै। इणरै पछै विक्रम री 12 वीं सदी लग आतां – आतां मोकळा हाथ लिख्यां ग्रंथ मिळै। राजस्थानी भासा में भी आदिकाल री घणकरी पोथ्यां काव्य रूप में ही मिळै। जिण तरै लोक साहित्य री सबसूं पैलड़ी रचनावां लोकगीतां रै रूप सामी आवै उणी भात दुनियां री सगळी भासावां री पैली पोथ्यां काव्यमयी है। काव्य री

घणी विधावां अर धारावां में राजस्थानी साहित्य री रचयौड़ो हाथलिखी पोथ्यां रै रूप में आज भी पोथीखानावां में संभाळ राख्यौड़ी है। ओ साहित्य अणपार अर भांत–भांत रो है। ओ महाकाव्य, खण्डकाव्य, प्रबंधकाव्य, चम्पूकाव्य अर मुक्तकाव्य रूपां में लिपिकबद्ध हुयौ है।

इणी तरै गद्य साहित्य भी मोकळो न्यारी–न्यारी विसय–सामग्री साथै भांत–भांत री विधावां में लिखीज्यौ है। अेकानी जूनो गद्य बातां, ख्यातां, विगतां, वचनिकावां, दवावैतां, वंसावळियां, गुरावळियां, पट्टा, परवाना, रूक्का रै रूप में लिखीज्यौ तो आधुनिक गद्य विधावां रै रूप में कहाणी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध, डायरी, संस्मरण, रिपोरताज अर रूपक रै रूप में सामी आयौ है। इण आधुनिक गद्य री तादाद भी हजारां पौथ्यां रै रूप में।

ऊपर लिख्या अभिजात राजस्थानी साहित्य रै साथ ही राजस्थानी भासा रा लोक साहित्य री परम्परा भी घणी पुराणी, विध–विध री अर रातीमाती है। ओ साहित्य भी बातां कथावां, गाथांवां, लोकगीतां, लोकनाट्यां कहावतां, मुहावरां रै रूप सिरजण रो आधार बणियौ है।

2. राजस्थानी भासा साहित्य रै इतिहास लेखन रा आधार

राजस्थानी भासा रा इतिहास लेखन रो आधार बणी है एक जुग में रचयौड़ो साहित्य, उण जुग रो वातावरण, प्रवृतियां, साहित्य री विधावां, काव्यधारावां, रचनाकार अर उणारी रचनावां। वीरता, भगती, नीति, प्रेम–सिणगार राजस्थानी जन रै जीवण री मूळ भावनावां–सदियां रही है। ओ ही कारण है कै सगळौ राजस्थानी साहित्य आं ही भावां रै आधार लैय'र लिखीज्यौ है। साहित्य समाज री आरसी (दरपण) कहीजै। इण कारण बो अठां रा जन रा जीवण सूं अळगो कियां रैय सकै? जन रा हरख–उमाव, संताप, सोच अर संवेदना मिनख रा रचयौड़ा साहित्य में अवस लेखन रो आधार बणैला। इत्तो ही नहीं मनुज रो समाज उणरा रीत–रिवाज, काणकायदा, जात–पात, धरम, पंथ साहित्य लेखन रा आधार बणै। राजस्थानी साहित्य में भी राजस्थान री संस्कृति आखरां ढळी है– उणरी सभ्यता रा चितराम मंडिया है।

हिन्दी भासा रो इतिहास लेखन –

हिन्दी भासा रा कैई विद्वान हिन्दी साहित्य रो इतिहास लिख्यौ है जिणा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, मिश्रबंधु, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, जैड़ा रा नाम गिणावण जोग है। हिन्दी रा विद्वानां अभिजात्य साहित्य नै आधार बणार हिन्दी साहित्य रो इतिहास लिख्यौ है। आ विद्वानां में रामचंद्र शुक्ल रो हिन्दी साहित्य रो इतिहास लेखन महताऊ मानीजै।

3.1 जार्ज ग्रियर्सन रो काल विभाजन

विदेसी विद्वान जार्ज ग्रियर्सन घणी मेहनत सूं भारतीय भासावां रा साहित्य री खोज करी अर उणरा उद्भव अर विस्तार बावत खुद रो सर्वेक्षण पोथी रूप में पाठकां रै सामी काख्यौ। जार्ज ग्रियर्सन राजस्थानी भासा अर उणरा साहित्य रा ग्रंथां रो अध्ययन मनन–अनुसीलन करयौ। उणा हिन्दी साहित्य रो विभाजन नीचै लिख्या मुजब करियौ– जिणमें चारणकाल, राजस्थानी साहित्य आदिकाल अथवा वीर गाथकाल ही है।

''(1) चारणकाल (700 ई सूं 1300 ई. तक)

(2) पंद्रहवीं सदी का धार्मिक पुनर्जागरण

(3) जायसी की प्रेम कविता

(4) कृष्ण सम्प्रदाय

(5) मुगल दरबार

(6) तुलसीदास

(7) रीति काव्य

(8) तुलसीदास के अन्य परवर्ती कवि

(9) अठारहवीं शताब्दी

(10) कम्पनी का शासन

(11) विक्टोरिया के शासन में हिंदुस्तान''

3.2 मिश्र बधुवां रो करयौड़ो हिन्दी साहित्य रो काल विभाजन

(1) आरंभिक काल

(क) पूर्वारंभिक काल संवत 700 से 1343 वि.

(ख) उत्तरारंभिक काल सं. 1344 से 1444 वि.

(2) माध्यमिक काल

(क) पूर्व माध्यमिक काल सं. 1445 से 1560 वि.

(ख) प्रौढ़ माध्यमिक काल सं. 1561 से 1680 वि.

(3) अलंकृत काल

(क) पूर्वालंकृत काल सं. 1681 से 1700 वि.

(ख) उत्तरालंकृत काल सं. 1701 से 1889 वि.

(4) परिवर्तनकाल – संवत 1890 से 1925 वि.

(5) वर्तमान काल – सं. 1926 से अधावधि।

3.3 डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी रो हिन्दी साहित्य रो काल विभाजन

(1) आदिकाल – सन् 1000 से 1400 ई. तक

(2) पूर्व मध्यकाल – सन् 1400 से 1700 ई. तक

(3) उत्तर मध्यकाल – सन् 1700 से 1900 ई. तक

(4) आधुनिक काल – सन् 1900 से आज तक।

इणमें 'आदिकाल', पूर्व मध्यकाल अर उत्तरमध्यकाल काल में राजस्थानी भासा री घणकरी पोथां सामिल है।

3.4 इटली विद्वान डॉ. एल.पी. तैस्सीतोरी

राजस्थानी भासा रा साहित्य रो काल विभाजन नीचै लिख्या दो खण्डां में करियौ है–

(1) प्राचीन डिंगलकाल – ई. सन् 1250 से 1650 तक।

(2) अर्वाचीन डिंगल काल – ई. सन् 1650 से आज तक।

3.5 रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य नै चार खण्डा में बांट्यौ है

(1) आदिकाल अथवा वीरगाथा काल

(2) मध्यकाल अथवा भक्तिकाल

(3) रीतिकाल

(4) आधुनिक काल

उर्दू भासा–साहित्य रो इतिहास लेखन –

उर्दू भासा रो साहित्य भी घणा बरसां पुराणो है। उणमें भी विसाळ साहित्य है। जिणरी मोकळी विधावां अर काव्य धारावां है। उर्दू साहित्य रो काल खण्डां रो बंटवारो देखण अर मननजोग है –

(1) उर्दू साहित्य रो प्रारम्भिक विकास–दिखणाद भारत, दिल्ली अर अवध रो साहित्य जगत

(2) उर्दू गद्य – फोर्ट विलियम कालेज अर उणरै पछै

(3) उर्दू गद्य – पद्य – नुवीं धारा सूं पैली

(4) उर्दू गद्य–पद्य–नुवीं धारणां

(5) नव जागरण रो उर्दू साहित्य

इण भांत उर्दू साहित्य रो इतिहास आदिकाल सूं आज तक री जाणकारी करावण वाळो है।

राजस्थानी साहित्य रो काल विभाजन –

राजस्थानी साहित्य रो काल विभाजन राजस्थानी विद्वान खुद रै ज्ञान, विवेक अर अध्ययन रा आधार, तय कर लिख्यो। आं विद्वानां में डॉ. मोतीलाल मेनारिया, नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, सीताराम लालस, बी.एल. माळी अर डॉ. कल्याणसिंह शेखावत रो लिख्यौड़ो राजस्थानी साहित्य रो इतिहास महताऊ गिणीजै।

4.1 डॉ. मोतीलाल मेनारिया रो काल विभाजन

डॉ. मोतीलाल मेनारिया खुद री पोथी 'राजस्थानी भाषा अर साहित्य' में राजस्थानी साहित्य रो बंटवारो नीचै मुजब करियौ है–

(1) राजस्थानी साहित्य रो प्रारम्भिक काल–संवत् 1045 सूं 1460

(2) राजस्थानी साहित्य रो पूर्वमध्यकाल–संवत् 1461 सूं 1600

(3) राजस्थानी साहित्य रो उत्तर मध्यकाल–संवत् 1601 सूं 1900

(4) आधुनिक काल–संवत् 1900 सूं आज तक

इण तरै डॉ. मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी साहित्य रो चार काल खण्डां में बंटवारो करियौ है।

4.2 नरोत्तमदास स्वामी रो काल विभाजन

ख्यातनाम विद्वान नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी साहित्य रो काल विभाजन तीन खण्डां में करियौ है–

(1) प्राचीन काल– संवत् 1150 सूं 1550

(2) मध्य काल– संवत् 1551 सूं 1875

(3) अर्वाचीन काल– संवत् 1876 सूं अजै तांई

4.3 सीताराम लालस

राजस्थानी सबद कोस का अर व्याकरणाचार्य सीताराम 'लालस' भी सगळा राजस्थानी–साहित्य रो नीचै लिख्या तीन काल खण्डां में बंटवारो करियौ है–

(1) आदिकाल– संवत् 800 सूं 1460

(2) मध्यकाल– संवत् 1461 सूं 1900

(3) आधुनिककाल– संवत् 1900 सूं आज तक

4.4 डॉ. हीरालाल माहेश्वरी

डॉ. हीरालाल माहेश्वरी भी राजस्थानी साहित्य नै तीन काल खण्डां में इण बांत बांट्यौ है–

(1) प्रारम्भिक काल– सन् 1050 सूं 1450

(जैन अर चारण प्रधान कविता अर प्रेम प्रधान कविता)

(2) मध्यकाल– सन् 1451 सूं 1850

(संत, चारण अर साहित्य, आख्यान काव्य, ऐतिहासिक साहित्य अर लोकसाहित्य)

(3) आधुनिक काल– सन् 1851 सूं अजै ताई

(राष्टीय भावना, प्रकृति काव्य, प्रगतिसील, देसभावना प्रधान वीर काव्य, नई कविता, गद्य–पद्य री सगळी विधावां)

डॉ. हीरालाल माहेश्वरी राजस्थानी साहित्य रा आदिकाल में जैन अर चारण सैली रा रचनाकारां री कविता नै वीर अर प्रेम प्रधान कविता मानी है। डॉ. माहेश्वरी री दीठ में मध्यकाल रो राजस्थानी साहित्य भगतां, संतां अर चारणां रो रचयौड़ौ आख्यान, ऐतिहासिक अर लोक साहित्य घणो है। आधुनिक काल रो राजस्थानी साहित्य, देसभगती, प्रकृति, प्रगति, रहस्य, वीर, भगती अर प्रेम रो मिल्यौ–जुल्यौ साहित्य है।

4.5 डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

डॉ. कल्याणसिंह शेखावत खुद री पोथी 'राजस्थानी भाषा एवं साहित्य' में राजस्थानी साहित्य रो काल विभाजन चार खण्डां में करियौ है–

1. आरम्भिक काल

   (अ) अभिलेखीय काल – विक्रम री आठवीं सदी सूं 12 वीं सदी तक

   (ब) आदिकाल (वीरगाथाकाल)– विक्रम संवत् 1201 सूं 1450 तक

2. मध्यकाल

   (अ) पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)– वि. सं. 1451 सूं 1650

   (ब) उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)– वि. सं. 1651 सूं 1850

3. आधुनिक काल

   (अ) पेलो चरण – ई. सन् 1851 सूं 1920 तक

   (ब) दूजो चरण – ई. सन् 1921 सूं 1947 तक

   (स) तीजो चरण – ई. सन् 1948 सूं आज तक

4. राजस्थानी साहित्य री विसय – सामग्री

भासा रा साहित्य रो इतिहास लिखती वेळा लेखक खुद रा मापदण्ड बणावै अर उण भासा रै जुग रा दरसाव–उणरा राजनैतिक, समाजू , आर्थिक, धरम, संस्कृति अर पढाई–लिखाई रा वातावरण नै सामी राखै। राजस्थानी भासा रो इतिहास भी ईं दीठ सूं ही लिखीज्यौ है। इणमें अेकानी राजस्थानी भासा रा उद्भव अर विकास री जाणकारी है तो दूजैकानी राजस्थानी साहित्य री आदिकाल सूं आधुनिक जुग तक री विगत आखरां ढ़ळी है। राजस्थानी भासा री व्याकरणगत विसेसतावां, उणरो छंद अर अलंकार विधान, उणरी लिपि, प्रमुख रचनाकार अर उणांरी खास–खास रचनावां री जाणकारी भी दिरीजी है।

भारत में जद कद भी धरम, संस्कृति अर राजनीत रा आंदोलन हुया तो उणरो सीधो असर अठां री लोक भासावां पर हुयौ। आर्य अर द्रविड़ समय सूं संस्कृत अर प्राकृत भासावां रो जलम हुयौ। बौद्ध अर जैन धरमां रै टकराव सूं पालि, प्राकृत अर अपभ्रंस भासावां पनपी। मुसळमानां अर हिन्दुवां रै संग्राम सूं अरबी, फारसी अर उर्दू भासावां री उतपत हुई। भासावां मिनखां नै आपस में जोड़बां रो काम करै। भासावां सूं सामाजिक अर सांस्कृतिक समरसता पनपावण में

जोरदार मदद मिळै। इण खातर साहित्य रा इतिहास लेखन में इणानै आधार बणायौ जावै। भासा संस्कृति रो मुळाधार है। इण खातर राजस्थानी री जगचावी संस्कृति नै भलीभांत समझाण सारू राजस्थानी भासा अर साहित्य रो ज्ञान जरूरी है।

5.1 राजस्थानी साहित्य रो आदिकाल

राजस्थानी साहित्य रा आदिकाल नै वीरगाथाकाल रो नाम भी दियौ गयौ, जिणरो कारण है उण जुग में लिखीज्यौ वीरता अर देसभगती रै भावां भरियौ साहित्य ही है। ओ साहित्य उण जुग रो इतिहास अर हालात बखाणै। आपणी ख्यातां इण बात री साख भरै कै विक्रम री सातवीं सदी सूं ही भारत भोम पर विदेसी हमलावरां रा जुद्ध सरू हूयग्या हा। सबसूं पैली सन् 636–37 में खलीफा उमर पैलो हमलो आपणी मायड़भोम हिन्दुस्तान पर करियौ। पछै सन् 712 में मुहम्मद बिन कासिम, सन् 986 में सबुक्तगीन, 1000 ई. में महमूद गजनवी, 1178 में मोहम्मद गोरी रा अेक रै पछै दूजा हमला भारत पर होवता रिया। बां हमला रो मुकाबलो करण वाळा देसभगत वीर अर वीरांगनावां ही या फैर उणारा बाळक–बालिकावां, बेटा–बेटी अर पोता–पड़पोता। बाप बलिदान दियौ तो बेटो मायड़भोम सारू अमोला प्राण अरपण करण खातर तैयार मिल्यौ। एक समै आयौ जद देसभगतां रै घरां में बारह बरसां सूं ज्यादा उमर रा बालक–बालिकावां मिलणी बंद हूयगी, तद वीरता अर देसभगती रो भाव जगावण खातर साहित्यकारां नै वीर गाथावां रचणी पड़ी। इण पुनीत कारज सारू साहित्यकार आगै आया अर मोकळी वीरगाथावां अर दूजी महताउ रचनावां रो सिरजण हुयौ।

5.2 गिणावण जोग रचनावांः

भारतेश्वर बाहुबलि रास, भरेश्वर बाहुबलि घोर, बुद्धिरास, सिखामानस रास, हितशिक्षारास, चंदनवाला रास, जम्बू स्वामीरास, आबूरास, नेमिरास, नेमि बारामास, समरारास, नेमिनाथ फागु, पंच पांडव चरित रासो (जैन रचनावां) खुमाणरासो, ढोलामारू रा दुहा, जेठवा रा सोरठा, बीसलदेव रासो, हंसावसी, रणमल्ल छंद, हरिचन्द, पुराण, जयचंद जस चंद्रिका आदि अनेक रचनावां आदिकाल रि गिणावण जोग है!

6.1 राजस्थानी साहित्य रो मध्यकाल

राजस्थानी साहित्य आदिकाल रै पछै भगती पोथ्यां अर फुटकर भगती साहित्य री सिरजणा हुई। मध्यकाल में भगती री दो धारावां वेगवान हुई, एक सगुण अर दूजी निरगुणी। सगुण 'भगत' कहीज्या अर निरगुणा 'संत'। राजस्थान भगतां अर संता' री साधना भोम कहीजी है। सगुण भगत मूरत पूजा, मिंदर थापना अर नवधा भगती रा उपासक हा पण संत ईस रा आकार, मिंदर अर नवधा भगती नै नीं मानी अर फगत भगवान रा नाम, गुरू अर गरूवाणी री महिमा बखाणी–बाही संतवाणी कहीजी।

भगती री सगळी धारावां, पंथां अर खेड़ां में अणपार साहित्य लिखीज्यौ–पण उणरो पूरो लेखो अजै हुयौ कोनी। अेकानी गद्य अर पद्य री सगळी विधावां में तो दूजै कानी लोक साहित्य रै रूप में आ सम्पदा बिखरयौड़ी है। इणी भांत लोक देवी–देवतावां रो विसाळ भगती साहित्य भी अछूतो है–बो अजै राजस्थानी साहित्य रा इतिहास लेखन रो आधार नहीं बण सक्यौ है।

6.2 प्रमुख रचनाकार अर वांरी प्रमुख रचनावां

इण जुग रा प्रमुख रचनाकारां में जैन **रचनाकार**– जयशेखर सूरि, जयसागर सूरि, कवि देपाल, कवि दामो, भांडउ व्यास, गणपति, कुशललाभ, समयसुंदर, हीर कलस, हेमरतन सूरि आदि। **चारणसैली रा रचनाकारां में**– खिड़िया चानण, कवि पसायत, आसानंद बारहठ, बीठू मेहा, बीठू सूजो, ईसरदास बारहठ, रामा सांदू, अल्लूजी कविया, सूरा टापरिया, माला सांदू, दुरसा आढ़ा, पृथ्वीराज राठौड़, **भगत अर संतां में**– मीराँबाई, जांभोजी, जसनाथजी, हरिदासजी, परसुरामदेव, दादूदयाल, लालदास,

चरणदास, रामचरण, दरियाजी, हरिराम, रामदास, लालगिरी, संतदास, रज्जब, सुंदरदास, गरीबदास, जनगोपाल, हरिरामदास, दयालदास, विल्होजी, आयस देवनाथ, लाडूनाथ, भीमनाथ, जैड़ा सैकडूं सिरजकां रा नाम गिणावण जोग है।

इण समै री प्रमुख रचनावां में 'नेमिनाथ फागु', अर्बदाचल वीनती, वसंत विलास, रणकपुर स्तवन, जम्बूस्वामी, नल दमयंतीरास, लखन सेन, पदमावती चौपई, हम्मीरायण, राव हमीरदेवी चौपई, शकुन्तला रास, मादवानल कामकंदला प्रबंध, रामसीता रास, ढोला मारू, हीयाळी, गोरा बादिल पद्मिनी चौपई जैड़ी जैन रचनावां नामी गिणीजै।

चारण सैली री रचनावां में – कवि पसायत रो 'गुण जोधायण', खिड़िया चानण रो 'माताजी रा छंद', आसानंद जी रा 'हालां भालां रा कुंडळिया', वीठू मेहा रो 'पाबूजी रा छंद', बीठू सूजे रो 'राउ जैतसी रो छंद', ईसरदास बारहठ रो 'हरिरस' अर 'देवियाण', माला सांदू रा 'झूलणा', दुरसा आढ़ा रो 'विरूद्ध छहतरी', पृथ्वीराज राठौड़ रो 'वेलि क्रिसण रूकमणी री' अर संतां भगतां रो रच्यौ अणपार भगती साहित्य इण काल खण्ड रो साहित्य है। इण जुग में मोकळो लोक साहित्य भी सामी आवै।

7.1 उत्तर मध्यकाल

भगती काल रै पछै रा समय नै हिन्दी साहित्य रा विद्वान रीतिकाल रो नाम दियौ हो पण राजस्थानी साहित्य रो इतिहास लिखणिया विद्वान इणरो नामकरण उत्तर मध्यकाल करियौ है। राजस्थानी भासा रा विद्वान रीतिकाल नीं मानै अर उत्तर मध्यकाल री सरूआत सन् 1850 सूं मानै। इण जुग में प्रेम अर सिणगार रै साथै ही वीरता, भगती अर नीति परक रचनावां रो सिरजण भी हुयौ। ओ जुग देसभगती रै भावां भरी आजादी री अलख जगावण वाळा साहित्य रो हो। राजस्थानी साहित्य में वीरता, भगती, नीति, सिणगार रै साथ ही नया भावां अर विचारां रो प्रयोग भी हुवण लायो।

7.2 प्रमुख रचाकार अर रचनावां

इण जुग में जैन रचनाकार समय सुंदर, ज्ञानसागर, जयसोम, धर्म वर्द्धन, मानजति, कुसलधीर – अर चारण सैली रा केसोदास गाडण, माधोदास दधवाड़िया, जग्गाजी खिड़िया, जोगीदास, कल्याणदास मेहडू, कुम्भकरण, हम्मीरदान रतनू, ओपाजी आढ़ा, हुक्मीचंद खिड़िया, किसनो आढ़ो, नरहरिदास, वीरभाण, करणीदान, खेतसी लालस, बुद्धजी आसिया, महादान मेहडू अर मोतीराम ख्यातनाम रचनाकार है।

इण समै री प्रमुख रचनावां में – जैन रचनाकार समयसुंदर रो 'बारामासा', ज्ञानसागर री 'छंद चउपई समालोचना', जयसोम री 'बारह भावना वेलि', मानजति री 'राजविलास', कुसळधीर री 'रसिक प्रिया' आदि प्रसिद्ध है।

चारण सैली री रचनावां में केसोदास गाडण री 'राव अमरसिंह रा दूहा', 'गजगुण चरित' अर 'गुणरूपक बंध' – माधोदास दधावाड़िया रो 'राम रासौ', कल्याणदास मेहडू री 'राव रतनरी वेलि' वचनिका राठौड़ रतनसिंह री–जग्गा खिड़िया री कही, जोगीदास रो 'हरि पिंगल प्रबंध', कुम्भकरण रो 'रतनरासौ', हमीरदान रतनू री 'पिंगल प्रकास' अर हम्मीर नाममाळा, ओपाजी आढा री भगती रचनावां, हुक्मीचंद खिड़िया रा डिंगळगीत, कृपाराम रा 'राजिया रा सोरठा', किसना आढ़ा रो 'रघुवर जस प्रकास' आद अनेक पोथ्यां इण उत्तर मध्यकाल में लिखीजी।

इण जुग में लोक साहित्य रो सिरजण भी लगोलग हुयौ। काव्य रै साथ–साथ गद्य री विद–विद री रचनावां मिळै।

8.1 आधुनिक काल – (सन् 1850 सूं अजै ताई)

राजस्थानी साहित्य रो आधुनिक काल भाव, भासा, सैली अर विचार दीठ सूं न्यारो निरवाळो है। भाव री जागां विचार प्रधान लेखन री सरूआत इण समै सूं हुई। काव्य री ठौड़ गद्य लेखन री प्रधानता इण जुग री ही देन कहीजै। ओ काल खण्ड आजादी री लड़ाई अर आजादी पछै रा 60–62 साल रो है। इण कारण इणनै दो मोटा खण्डां में बांट सकां–एक है–सुतंत्रता रै पेली रो साहित्य अर दूजो इणरै पछै रो। आं दोनुवां में विसय सामग्री अर चिंतन रो घणो फरक है। साथ ही गद्य अर पद्य री घणकरी विधावां रो उदय होवण सूं सिरजण रो आधार अर सैली में बदलाव आयौ है। सोच रो दायरो बधग्यौ, सामाजिक अर जातिय व्यवस्था अर रीत–नीत बदळगी।

देस–विदेस सूं आदान–प्रदान होवण रै कारण दुनियां री प्रमुख भासावां अर उणां रै साहित्य रो प्रभाव राजस्थानी रचानकांरां पर पड़ियौ। संकळाई सूं उदारता अर निजता सूं सार्वभोम, जमीन सूं ब्रह्माण्ड लग साहित्य पूग्यौ। नया–नया विसय अर विचार लेखन रा आधार बण्या, नारी चेतना जागी अर सिरजण नारी सिरजण लग पूग्यौ। सोसण, गरीबी, अन्याय, दुराचार, भेदभाव रै खिलाफ उठी आवाज आखरां ढळी। इणसूं राजस्थानी साहित्य सम्रद्ध हुयौ।

8.2 प्रमुख रचनावां अर रचनाकार

आजादी रै पैली रा प्रमुख साहित्यकारां में कवि मनसाराम, महाराजा मानसिंह (जोधपुर), बांकीदास आसिया, सूरजमल मीसण, संकरदान सामोर, ऊमरदान लालस, रामनाथ कविया, हींगकाजदान, केसरीसिंह बारहठ, महाराज चतुरसिंह रा नाम गिणावणजोग है। गद्यकारां में मुहणोत नैणसी रै पछै दयालदास सिंढायच बाँकीदास आदि खास हा। इण जुग में माणिक्यलाल वर्मा, जयनारायण व्यास, विजयसिंह पथिक, हीरालाल शास्त्री जैड़ा राजनैता भी काव्य सिरजण सूं जनजागरण रो काम करियौ।

आजादी पछै या कै संधिकाल रा रचनाकारां में गणेसलाल व्यास, 'उस्ताद', उदयराज उज्वल, नाथूदान महियारिया, डॉ. मनोहर शर्मा, चंद्रसिंह, सत्यप्रकास जोशी, मेघराज मुकुल, नारायणसिंह भाटी, रेवतदान चारण, विजयदान, लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, विश्वनाथ विमलेश, रघुराजसिंह हाडा, सुमेरसिंह शेखावत, लक्ष्मणसिंह रसवंत, कल्याणसिंह राजावत, करणीदान बारहठ, गिरधारीसिंह परिहार, किशोर, सौभाग्यसिंह शेखावत, कल्पनाकांत, काह महर्षि, सीताराम महर्षि, प्रेम जी प्रेम, दुर्गादान सिंह गौड़, सत्येन जोशी, कन्हैयालाल सेठिया, अन्नाराम सुदामा, श्रीलाल नथमल जोसी, डॉ. कल्याणसिंह शेखावत, दीनदयाल ओझा, नानूराम संस्कर्ता, हरीश भादाजी, कानदान कल्पित, बैजनाथ पंवार, छत्रपति सिंह, यादवेद शर्मा 'चन्द्र', डॉ. गोरधनसिंह शेखावत, तेजसिंह 'जोधा', डॉ. अर्जुनदेव चारण रा नाम महताऊ है।

आधुनिक काल में डॉ. कन्हैयालाल सहल, श्री नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, डॉ. कन्हैयालाल शर्मा जिस्या विद्वान अनेकानेक राजस्थानी ग्रंथा अर पत्रिकावां रो सम्पादन अर लेखन कर राजस्थानी भासा नै सम्पन्न बणाई।

9. इकाई रो सार

इण इकाई में लारला बारह सौ बरसां में लिखीज्यौड़ा राजस्थानी भासा रा साहित्य री विगत मांडी गई है। राजस्थानी भासा रा उदय अर विकास री जाणकारी साथै ही साहित्य रा इतिहास नै दरसायौ गयौ है। साहित्य इतिहास लेखन रा आधार कांई व्है, जुग रा वातावरण रो साहित्य पर किण तरै रो प्रभाव पड़ै, किण जुग में गद्य अर पद्य री किसी विधावां पनपी अर वांनै सामी राख किस्या ग्रंथ लिखीज्या आद सगळी बांतां रो खुलासा हुयौ है।

विद्वान कानी सूं करयौड़ा काल विभाजन री जाणकारी रै साथै ही हरैक काल खण्ड री प्रमुख रचनाकार अर रचनावां री विगत भी मांडी गई है। आदिकाल, मध्यकाल, उत्तरमध्यकाल अर

आधुनिक काल री विसयवस्तु, विधावां अर सैलियां बावत भी चरचा इण इकाई में हुई है।

10. संदर्भ पोथ्यां

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल
2. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया
3. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
4. राजस्थानी सबद कोस (प्रथम खण्ड) – सीताराम 'लालस'
5. राजस्थानी साहित्य : एक परिचय – नरोत्तमदास स्वामी
6. भक्ति का उदय – डॉ. मुंशीराम शर्मा
7. हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय – डॉ. पीतांबर दत्त बड़थ्वाल
8. उत्तर भारत की संत परम्परा – परशुराम चतुर्वेदी
9. राजस्थानी प्रेमाख्यान परम्परा और प्रगति – डॉ. रामगोपाल गोयल
10. राजस्थानी साहित्य की गौरवपूर्ण परम्परा – अगरचंद नाहटा
11. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य : डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

इकाई 12

आधुनिक राजस्थानी साहित्य

इकाई रो मंडाण

12.1. उद्देस्य

12.2. प्रस्तावना

12.3. जुग रो दरसाव

12.3.1 राजनैतिक

12.3.2 सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, साहित्यिक

12.4. काव्य – आधुनिक काल रो पद्य साहित्य

12.4.1 प्रमुख प्रवृतियां

12.4.2 काव्यधारावां

12.4.3 प्रमुख रचनावा अर रचनाकार

12.5 गद्य – आधुनिक काल रो गद्य साहित्य

12.5.1 गद्य विधावां

12.5.2 सैलियां

12.5.3 प्रमुख रचनावां अर रचनाकार

12.6 इकाई सार

12.7 अभ्यास रा सवाल

12.8 संदर्भ ग्रंथ

12.1 उद्देस्य

इण इकाई लेखन रा उद्देस्य है।

1. आधुनिक राजस्थानी भासा साहित्य री जाणकारी करावणी।
2. विद्यार्थियां नै आधुनिक काल री समय सीमा अर नामकरण रो परिचय देवणौ।
3. आधुनिक काल खण्ड रा वातावरण बावत बतावणो।
4. आधुनिक जुग री काव्य धारावां, काव्य सैलियां अर गद्य री विधावां री जाणकारी करावणौ।
5. इण समै रा प्रमुख रचनाकार अर रचनावां री विगत मांडणी।

12.2 प्रस्तावना

प्रस्तावना में ई. सन 1850 सूं सरू हुया राजस्थानी साहित्य रा आधुनिक काल री मूळ चेतना बावत विचार करणो है। साहित्य सिरजण जुग सापेक्ष हुया करै। इण खातर आधुनिक काल री जन चेतना अर उणसूं आया बदळाव नै समझणो जरूरी है। इण बदळाव रो असर अठां रा समाज, राजनीति धरम अर सांस्कृतिक सोच लग पूगै। बो कुणसो भाव या विचार हो जिणसूं ओ बदळाव आयौ– इणनै समझणो जरूरी है। आजादी री चेतना अर उण खातर हुया जन आंदोलन सन् 1850 सूं 1947 तक चालती रिया। गुलामी सूं खराब कोई चीज कोनी अर आजादी सूं आछी कोई बात कोनी। इणरै साथै देसभगती, स्वाभिमान अर गौरव रा भाव जुड़यौड़ा है

जको आधुनिक राजस्थानी साहित्य री विसय सामग्री बणी।

सन् 1947 रै पछै अजै लग 62 बरस बीतग्या। आं बरसां भी घटी घटनावां राजस्थानी साहित्य में सबद रूप लियौ। इणां री निरख अर परख इण इकाई की कथावस्तु बणी है। इण सगळा साहित्य सूं ही राजस्थानी भासा अर साहित्य रा आधुनिक काल रो नामकरण हुयौ है!

12.3 जुग रो दरसाव

डॉ. कल्याणसिंह शेखावत ठीक ही लिख्यौ है–

''राजस्थानी भाषा और उसके प्राचीन, विविध तथा विशाल साहित्य भंडार के अध्ययन का जो आधार विभिन्न विद्वानों ने प्रस्तुत किया है, उसकी अन्तिम कड़ी आधुनिक राजस्थानी साहित्य है। इस आधुनिक युग का चिंतन प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की मूल चेतना से जुड़ा हुआ है। राजस्थानी साहित्य के इतिहास लेखकों ने इस युग का नामकरण 'आधुनिक युग' करते समय इस तथ्य को अवश्य दृष्टि में रखा है कि वर्तमान पुरातन से किस रूप में भिन्न है। अतीत के वे कौन से तत्व हैं, जो आधुनिक युग की सीमा रेखा को पार नहीं कर सकते। युंगीन चेतना ही इसका मूलाधार हो सकता है। सन् 1850 से इस आधुनिक युग का शुभारम्भ माना जाता है, जो अद्यावधि विद्यमान है। सन् 1850 से लेकर 1875 तक का समय भारतीय इतिहास का वह संधिकाल है, जहां राष्ट्रीय भावों का उदय होता है और साम्राज्यवादियों के विरूद्ध नवबोध का भव जागृत होता है।

इसी तरह साहित्य के क्षेत्र में नये भावबोध और नवीन विधाओं एवं शिल्पगत नूतन प्रयोग प्रारम्भ होते हैं। राजस्थानी भाषा एवं नवीन शक्ति और स्फूर्ति लेकर नये–नये प्रयोगों के साथ, इस युग में, प्रगट होती है। यदि प्राचीन और आधुनिक की तुलना करें तो लगेगा कि देशी रियासतों में बंटे हुए राजस्थानी के वातावरण लिखा गया प्राचीन साहित्य या जहां राष्ट्रीय स्तर पर उदय होने वाली भाव चेतना का यहां के रचनाकारों और उनकी रचनाओं पर पड़ने लगा था।

आधुनिक युग की सबसे बड़ी विशेषता यह मानी जाती है कि इसमें गद्य का सर्वाधिक विकास और नई गद्य विधाओं का जन्म, इसी युग में हुआ। पाश्चात्य जगत के सम्पर्क से वैचारिक परिवर्तन ही नहीं हुआ बल्कि साहित्य लेखन के स्तर पर भी नयापन, इस युग की रचनाओं में स्पष्ट दिखने लगा।''

इण भांत आधुनिक जुग रा दरसाव नै सार रूप में समझयौ जा सकै है पण विस्तार सूं उण जुग रा वातावरण नै राजनीति, समाज, धरम, संस्कृति अर पढाई–लिखाई री वां दिनां री विगत नै सामी राख'र ही समझ्यौ जा सके है।

12.3.1 राजनैतिक वातावरण –

सन् 1850 सूं 1947 लग सगळो भारत अंग्रेजां रो गुलाम हो। राजस्थान में भी 22 रजवाड़ा हा जठै राजसाही अर सामंती व्यवस्था ही। रियासतां रा राजा–महाराजा कैवण नै तो खुद री रियासत रा मालिक हा पण असली सत्ता अंग्रेजां रै हाथ में ही। रियासत रा राजकाज में न जनता री बीधी भागीदारी ही अर न हीं प्रभाव हो। अंग्रेज सत्ता मद में पागल हा वे अन्याय, अर जुल्म करता पण डर रै कारण कोई विरोध नहीं करतो।

सन् 1850 में भारतीय सेना में आजादी री अलख जागी, जिणनै अंग्रेज 'म्यूयूंटिनी' (छोटो सो विद्रोह) रो नाम दियौ, पण बा स्वतंत्रता संग्राम री पैली चिणगारी ही जिणसूं सन् 1947 में अंग्रेजां नै भारत छोडणो पड़ियौ। इणरी बानगी देखीजै–

''राजनैतिक घटना चक्र की दृष्टि से देशभक्त क्रान्तिकारियों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर जो प्रयत्न किये उन्हें हिंसक आंदोलन का नाम दिया गया, जहां गोली का

जवाब गोली से तथा शक्ति के विरूद्ध संघर्ष का संकल्प था। जो परम्परा दिल्ली के अन्तिम बादशाह बहादुरशाह जफर, तात्या टोपे, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई जैसे क्रान्तिकारियों ने प्रारम्भ की उसी को आदर्श मानकर चंद्रशेखर 'आजाद', रामप्रसाद 'बिस्मिल', भगतसिंह, जोरावर सिंह, केसरीसिंह बारहठ जैसे क्रान्ति कारी राष्ट्रभक्तों ने उसे आगे बढ़ाया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने तो कहा था। 'आप मुझे खून दीजिए, मैं आपको आजादी दूंगा।' इन क्रांतिकारी देशभक्तों का समय सन् 1920 तक माना जाता है क्योंकि सन् 1921 में भारतीय राजनीति में अहिंसा, असहयोग, सत्याग्रह, आमरण अनशन के जन्मदाता मोहनदास कर्मचद गांधी राजनीति में सक्रिय हो चुके थे और उन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध अपने संघर्ष को अहिंसा के अमोघ अस्त्र से प्रारम्भ किया। गांधी सत्य और अहिंसा तथा नैतिकता से अंग्रेजों का मानस बदलकर भारत को स्वतंत्र कराना चाहते थे। वे कहते थे– ''हम पवित्र साधना से स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे इसे खून से अपवित्र नहीं होने देंगे।''

इण भांत आधुनिक काल रो एक चरण सन् 1947 नै पूरो हुयौ अर देस नै आजादी मिली। राजस्थानी साहित्यकार खुद री कलम सूं देस भगती अर आजादी रा भावां भरिया साहित्य री सिरजणा करी जिणरी बानगी देखीजै।

आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधां खैच उरा।
धणियां मरेन दीधी, धरती, धणियां उभां, गई धरा। –बाँकीदास आसिया

इळा न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बढाई मांय।। – सूरजमल मीसण

संकरिये सामोर रा, गोळी हंदा बोल।
मिन्तज सांचा मुलकरा, रिपुवां उलटी रीत।। – संकरदान सामोर

पग पग भम्या पहाड़, धरा छाड राख्यौ धरम।
महाराणा रे मेवाड़, हिरदै बसिया हिंद रै।। – केसरीसिंह बारहठ

12.2 जुग रो दरसाव (दूजो सन् 1947 सूं अजै ताई)

15 अगस्त 1947 नै भारत आजाद हूयग्यौ। राजकाज जनता रा प्रतिनिधि संभाळ लियौ। सब जागां हरख उमाव, भाईचारै अर भावी भारत रा उजळा सपना हा। राजतंत्र री जागां जनतंत्र आयौ। भारत सर्व प्रभु सता सम्पन्न देस बण्यौ। आजाद भारत रो संविधान बण्यौ अर लागू हुयौ। नागरिक रा मोलिक अधिकार अर कर्तव्य तय हुया। स्वतंत्र भारत रो राष्ट्रपति प्रधानमंत्री, मंत्रिमंडळ, संसद अर विधान सभावां रै साथै विधान परिसदां बणी। संविधान रै मुजब सन् 1952 में पेलो आम चुणाव हुयौ। भारत री विदेस नीति बणी, पंचसील रा नारा लाग्या। जात पांत, धरम, लिंग, रंग अर भौगोलिक खेतर रो भेद मिट्ण लाग्यौ। समानता सद्भाव, मैत्री रा भाव अर विचार चिंतन रा आधार बण्या।

राजस्थानी साहित्य – आजादी रो पेलो पड़ाव सन् 1947 सूं 1962 लग रो है। दूजी भारतीय भासावां री तरै राजस्थानी में भी इण रूपाळै भारत रा गीत गाईजिया, गाथावां लिखीजी, नाटकां रा रचाव हुया। काव्य री जागां गद्य रो विकसाव इधको हुयौ। पद्य अर गद्य री नुंवी विधावां रो जलम हुयौ। भाव री जागां विचार प्रधान सिरजण हूवण लाग्यौ। भाव, भासा अर सैली रा नया तेवर साफ झलकण लाग्या। गद्य में उपन्यास, कहाणी, निबंध, नाटक, एकांकी, रिपोर्ताज, डायरी, रूपक, संस्मरण, जैड़ी विधावां में घणो सिरजण हुयौ।

आधुनिक राजस्थानी काव्य, महाकाव्य खण्ड काव्य, प्रबंध काव्य, चम्पू काव्य री पुराणी लीक छोड़ बंधन मुगत काव्य रा राजमारग नै अपणावण लाग्यौ। छंद अर अलंकार रा बंधन ढीला पड़ण लाग्या। छंद बिना अर अलंकार री उळझाड़ सूं परै नई कविता रो उदय हुयौ। फैर 'अकविता', गकवितां अर समकालीन कविता दोर आयौ।

अर छायावाद प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, हालावाद, प्रकृतिवाद घणो लारै छूटग्या।

राजस्थानी रा प्रमुख रचनाकार :

इण तरै सन् 1947 सूं लैय'र 1962 ताई देस में सुख–अमन अर चैन रियौ। 'पंचशील' रो आधार सामी राख पड़ोसी देसां सूं मैत्रीभाव रा सम्बंध बण्या। हिंदी चीनी भाई भाई रा नारा खूब लाग्या पण 1962 में चीन ही आपणै देस पर हमलो कर भारत रै पीठ में छरो घाल दियौ। मैत्रीभाव, दुसमणी में बदहग्या। भारत रै पैला प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू नै घणो सदमो लाग्यौ अर इण कारण ही उणां रो सुरगवास हुयौ। हजारूं सैनिक अर अधिकारी एक र फैर मायड़ भोम खातर अमोला प्राण अरपण कीना। अमन, चैन अर भाई चारा रा सुर बदलगया अर जुद्ध रो वातावरण चारूं कानी देखण लाग्यौ। चीनी हमला रै पछै पड़ोसी पाकिस्तान दो हमला करिया। आं हालात रै कारण राजस्थानी साहित्य भी रणभेरी बजाई अर उणरी विसय वस्तु भाव अर भासा बदळी। इणरै पछै आंतकवाद री विनास लीला भारत देखी अर अजै झेलै है।

आं सब राजनैतिक घटनावां रै घटण सूं राजस्थानी साहित्य में सिरजण रो रूप बदळग्यौ। एक फैर देस रक्षा रो भाव साहित्यकारां में जाग्यौ। वीरता, देस भगती अर संस्कृति गौरव री गाथावां रचिजण लागी।

प्रमुख साहित्यकार – इण जुग रा प्रमुख रचनाकारां में कवि राव मोहनसिंह, हींगळाजदान कविया, उदयराज उज्वल, नाथूदान 'महियारिया', गणेसलाल व्यास, चंद्रसिंह, कन्हैयालाल सेठिया, रेवतदान चारण, सत्यप्रकाश जोसी, नारायणसिंह भाटी, मेघराज मुकुल, कांह महर्षि, रघुराज सिंह हाडा, गजानन वर्मा, लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, अन्नाराम सुदामा, श्रीमाल नथमल जोशी, बैजनाथ पंवार, करणीदान बारहठ, डॉ. मनोहर शर्मा, उदयवीर शर्मा, अमरचंद नाहटा, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, नृसिंह राजपुरोहित, मूलचद गणेश, ब्रजनारायण पुरोहित, बुद्धि प्रकाश पारीक, कलयाणसिंह राजावत, डॉ. गोरधनसिंह शेखावत, सौभाग्यसिंह शेखावत, डॉ. कल्याणसिंह शेखावत, श्री कृष्ण गोपाल, रावत सारस्वत, प्रेमजी प्रेम, शिवराज छंगाणी, ब्रजनारायण पुरोहित, गणपतिचंद्र भंडारी, दीनदयाल ओझा, रामनाथ व्यास 'परिकर' नागराज शर्मा आदि अनेक।

तीजो पडाव – 1972 सूं अजैताई रो है जद देस में लोकतंत्र मजबूत हुयौ, उधोगधंधा लाग्या, रोजगार रा ओसर सामी आया। इण जुग तक राजनीति री दीठ सूं भारत अेक ताकत मानीजण लाग्यौ।

इण जुग में 'नकस्लवाद' अर 'आतंकवाद' समस्या बण आगै बढण लागा। नारी संताप, बेजगारी, अकाळ अर संस्कृति पर हमला विकास में बाधक वणण लागा।

इण जुग में महिला अर युवा रचनाकारां रो साहित्य नई सोच, सैली, विसयवस्तु अर रचना कौसळ रै साथै लिखीजण लगायौ। नई पीढी मायड़भोम नै लेखन रो जरियौ बणा'र महताऊ पोथ्यां रची।

12.3.2 इणमें सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक अर साहित्यिक वातावरण में जूनो चितन, बंधन अर लीक नै छोड बदळाव निगै आवै। जात–पांत रा बंधन ढीला पड़िया, ब्याव–सादी रा तौर–तरीका में बदळाव आयौ। सजातीय ब्याव री जागां अन्तरजात ब्याव घणा हूवणा लागा। पड़दा री रीत खतम सी हूवण लागी। मोसर बंद हूयग्या। सती प्रथा रही कोनी। नारी चेतना जागी। पढ़ाई लिखाई रो वातावरण बण्यौ। नारी सिक्षा बढ़ी।

धर्म रा अंधविस्वास, पाखण्ड, नर अर पसुबलि कानूनी अपराध बणग्या। धर्म आस्था रो मान बढण लाग्यौ। धर्म सेवा आम जन तक पूगी। धर्म री संकळाई कम हुई पण धार्मिक कट्टरता विनास रो कारण बणी।

सांस्कृतिक वैभव जन–जन री थाती बण्यौ। संस्कृति रा उदार तत्व मानवी जीवन रा आधार बणण लाग्या हालांकै संस्कृति रो भूंडौ दरसाव भी हूवण लागो। मेळां–खेळां, तीज–त्यूंहारां पर्वा कानी लोक रो झुकाव बढयौ। राजस्थानी कला अर कलाकार परदेसां

तक धूम मचाई।

इण जुग रो आर्थिक वातावरण सुधर्‌यौ। नया कळकारखाना लाग्या। देस में उत्पादन अर रोजगार बढयौ। नीतिगत कारणां सूं अमीर ज्यादा अमीर बणग्या अर गरीब ओर गरीब। गरीब अर अमीर रै बीच री खाई इत्ती विसाळ अर गहरी हूयगी कै अेकानी झुग्गी–झोपड़यां पसरी तो दूजै कानी अमीर रा बंगला अर उधोग अरबां–खरबां तक जाय पूग्यौ।

सिक्षा अर साहित्य री दीठ सूं ओ जुग विकसाव रो है। सिक्षा आम आदमी तक पूगी, विसयां रो विस्तार हुयौ। तकनीकि सिक्षा कानी रूझान बढयौ। घणाई विश्वविद्यालय सरकारी अर नीजी दोनूं जागां खुल्या। प्रतियोगी सिक्षा समै री मांग बणगी। राजस्थानी साहित्यकार खुद री कलम री ताकत सूं भात–भांत रो पण महताऊ साहित्य सिरजण करण लागा।

12.4.1 आधुनिक काल रो राजस्थानी साहित्य

सन् 1850 सूं अजै तांई राजस्थानी भासा में मोकळो साहित्य लिखीज्यौ। गद्य अर पद्य री न्यारी न्यारी विधावां, काव्य धारावां अर लेखन सैलियां रो विस्तार हुयौ। जुग री प्रमुख प्रवृतियां रो असर लेय'र नीचै लिखी काव्य धारावां रो उदय राजस्थानी भासा रा काव्य में हुयौ।

12.4.2 प्रकृति काव्य

2. प्रेमप्रधान काव्य
3. प्रगतिसील काव्य
4. छायावादी काव्य
5. नई कविता–अतुकांत, अकविता, ग कविता अर समकालीन कविता।

प्रकृति काव्य – राजस्थानी री प्रकृति नै आधार बणा'र जको काव्य लिखीज्यौ वो प्रकृति काव्य रै रूप में जगचावो हुयौ। राजस्थान मरुधरा बाजै। अठै बिरखा कम व्है जिणसूं खेती इकसाखी ज्यादा व्है अर आयै बरस काळ पड़ै। गरमी घणी पड़ै। लूआं सूं झुळसियोड़ी मानवी मेह री उडीक राखै। पाणी कम हूवण रै कारण उणरो महत्व घणो है। दिन तपै पण रातां ठंडी व्है। छ रितुवां अठै दरसाव देवै।

राजस्थानी भासा रा घणा कवेसर राजस्थान री प्रकृति नै आधार बणा'र घणो अर सारथक काव्य रच्यौ है जिणमें चंद्रसिंह री दो पोध्यां 'लू' अर 'बादळी' घणो नाम कमायौ। चंद्रसिंह जी अठां री प्रकृति रा जरारथ भरिया पण मोवणा चितराम खुद री कविता में रच्या है। एक बानगी देखीजै।

आठूं पौर अडीकतां,
वीतै दिन ज्यूं मास
दरसण दे अब बादळी
मत मुरधर नै तास।

छिनेकं सूरज निरखीयौ
बिखरी बादळियां
चिलकण मुंह अब लागियौ
धरा किरण मिलियां।

चंद्रसिंह री आं काव्य–ओळयां में प्रकृति काव्य रै साथ छायावादी काव्य रा दरसाव भी रच्या–पच्या है। चंदसिंह रै अलावा डॉ. नारायणसिंह भाटी, सत्यप्रकाश जोसी, कन्हैयालाल सेठिया, रघुराजसिंह हाडा, गजानन वर्षा, कल्याणसिंह राजावत, भी राजस्थानी प्रकृति काव्य रच्यौ है।

प्रेमप्रधान अर छायावादी कविता रा विसय एकसा ही रिया है। हेत प्रीत री कविता कठैई छंदां–अलंकार रै पाण जग चावी हुई तो कठेई प्रतीकां रै पाण पसरी। कन्हैयालाल सेठिया, नारायणसिंह भाटी,

सत्यप्रकाश जोशी, किशोर कल्पना कांत, लक्ष्मणसिंह 'रसवंत', कल्याणसिंह राजावत इण भांत री कविता नै पनपाई। नीति काव्य ई कविता रो सिरगारगार कर्‌यौ। प्रगतिसील कविता गणेसलाल व्यास 'उस्ताद', रेवतदान चारण, कहैयालाल सेठिया री कवितावां सूं समृद्ध हुई। गणेसलाल व्यास उस्ताद री 'बंदा मैणत री जै बोल, जुग पसवाड़ो लीनो, लाल धजा री आण फिरै, धोरां री धरती जाग, साथण दिया जगा दे, परण्या डरे मती, खाता बोहरा सूसं मत घाल, जागौ जागौ रे कमतरिया, राज बदळग्यो म्हांनै कांई, अहिंसा बोल अहिंसाबोल, जाग रणबंका सिपाई आदि कविता अर रेवतदान चारण री 'दूजो महाभारत' लोकराज, बगावत, काळ, इकलाब री आंधी, लिछमी, उछाळौ, हालरियौ, बीघोड़ी, पग मंडणा इतिहास रा, रोयां रूजगार मिळै कोनी, कन्हैयालाल सेठिया री कुण जमीन रो धणी, अघोरी काळ। जैड़ी कवितावां प्रगतिसील चिंतन रो आधार लियौड़ी है। आधुनिक राजस्थानी भासा री नई कविता छंद अर अलंकारां रा बंधन तोड़ मुगत काव्य धारा नै जनम दियौ। जयारथ रो रंग अर बदलाव रो सुर नई कविता री पिछाण बणी।

नई कविता रा कीं उदाहरण–

धनबळ जद जन रौ सुख चुगलै, तद आ भोम अंगारा उगळै
जन भावीं री भुजंग भैरवी, रगत पिवै माथा भख मांगै।
रे मोटियार। संभळ बध आगै, आगै रे माटी जीवण आगै। –जनकवि गणेसलाल व्यास

अंधार घोर आंधी प्रचंड
आ धुंआधोर धंव धंव करती
आवै है उर में आग लियां, गढ़ कोटां बंगलां नै ढहती। –रेवतदान चारण

कुण जमीन रौ धणी ?
हाड़ मांस चाम गाळ
खेत में पसेव सींच,
लू लवट ठण्ड मेह
स सेवै दांत मींच,
फाड़ चौक कर करै, जोतणी'र बोवणी,
वौ जमीन रो धणी' 'क ओ जमीन रो धणी ?' –कन्हैयालाल सेठिया

प्रमुख कवि अर उणांरी रचनावां–

आधुनिक राजस्थानी भासा रा प्रमुख कवि अर उणारी रचनावां नीचै मुजब है–

कविवर–बांकीदास आसिया – रचनावां सूर छतीसी, धवल पच्चीसी, गंगालहरी

सूरजमल मीसण – वीरसतसई, वंशभस्कर, रामरंजाट, बलवद विलास आदि।

रामनाथ कविया – दौपदी विनय।

संकरदान सामोर – सगती सुजस, भागीरथी, महिमा, बखत रो बायरो, देसदरपण, साकेत सतक।

हींगळाजदान – मृगया मृगेद्र, मेहाई महिमा, दुर्गा बहतरी, बणियोरासो आदि।

केसरीसिंह बारहठ – चेतावणी रा चूंगट्या।

महाराज चतरसिंह – परमारथ विचार, योगसूत्र की वारता, गंगाजळी टीका, चतुर चिंतामणि।

गणेशलाल व्यास उस्ताद – बेकसों की आवाज।

उदयराज उज्वल – धूड़सार, मारवाड़ रा वीर, मातृभासा दोहावली। गांधीजी रा दूहा, विज्ञान रा दूहा, भानिया रा दूहा, स्वराज सतक, श्रम सतक आदि।

नाथूदान महियारिया – वीर सतसई, गांधी सतक, चंडी सतक, चूंडा सतक, झालामान 'सतक'

डॉ. नारायणसिंह भाटी – सांझ, परमवीर, दुर्गादास, कळप, मीराँ, जीवणधन आद।

डॉ. मनोहर शर्मा – गजमोती, रसधारा।
कहैयालाल सेठिया – मिमझर, लीलटांस, मायड़ रो हेलो आद।
सत्यप्रकाश जोशी – राधा, दीवा कांपै क्यूं ? बोल भारमली, लस्कर ना थमै, गांगेय आद।
किशोर कल्पनाकांत – कूंपळ, फूल।
मेघराज मुकुल – सेनाणी, सेनाणी री जागी जोत।
चंद्रसिंह – लू, बादळी, बालसाद आद।
रेवतदान चारण – चेत मानखा, नेहरू जी नै ओळमो, धरती रा गीत, उछाळौ।
विश्वनाथ 'विमलेश' – सतपकवानी, रामकथा (महकाव्य) कुचरणी।
बुद्धिप्रकाश पारीक – चूंटक्या, तिस्सा, कळदार।
रामनाथ व्यास 'परिकर' – मनवार, गीत सहकार।
गिरधारीसिंह पड़िहार – मानखो।
सुमेरसिंह शेखावत – मेघमाळ, आ नींद कद उडैला।
कल्याणसिंह राजावत – रामतिया तोड़, परभाती।
गजानन वर्मा – सोनो निपजै रेत में, बारामासा
लक्ष्मणसिंह रसवंत – रसाळ, मिमझर।
उदयवीर शर्मा – पिरथीराज, सुरजां।
रामेश्वर दयाल श्रीमाळी – हाडी राणी, बावनो हिमाळौ।
कमर मेवाड़ी – जय बंगलादेस।
डॉ. गोरधनसिंह शेखावत – किरकर, पनजीमारू।
तेजसिंह जोधा – ओळूं री ओळयां।
सीताराम महर्षि – रिमझोळ, प्रीत पीड री पाळ।
मोहन आलोक – डांखळां।
करणीदान बारहठ – झिंडियो, 'झरझर' कथा।
नंदभारद्वाज – अंधार पख।
वेदव्यास – कीड़ोनगरो

यूं तो आधुनिक राजस्थानी भासा रा सैकडूं कवि अर वां री रचनावां छपी है जिणामें मणिमधुकर, अर्जुनदेव चारण, डॉ. शान्ति भारद्वाज, अम्बिकादत, अतुल 'कनक', मुकुट मणिराज, गिरधारीलाल 'मालव', रसिद अहमद 'पहाड़ी', दुर्गादानसिंह 'गौड़', ओम नागर 'अश्क', बद्रीलाल 'दिव्य', गोरस प्रचंड, सी. एल. सांखला, जितेन्द्र निर्मोही, शिवचरण सैन, सन्नू मेवाती।

आद रा नाम गिणावणजोग है। महिला रचनाकारां में– डॉ. लीलामोदी, गीता 'जहाजपुर', कृष्णा कुमारी, कमला 'कमलेश', प्रेमलता जैन, डॉ. उषाकंवर राठौड, शारदा कृष्ण, पुष्पलता कश्यप, माधुरी मधु, सुबदा कछवाह, विजय लक्ष्मी देथा, कविता मेहता, कविता किरण, सुमन बिस्सा, प्रकाश अमरावत, तारा लक्ष्मण गहलोत, सावित्री डागा आदि प्रसिद्ध है।

12.5 आधुनिक राजस्थानी गद्य साहित्य

विसेसतावां – राजस्थानी भासा रो आधुनिक जुग गद्य प्रधान मानीजै! इण काल खण्ड में एकानी गद्य री नुवै विधावां नै लेखन रो आधार बणायौ गयौ तो दूजै कानी नई गद्य सिल्प अर सैलियां रो बिगसाव हुयौ। गद्य लेखन री जूनी समृद्ध परम्परा सूं ओ नयो गद्य सम्पन्न तो हुयौ है पण आज री गद्य विधावां री परिभासा, तत्व अर लेखन सैली न्यारी है जिणांमें नाटक, एकांकी, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, रेखाचितराम, रिपोरताज, डायरी, रूपक, आद खास है। आधुनिक राजस्थानी गद्य लेखन में भाव अर विचार दोनुवां रो प्रभाव है पण विचार प्रधान लेखन घणो गम्भीर है। इणमें विविधता, चिंतन अर जुग सापेक्ष ईधको है! इण गद्य लेखन में न्यारी–न्यारी विचार धारावां रो साहित्य है ज्यूं प्रगतिसील लेखन साम्यवादी विचार धारा सूं प्रभावित है, थोड़ा

रचनाकार पूंजीवादी, सामन्तवादी, कुछ धार्मिक, सांस्कृतिक सोच राखै। उणारी रचनावां में वांरी विचारधारा अर सोच निगै आवै।

आज रै गद्य लेखन री विसेसतावां –

12.5.1 ई आधुनिक गद्य सिरजण में भासा रा न्यारा न्यारा रूप अर प्रयोग है। 'वचनिका' अर दवावैत सैली अर जथारथ राजस्थानी गद्य विधावां नै सिणगार दियौ है! गद्य गीतां रा प्रयोग हुया है। विग्यान रो असर, मनुज री मानसिकता, उणरो आचरण, उणरा आस्था, विस्वास, रीत–रिवाज, राजस्थानी भासा रा, उपन्यास, कहाणी, नाटक–एकांकी, जैड़ी विधावां में घणै असरदार ढंग सूं सबद रूप लियौ है! डायरी, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा मानवी अर उणरा समाज, परिवार अर आखै परिवेस नै पाठकां सामी राखै। नारी समस्यावां, उणरी मनगत, अबखाया, उणरो बदलतो रूप, काम अर चरित आज गद्य लेखन में आखरां ढळयौ है।

12.5.2 आज रो राजस्थानी गद्य विचारात्मक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक, व्यक्ति परक अर व्याख्यात्मक सैलियां परक कयौ जावै। उपन्यास कहाणी, नाटक अर एकांकियां रा पात्र आज रा है। वांरी संवेदना इण जुग री है। निबंधां रा विसय विविध अर विसाळ है। भासासैली टकसाळी अर मानकरूप लियौड़ी है। गंभीर सूं गम्भीर विसय नै प्रभावी भासा में सबद रूप देवण री खिमता राजस्थानी गद्यकारां में है।

3. सगळा आधुनिक राजस्थानी साहित्य पर महात्मा गांधी अर उणांरा सिद्धांतां रो असर साफ निगै आवै। गांधीवादी चिंतन, आंदोलन अर काम करण रो तरीको आज रै लेखन रो आधार बण्यौ है।

4. ई जुग में परयावरण, चेतना अर रंग, जाति, धरम रै खिलाफ उठी आवाज नै आधुनिक राजस्थानी साहित्यकार वाणी दीनी अर साम्प्रदायक सदभाव, भाईचारे अर मानवतावादी दीठ रो विकसाव खुद री कलम सूं करियो! आखी दुनियां में जठै कठैई हिंसा, अन्याव, भेदभाव, साम्राज्यवाद, पूंजीवाद रा दुरगण पनपण लागा– राजस्थानी कलमकार उणरो पुरजोर विरोध करियौ। अठांताई कै जठै भारत में जन री उपेक्षा हुई राजस्थानी रचनाकार खुद राजनेतावां नै भी माफ नहीं करिया।

12.5.3 आधुनिक राजस्थानी रा प्रमुख गद्यकार अर उणारी प्रमुख रचनावां री विगत की इण भांत है।

प्रमुख उपन्यासकार – अन्नाराम सुदामा, श्रीलाल नथमल जोशी, यादवेद शर्मा 'चंद्र', सत्येन जोशी, छत्रपतिसिंह, दीनदयाल कुंदन, रामदत साकृत्य, पारस अरोड़ा, किशोर कल्पनाकांत आद प्रमुख है।

प्रमुख उपन्यास – मैकती कामा मुळकती धरती, आंधी अर आस्था मैवे रा रूंख, आभै पटकी, धोरां रो धोरी, एक बीनणीदोय बींद, कवळपूजा, तिरसकूं आदि अनेक।

प्रमुख कहाणीकार – मुरलीधर व्यास, डॉ. नृसिंह राजपुरोहित, अन्नाराम सुदामा, करणीदान बारहठ, बैजनाथ पंवार, मूळचंद 'प्राणेश', भंवरलाल सुथार, सांवर दईया, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, प्रेमजी प्रेम, मनोहरसिंह राठौड़, रामनिरंजन 'ढिमाऊ', शचीन्द्र उपाध्याय, नानूराम संस्कर्ता, विजयदान देथा, श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत, दामोदर प्रसाद शर्मा, डॉ. मनोहर शर्मा, उदयवीर शर्मा आद।

प्रमुख कहाणियां अर पोथ्यां – बरसगांठ, अमर चूनड़ी, रातवासो, मऊ चाली माळवै, आंधै न आंख्या, लाडेसर, ओळखाण, नैणा खूंटयौ नीर, उकळता आंतरा–सीळा सांस, परण्योड़ी कुंवारी, तगादो, असवाड़ै–पसवाड़ै, धरती कद ताई घूमै ली, अलेखूं हिटलर, मांझल रात, मूमल, कै रे चकवा बात, गिर ऊंचा ऊंचा गढां, आदमी रो सींग, मंत्री री बेटी, बेमाता रा आंक, जसोदा, संळवटां, लालबती, ओ घर म्हारो कोनी, रामचंद्र की कथा, सांवर का बोल, रोसनी रा जीव, सांढ, डाळ सूं छुट्या पंछी, कन्यादान, सोनल भींग, करड़ी आंच, दसदोख, घरकी गाय, ग्योही,

प्रेतात्मा री प्रीत आद मोकळी।

प्रमुख नाटककार – सूर्यकरण पारीक, श्रीनाथ मोदी, गिरधारी लाल व्यास, आज्ञाचंद भण्डारी, भरत व्यास, यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' सत्येन जोशी, निर्मोही व्यास, अर्जुनदेव चारण, मदनमोहन परिहार डॉ. मदनमोहन माथुर आद अनेक।

प्रमुख नाटक – बोळावण, गोमाजाट, प्रणवीर प्रताप, जयपुर की ज्योणार, पन्नाधाय, ढोला–मरवण, रंगीलो मारवाड़, तास रो घर, मुगतीवंधण, दो नाटक आज रा, अंधारो आद।

प्रमुख निबंधकार – डॉ. मनोहर शर्मा, डॉ. कल्याणसिंह शेखावत, सौभाग्यसिंह शेखावत, नंद भारद्वाज, पुरसोतम आसोपा, जहूर खां मेहर, अर्जुन सिंह शेखावत, डॉ. शक्तिदान कविया, अगरचंद नाहटा, अन्नाराम सुदामा, अमरनाथ कश्यप, रामनाथ व्यास परिकर, डॉ. ब्रजमोहन जावळिया।

प्रमुख निबंध अर पोथ्यां – राजस्थानी निबंध संग्रह, रोहिड़ा रा फूल, राजस्थानी निबंध, मणिमाळ, रसकळस, दौर अर दायरो, राजस्थानी संस्कृति रा चितराम, मुळकता मिनख मोवणी धरती, दूर दिसावर आळ जंजाळ। इणी तरह दूजी गद्य विधावां रा रचनाकारां में मोहनलाल पुरोहित, भंवरलाल नाहटा, नेमनारायण जोशी, शिवराज छंगाणी, वेद व्यास, डॉ. सत्यनारायण शर्मा, डॉ. नरेन्द्र भानावत, श्रीलाल मिश्र, दीनदयाल ओझा, गोविंदलाल माथुर, डॉ. उषाकंवर राठौड़, डॉ. प्रकाश अमरावत, श्री नागराज शर्मा आद अनेक।

12.6 इकाई सार

1. इण इकाई में आधुनिक राजस्थानी साहित्य री जाणकारी दी गई हैं।
2. आधुनिक जुग रो समें सन् 1850 सूं आज तकरो है। ईं इकाई में इण जुग रा राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक अर सिक्षा रा वातावरण नै दरसायौ गयौ है।
3. आधुनिक काल रा राजस्थानी काव्य अर गद्य री विगत इण इकाई में मंडी है। आधुनिक गद्य विधावां, सैलियां प्रमुख रचनाकार अर रचनावां री जाणकारी इण इकाई में आखरां ढळी है।

12.7 अभ्यास रा सवाल

1. आधुनिक राजस्थानी साहित्य नै प्रभावित करणवाळा तत्व कुणसा है – उदाहरणा सूं समझावो।
2. आधुनिक राजस्थानी काव्य री प्रमुख काव्य धारावां री जाणकारी करावो।
3. प्रमुख प्रगतिसील कवियां रो परिचय देवो।
4. सत्यप्रकाश जोशी री काव्य रचनावां री जाणकारी करावो।
5. आधुनिक राजस्थानी गद्य विधावां कुणसी हैं? समझावो।

12.8 संदर्भ पोथ्यां

1. राजस्थानी साहित्य : एक परिचय – नरोतमदास स्वामी
2. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया
3. राजस्थानी भाषा एवं काव्य – डॉ. कल्याणसिंह शेखावत
4. राजस्थानी साहित्य री नुंवी कविता – डॉ. पुरूषोतम आसोपा
5. स्वातंत्र्योतर राजस्थानी काव्य – डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास
6. राजस्थानी कविता – एक विश्लेषण – डॉ. श्याम शर्मा
7. स्वतंत्रता संग्राम रो राजस्थानी काव्य – नृसिंह राजपुरोहित